अन्तराल की लहरें

मूल लेखक
आइज़क ऐसिमोव
अनुवादिका
स्वर्णलता भूषण
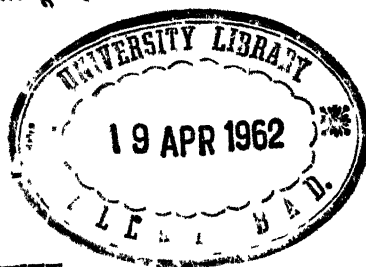
प्रकाशक
नेशनल पब्लिशिंग हाउस,
नई सड़क, दिल्ली

प्रथम संस्करण
दिसम्बर, १९६१

मूल्य
पाँच रुपये

मुद्रक :
राजकमल इलैक्ट्रिक प्रेस, सब्जी मण्डी, दिल्ली ।

प्रस्तावना

आइजक ऐसिमोव की आग्ल भाषा मे लिखी यह पुस्तक मुझे अत्यन्त रोचक प्रतीत हुई, इसीलिए इसका यह अनुवाद हिन्दी-पाठको के सम्मुख रख रही हूँ।

यह तो सभी जानते हैं कि भारतवर्ष को दासता से छुटकारा पाये अभी पन्द्रह वर्ष भी नही हुए। दासता की बेडियाँ, उसके असहनीय कष्ट, अपना पिछडा जीवन, अपनी दयनीयावस्था—प्रतिदिन की आवश्यकताओ के लिए दूसरो के सम्मुख हाथ पसारना और विजयी तथा विजित के प्रति व्यवहार मे अन्तर अभी भी भारतवासियो को भूला न होगा। किस प्रकार एक अंग्रेज के सम्मुख वह अपने आपको अत्यन्त तुच्छ समझता था, वह भी उनको याद ही होगा।

इस पुस्तक को पढ़ते-पढते अपने उसी दासता के जीवन का चित्र नेत्रो के सम्मुख साकार हो उठता है और मन फ्लोरीना-वासियो के प्रति सहानुभूति से भर जाता है। अन्तर यही है कि यहाँ एक देश का दूसरे देश पर नही, एक ससार का दूसरे संसार पर अधिकार है और उसी के अनुसार अत्याचारो मे भी वृद्धि हो गई है। यहाँ तक कि समस्त ससार के विध्वस हो जाने के सकट की सूचना पाने पर भी उसको दबा दिया जाता है; क्योकि विजित ससार पर ही विजेता की सारी आर्थिक व्यवस्था निर्भर थी, क्योकि वही उसका धन था। उसके बिना विजेता का ससार एक अर्थहीन संसार था।

यह कथा सुदूर भविष्य की कथा है। यह उस समय की कहानी होगी जब कि मनुष्य यह भी भूल गये होगे कि वे कभी पृथ्वीवासी भी रहे थे। पृथ्वी रेडियो-सक्रिय हो चुकी है। वहाँ पर जीवन मे पग-पग पर संकट का सामना करना पडता है अत. कुछ मातृभक्त लोगो को छोड सब वहाँ से दूसरे ससारो को भाग गये हैं। आजकल के शीत-युद्ध को देखते हुए यह समय भी दूर नही दिखाई देता, जब कि हम लोगो का ससार इस प्रकार किसी प्रकार के जीवन के योग्य न रह जायगा।

उस समय लोग भागकर एक दूसरी ही नीहारिका के ग्रहो मे जा बसते हैं। लाखो-करोडो संसार मानवो से आबाद हो जाते हैं। सब संसारो मे अन्तरससर्ग के कारण गेहुँआ वर्ण ही राज्य करता है, केवल एक-दो ससार ही ऐसे है जहाँ अत्यधिक काला व गोरा वर्ण मिलता है।

यहाँ पर एक मार्मिक व्यग्य निहित है। जहाँ भारत मे गौरवर्ण गेहुँए वर्ण पर राज्य करता था, जहाँ यहाँ गौर वर्ण को ही सुन्दरता की उपाधि दे दी जाती है, वहाँ उस सुदूर भविष्य मे गेहुँए वर्ण को सौन्दर्य का प्रतीक माना जाता है। वही गौरवर्ण पर राज्य करता है और शायद अपनी इस अतीत की दासता के कारण उनसे खूब कसकर बदला लेता है।

फ्लोरीना पर गौर वर्ण के लोग रहते है। आरम्भ मे उनको दासता की बेडी मे जकड़े देख मन को संतोष-सा होता है पर धीरे-धीरे उनके कष्ट देखते हुए, उनकी तुलना अपने अतीत से करते हैं तो मन सहानुभूति से भर जाता है और उस समय वर्ण भेद मन से लुप्त हो जाता है।

किस प्रकार फ्लोरीना समस्या का अन्त होता है। आजकल की दिन-रात की राजनीति, कूटनीति की प्रधानता, आर्थिकता की नैतिकता पर विजय, उसके साथ ही स्वार्थलोलुपता; सब आजकल की राजनीति पर, आजकल के शक्ति-युद्ध पर व्यग्य ही है। किस चतुरता से लेखक आजकल के शासको पर व्यग्य करने मे सफल हुआ है यह पुस्तक को पढ़ने से ही पता लगता है।

मैंने यह अनुवाद सरल भाषा मे करने की चेष्टा की है, जिससे कि प्रत्येक हिन्दी पाठक इसको आसानी से पढ व समझ सके।

आशा है पाठको को यह अनुवाद पसन्द आयेगा और मुझे उनका प्रोत्साहन प्राप्त होगा।

स्वर्णलता भूषण

प्राक्कथन

एक वर्ष पूर्व

पृथ्वी-पुत्र ने आखिर दृढ़ निश्चय कर ही डाला। यद्यपि उसको इसमें पर्याप्त समय लगा, फिर भी वह एक निश्चय पर पहुँचने में सफल हो ही गया।

उसे अपने वायुयान के सुखद डेक तथा उसके चारों ओर फैले हुए अन्तराल के शीतल व अँधेरे वातावरण को छोड़े कई सप्ताह व्यतीत हो चुके थे। आरम्भ में उसका इरादा जल्दी से स्थानीय अन्तर-तारकीय अन्तराल-विश्लेषण ब्यूरो को सूचना दे कर वापस चले जाने का था, परन्तु वह तो यहाँ इस प्रकार रोक लिया गया था, मानो वह एक कैदी हो।

उसने अपनी चाय का अन्तिम घूँट लिया और मेज़ के दूसरी ओर बैठे मनुष्य की ओर देख कर कहा, "अब मैं यहाँ और नहीं ठहरूँगा।"

दूसरे मनुष्य ने भी कुछ निश्चय किया। यद्यपि उसका निश्चय भी धीरे-धीरे ही दृढ़ हुआ था, फिर भी उसने निश्चय कर ही लिया था। उसको समय चाहिये—बहुत अधिक समय। उसके पहले पत्रों का उत्तर नहीं मिला था; मानो वे तारक-मंडल में फेंक दिये गये हों।

वह उसकी आशा के कुछ विपरीत नहीं था; परन्तु यह तो उसकी पहली चाल थी। हाँ! यह अवश्य था कि जब तक उसकी

आगामी चाल तय न हो जाय वह पृथ्वी-पुत्र को अपने पजों से बाहर न जाने देगा। उसने अपनी जेब मे पडी काली छड को छूते हुए कहा, "तो आप समस्या की उलझन को नहीं समझते ?"

"एक ग्रह का विध्वस होने वाला है इसमे क्या उलझन है ? यह मेरी समझ के परे है।" पृथ्वी-पुत्र ने कहा, "मै चाहता हूँ कि यह बात सार्क तथा फ्लोरिना के सब लोगो में प्रसारित कर दी जाय।"

"हम ऐसा नहीं कर सकते, इससे आतंक फैल जायगा।"

"आपने पहले ऐसा करने को कहा था।"

"मैंने फिर इस विषय में सोचा है; यह व्यवहारगम्य नहीं है।"

पृथ्वी-पुत्र ने अपना दूसरा सदेह प्रकट किया, "अन्तराल-ब्युरो का प्रतिनिधि भी अभी तक नही आया !"

"मुझे मालूम है। पर इस भयंकर स्थिति मे क्या उचित कार्य किया जाय, यही निश्चय करने मे देर लग रही होगी। शायद एक-दो दिन और लग जायें।"

"एक-दो दिन और ! सदैव यही उत्तर है—एक-दो दिन और ! क्या वह इतने व्यस्त हैं कि मुझे एक क्षण भी नही दे सकते ? और, अभी तो उन्होने मेरी भविष्यवाणी की गणना को देखा तक नही।"

"मै तुम्हारी भविष्यवाणी उनके पास पहुँचाने के लिये तैयार था, पर तुम इसके लिये तैयार ही नहीं हुए।"

"मै अभी भी तैयार नहीं हूँ। या तो वह मेरे पास आयें या मुझे उनके पास जाने दो।" उसने जोर देकर कहा "न तो आप मेरा विश्वास करते हैं और न ही इस बात का कि फ्लोरिना का विध्वस हो जायगा।"

"मैं तुम्हारा विश्वास करता हूँ।"

"नहीं, आप नहीं करते। मै जानता हूँ आप मेरा विश्वास नही करते। आप केवल मेरा दिल बहला रहे है। आप मेरे तथ्यों को नही समझते। आप क्या कोई अन्तराल-विशेषज्ञ हैं? मेरी समझ में तो आप जो कुछ होने का दावा कर रहे हैं वह भी नही हैं। इसका मुझे विश्वास होता जा रहा है। तो आप हैं कौन?"

"तुम उत्तेजित हो रहे हो!"

"हाँ! हो रहा हूँ। क्या इसमें भी कोई आश्चर्य है? या आप तरस खा कर यही सोच रहे हैं कि बेचारा अन्तराल द्वारा ग्रस लिया गया है। क्या आप सोचते है कि मै पागल हूँ?"

"क्या बकवास है!"

"आप अवश्य ऐसा ही सोचते हैं। इसीलिये तो मै अन्तराल-ब्यूरो से भेंट करना चाहता हूँ। वह जान लेंगे कि मैं पागल हूँ अथवा नहीं।"

दूसरे मनुष्य को भी अपने निश्चय का ध्यान आया और उसने कहा, "तुम बीमार हो। मै तुम्हारी सहायता करूँगा।"

"नहीं, आप नहीं कर सकेंगे।" पृथ्वी-पुत्र ने चिल्लाकर कहा, "क्यों कि मैं बाहर भाग जाऊँगा। यदि आप मुझे रोकना चाहते हैं। तो मेरी हत्या कर डालिये। पर मुझे मालूम है आप इतना साहस नहीं कर सकते। एक समूचे संसार का खून आपके ऊपर होगा, यदि आप ऐसा करेंगे।"

दूसरे मनुष्य ने भी चिल्लाकर कहा, "मैं तुम्हारी हत्या नहीं करूँगा। मेरी बात तो सुनो, मैं तुम्हारी हत्या नहीं करूँगा। इसकी आवश्यकता भी नहीं है।"

"क्या आप मुझे बाँध कर रखेंगे? क्या यही आपका इरादा है? जब अन्तराल-ब्यूरो मेरे विषय में पूछताछ करेगा तो आप क्या उत्तर देंगे? मुझे अपनी सूचना निरन्तर देनी पड़ती है।"

"ब्यूरो को ज्ञात है कि तुम मेरे पास सुरक्षित हो।"

"सचमुच ! मुझे तो यह भी विश्वास नही है कि उन्हें मेरा इस ग्रह पर उतरना भी मालूम है। उन्हें मेरी प्रारम्भिक सूचना मिली भी है अथवा नहीं।" पृथ्वी-पुत्र को चक्कर आने लगा, उसके हाथ-पैर ऐंठने लगे।

दूसरा मनुष्य भी उठ खड़ा हुआ। वह मेज के दूसरी ओर से उठकर पृथ्वी-पुत्र के पास आ गया। उसने गहरे स्नेह के साथ कहा, "यह तुम्हारे भले के लिये है।" और अपनी जेब से एक काली छड़ निकाली।

पृथ्वी-पुत्र ने घबराते हुए कहा "यह तो मस्तिष्क-वेधन यंत्र है!" उसका स्वर हल्का हो रहा था, और जब तक वह उठे-उठे, उसके हाथ-पैर जवाब दे चुके थे।

"बेहोशी की दवा ?" उसने कठिनाई से कहा।

"हाँ ! बेहोशी की दवा ! अब सुनो मै तुम्हे कोई हानि न पहुँचाऊँगा। इस उत्तेजना व चिन्ता मे तुम इस समस्या की गभीरता को नही समझ पा रहे थे। वह तुम्हारी चिंता को दूर कर देगा, केवल चिंता को..."

पृथ्वी-पुत्र अब बात नहीं कर सकता था। वह केवल वहां बैठ-भर सकता था। कुछ-कुछ सोच सकता था कि उसको चाय मे बेहोशी की दवा दी गई है। वह चिल्लाना चाहता था—भागना चाहता था, परन्तु बेबस था।

दूसरा मनुष्य पृथ्वी-पुत्र तक पहुँच गया था। वह उसके पास खड़ा था, उससे बहुत ऊँचा। पृथ्वी-पुत्र ने निगाह ऊपर उठाकर उसकी ओर देखा। अब उसकी पुतली में ही थोड़ा-सा कम्पन रह गया था।

यह मस्तिष्क-वेधन यंत्र अपने में पूरा था; केवल उसके तार खोपड़ी मे ठीक स्थान पर रखने की आवश्यकता थी। पृथ्वी-

पुत्र आतंक से उसकी ओर तब तक देखता रहा जब तक उसकी आँखें पथरा नहीं गईं। वह पूर्णरूप से बेहोश हो गया था। उसे छड के तारों का खाल तथा मांस को बेध कर खोपड़ी तक जाने का भी पता न चला।

वह अन्दर-ही-अन्दर चिल्लाता रहा। वह मन मे ही कहता रहा, "नहीं! आप नहीं समझते! वह मनुष्यों से भरा ग्रह है। क्या आप नही समझते कि आप अरबों मनुष्यों के जीवन का जुआ खेल रहे हैं!"

दूसरे मनुष्य की आवाज उस के पास तक बहुत धीमी होकर आ रही थी, मानो दूर नली में से कोई बोल रहा हो। "नहीं! यह तुम्हें कोई हानि न पहुँचायेगा। थोड़ी देर में तुम बिलकुल स्वस्थ हो जाओगे—बिलकुल स्वस्थ—और फिर मेरी ही तरह तुम भी इस स्थिति में हँसोगे।"

पृथ्वी-पुत्र को अपनी खोपडी पर हल्की-हल्की खुरेंच-सी मालूम हुई, फिर वह भी नहीं।

उसके चारों ओर घटाटोप अंधेरा छा गया। जो कि कुछ तो पूरे साल-भर बाद जा कर कही दूर हुआ, और कुछ कभी नही।

: १ :

शिशु

ने अपना खाने का बर्तन नीचे रखा और कूद कर खडा हो वह इतने जोर से कांप रहा था कि सयत रहने के लिये उसे अपने की सफेद दीवार का सहारा लेना पडा ।

"मुझे याद आ रहा है ।" वह चिल्लाया ।

उन लोगो ने उसकी ओर देखा । मनुष्यो की भनभनाहट कुछ बंद-हो गई । गदे, हजामत बढे चेहरो की, दीवार के हल्के प्रकाश मे आँखे उसकी आँखो से मिली । परन्तु उन आँखो मे उसकी के लिए कोई रुचि नही प्रतीत होती थी । उनका देखना तो केवल एव आकस्मिक आवाज़ की एक प्रतिक्रिया-मात्र थी ।

फिर चिल्लाया, "मुझे अपना कार्य याद आया है, मेरी भी नौकरी थी ।"

किसी ने कहा 'चुप रहो' और किसी ने कहा 'बैठ जाओ ।'

मुँह फिर गये । फिर से भनभनाहट शुरू हो गई ।—रिक ताकता गया । उसने फब्ती सुनी 'पागल रिक' और देखा उपेक्षा-भरे कन्धों हिलना । उसने एक मनुष्य की कनपटी पर एक अगुल-चक्र देखा, उसके लिये मानो यह सब निरर्थक था । जैसे कुछ भी उसके मस्तिष्क नही पहुँच रहा हो ।

धीरे-धीरे वह बैठ गया । उसने फिर से अपना बर्तन उठा लिया । बर्तन कुछ-कुछ चम्मच की तरह था, जिसके किनारे तेज थे और भाग मे काटे-से लगे थे । इस प्रकार यह एक ही बर्तन काटने,

खुरचने और वस्तु के अन्दर तक घुसने इत्यादि सब कार्य आसानी से कर लेता था। यह एक मिल-मजदूर के लिये पर्याप्त साधन था। उसने उल्टी ओर हैंडल पर खुदे अपने नम्बर को अन्यमनस्क भाव मे टकटकी लगा कर देखा। उसको नम्बर पढने की आवश्यकता भी क्या थी! वह तो उसको जबानी याद था। औरो के भी नम्बर थे, परन्तु उनके नाम भी थे। पर इस बेचारे का कोई नाम ही नही था। वह लोग उसको रिक कहते, जिसका अर्थ 'काईट मिल' की भाषा मे कुछ-कुछ पागल का होता था, और कभी-कभी शब्द पर ज़ोर देने के लिये वह उसको 'पागल रिक' भी कहते थे।

वह सोच रहा था, शायद उसको और अधिक याद आ जाय। जब से वह मिल मे आया है तब से पहली ही बार तो उसको कुछ याद आया है। यदि वह और अधिक सोचे! यदि वह अपने मस्तिष्क पर और अधिक ज़ोर डाले।

उसकी भूख एकदम मर चुकी थी। उसे जरा भी भूख नहीं थी। उसने बर्तन पटक, खाना अपने से दूर हटा दिया। अपनी हथेलियो से अपना मुँह छुपा, उँगलियो से अपने बालों को खीच, बड़े परिश्रम से, जहाँ से एक बात याद आई थी, वहाँ से और पिछली बाते निकालने का प्रयत्न करने लगा। पर बिल्कुल बेकार—सब कुछ धुधला था।

आखिर वह रो पडा। इधर खाने की छुट्टी समाप्त होने की घटी बज उठी।

सन्ध्या समय छुट्टी होने पर जब रिक घर जाने लगा तो वलोना मार्च उसके साथ-साथ चली। अपने विचारो मे रिक इतना खोया हुआ था कि उसे यह भी पता न चला कि कोई उसके साथ पैर मिला कर चल रहा है। वह रुक गया। उसने वलोना की ओर देखा। वलोना के बाल हल्के भूरे रग के थे। उसने अपनी दो चोटियाँ कर रखी थी, उनको

नीचे से छोटे-छोटे चुम्बकीय नग-जड़े पिनों से बांध रखा था। यह पिन बड़े ही सस्ते और इतने पुराने थे कि बहुत मैले हो चुके थे। वह साधारण-से सूती कपड़े पहिने हुए थी, जो कि वहाँ की जलवायु के लिये बिल्कुल पर्याप्त थे। इसी प्रकार रिक के वदन पर भी एक बिना आस्तीन की खुली कमीज़ थी, और उसी प्रकार की पतलून थी। वलोना ने कहा, "रिक ! मैंने सुना है, खाने के समय कुछ गोलमाल हो गया था ?"

वलोना की भाषा उसके स्तर के अनुसार गँवारू थी और उसका स्वर तेज़ था। रिक की अपनी भाषा तनिक मंजी हुई थी तथा नाक में से निकलता स्वर कोमल था। गाँव के लोग इस कारण उस पर हँसते और उसकी नक़ल उतारते थे। जब रिक इससे परेशान होता तो वलोना उसको सहानुभूतिपूर्वक दिलासा देती और कहती कि यह तो उनकी ही नासमझी है।

रिक ने धीरे से कहा, "कुछ नहीं लोना।"

"मैंने सुना है कि तुमको कुछ याद आया है। क्या यह ठीक है रिक ?" उसने फिर कहा।

वह भी इसको रिक ही कहती थी। उसको पुकारने के लिये और कोई सम्बोधन भी तो नहीं था। उसे अपना असली नाम याद ही नहीं था। यद्यपि उसने याद करने का काफी प्रयत्न किया था। वलोना ने इस प्रयत्न में उसकी पूरी सहायता की थी। एक दिन वह एक फटी-पुरानी टेलीफोन-डाइरेक्टरी उठा लाई, और उसमें से कई नाम पढ़कर रिक को सुनाये जिससे कि उसको अपना नाम याद आ जाय। परन्तु उसको नाम ज़रा भी याद न आया था।

रिक ने उसकी आँखों में देखकर कहा, "वलोना ! मुझे मिल छोड़नी ही पड़ेगी।"

वलोना सोच में पड़ गई। उसके चौड़े और चिपटे चेहरे पर परेशानी झलक उठी और उसने कहा, "मेरी समझ में यह ठीक न होगा।"

"मुझे अपने विषय मे और भी खोज करनी है।"

वलोना ने अपने होठ दबा लिये, "मेरी समझ से यह भी ठीक न होगा।"

रिक ने अपना मुँह फिरा लिया। उसे मालूम था कि वलोना की परेशानी सच्ची है। उसीने तो उसके लिये मिल में काम ढूँढा था। उसे मिल की मशीनो के विषय मे कुछ भी मालूम नही था, या शायद उसे मालूम रहा हो, पर उसे याद कुछ भी नही था। खैर, चाहे जो भी हो, परन्तु यह सच था कि लोना ने काफी ज़ोर लगाया था और कहा था कि वह शारीरिक परिश्रम के लिये बहुत छोटा है और फिर उन्होंने नि शुल्क ही उसे मशीन का काम सिखाया था। यही नही, इससे भी पहिले, उन अधकारमय दिवसो मे भी जब उसे यह तक याद नही था कि खाना किस लिये होता है, और उस समय जब वह अपने मुँह से आवाज तक नही निकाल सकता था, लोना ही ने तो उसकी माँ की तरह देख-भाल की थी तथा एक बालक की भाँति उसको खाना खिलाया था। वही तो उसे जीवित रख पाई थी।

"फिर भी मुझे खोज तो करनी ही होगी।"

"रिक! क्या फिर तुम्हारे सर मे दर्द है?"

"नही! मुझे सचमुच ही कुछ याद आया है। मुझे याद आया है कि पहले मैं क्या काम करता था—सचमुच मैं पहले······"

अचानक ही वह दुविधा मे पड गया। अब वह यही निश्चय नही कर पा रहा था कि वह वलोना को आगे कुछ बताये या नही। उसने दूसरी ओर देखा। अभी सूरज डूबने मे दो घटे की देर थी। मजदूरो के घरो की कतारे, जो मिल के चारो ओर फैली हुई थी, उसके मन में उलझन पैदा कर रही थी। परन्तु रिक को मालूम था कि ज्यों ही वह ऊपर पहुँचेगा त्योंही हरे-भरे सुनहले खेत अपनी समस्त सुन्दरता लिये सामने दृष्टिगोचर होंगे।

उसे इन खेतो की ओर देखना अच्छा लगता था। आरम्भ से ही,

अर्थात् उससे पहले जब कि उसे यह तक ज्ञात नही था कि लाल या सुनहरा रग क्या होता है, या यह कहिये कि जब उसे यह भी नही ज्ञात था कि रग क्या होता था. और वह केवल गले की घरघराहट से ही अपनी प्रसन्नता व्यक्त कर सकता था, ये खेत उसका सारा दर्द हर लिया करते थे । उन दिनो मे वलोना चुम्बकीय स्कूटर माग लाया करती, और हर छुट्टी के दिन उसको गाँव से बाहर घुमाने ले जाया करती। वह मजे मे सडक से एक फुट ऊँचे विपरीत गुरुत्व-क्षेत्र पर तब तक खिसकते जाते, जब तक कि वह आबादी से मीलो दूर न पहुँच जाते और उस समय काईट के फूलो से सुगन्धित वायु ही उनके मुँह पर थपेड़े देने को रह जाती ।

फिर वह सडक के किनारे बैठ जाते। उस समय उनके चारो ओर रंग और सुगध का ही राज्य होता। वही बैठ कर वे खाना खाते, और दिन ढलने पर ही वापस आते ।

रिक का गला भर आया । उसने कहा, "चलो लोना ! फिर खेतों मे चले ।"

"अब तो देर हो गई ।"

"अच्छा तो फिर कस्बे से बाहर ही सही ।"

लोना ने अपनी पेटी मे रखे बटुए को छुआ । रिक ने उसका हाथ पकड़ लिया और कहा "चलो, पैदल ही चले ।"

आधे घटे मे ही वह पक्की सडक छोड, धूल-रहित रेतीली कच्ची सड़क पर पहुँच गये । दोनो के बीच बडी जबरदस्त चुप्पी थी । वलोना का हृदय एक परिचित भय की अनुभूति कर रहा था । रिक के लिये जो भावनायें उसके हृदय मे थी, उनको व्यक्त करने के लिये, उसके पास न तो कोई शब्द ही थे और न ही उसने कभी इसका प्रयत्न ही किया था ।

यदि वह उसको छोड कर चला जाय तो क्या होगा ! वह छोटा-सा मनुष्य था, ऊँचाई मे उसके बराबर, और भार में तो उससे भी कम ।

कई प्रकार से अभी तक वह एक बालक के समान ही था। परन्तु दिमाग़ के निकल जाने से पहले वह अवश्य ही पढा-लिखा मनुष्य रहा होगा, और सम्भव है कोई महत्वपूर्ण मनुष्य ही हो।

वलोना ने थोडा-बहुत पढ-लिख लेने या मिल की मशीनो को चलाने लायक कारीगरी सीखने के सिवाय और कुछ भी नही सीखा था—परन्तु, उसे इतना ज्ञान अवश्य था कि हर कोई इतना बुद्धू नही होता। इस कस्बे के मुखिया को ही ले—उन्हे हर चीज का कितना ज्ञान है! उनके कारण सबको कितनी सहायता मिलती है—और महानुभावो को ही ले जो अक्सर दौरे पर आते है—उसने निकट से तो उनको कभी नही देखा; परन्तु जब वह एक बार शहर गई थी तो उसने बेहद सुसज्जित लोगो को दूर से देखा था। कभी-कभी मिल-मजदूरो को इस बात का भी मौका मिल जाता था कि वह महानुभावो को बाते करते हुए सुन सके। ये लोग कुछ भिन्न तरीके से बोलते थे—शायद कुछ जल्दी-जल्दी। उनके शब्द लम्बे होते थे तथा आवाज मधुर—और रिक!—जैसे जैसे उसकी स्मरण-शक्ति वापस आ रही थी, उसकी बोली उनकी ही जैसी होती जा रही थी।

उसके शब्द सुनकर वह डर जाती। ये शब्द अक्सर सिर-दर्द के बाद ही उसको याद आते। उनका उच्चारण भी अजीब-सा ही होता—और यदि वह उनको ठीक करना चाहती नब भी रिक उनको कभी ठीक न करता था।

उस समय भी उसको यही डर लगा रहता कि शायद रिक को आवश्यकता से अधिक याद आ जाय और वह उसे छोड कर चला जाय। वह केवल वलोना मार्च ही तो थी, पर लोग उसको 'भीमकाय लोना' भी कहते थे। उसने शादी नही की थी—शायद कभी कर भी न सके। इस भीमकाय, बडे-बडे पैरो वाली तथा काम करने वाली लडकी से कौन शादी करेगा! छुट्टी के दिनो मे दावतो के समय, जब लडके उसको उपेक्षा भरी-नज़रो से देख कर मुँह फेर लेते तो मन-ही-मन कुढ

कर रह जाने के सिवाय अब तक वह कर ही क्या सकी थी ? शायद वह किसी बालक को कभी जन्म भी न दे पाये—क्यो कि उसके होगा ही कैसे ! न ही वह स्तनपान करा सकेगी । और लड़कियाँ जब अपने बालको को दूध पिलातीं तो वह उनको ईर्ष्या-भरी दृष्टि से देख कर रह जाती । लोग उससे कहते 'अब तुम्हारी बारी है लोना ।' —'तुम्हारे कब बच्चा होगा लोना ?'

वह सुनकर केवल मुँह फेर लेती थी ।

परन्तु जब रिक आया था, तब वह एक बालक के समान ही तो था; उसको अपने हाथ से खिलाना पडता था, बाहर घुमाना होता था, बच्चे की तरह थपथपाकर सुलाना पडता था । कस्बे के सारे बच्चे उसके पीछे ताली बजाते हँसते हुए दौडते "वाह ! लोना को मित्र मिल गया है—लोना का मित्र एक पागल लडका है !"

बाद मे जब रिक ने पहला कदम अपने आप रखा था तो उसको कितनी प्रसन्नता हुई थी । मानो ३१ साल का वयस्क न होकर डेढ साल का उसका अपना बालक था और जब वह बाहर सडक पर निकला था तो सब बच्चे उसके पीछे ताली बजाते हुए दौडे थे । और जब उनको देखकर उसने मुँह छिपा लिया था, क्यो कि वह बेहद डर गया था, तो लोग कितना हँसे थे ! सैकडो बार उसने लोगों को डाट कर भगाया था । उसके बडे-बडे मुक्को को देख कर वे लोग भाग गये थे । आदमी तक उसके मुक्को से डरते थे । जब वह पहली बार रिक को लेकर मिल में गई थी तो अपने दोनो के विषय में किसी अश्लील बात को सुनते ही उसने मेट को एक धक्के से गिरा दिया था । उसके लिये उसको सजा भी मिली थी और यदि मुखिया बीच में न पडता तो उसको महानुभावों की अदालत तक में जाना पड जाता । परन्तु मुखिया ने यह कहकर छुड़वा दिया था कि उसको उकसाया गया था ।

वह रिक की स्मरण-शक्ति पर प्रतिबध लगाना चाहती थी । उसे मालूम था कि रिक को समर्पित करने के लिए उसके पास कुछ नहीं है ।

यो तो यह केवल उसका स्वार्थ ही था, पर फिर भी वह यही चाहती थी कि रिक सदा ही ऐसा रहे। कदाचित् यह केवल इसीलिये था कि आज तक कोई भी उस पर इतना निर्भर न रहा था। शायद वह अतीत के उस एकाकी जीवन मे वापस जाने के नाम से कॉप जाती थी।

"तुम्हे पूर्ण विश्वास है, तुम्हे कुछ याद आ रहा है ?"

"हाँ।"

वे लोग खेतो मे पहुँच कर रुक गये थे। अब अस्त होते हुए सूर्य की लालिमा खेतो के लाल रग को और भी लाल कर रही थी। तनिक देर मे ही सध्या की मन्द सुगन्धित समीर सबको उद्वेलित करना आरम्भ कर देगी। खेतो की छोटी-छोटी नहरे अपना नीला वर्ण छोडकर सूर्य की लालिमा मे मिलकर बैगनी रूप धारण कर चुकी थी।

रिक ने कहा, "मैं अपनी याद पर भरोसा कर सकता हूँ—कर सकता हूँ न लोना ? देखो न ! तुमने मुझे बोलना थोडे ही सिखाया था, मुझे शब्द अपने आप ही तो याद आये थे ! आये थे न लोना ?"

उसने अनिच्छापूर्वक हामी भरी।

"मुझे वह दिन भी याद है जब मैं बोल नही सकता था और तुम मुझे खेत मे लाती थी। मुझे सदैव ही नई-नई बाते याद आती रहती है। कल मुझे याद आया था कि एक बार तुमने मेरे लिये काईट की मक्खी पकडी थी। तुमने उसे हाथो मे बद कर लिया था और मैंने उसको अधेरे मे कभी बैंगनी, कभी नारगी रोशनी निकालते देखा था। प्रसन्न हो कर जब तुम्हारे हाथ से मैंने उसको छीनने का प्रयत्न किया था तो वह उड गई थी और मैं रो पडा था। मुझे तब यह भी ज्ञात नही था कि वह काईट कीट है और न ही उसके विषय मे कुछ जानता था—पर वह बात मुझे पूर्णतया याद है। तुमने तो मुझे इस विषय मे कभी कुछ नही बताया—है न लोना ?"

लोना ने अपना सिर हिला दिया।

"परन्तु ऐसा हुआ था न ? मुझे ठीक याद है—है न लोना ?"

"हाँ रिक ।"

"और अब मुझे अपने विषय मे बाते याद आ रही है । वह अवश्य पहले की ही होगी ?"

"जरूर होगी", सोचकर लोना का हृदय भर आया । उसका यह जीवन वर्तमान जीवन से कितना भिन्न रहा होगा—शायद वह किसी दूसरे ससार का ही रहने वाला हो—यह वह जानती थी, क्योकि एक शब्द, जो रिक को कभी भी याद नही आया, वह काईट था । यह शब्द जो कि सारे फ्लोरिना पर सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण था, और लोना को, वह शब्द रिक को सिखाना पडा था । वह अवश्य ही दूसरे ससार का रहा होगा ।

"अच्छा ! तुम्हे क्या याद आया है ?" लोना ने पूछा ।

इस प्रश्न से न जाने क्यो रिक का सारा उत्साह फीका पड गया और उसने मरी-सी आवाज मे कहा, "नही लोना, कुछ नही, केवल इतना ही कि मेरा भी कुछ काम था, और मुझे मालूम है वह क्या था । बस, इतना ही ।"

"वह क्या था ?"

"मैं 'कुछ नही' का विश्लेषण करता था ।"

वह एकदम भौचक रह गई । उसने एक क्षण के लिये अपना हाथ उसके माथे पर रखा—रिक ने चिढ कर मुँह फिरा लिया । लोना ने पूछा, "फिर से तो सर मे दर्द नही होने लगा ? रिक, सच बताओ, अब तो हफ्तो से तुम्हारे सर मे दर्द नही हुआ ।"

"मैं ठीक हूँ । मुझे तग मत करो ।"

लोना का उतरा हुआ चेहरा देख उसने सात्वना-भरे स्वर मे कहा, "मेरा यह अर्थ नही था लोना कि तुम मुझे तग करती हो—मेरा मतलब है, मेरी तबियत ठीक है—परेशान मत हो !"

लोना का मन परेशान था, वह खीझी-सी बोली, "अच्छा विश्लेषण का क्या अर्थ है ?"

रिक को ऐसे भी शब्द ज्ञात थे जो उसको नही मालूम थे। यह सोचकर कि वह कितना विद्वान् रहा होगा, इस समय उसे बडी दीनता का अनुभव हो रहा था।

रिक ने एक क्षण सोचकर कहा, "इसका अर्थ है किसी वस्तु को अलग-अलग कर देना। जैसे किसी मशीन को यह देखने के लिये कि उसमे क्या खराबी है, उसे अलग अलग कर दिया जाता है।"

"ओह! यह तो ठीक है। पर किसी भी वस्तु का विश्लेषण न करने की नौकरी कैसे किसी को मिल सकती है ?"

"पर यह मैने कब कहा कि मैं किसी भी वस्तु का विश्लेषण नहीं करता था। मैने कहा कि मैं 'कुछ नही' का विश्लेषण करता था।"

"पर बात तो वही है।" जिस बात का उसे डर था, वह आखिर सामने आ ही गई। वह रिक के सामने बेवकूफ-सी लगने लगी न ? और अब वह खीझ कर उसके पास से भाग जायगा।

"नही, बिल्कुल नही।" रिक ने एक लम्बी साँस खीचकर कहा, "मैं कैसे समझाऊँ लोना ! मुझे स्वय उस विषय मे केवल इतना ही याद आ रहा है। परन्तु यह कोई महत्त्वपूर्ण कार्य रहा होगा, ऐसा ही लगता है। मैं एक अपराधी कदापि नही हो सकता।"

वलोना की आँखे गीली हो उठी थी, वह सोच रही थी कि उसे रिक को अपराधी वाली बात नही बतलानी चाहिये थी। पर उस समय तो उसने यही सोच कर बतलाई थी कि यदि यह सत्य हो तो रिक को सावधान कर देना ही उचित होगा। परन्तु अब लगता है मानो उसके मन मे पहले से ही चोर था, शायद उस समय भी वह उसको अपने आचल से बाँधे रखना चाहती थी।

यह उस समय की बात है कि जब रिक ने पहली बार बोलना आरम्भ किया था। यह इतना आकस्मिक था कि वह डर गई थी। वह मुखिया से भी इस विषय मे कुछ न कह सकी थी। अगली छुट्टी के दिन उसने अपने जीवन-भर की पूँजी मे से पाँच सिक्के निकाले थे, उन सिक्को का

होता भी क्या ! उनको दहेज मे लेने वाला था भी कौन ! फिर रिक को वह शहर के डाक्टर को दिखाने ले गई थी। उसके पास डाक्टर का नाम और पता एक कागज पर लिखा रखा था। इस पर भी उसको डाक्टर का ठिकाना ढूंढने मे पूरे दो घटे लग गये थे। क्यो कि उसे उन खम्भो के गोरख-धधे मे जो ऊँची नगरी को धूप मे थामे हुए थे, कुछ भी पता न लगता था।

जिस समय डाक्टर ने भयानक और अजीब यन्त्रो से रिक का निरीक्षण किया था, वह जबरदस्ती ही वहाँ खडी रही थी। और जब डाक्टर ने रिक का सिर दो धातु-यन्त्रो के बीच रखा था और वह ऐसे चमकने लगा था जैसे काईट का कीट, तो वह एकदम घबरा उठी थी और डाक्टर के कार्य मे बाधा डालने लगी थी, इस पर डाक्टर ने उसे बाहर निकलवा दिया था।

आधघटे बाद डाक्टर परेशान-सा बाहर आया था। यद्यपि उस डाक्टर ने निचले शहर मे भी अपनी दूकान खोल रखी थी, पर फिर भी वह एक महानुभाव ही था। फिर लोना का उसकी सूरत देख डर जाना अत्यन्त स्वाभाविक था। डाक्टर की आँखों से दया टपक रही थी। वह एक छोटे से तौलिये से हाथ पोंछ रहा था, जिसको कि उसने मैले मे फेक दिया था, यद्यपि देखने मे वह बिल्कुल साफ था।

"तुम इस आदमी को कैसे जानती हो ?" उसने पूछा था। तब उसने डाक्टर को सावधानी से सक्षेप में सारी कहानी सुनाई। पर उसने मुखिया तथा सतरियों का बिल्कुल जिक्र न किया था।

"तब तुम्हे इसके विषय मे कुछ भी नहीं मालूम ?"

"इससे पहले का कुछ भी नही।" उसने सर हिला कर उत्तर दिया।

"इस मनुष्य पर मस्तिष्क-वेधन यत्र का प्रयोग हुआ है। जानती हो, वह क्या है ?"

पहले तो उसने अपना सर हिलाया था और फिर पूछा था, "क्या ऐसा पागल मनुष्यो के साथ करते है ?"

"हाँ ! और अपराधियो के साथ। ऐसा उनके मस्तिष्क को बदलने के लिये किया जाता है। इससे उनका दिमाग सुधर जाता है और वे कत्ल व चोरी करना भूल जाते है। कुछ समझ मे आया ?"

उसकी समझ मे आ गया था। उसे गुस्सा भी बहुत आया था और वह अत्यन्त क्रोधित हो बोली थी, "पर रिक कभी भी चोरी नही कर सकता। वह किसी को भी हानि नही पहुँचा सकता।"

"अच्छा ! तुम उसे रिक कहती हो।" डाक्टर को बडा मजा आया। "अच्छा। सुनो ! तुम्हे कैसे मालूम कि तुमसे मिलने के पूर्व वह क्या करता था। अब उसके दिमाग की हालत देख कर कुछ भी नही कहा जा सकता। दिमाग की सफाई पूरी तरह तथा बडी क्रूरता से की गई है। मैं यह भी नही बतला सकता कि इसका कितना दिमाग पूरी तरह निकाल दिया गया है और कितना धक्के से थोडे समय के लिये खराब हो गया है। मेरा मतलब है कि जैसे-जैसे समय व्यतीत होता जायगा, इसके बोलने की भाँति कुछ फिर वापस आ जायगा, परन्तु सारा कभी भी न आ सकेगा। अभी इसके ऊपर निगाह रखनी होगी।"

"नही ! नही ! इसे मेरे समीप ही रहने दीजिये। मैं इसको अच्छी तरह रख रही हूँ डाक्टर !"

डाक्टर की भौहे कुछ सिकुड गईं, पर उसका स्वर और भी कोमल हो गया था, "मेरी बच्ची ! मैं तुम्हारे भले की ही सोच रहा हूँ। हो सकता है इसके दिमाग की सारी खराबियाँ दूर न हुई हो, और फिर तुम स्वयं भी यह नही चाहोगी कि किसी समय यह तुम्हे धोखा दे।"

उसी समय एक नर्स रिक को बाहर लाई थी। वह एक बच्चे की भाँति उसे प्यार से शात रखने का का प्रयत्न कर रही थी। रिक सर पर एक हाथ रख कर पागल-सा ताक रहा था। फिर वलोना पर उस की दृष्टि पडी थी और वह हाथ फैलाकर धीमे स्वर मे चिल्लाया था, "लोना !"

लोना ने उसका सर अपने कधे पर रख, हृदय से चिपका लिया था

और डाक्टर से कहा था, "डाक्टर ! चाहे कुछ भी हो जाय, यह मुझे धोखा नही दे सकता।"

डाक्टर ने कुछ सोच कर कहा था, "इस केस की रिपार्ट मुझे करनी ही होगी। मेरी समझ मे नही आता, इस हालत मे वह पुलिस से कैसे भाग निकला।"

"आपका मतलब है, वे लोग इसे ले जायगे ?"

"हाँ, शायद।"

"डाक्टर दया करें। ऐसा न करें !" उसने अपने रूमाल से पाँचों सिक्के निकालते हुए कहा, "आप यह सब ले सकते है डाक्टर ! मैं उसकी देखभाल ठीक से करूँगी। वह किसी को भी हानि न पहुँचायेगा। मै जिम्मेदारी लेती हूँ।"

डाक्टर ने उसके हाथ के सिक्के देखकर कहा था, "तुम मिल-मजदूर हो न ! वह तुम्हे कितना वेतन देते है ?"

"दो दशमलव आठ सिक्के।"

"बच्ची, इन्हे अपने पास ही रहने दो। मुझे इनकी कोई जरूरत नही।"

"आप किसी से कहेंगे तो नही डाक्टर ?" उसने सिक्के वापस रखते हुए पूछा।

"परन्तु ऐसा तो करना ही होगा। यह कानून जो है।"

वह भारी हृदय लिये, आँखो मे आँसू भरे, रिक को अपने से चिपकाये वापस लौटी थी।

अगले सप्ताह 'हाइपर्र विडियो'—अधिक शक्ति के टेलीविजन पर उसने समाचार सुना था कि स्थानीय वाहन शक्ति किरणो मे गडबड हो जाने से जाइरो चक्कर (एक प्रकार का चक्करदार यान) फट गया और एक डाक्टर मर गया। डाक्टर का नाम परिचित-सा लगा था उसे और अपने कमरे मे जाकर जब उसने कागज से मिलाया तो यह नाम उसी डाक्टर का था।

उसे दु:ख हुआ था क्योंकि वह डाक्टर भला था। उसे उसका नाम किसी और मिल-मजदूर ने बताया था। उसने यह भी कहा था कि यह डाक्टर एक महानुभाव होते हुए भी मजदूरो से सहानुभूति रखता था। उसका अपना अनुभव भी यही था, पर साथ ही उसे प्रसन्नता भी हुई थी कि उसे रिक की रिपोर्ट करने का अवसर न मिला होगा। और फिर रिक को ले जाने भी कोई नहीं आया था।

बाद मे जब रिक अधिक समझने लगा तो उसने डाक्टर की बातें बतलाई थी, जिससे कि वह कही जाने का साहस न कर सके।

रिक उसे हिला रहा था। वह एकदम चौक पडी।

"तुम सुनती हो! यदि मेरी कोई महत्वपूर्ण नौकरी थी तो मैं अपराधी कदापि नही हो सकता।"

"क्या तुम कुछ गडबड नही कर सकते थे?" उसने हिचकिचाते हुए पूछा, "बडे होने के उपरान्त भी तो गडबड हो जाती है—महानुभाव भी कर देते हैं।"

"मुझे विश्वास है मैंने नही की थी। क्या तुम नही समझती कि मुझे अपने विषय मे खोज करनी चाहिए जिससे कि दूसरे भी मेरे निरपराध होने का विश्वास कर सके। मुझे मिल छोडनी ही पडेगी। और कोई रास्ता नही है। मुझे अपने विषय मे पता लगाना ही होगा।"

वह आतंकित हो उठी, "नही रिक! ऐसा न करना। तुम्हे इसकी आवश्यकता भी क्या है! माना कि तुम 'कुछ नहीं' का विश्लेषण करते थे, पर इस विषय मे और पता लगाकर क्या करोगे?"

"क्योंकि मुझे एक बात और याद आ रही है।"

"वह क्या?"

"मै तुम्हे नही बतलाना चाहता।" उसने धीमे से कहा।

"तुम्हे किसी को अवश्य बतलाना चाहिए। यदि तुम फिर भूल गये तो?"

रिक ने उसकी बाँह पकड़ ली, "हाँ, तुम ठीक कहती हो लोना। यदि मै फिर भूल गया तो तुम मेरी याद बनी रहना। अच्छा! लोना, किसी से कहना नही।"

"अच्छा रिक!"

रिक ने अपने चारो ओर देखा। यह ससार बडा ही सुन्दर था। वलोना ने एक बार उसे बताया भी था कि ऊँची नगरी मे एक स्थान पर लिखा है कि फ्लोरीना नीहारिका का सबसे सुन्दर ग्रह है। चारो ओर देख कर उसे लगा कि यह बात सोलह आने सच है।

"बडी ही भयानक बात है लोना, पर जब मुझे याद आता है तो ठीक ही याद आता हैं। है न? यह आज दोहपहर को ही याद आया था।"

"हाँ-हाँ!"

"इस ससार का हर कोई मर जायगा। फ्लोरीना का हर प्राणी।" उसने भय से लोना की ओर देखते हुए कहा।

: २ :

कस्बे का मुखिया

मारलीन टेरेन्स अपनी अलमारी से पुस्तक-फिल्म निकाल रहा था कि दरवाज़े की घटी बजी। उसके चेहरे का मोटा-मोटा नक्शा, जिस पर कि अभी तक सोच का भाव था, घटी की आवाज सुनते ही एकदम सावधानी में परिणत हो गया। उसने एक हाथ से बाल सवारते हुए कहा "एक मिनट।"

उसने फिल्म को यथास्थान रख दिया और एक बटन दबाया। एक तख्ता अलमारी के ऊपर आ गया और अब अलमारी व दीवार मे कुछ भी भेद न था। सीधे-सादे मिल-मजदूरो व किसानो तथा अन्य आदिवासी लोगो के लिये तो यह एक गर्व का विषय था कि उनमे से एक के पास, चाहे वह केवल उसी ग्रह पर जन्मने का ही साथी हो, ऐसी पुस्तक-फिल्मे थी। पर फिर भी उनका अधिक दिखावा करना खतरे से खाली न था।

इनको दिखाने से शायद उन लोगो की बद जबाने और भी बद हो जाती। वे पीठ-पीछे भले ही इन वस्तुओ की शेखी बघारते हो, पर यदि वे लोग प्रत्यक्ष मे ये पुस्तके उसके पास देख ले, तो वह उनको अपना-सा न लग कर एक महानुभाव ही लगेगा। फिर महानुभाव भी तो हैं। यद्यपि इसकी कोई भी सम्भावना नही है कि उनमे से कोई भी उसके घर आयेगा, पर यदि सयोग से कोई आ ही जाय और उसके सामने यह पुस्तक-फिल्मे पड जाय तो गजब ही हो जायगा। वह मुखिया था, इस कारण उसको कुछ विशेषाधिकार मिले हुए थे, पर उनका दिखावा किसी भी प्रकार उचित न था।

"मैं आ रहा हूँ ।" वह फिर चिल्लाया ।

वह दरवाजे तक गया । उसने अपने कोट के बटन बद किये । देखो न, उसके कपडे तक महानुभावो से मिलते थे । कभी-कभी तो वह यह भी भूल जाता था कि वह फ्लोरीना मे पैदा हुआ एक आदिवासी था ।

वलोना मार्च दरवाजे पर खडी थी । उसने झुककर सलाम किया ।

टेरेन्स ने दरवाजा खोला, "अन्दर आ जाओ वलोना । अब तो कर्फ्यू का समय हो गया, तुम इस समय कैसे ? आशा है सतरियो ने तुम्हे नही देखा होगा ।"

"नही । मेरी समझ मे तो नही ।"

"चलो, कम से कम आशा तो यही की जाय । तुम्हारा रिकार्ड तो आगे ही खराब है । तुम्हे मालूम है न ?"

"जी मुखियाजी ! और आपने अब तक मेरे लिये जो कुछ किया है उसके लिये मैं अत्यन्त आभारी हूँ ।"

"खैर, कोई बात नही । आओ यहाँ बैठो । कुछ खाओगी ?" वह एक कुर्सी के किनारे तन कर बैठ गई ।

"नही मुखिया जी । मैं खा कर आई हूँ ।" गाँव मे यह शिष्टाचार था कि लोग खाने के लिये कहे; परन्तु खा लेना अत्यन्त ही अशिष्टता थी । टेरेन्स को यह मालूम था, इस लिये उसने जोर नही दिया ।

"हाँ वलोना, अब कौनसी परेशानी है ? क्या फिर रिक का ही कोई किस्सा है ?"

वलोना ने अपना सिर हिलाया । परन्तु डर के मारे आगे नही बोल सकी ।

"क्या फिर मिल में कोई गडबडी हो गई ?"

"नहीं मुखियाजी, ऐसी बात नही है ।"

"तो क्या फिर से सर मे दर्द है ?"

"नही मुखियाजी !"

टेरेन्स के चेहरे पर झुंझलाहट आ गई । "तो फिर क्या मैं ज्योतिषी

हूँ जो तुम्हारी परेशानी के बारे मे मालूम कर लूँगा ! बताओ न, तुम्हें क्या परेशानी है ? नही तो मै कैसे तुम्हारी सहायता करूँगा ! तुम्हे मदद चाहिये, चाहिये न ?"

"हाँ मुखिया जी।" और फिर वह रो पडी, "मैं आपको कैसे बतलाऊँ ! बात एकदम पागलपन जैसी लगती है।"

टेरेन्स का हृदय सहानुभूति से भर उठा। उसका मन चाहा कि वलोना की पीठ थपथपा कर उसे दिलासा दे। पर ऐसा उचित न होता, और न वह उसको हाथ ही लगाने देती। वह सदैव की भाँति कुर्सी के किनारे पर, अपने हाथ अपने कपडो मे छिपाये तनी बैठी थी और घबराहट के कारण अपनी उँगलिया मरोड रही थी।

"तुम बताओ न ! मैं सब सुनूँगा।"

"आपको याद है न मुखियाजी, जब मैं आपके पास आई थी और आपको शहर के डाक्टर के विषय मे बतलाया था कि उसने क्या-क्या कहा था।"

"हाँ, वलोना ! मुझे याद है। और मुझे यह भी याद है, मैंने कहा था कि बिना मुझसे आज्ञा लिये आगे ऐसा कुछ न करना। तुमको भी याद है न ?"

उसकी आँखे फैल गई। उसे मुखिया का उस दिन का क्रोध अच्छी तरह याद था, "नही मुखिया जी ! मै ऐसा काम कभी नही कर सकती। बस, केवल बात इतनी सी है कि मै भी आपको याद दिलाना चाहती हूँ कि आपने कहा था कि आप रिक के मेरे पास रहने मे पूरी सहायता करेगे।"

"मैं ऐसा अवश्य करूँगा। क्या सतरी उसके विषय मे पूछताछ कर रहे थे ?"

"नही-नही मुखियाजी। क्या आपके विचार मे ऐसा होगा ?"

"मुझे पक्का विश्वास है कि ऐसा नही होगा।" वह अधीर होता जा रहा था, "वलोना, बताओगी भी या पहेली ही बुझाती रहोगी ?"

उसकी आँखो मे आँसू भर आये, "मुखियाजी, वह मुझे छोड कर जाना चाहता है। उसे रोकिये न !"

"वह तुम्हे क्यो छोड कर जाना चाहता है ?"

"वह कहता है, उसे पिछली बाते याद आ रही है ?"

टेरेन्स के चेहरे पर एक चमक आई। उसने वलोना की ओर झुक कर उसका हाथ पकड लिया और कहा, "बाते याद आ रही हैं ?—क्या बाते ?"

टेरेन्स को वह दिन याद आया जब रिक मिला था। उसने देखा था कि बच्चे गाँव के बाहर एक नाले के किनारे जमा हो रहे थे और अपनी मीठी नन्ही आवाजो मे उसको पुकार रहे थे।

"मुखियाजी ! मुखियाजी !"

वह दौडकर उनके निकट गया था। "क्या है रेजी ?" उसने पूछा था। जब वह यहाँ बदल कर आया था तभी उसने ध्यानपूर्वक सब बच्चों के नाम याद कर लिये थे। इससे उनकी मातायें बडी प्रसन्न हुई थी और शुरू से ही वह लोकप्रिय हो गया था।

रेज़ी को उबकाई-सी आ रही थी, "मुखियाजी ! यहाँ आ कर देखिये न !" यह कह कर उसने किसी सफेद बिलबिलाती वस्तु की ओर उँगली उठाई। वह रिक ही था। सब बच्चो ने एक साथ ही अपनी-अपनी बात कहनी शुरू कर दी थी। टेरेन्स बडी कठिनाई से यह समझ पाया कि ये लडके आँख-मिचौनी खेल रहे थे। रेज़ी ने, जो कि बारह साल का लडका था, कुछ मिमियाने की आवाज़ सुनी, और वह सावधानीपूर्वक वहाँ गया। उसने सोचा था कि कोई जानवर होगा या शायद कोई चूहा हो, उसे पकडने मे बडा मज़ा आयेगा। पर वह तो रिक निकला।

रिक की उस अजीब-सी हालत को देख कर लडकों की तबियत मिचलाने लगी, फिर भी वे उसके पास से हट नही पा रहे थे। वह एक वयस्क आदमी था, करीब-करीब नगा—मुँह से झाग निकल रहे थे—

उसके हाथ-पैर अपने बस मे नही थे। आँखे निरुद्देश्य इधर-उधर देख रही थी। चेहरा धूल से भरा था, आवाज धीमी-धीमी मिमियाने की सी निकल रही थी। टेरेन्स को देख कर उसकी आँखे कुछ देर उसके चेहरे पर टिकी और फिर धीरे-धीरे उसने अपना अँगूठा मुँह मे डाला।

एक बालक जोर से हँस पडा था, "देखिये न मुखियाजी! यह तो अपना अँगूठा चूस रहा है।"

उस अचानक की आवाज़ से वह अत्यत भयभीत हो गया था। वह एक ओर को सिकुड कर खडा हो गया। वह धीमे से कराहा था, पर उसका अँगूठा जहाँ-का-तहाँ ही रह गया था।

टेरेन्स ने कहा था, "अच्छा बच्चो! अब तुम जाओ। तुम्हे इन काईट के खेतो मे नही खेलना चाहिये। किसानो ने यदि तुम्हे पकड लिया तो अच्छी मरम्मत होगी। जल्दी भागो और इस विषय मे किसी से कुछ मत कहना। हाँ, रेजी तुम श्री जेनकस को बुला लाओ।"

जेनकस को उस गाँव का डाक्टर कहा जा सकता था। क्योकि वही वहाँ पर ऐसा था जो इस विषय को कुछ समझता था। वह शहर के किसी महानुभाव डाक्टर की दुकान मे कपाउडर रह चुका था, और इसी बुनियाद पर उसको किसानी या मिल-मजदूरी से छुट्टी मिल गई थी। वह कोई बुरा भी सिद्ध नही हो रहा था। वह बुखार देख सकता था, गोलियाँ खिला सकता था, इजेक्शन लगा सकता था। और सब से बडी बात तो यह थी कि वह यह बतला सकता था कि शहर के डाक्टर के पास जाने की आवश्यकता किस समय है। इस तरह वही अभागे, जिन्हे या तो गर्दन-तोड बुखार या एपेण्डिक्स, या ऐसी ही कोई बीमारी हो, तकलीफ पाते थे। पर वह भी अधिक दिन नही, या तो वे ठीक हो जाते थे या भगवान के पास पहुंच जाते थे। मिल का फोरमैन भी जेनकस की हर बात माफ कर देता था।

जेनकस और टेरेन्स ने रिक को उठा कर स्कूटर गाडी मे डाला और फिर उसे गाँव ले गये। उन दोनो ने उसके ऊपर जमी धूल व थूक

को साफ किया। बालों को काटना ही पडा, क्यो कि वे तो रस्सी जैसे बने हुए थे। जेनकस ने उमको साफ करके उसकी पूरी परीक्षा की।

जेनकस ने कहा, "कोई छूत का रोग नही है। इसे बराबर खाना खिलाया गया है क्यो कि हड्डियाँ नही निकल रही है। पर मुखिया, मेरी समझ मे यह नही आ रहा कि यह यहाँ आ कैसे गया, और अब इसका क्या किया जाय। क्या तुम इसके विषय मे कुछ जानते हो ?"

उसने यह प्रश्न ऐसे लहजे मे किया कि मानो वह जानता हो कि टेरेन्स के पास इसका कोई उत्तर नही है। यह सच भी है कि यदि किसी गाँव मे पचास साल तक कोई मुखिया ही न रहा हो और फिर अकस्मात् एक आदमी मुखिया बन कर आ जाय तो वहाँ के निवासियो मे उसके प्रति सदेह स्वाभाविक होता है। टेरेन्स ने भी उसको चुपचाप यह समझ कर स्वीकार कर लिया कि यह कोई व्यक्तिगत आरोप नही है।

टेरेन्स ने कहा "नही ! मुझे नही मालूम।"

"यह तो चल भी नही सकता, एक कदम भी नही; किसी ने अवश्य ही इसको वहाँ रखा होगा। यह तो गोदी का बच्चा जैसा है मानों इसका सारा दिमाग निकल गया हो।"

"क्या कोई ऐसी बीमारी है जिससे ऐसा हो जाता है ?"

"मेरी जानकारी मे तो नही है। किसी दिमाग की खराबी से ऐसा हो सकता है, परन्तु मुझे उसके विषय मे कुछ भी नही मालूम। दिमागी बीमार को तो मैं शहर भेज देता हूँ। तुमने इसको पहिले कभी देखा है मुखिया ?"

टेरेन्स ने मुस्करा कर धीमे से उत्तर दिया, "मुझे आये तो अभी महीना भर हुआ है।"

जेनकस ने एक आह भर कर रूमाल उठाते हुए कहा, "हाँ ! पहला मुखिया ! वह बडा अच्छा था। मुझे इस गाँव मे साठ साल हो गये हैं पर मैंने उसको कभी नही देखा। जरूर किसी दूसरे गाँव का होगा।"

जेनकस एक मोटा मनुष्य था। ऐसा लगता था जैसे वह जन्म से ही

ऐसा हो; और किसी को जब कोई मेहनत का कार्य न हो तो उसकी यह हालत हो ही जाती है जैसी इस समय जेनकस की थी। वह एक-एक शब्द बोलने के बाद थक जाता था और हाँफते हुए मुँह से पसीना भी पोछता जाता था।

"मेरी समझ मे नही आता कि सतरियो से क्या कहूँगा।"

सतरी भी पहुँच गये। पहुँचते क्यो न! बच्चो ने यह बात अपने माँ-बाप से कही थी और उन्होने एक-दूसरे से। गाँव का जीवन नीरस तो होता ही है, इसी से इतनी सी बात भी एक हगामा पैदा करने के लिए पर्याप्त थी। और इस हगामे से सतरियो को सूचना मिलना स्वाभाविक था।

सतरी 'फ्लोरीना सतरी दल' के सदस्य होते थे। ये न तो फ्लोरीना के वासी थे और न महानुभाव ग्रह के सार्क के थे। ये लोग भाडे के टट्टू थे, जो कि अपने वेतन के बदले मे फ्लोरीना पर कानून की रक्षा करते थे; क्यो कि न तो उनका फ्लोरीना-वासियो से कोई सम्बन्ध था और न सहानुभूति। यहाँ पर दो सतरी थे। वे दोनो तथा मिल का फोरमैन तीनो ही जाँच करने आये थे।

सतरी तो इस ओर से उदासीन ही थे। एक मस्तिष्क-रहित पागल उनके दिन भर के कार्यक्रम का एक अग हो सकता है, पर कितना नीरस था यह अग! एक ने फोरमैन से कहा था, "अच्छा! तुम्हे इसको पहिचानने मे कितना समय लगेगा? कौन है यह मनुष्य?"

फोरमैन ने मुस्तैदी से सर हिलाते हुए कहा था, "मैने उसे यहाँ पहले कभी नही देखा। मै नही जानता यह कौन है।"

सतरियो ने जेनकस से पूछा था, "इसके पास कोई कागज-पत्र है?"

"नही जनाब! इसके ऊपर एक चिथडा लिपटा था। वह मैने छूत के डर से जला दिया है।"

"इसको क्या हुआ है?"

"जितना मै समझ सका हूँ, इसके दिमाग ही नही है।"

इस बात पर टेरेन्स सतरियो को बाहर ले गया था। वे लोग इस समय ऊब रहे थे और जल्दी से वश मे आ सकते थे। जो सतरी अब तक प्रश्न कर रहा था, अपनी नोटवुक जेब मे रख कर बोला, "यह तो रिपोर्ट करने लायक भी नही है। इसमे हमे क्या करना है। अब इस मनुष्य से छुटकारा पा लेना चाहिये।" और फिर वे चले गये थे।

फोरमैन रह गया था। उसके बाल और मूछे बडी-बडी थी। वह पाँच साल से बराबर मिल में अनुशासन रखता आया था। उसकी जिम्मेदारी थी कि मिल अपना कोटा यथा-समय पूरा कर दे।

"सुनो!" उसने ज़ोर देकर कहा, "अब क्या किया जाय? मिल के सारे मजदूर बातो मे लग गये है। कोई भी काम नही कर रहा है।"

"इसको शहर के अस्पताल मे भेज देना चाहिये।" जेनकस ने कहा, "मैं कुछ नही कर सकता।

"शहर मे!" फोरमैन चकित हो उठा, "पर पैसा कौन देगा? इसका तो यहाँ कोई भी नही है।"

"जहाँ तक मुझे मालूम है, कोई नही है।" जेनकस ने कहा, "फिर हम क्यो पैसे दे? पता लगाओ, यह कहाँ का है। वही पैसे भरेगे।"

"पर हम लोग पता कैसे लगायेगे?"

फोरमैन ने कुछ देर सोचा, "अच्छा! तो फिर सतरी के कथनानुसार इससे छुटकारा पा लेना चाहिये।"

टेरेन्स ने बीच मे रोका, "ऐ सुनो! तुम्हारा मतलब क्या है?"

"यह तो मृतक के समान ही है। यह तो इसके ऊपर कृपा ही होगी।"

"तुम किसी जीवित व्यक्ति की हत्या नहीं कर सकते।"

"अच्छा तो तुम्ही बताओ, क्या किया जाय?"

"क्या गाँव का कोई भी आदमी इसकी देखभाल नही कर सकता?"

"कौन करना चाहेगा? तुम करोगे?"

टेरेन्स ने उस बेइज्ज़ती को चुपचाप सहन करते हुए कहा "मुझे

और भी बहुत कार्य करने होते है।"

"सो तो सभी को करने है। मै इस पागल की देखभाल के लिये, मिल के किसी भी मजदूर को कार्य की उपेक्षा न करने दूँगा।"

टेरेन्स ने कहा, "अच्छा फोरमैन, होश में आओ, एक शर्त रही। यदि इस बार तुम्हारा कोटा पूरा न हुआ तो मै महानुभावो से कह दूँगा कि तुम्हारे आदमी इस बेचारे गरीब की देखभाल कर रहे थे और तुम्हें माफी मिल जायगी। और यदि ऐसा न हुआ तो मै कह दूँगा कि कोटा पूरा न होने का कोई वाजिब कारण न था—यदि तुम कोटा पूरा न कर सके तो।"

फोरमैन को बहुत बुरा लगा। इस मुखिया को आये अभी महीना भी नही हुआ और लोगो पर कैसा रोब जमाने लगा। उसने सोचा क्योकि इसके पास महानुभावो का प्रमाण-पत्र है, अतएव इससे बनाकर ही रखना होगा।

"पर इसको रखेगा कौन ?" उसके मन मे एक सशय-सा उत्पन्न हुआ और उसने कहा, "मै नही रख सकता। मेरे अपने ही तीन बच्चे और एक पत्नी है।"

"मैने यह कब कहा कि तुम रखो !"

टेरेन्स ने खिडकी के बाहर झाका। सतरी चले गये थे और गाँव के आदमी उसके घर की ओर बढे चले आ रहे थे। उनमे अधिकतर बच्चे थे या फिर किसान थे। थोडे से मिल-मजदूर भी थे जो कि अपना काम छोडकर भाग आये थे। इस भीड के किनारे पर खडी इस बडी लडकी को टेरेन्स ने देखा। वह इसको महीने भर से बराबर देखता आया था। वह स्वस्थ, चतुर तथा परिश्रमी लडकी लगती थी। पर कुछ दुःखी-सी रहती थी। यदि वह पुरुष होती तो शायद मुखिया की ट्रेनिंग पर चली जाती, पर वह तो एक स्त्री थी। माता-पिता स्वर्ग सिधार चुके थे। पर प्रत्यक्ष ही था कि कोई उससे शादी भी न करेगा—एकाकिनी स्त्री—और शायद सदैव ऐसी ही रहे।

"अच्छा, उसके विषय मे क्या कहते हो ?" उसने उस लडकी की ओर सकेत किया।

फोरमैन ने बाहर देखकर कहा, "अरे ! सत्यानाश हो। इसको तो काम पर होना चाहिये था।"

"अच्छा ! अच्छा !" टेरेन्स ने समझाते हुए कहा, "उसका नाम क्या है ?"

"वलोना मार्च।"

"हाँ ठीक है, मुझे याद आया। उसे अन्दर बुलाओ।"

उसी समय से टेरेन्स उनका अभिभावक बन गया था। उसने अपनी सामर्थ्य के अनुसार उसके लिये खाना-कपडा जुटाया था। काईट मिल मे रिक की ट्रेनिंग के लिये लोना की सहायता की थी। उसी ने बीच मे पड कर, लोना का मिल मे झगडा हो जाने पर उसको माफी दिलाई थी। शहर के डाक्टर की मृत्यु हो जाने के कारण उसे और कुछ भी नही करना पडा था। पर वह उसके लिये भी तैयार था।

इसी कारण वलोना के लिये यह स्वाभाविक ही था कि किसी भी परेशानी मे वह उसके पास आये और अब वह अपने प्रश्न के उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा था।

वलोना ने हिचकिचाते हुए कहा, "वह कहता है कि इस ससार का प्रत्येक प्राणी मर जायगा।"

टेरेन्स ने चौक कर कहा, "क्या, वह बतलाता है कि कैसे ?"

"वह कहता है कि उसे यह नहीं मालूम। पर उसे भूलने से पहले की याद आ रही है। और वह कहता है कि पहले वह नौकरी करता था। पर क्या ? यह तो मेरी समझ मे नही आया।"

"वह क्या बतलाता है ?"

"वह कहता है कि वह 'कुछ नही' का विश्लेषण करता था।"

वलोना थोडी देर अलोचना के लिये रुकी रही, फिर उसने जल्दी-जल्दी स्पष्ट करना आरम्भ किया, "विश्लेषण का अर्थ है किसी वस्तु को

अलग-अलग कर देना। जैसे……"

"ऐ लडकी ! मुझे मालूम है इसका क्या अर्थ है ।" पर फिर भी वह खोया सा ही रहा।

वलोना उसकी ओर चिन्तित-सी देखती रही।

"मुखियाजी ! क्या आपको मालूम है कि उसका क्या मतलब है ?"

"शायद वलोना !"

"पर मुखियाजी ! कोई 'कुछ नही' का क्या कर सकता है ?"

टेरन्स खडा होगया, "क्यो लोना ! क्या तुम्हे नही मालूम कि तारक-मण्डल की हर वस्तु अधिकतर 'कुछ नही' है ।"

वलोना बेचारी की समझ मे अब भी कुछ नही आया। पर फिर भी उसने मान लिया कि शायद ऐसा ही होता हो। मुखियाजी बहुत विद्वान् हैं। और अब उसे एकाएक खयाल आया, और उसने गर्व के साथ सोचा कि उसका रिक उनसे भी अधिक विद्वान् है।

"चलो" टेरेन्स ने उसका हाथ पकड कर कहा।

"हम कहाँ जा रहे है ?" उसने पूछा।

"जहाँ रिक है।"

"पर वह तो सो रहा है।"

"अच्छा ! चलो तुम्हे वहाँ पहुँचा दूँ। क्या तुम चाहती हो कि सतरी तुम्हे पकड ले।"

सारा गाँव इस समय एकदम निस्तब्ध था। सडक, जो कि मजदूरो के घरो को दो भागो मे विभाजित करती थी, एकदम नीरव थी। उस पर धीमी-सी एक बत्ती जल रही थी। हवा मे वर्षा के आसार नजर आ रहे थे। पर ऐसा तो हर रात्रि को होता था, उसकी क्या परवाह करनी है !

वलोना किसी दिन भी इतनी इतनी रात तक बाहर नही रही थी। उसे बडा डर लग रहा था। अपनी खुद की पद-चाप को सुन कर भी डर से काँप रही थी तथा सतरियों के पैरो की आवाज की ओर उसके

कान लगे हुए थे।

"वलोना, पाँव दबा कर मत चलो। मै तो तुम्हारे साथ हूँ।" टेरेन्स ने कहा।

इस सन्नाटे मे उसकी आवाज़ सुनकर वलोना चौक उठी और उसने जल्दी-जल्दी कदम बढाना शुरू किया।

अन्य झोपडियो की भाँति वलोना की झोपडी मे भी अधेरा था। टेरेन्स स्वयं भी तो ऐसी ही झोपडी मे पैदा हुआ था, यद्यपि उसके बाद वह सार्क मे चला गया था और उसके पास अब एक तीन कमरो का मकान था, जिसमे नल भी था। पर अब भी इतने बडे घर को देख उसका मन उदासी से भर उठता था। एक कमरे से अधिक की आवश्यकता भी क्या थी! बस एक बिस्तर, एक अलमारी, दो कुर्सी, पक्का चिकना फर्श तथा एक कोने मे शौच-स्थान—इससे अधिक की क्या ज़रूरत है। रसोई भी क्या करनी है, क्योकि स्नानगृह एक ही स्थान पर पक्ति मे बने थे और सब वहाँ जाकर स्नान कर आते थे। इस शीतोष्ण जलवायु में खिडकियो मे दरवाज़े भी बेकार थे, उनमे केवल पर्दे ही लगे होते थे। अपनी टार्च से टेरेन्स ने देखा कि कमरे के एक कोने में फटा-सा पर्दा पडा है। यह उसी ने रिक के आने के पश्चात् ला दिया था और उसके पीछे से रिक की साँस की आवाज़ आ रही थी।

उसने उस ओर देखकर कहा, "उसे जगाओ वलोना!"

वलोना ने पर्दे पर हाथ मारते हुए कहा, "रिक! रिक! डेन!"

पर्दे के पीछे से एक चीख-सी आई।

"मैं हूँ लोना", उसने कहा। टेरेन्स ने पहिले अपने दोनो के चेहरो पर रोशनी डाली, फिर रिक पर।

रिक ने उठते हुए कहा, "क्या बात है?"

टेरेन्स बिस्तर के किनारे पर बैठ गया। उसने देखा कि रिक बढिया पलग पर सो रहा है और टूटी-सी चारपाई, जो उसने रिक के लिये ला दी थी, लोना ने अपने लिये रख ली है।

"लोना कहती है, तुम्हे पिछली बाते याद आ रही है ?"

"हाँ मुखियाजी।" रिक सदैव ही मुखिया के सम्मुख बडी नम्रता से बात करता था। उसने उससे अधिक प्रभावशाली पुरुष अभी तक कोई भी न देखा था, मिल का सुपरिंटेडेट तक मुखिया से नम्रता से बाते करता था। रिक को जो कुछ भी दिन मे याद आया था, उसने फिर-दुहरा दिया।

"वलोना को यह सब बताने के बाद भी तुम्हे कोई बात याद आई ?"

"और कुछ नही मुखियाजी।"

टेरेन्स ने हाथ मलते हुए कहा "अच्छा ! फिर सो जाओ।"

वलोना उसको बाहर तक छोडने आई। बहुत प्रयत्न करने के बाद वह भरे गले से बोली, "मुखियाजी ! क्या यह मुझको छोड जायगा ?"

टेरेन्स ने उसका हाथ अपने हाथ मे लेकर कहा, "अब तुम्हे वयस्क होना चाहिये लोना। उसको थोडे समय के लिये मेरे साथ जाना होगा, पर इस समय तो मै इसको वापस ले ही आऊँगा।"

"और उसके बाद ?"

"मुझे नही मालूम। धीरज रखो वलोना ! इस समय तो सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण यही है कि उसकी याद वापस लौट आये।"

वलोना ने फिर पूछा, "क्या आपके विचार मे भी उसके कहे अनुसार इस ग्रह के सब लोग मर जायेगे ?"

टेरेन्स ने वलोना के हाथ को दबाते हुए कहा, "ऐसा किसी से मत कहना वलोना। यदि सतरियो ने सुन लिया तो वे रिक को ले जायेंगे।"

वह धीरे-धीरे सोचता हुआ वापस अपने घर की ओर लौट चला। उसके हाथ काँप रहे थे। उसने सोने का प्रयत्न किया, पर बेकार। आखिर उसने नीद लाने वाला यन्त्र निकाला। यह यन्त्र वह सार्क से फ्लोरीना आते समय ले आया था। इस यन्त्र को अपने सिर मे लगाकर,

पाँच घटे के ग्रलार्म पर सूई को लगाकर, वह लेट गया। इतना समय उसको मिल गया था कि वह ग्रपना बिस्तर ठीक कर सके ग्रौर फिर वह गहरी निद्रा मे निमग्न हो गया।

: ३ :

पुस्तकालयाध्यक्ष

उन्होने अपना स्कूटर शहर के बाहर वाले स्टैंड पर छोड दिया। शहर मे स्कूटर बहुत कम थे और टेरेन्स नही चाहता था कि किसी का भी ध्यान बेकार ही उनकी ओर आकर्षित हो। उसने एक क्षण के लिये ऊँची नगरी की चुम्बकीय गाडियो तथा विपरीत गुरुत्व चक्करो के विषय मे सोचा, पर इर्ष्या करने से क्या लाभ। वह ऊँची नगरी जो ठहरी!

टेरेन्स ने स्कूटर मे ताला लगाया। उतनी देर रिक बाहर खडा प्रतीक्षा करता रहा। उसने एक नया 'वन पीस' सूट पहिन रखा था, जिसमे उसे बडा अजीब-सा लग रहा था। उसने उस पुल के बडे-बडे खम्भों जैसी इमारतो के (जो कि ऊँची नगरी को थामे थीं) नीचे से निकलने मे बडी ही अनिच्छापूर्वक मुखिया का अनुसरण किया।

फ्लोरीना के और शहरो का नाम था पर यह केवल शहर ही कहलाता था। जो मजदूर और किसान इसमे या इसके चारो ओर रहते थे उनको समूचा ग्रह बडा भाग्यवान समझता, क्योकि इसमे अधिक अच्छे डाक्टर, अधिक फैक्टरियाँ, ज्यादा शराब की दुकाने और बढिया होटल थे, परन्तु रहने वाले कदाचित् इतने प्रसन्न न थे। होते भी कैसे? सदा ऊपरी शहर या ऊँची नगरी की छाया मे जो रहना पडता था।

ऊपरी शहर जैसा कि उसका नाम था, ऊपर बना हुआ था। यह शहर

दोहरा बना हुआ था, ऊपरी और निचला। ये दोनो भाग ५० वर्गमील सीमेंट-मिश्रण के फर्श से, जो कि बड़े-बड़े लोहे के २० हजार खम्भो (गार्डरो) पर टिका हुआ था, विभाजित थे। ऊपर धूप मे महानुभाव रहते थे और नीचे उनकी छाया मे आदिवासी लोग। ऊपर के शहर मे जाने पर यह विश्वास करना कठिन था कि यह शहर फ्लोरीना पर बसा हुआ है। वहाँ की सारी आबादी सार्कियो की थी और उनके साथ थे देखभाल के लिये कुछ सतरी। और केवल ये ही लोग उच्च वर्ग मे सम्मिलित थे।

टेरेन्स अपनी राह से भली भाँति परिचित था। वह राह मे मिलने वालो की नजरे बचाता हुआ जल्दी-जल्दी चल रहा था। इनकी ईर्ष्या-भरी निगाहे उसकी वर्दी पर टिक जाती थी। रिक भी उसके पीछे-पीछे दौड़-सा रहा था। पहिली बार जब वह शहर मे आया था, उस समय की उसे कुछ भी याद नही थी। अब और तब मे कितना अन्तर था! उस समय बादल छाये थे, अब धूप निकली थी जो कि सीमेंट-मिश्रण के फर्श के छेदो मे से छन-छनकर आ रही थी। ये छेद इसी लिये बनाये गये थे, जिससे कि नीचे के शहर मे रहने वालो को प्रकाश मिल सके।

इससे धूप और अँधेरे की अलग-अलग पट्टियाँ-सी बन जाती थी। टेरेन्स और रिक इन पट्टियो को जल्दी-जल्दी पार करते हुए जा रहे थे।

कुछ बूढे लोग धूप की इन पट्टियों मे कुर्सी डाले धूप सेंक रहे थे और पट्टियो के साथ-साथ वे भी सरकते जाते थे। कभी-कभी कोई सो जाता था और थोडी ही देर मे वह छाया मे आ जाता था, वह तभी उठता था जब दूसरो के द्वारा कुर्सी खिसकाने की आवाज़ उसके कानो मे पड़ती थी। पर अधिकतर ये पट्टियाँ बच्चो की गाड़ियो से भरी रहती थी।

"रिक, अब खडे हो जाओ, हम लोग उधर जायेगे।" टेरेन्स ने कहा और अब वे दोनो लिफ्ट के पास खडे थे जो चार खम्भो के बीच में बनी थी।

"मुझे डर लगता है।" रिक ने कहा।

रिक ने अंदाज से समझा कि यह क्या चीज है। वह समझ गया था

कि यह लिफ्ट है और ऊपर ले जायगी।

यह लिफ्ट अत्यन्त आवश्यक चीज थी क्योंकि पैदावार तो नीचे होती थी और उपभोग ऊपर। मूल रसायन तथा कच्चा खाना नीचे भेजा जाता था और तैयार की हुई प्लास्टिक की वस्तुएँ और बढ़िया तैयार भोजन ऊपर जाता था। इसी प्रकार आदिवासी आबादी पैदा नीचे होती थी पर नौकरानियाँ, माली, ड्राइवर तथा मजदूर काम ऊपर करते थे।

रिक के डर की तो टेरेन्स उपेक्षा कर गया, पर उसे आश्चर्य इस बात का था कि उसका अपना दिल भी कितने ज़ोर से धडक रहा था! यह धडकन भय के कारण तो न थी परन्तु यह एक प्रकार का अजीब-सा संतोष था जो ऊपर जाने से हो रहा था कि वह अगम्य सीमेट-मिश्रण पर पैर पटक सकेगा और अपने पैरो की धूल उस पर झाड सकेगा। वह केवल मुखिया की हैसियत मे ही ऐसा कर सकता था। यह जरूर था कि महानुभावो की दृष्टि मे वह केवल एक फ्लोरीना-वासी था, पर था तो वह मुखिया और इस नाते वह जब चाहे सीमेट-मिश्रण पर जा सकता था।

तारक-मडल! उससे वह घृणा करता था। उसने एक आह भर कर लिफ्ट के लिए सकेत किया। घृणा करने से क्या लाभ! वह स्वय भी तो कई साल तक सार्क पर रहा था—सार्क पर—जो कि महानुभावो के पैदा होने तथा रहने का स्थान है। उसने चुपचाप सब कुछ सहने का अभ्यास कर लिया था, और अब इस समय उसे इस अभ्यास को छोडना नही चाहिये।

धीरे-धीरे लिफ्ट घर-घर करती हुई नीचे आ गई। उस लिफ्ट के चालक आदिवासी ने घृणापूर्वक कहा, "केवल तुम दोनो?"

"हाँ! केवल दो" टेरेन्स ने अन्दर घुसते हुए कहा। रिक भी उसके पीछे लिफ्ट मे चढ गया।

चालक ने लिफ्ट को चालू करने का तनिक प्रयत्न न करते हुए कहा, "क्या तुम दोनो दो बजे सामान के साथ नही जा सकते थे? मैं तुम्हारे जैसे दो जनो के लिये लिफ्ट चलाने को नौकर नही रखा गया।" यह कह

कर उसने इस प्रकार थूका जिससे थूक लिफ्ट मे न गिर कर नीचे शहर के फर्श पर गिरे। "तुम्हारा प्रमाण-पत्र कहाँ है ?" उसने पूछा।

"क्या तुम मेरे कपडो से नही पहचान सकते कि मैं मुखिया हूँ ?" टेरेन्स ने कहा।

"कपडो से मुझे क्या लेना है ! क्या तुम चाहते हो मैं नौकरी से हाथ धो बैठूँ ? कपडे तो तुम कही से भी ला सकते हो। तुम्हारा कार्ड कहाँ है ?"

टेरेन्स ने चुपचाप अपना प्रमाण-पत्र निकाल कर दे दिया। उसमें नम्बर, नाम, टैक्स की रसीद तथा नौकरी का प्रमाण-पत्र था, साथ मे मुखिया का लाल सर्टिफिकेट भी था। चालक ने उसको सरसरी नजर से देखा।

"हो सकता है, यह भी तुम कही से चुरा लाये हो। पर मुझे क्या ! यह तुम्हारे अधिकार मे है और तुम जा सकते हो। मेरे लिये तो मुखिया भी एक आदिवासी ही है। यह दूसरा कौन है ?"

"यह मेरे साथ है। मैं इसके लिये उत्तरदायी हूँ। चलते हो या फिर फैसला करने के लिये मतरी को बुलाऊँ।" उसे अन्तिम हथियार को अपनाना ही पडा था।

"ठीक है ! ठीक है ! नाराज क्यो होते हो ?" और लिफ्ट ऊपर उठ गई। पर चालक बराबर बडबडाता ही चला गया।

टेरेन्स मुस्कराया। ऐसा ही होता था। बात यह थी कि जो लोग महानुभावो के साथ रह कर, निरन्तर उनकी नौकरी बजाते थे वे अपने आप को उनसे भी अधिक समझने लगते, और अपने क्षुद्र स्वभाव के कारण अपने स्वदेशवासियो पर खूब अत्याचार करते तथा उनसे दूर-दूर रहते थे। इन लोगो से बाकी आदिवासी बडी घृणा करते थे। क्यो कि इन लोगो के लिये उनके मन मे वह स्वाभाविक आदर नही था जो महानुभावो के प्रति बचपन से ही सिखाया जाता था।

वे लोग केवल ३० फुट ऊँचे उठे थे, परन्तु लिफ्ट एक दूसरे ही संसार मे पहुँच गई थी। यह सार्क का एक शहर जैसा मालूम होता था।

'ऊँची नगरी' रगो का खूब ध्यान रखते हुए बनायी गई थी। सरकारी इमारतें हो या निजी अट्टालिकाये, सब विविध रगो से ऐसी चित्र-जैसी बनायी गई थी जो पास से चाहे एक गडबडझाला ही लगते हो, पर सौ फुट की दूरी से उनके रग झिलमिलाते हुए बहुत ही सुन्दर एव प्यारे प्रतीत होते थे—और विभिन्न स्थानो से विभिन्न रूपो मे दिखाई देते थे।

"आओ रिक!" टेरेन्स ने कहा।

रिक आँखे फाड कर देखता रहा। कही कोई जीवन न था—चारो ओर थे केवल पत्थर और रग। वह नही जानता था कि घर इतने बडे भी होते है। उसके मस्तिष्क मे कुछ हलचल-सी हुई और क्षण-भर के लिये यह सब उसको इतना अपरिचित नही जान पडा—और फिर दिमाग पर एक पर्दा-सा पड गया।

सामने से एक कार निकल गई।

"क्या यही महानुभाव है?" रिक ने पूछा।

उन पर केवल नजर डाल सका था वह। बाल छोटे-छोटे कटे हुए थे। फूली हुई आस्तीन थी जो कि नीले से लेकर बैगनी तक किसी भी रग की हो सकती थी। मखमल की सी निकर थी। लम्बे-पूरे मोजे थे जो कि इतने चमक रहे थे मानो ताँबे के तारो से बने हो। पर उन्हे रिक व टेरेन्स की ओर देखने की फुरसत कहाँ थी!

"हाँ उनके लडके है।" टेरेन्स ने कहा। जबसे वह सार्क से लौटा था उसने महानुभावो को इतने निकट से न देखा था। सार्क पर भी ये लोग काफी बिगडे हुए थे, पर फिर भी वहाँ अपने ग्रह पर ही थे। पर यहाँ! कुछ न पूछो—कही नरक से ३० फुट ऊपर स्वर्ग के देवता निवास कर सकते है! फिर उसने मन मे उठती घृणा को बलपूर्वक दबा लिया था।

एक टू-सीटर फुकार मार कर उनके पीछे रुका। यह नया माडल था। इसमे अन्दरूनी वायु-नियत्रण यत्र लगे थे। इस समय वह सतह से

दो इच ऊँची तैर रही थी । यद्धपि इसकी तली दोनो ओर से ऊपर को गोल मुडी हुई थी जिससे कि वायु की रुकावट का असर उस पर न हो, फिर भी वायु उसके निचले हिस्से से टकरा रही थी और उसमे से फु कार निकल रही थी और उस फु कार का अर्थ था सतरी ।

यह संतरी भी अन्य सतरियो की भाँति लम्बे-तडगे थे । उनका चेहरा चौडा, गाल चिपटे, लम्बे काले वस्त्र और रग साँवला था । आदि-वासियो को तो प्रत्येक सतरी एक जैसा ही लगता था । उसकी चमकीली वर्दी, चमकते हुए बटनों से और भी चमक उठती थी । यह उनके चेहरो के महत्त्व को कम करके सबको एक-जैसा बना देती थी ।

एक सतरी गाडी का नियन्त्रण कर रहा था और दूसरा कूदकर उसके पास आया ।

"लाइसेस !" उसने कहा और सरसरी तौर से लाइसेस देखकर टेरेन्स को वापस करते हुए पूछा, "तुम्हारा यहाँ काम ?"

"मैं पुस्तकालय जाना चाहता हूँ श्रीमान् ! यह मेरा विशेषाधिकार है ।" संतरी ने रिक की ओर मुडकर कहा "और तुम ?"

"जी मैं ·· ···· " रिक ने कहना आरम्भ ही किया था कि टेरेन्स ने बीच मे टोक कर कहा, "जी यह मेरा सहायक है ।"

"इसको तो मुखिया का विशेषाधिकार नही मिला ?" सतरी ने कहा ।

"मैं इसके लिये उत्तरदायी हूँ ।" टेरेन्स ने कहा ।

सतरी ने कंधे हिलाते हुए कहा "जैसी तुम्हारी इच्छा ! मुखिया को विशेषाधिकार तो अवश्य मिलते है, पर फिर भी वह एक महानुभाव नही है, इसका ध्यान रखना ।"

"जी श्रीमान् ! क्या आप कृपा करके पुस्तकालय का रास्ता बतायेंगे ?"

सतरी ने अपनी सूई-जैसी नली वाली पिस्तौल को उठाकर पुस्त-कालय की ओर इशारा कर दिया । उसकी बताई दिशा मे पुस्तकालय

की बडी-सी गुलाबी अट्टालिका थी जिसका गुम्बद लाल था। जैसे-जैसे ये दोनो निकट होते गये, वह लाल रग नीला होता गया।

रिक एकदम घृणापूर्वक बोला "ओह! कितना भद्दा!"

टेरेन्स ने उसकी ओर अचम्भे से देखा। उसे सार्क पर यह सब देखने की आदत पड गई थी, परन्तु फिर भी ऊपरी शहर का यह रग-बिरंगापन बहुत ही भद्दा मालूम होता था। पर हाँ, ऊपरी शहर तो सार्क से भी अधिक सार्की था। सार्क पर हर मनुष्य महानुभाव नही था। वहाँ पर गरीब सार्की भी थे— और कुछ तो बिल्कुल फ्लोरिना के आदिवासियो जैसे ही गरीब थे। परन्तु यहाँ का हर सार्की अफलातून था और यह पुस्तकालय उसका एक प्रमाण था।

यह पुस्तकालय सार्क के कुछ पुस्तकालयो को छोडकर सबसे बडा था—ऊँचे शहर की आवश्यकता से अधिक—इसी से यहाँ की सस्ती मजदूरी के लाभ का पता लगता था। टेरेन्स दरवाजे तक पहुँचने वाले चक्करदार ढाल पर रुक गया। इस ढलान पर रग इस प्रकार लगे थे कि सीढी का भ्रम हो जाता था। रिक बेचारा तो चक्कर मे पड गया। इन रगो से पुस्तकालय कुछ अधिक भव्य ही प्रतीत होता था।

पुस्तकालय का मुख्य हाल बहुत बडा व ठडा था, परन्तु सूना पडा था। अध्यक्षा, जो कि हाल के एकाकी डेस्क के पीछे बैठी हुई थी, इन लोगो को देखकर थोडा-सा उठी।

टेरेन्स ने जल्दी से कहा, "मैं मुखिया हूँ। मेरे पास विशेषाधिकार है। और मैं इस आदमी के लिये भी उत्तरदायी हूँ।" उसने जल्दी से अपने कागज निकाले और दिखाये।

वह फिर अपनी जगह पर बैठ गई। टेरेन्स के सामने उसने एक रुपहला सिक्का फेका। टेरेन्स ने उस पर अपना अँगूठा लगाया। उसने उन सिक्को को उठा कर एक दराज मे डाला जिसमे से बैगनी रोशनी निकल रही थी।

"कमरा २४२", उसने कहा।

"धन्यवाद !"

तीसरी मजिल के कमरे अधिकतर सुनसान ही पडे हुए थे, और शायद सारे पुस्तकालय मे कुछ ही कमरे भरे थे, अन्यथा सब खाली ही पडे थे।

"दो सौ बयालीस।" रिक उत्तेजित सा बोला।

"क्या हुआ रिक ?"

"मालूम नही। मै बहुत उत्तेजित हो रहा हूँ।"

"क्या इससे पहिले भी कभी पुस्तकालय में आये हो ?"

"मुझे याद नही।"

टेरेस ने गोल चादी के सिक्के पर अपना अगूठा दबाया। यह वही सिक्का था जिस पर पाँच मिनट पहिले टेरेन्स के अगूठे की छाप ली गई थी। इसको दबाते ही शीशे का द्वार खुल गया। इन लोगो के अन्दर घुसते ही द्वार बिना किसी आवाज के स्वय ही बन्द हो गया। शीशे अपने-आप ही अपारदर्शी हो गये मानो पर्दा खीच दिया गया हो।

यह कमरा सब ओर से छ फुट का था। इसमें न तो किसी प्रकार की सजावट थी और न कोई खिडकी। वह छत से निकलती हुई एक विशेष चमक से प्रकाशित था और एक प्रकार के बनावटी वायु के झोको द्वारा उसमे वायु-सचालन होता था। वहाँ केवल एक छ फुट की डेस्क थी और उसके सामने बिना कमर की एक बेच पडी थी। डेस्क पर तीन 'रीडर' पडे हुए थे, जो सामने से ऊँचे थे और तीस डिग्री का कोण बनाते हुए पीछे की ओर ढलवाँ होते गये थे। प्रत्येक के सामने की ओर अनेको नियत्रक लट्टू लगे हुए थे।

टेरेन्स बैठ गया और अपने गुदगुदे व मुलायम हाथ को 'रीडर' पर रखते हुये उसने पूछा "जानते हो, यह क्या है ?"

रिक भी बैठ गया। "पुस्तके ?" उसने उत्सुकता से पूछा।

"तुम्हारी इस बात का कोई अर्थ नही निकलता, क्योकि यह एक पुस्तकालय है और इसमे पुस्तके तो होंगी ही।" मुखिया ने कहा, "पर क्या

तुम रीडर को कार्यान्वित करना जानते हो ?"

"नही ! मुखियाजी।"

"फिर से सोचो।"

रिक ने फिर जोर लगाया, "नही मुखियाजी ! मुझे खेद है कि मुझे कुछ भी याद नही आता।"

"अच्छा ! मै तुम्हे बतलाता हूँ। देखो ! सामने वाले इस लट्टू पर सूची लिखी हुई है और अक्षर भी इस पर छपे है। हमे पहिले विश्वज्ञान कोष चाहिये न ? हम लट्टू को पहिले 'वि' पर घुमायेगे और फिर उसे नीचे को दबायेगे।"

ऐसा करते ही अनेको बाते एक साथ हो गई—'रीडर' का अपारदर्शी शीशा मानो एकदम जीवित हो उठा और उस पर छपे हुये अक्षर दिखाई देने लगे। प्रत्येक 'रीडर' के सम्मुख तीन प्लेटे आ गई और उनके पीछे रोशनी जल उठी। टेरेन्स ने एक स्विच दबाया और ये प्लेटे फिर अपने स्थान पर वापिस चली गईं।

"हम लोग इस समय नोट नही लेगे। समझे !" टेरेन्स ने कहा "और अब लट्टू को 'वि' की सूची पर घुमायेगे।"

उन प्लेटो पर पुस्तको की सूची, लेखको के नाम, सूची-नम्बर और 'विश्व ज्ञान कोष' के बहुत सारे ग्रन्थो की सूची उभर आई।

रिक ने एकाएक कहा, "और जिस पुस्तक की आवश्यकता हो उसके नाम के बटन दबाइये और वह रीडर पर आ जाती है। है न ?"

टेरेन्स ने उसकी ओर घूमकर कहा, "तुम्हे कैसे मालूम ? क्या तुम्हे कुछ याद आ रहा है ?"

"शायद ! पर ठीक से कुछ नही कह सकता। हाँ, ऐसा लगता है जैसे इस 'रीडर' से इसी प्रकार कार्य किया जाता होगा।"

"अच्छा ! यह एक अनुमान ही हो शायद।"

फिर टेरेन्स ने कुछ लट्टू घुमाये और शीशे के पीछे का प्रकाश पहले धीमा हुआ और फिर तेज और उस पर ये अक्षर चमक उठे, 'सार्क का

विश्व-कोष, ग्रन्थ ५४'

"अच्छा। रिक, सुनो। मैं तुम्हे किसी गलतफहमी मे नही डालना चाहता—मैं केवल यही चाहता हूँ कि तुम इस पुस्तक का अवलोकन करो और यदि कोई चीज परिचित-सी लगे तो उस पर रुक जाओ। समझे!"

"जी!"

"बहुत अच्छा! अब देखना आरम्भ करो।"

कुछ मिनट निकल गये। अचानक रिक एकदम रुक गया और उसने तेजी से लट्टू पीछे की ओर घुमाने आरम्भ कर दिये। जब वह रुका तो टेरेन्स ने शीर्षक को पढा। वह मन ही मन बडा प्रसन्न हुआ, "अब तुम्हे याद आया। यह केवल अनुमान ही नही हो सकता—तुम्हे याद आया है न?"

"मुखियाजी! अचानक ही मुझे याद-सा आया—बिलकुल अचानक!" रिक ने सिर हिलाते हुए उत्तर दिया।

यह 'अन्तराल-विश्लेषण' पर एक लेख था।

"आप देखते जाइये। मुझे मालूम है इसमे क्या है।" रिक ने कहा। उत्तेजना के मारे उसको साँस लेने मे भी कठिनाई हो रही थी, और टेरेन्स भी इस समय रिक के समान ही उत्तेजित था।

"देखिये, यह लेख इन पुस्तको मे अवश्य ही होता है।" रिक ने कहा। और उसने रुक-रुक कर कुछ पक्तियाँ पढ कर सुनाईं। उसके पढने का ढग भी वलोना द्वारा सिखाये ढंग से कही अधिक उत्तम था। लेख इस प्रकार था—

"यह कोई अचम्भे की बात नही है कि अन्तराल-विशेषज्ञ स्वभाव से ही अन्तर्मुखी होते है और कभी-कभी पागलपन की सीमा तक पहुँच जाते हैं; अन्यथा किसी प्रकृत मनुष्य से यह कामना करना कि वह अपने जीवन का मुख्य भाग तारक-मडल के इस एकाकी व शून्य भाग का विश्लेषण करते हुए व्यतीत कर दे, किसी भी प्रकार सम्भव नहीं।

कदाचित् यही देखते हुए अन्तराल विशेषज्ञ समिति ने अपना नारा ही यह बना लिया है कि 'हम लोग 'कुछ नही' का विश्लेषण करते है ।'

रिक ने समाप्त करते समय किलकारी मारी ।

'जो कुछ तुमने पढा, क्या वह तुम्हारी समझ मे आया ?" टेरेन्स ने पूछा

रिक ने अपनी चमकती हुई आँखें ऊपर उठाई, "हम लोग 'कुछ नही' का विश्लेषण करते है—यही लिखा है न ?—यही तो मै भी करता था ।"

"तुम अन्तराल-विशेषज्ञ थे ?"

"हाँ ।" रिक ने जोर देकर कहा, फिर धीमे से बोला, "ओह ! सिर मे दर्द हो रहा है ।"

"कदाचित् इसी कारण; क्योकि तुम्हे पिछली बाते याद आ रही है ।"

"मै भी यही सोचता हूं ।" उसने ऊपर देखते हुए कहा, "मुझे और भी याद आना चाहिये—कही कोई सकट है—बडा भारी सकट । मेरी समझ मे नही आता, क्या करूँ ?"

'हम इस समय पुस्तकालय मे हैं रिक ।" टेरेन्स ने शब्दो को चुनते हुए कहा, "सूचीपत्र देख कर अन्तराल-विश्लेषण पर कोई पुस्तक निकालो । शायद उससे तुम्हे कुछ और याद आ जाय ।"

रिक 'रीडर' के साथ जुट गया । वह उत्तेजना से काँप रहा था । टेरेन्स ने पीछे हट कर अपना स्थान उसको दिया । "रिज्ट्स के 'अन्तराल विशेषज्ञ यत्र-प्रणाली' के विषय मे क्या कहते हो ?"

"क्या यह ठीक रहेगा ?" रिक ने पूछा

"यह तो तुम ही जानो रिक ।"

रिक ने सूचीपत्र के नम्बर को दबाया और पर्दे पर लिखा उत्तर मिला, 'कथित पुस्तक के विषय मे पुस्तकालयाध्यक्ष से मिलिये ।'

टेरेन्स ने जल्दी से हाथ बढा कर रीडर को साफ कर दिया ।

"रिक ! किसी और पुस्तक को देखो।"

"परन्तु..." रिक हिचकिचाया, पर उसने आज्ञापालन के हेतु सूची-पत्र को फिर उठाया। इस बार उसने ऐनिंग की 'अन्तराल-रचना' नामक पुस्तक चुनी।

पर्दे पर एक बार फिर अध्यक्ष से मिलने की प्रार्थना हुई। "क्या मुसीबत है ?" कहते हुए टेरेन्स ने एक बार और पर्दे को साफ कर दिया।

"यह क्या बात है ?" रिक ने खीजते हुए पूछा।

"कुछ नही—कुछ नही।" टेरेन्स ने कहा "आतंकित मत होना, रिक ! मेरी समझ मे नही आ रहा—"

'रीडर' के एक ओर आवाज आने वाला यन्त्र भी लगा था और उसी मे से अध्यक्ष की तेज आवाज ने दोनो को चौंका दिया।

"कमरा नम्बर २४२ ! क्या कमरा नम्बर २४२ मे कोई है ?"

"क्या बात है ?" टेरेन्स ने बुझे से स्वर मे पूछा।

आवाज ने फिर पूछा, "आप लोगो को कौन-सी पुस्तक चाहिये ?"

"कोई नही। धन्यवाद ! हम लोग रीडर का परीक्षण कर रहे थे।" टेरेन्स ने कहा।

आवाज कुछ देर रुकी, मानो किसी से सलाह ले रही हो और फिर बोली, "रेकार्ड से ज्ञात होता है कि रिज्ट्स की अन्तराल-प्रणाली तथा ऐनिंग की अन्तराल-रचना नामक पुस्तके माँगी गई थी। क्या यह ठीक है ?"

"हम लोग यो ही सूचीपत्र देखकर बटन दबा रहे थे।" टेरेन्स ने कहा।

"इन पुस्तको को माँगने का कारण क्या मैं जान सकती हूँ ?"

"मैं कह रहा हूँ न—ये पुस्तके नही चाहिए।" टेरेन्स ने जल्दी से कहा।

आवाज कुछ देर रुकने के पश्चात् फिर आई, "यदि आप लोग बाहर

डेस्क पर आये तो ये पुस्तके आप लोगो को मिल सकती है। ये पुस्तके प्रतिबन्धित है और उनको लेने से पहिले एक फार्म भरने की आवश्यकता होती है।"

टेरेन्स ने रिक का हाथ पकड कर कहा, "चलो चले!"

"शायद हम लोगो ने किसी नियम का उल्लघन कर दिया है।" रिक ने कहा।

"चुप भी रहो रिक। हम लोग जा रहे है।"

"क्या हम लोग फार्म नही भरेगे ?"

"नही! हम लोग पुस्तके फिर कभी ले लेगे।"

टेरेन्स रिक को अपने साथ घसीटते हुए जल्दी-जल्दी उतरा। जैसे ही वह हाल मे पहुँचा तो अध्यक्षा ने उसको रोका, "सुनो, सुनो! एक मिनट—एक मिनट।" उसने उठते हुए कहा।

पर वे कहाँ रुकने वाले थे! इतने मे ही एक सतरी ने उनको रोकते हुए कहा, "आप लोग बडी जल्दी मे है ?"

अध्यक्षा भी इतने मे निकट आ गई थी।

"आप लोग दो सौ बयालीस कमरे मे थे न ?"

"सुनिये", टेरेन्स ने ज़ोर से कहा, "हम लोगो को क्यो रोका जा रहा है ?"

"आप लोग कुछ पुस्तको के विषय मे पूछ रहे थे न ? हम लोग उन्हे मँगा रहे है।"

"अब बहुत देर हो गई—फिर किसी समय—क्या अभी तक आपकी समझ मे नही आया कि हमे वे पुस्तके नही चाहिये—मैं कल फिर आऊँगा।"

"पुस्तकालय हर समय प्रत्येक माँग को पूरा करने का प्रयत्न करता है। मिनट-भर मे वे पुस्तके आपको मिल जायगी।" यह कहते समय अध्यक्षा के चेहरे पर लाली दौड गई और वह मुडकर एक छोटे-से द्वार मे घुस गई जो निकट पहुँचने पर स्वय ही खुल गया था।

टेरेन्स ने सतरी से कहा "श्रीमान् ! यदि बुरा न माने तो " परन्तु सतरी अपना लम्बा स्नायु कोडा निकालकर खडा हो गया था। वह कोडा निकट से मारने के लिये कुन्दे का काम करता था और यदि दूर से मारा जाय तो लकवा पैदा कर देता था, "हाँ-हाँ छोकरो तुम लोग बैठ क्यो नही जाते ? श्रीमती जी को आ जाने दो। यही ठीक होगा।"

यह सतरी अब वृद्ध हो चला था, इसी कारण शायद उसे पुस्तकालय के हल्के कार्य पर नियुक्त किया हुआ था। इस समय वह शरारत-भरी मुस्कराहट लिये हँस रहा था।

टेरेन्स को पसीना छूटने लगा था। शायद वह स्थिति की गम्भीरता पूर्ण रूपेण समझ नही पाया था। हर बात तो उसने सोच समझकर की थी—पर यह स्थिति तो वश के बाहर हो गई थी। यह उसकी ही गलती तो थी। उसी ने तो अपने-आप को एक सार्की के समान समझ पुस्तकालय मे घुसने का साहस किया था।

एक बार तो उसकी सतरी पर आक्रमण करने की प्रबल इच्छा हुई, पर दूसरे ही क्षण ऐसा करने की आवश्यकता न रही।

यह सब क्षण-भर मे ही हो गया। सतरी को मुडने मे पल भर की देर हो गई। शायद यह उम्र का तकाजा था। स्नायु-कोडा उसके हाथ से छीन लिया गया था, और चिल्लाने के पहिले ही उसकी कनपटी पर पड चुका था। वह लुढक गया।

रिक प्रसन्नता से चिल्लाया और साथ ही टेरेन्स ने कहा, "क्लोना ! सार्क के समस्त दस्युओ की सौगध ! क्लोना तुम !"

: ४ :

विद्रोही

"जल्दी बाहर निकलो" टेरेन्स ने होश सम्भालते हुए कहा और उसने स्वय भी तेजी के साथ कदम बढाये।

एक क्षण के लिये उसने सतरी की लाश को हाल के खम्भे के पीछे छिपा देने की सोची, परन्तु विलम्ब मे अपनी जान भी जोखिम मे थी।

वे फिर ढलान पर आ गये। तीसरे पहर का सूर्य इस संसार को प्रकाशित कर रहा था और इस कारण ऊपरी शहर के रग इस समय नारगी की झलक लिये हुए थे।

वलोना ने परेशानी मे दौडना आरम्भ किया पर टेरेन्स ने उसकी कोहनी पकड कर कहा, "दौडो नही! अपनी स्वाभाविक चाल मे मेरे पीछे चलो, पर जरा तेज़। रिक को भी पकडे रहो, उसे भी दौडने मत देना।"

कुछ कदम ही जा पाये होगे—पैर उठ ही नही रहे थे—क्या पीछे से पुस्तकालय से आवाज़ आ रही हैं? नही! शायद कल्पना ही हो। पर टेरेन्स पीछे मुड कर देखने का साहस नही कर पाया।

एक जगह तख्ती टगी दिखाई दी, 'एम्बुलेस जाने की राह'। उसी को देख कर टेरेन्स ने आज्ञा दी 'इस ओर'। उस राह मे, जिसकी दीवारें सफेद तथा चमकीली थी ये लोग बिलकुल अजनबी ही तो लग रहे थे।

एक वर्दी वाली स्त्री इन लोगो को दूर से देख रही थी। पहले तो वह कुछ हिचकी—फिर न जाने क्या सोच कर वह इन लोगो की ओर अग्रसर हुई। टेरेन्स ने उससे बच कर दूसरी राह ली फिर तीसरी—फिर चौथी। कई लोग अस्पताल की वर्दियो मे मिले। टेरेन्स जानता था कि हम तीनो सबके मन मे सदेह उत्पन्न कर रहे है। भला आदिवासियो का ऊपरी शहर के इस चिकित्सालय मे क्या काम ! पर किया ही क्या जा सकता था !

अत मे वे पकड तो लिये ही जायेगे, इसी से 'निचले स्तर' की तख्ती को पढ कर टेरेन्स की जान मे जान आई। अब लिफ्ट उनके सम्मुख थी। उसने जल्दी से रिक व वलोना को उसमे चढाया। जब लिफ्ट नीचे को चल पडी तब उसने चैन की साँस ली। लिफ्ट का स्वर इस समय उसको अत्यधिक मधुर लग रहा था।

शहर मे तीन प्रकार के मकान थे। एक निचले शहर मे जो बिल्कुल जमीन पर बने हुए थे, जैसे मजदूरो के मकान, फैक्टरी, बेकरी और कचरा-घर। दूसरी ऊपरी शहर ही अट्टालिकाये थी जहाँ सार्कवासियो के बँगले—नाचघर—पुस्तकालय और खेल-कूद के मैदान थे। तीसरे कुछ मकान ऐसे भी थे जो दोहरे बने थे। उनमे ऊपर से नीचे आने की अलग लिफ्ट लगी थी; जैसे चिकित्सालय और पुलिस-थाना।

इस प्रकार कोई भी अस्पताल को ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर जाने के लिये चुन कर सामान ढोने वाली लिफ्ट से बच सकता था जो कि बहुत ही धीरे चलती थी। हाँ, यह अवश्य था कि आदिवासियो के लिये इनका प्रयोग वर्जित था, पर यह अपराध सतरी पर आक्रमण के अपराध के सम्मुख बहुत कम था।

ये लोग निचले स्तर के अस्पताल मे बाहर निकले। इस अस्पताल की दीवारे यहाँ भी दूध-सी सफेद थी, पर शायद ही कभी उनकी सफाई की जाती हो। ऊपर की गैलरियो मे जो काँच लगे थे वे यहाँ गायब थे। प्रतीक्षालय मे चीखते-चिल्लाते आदमी तथा काँपती हुए औरतें भरी

थी। और एक अकेली नर्स उनको शात रखने का व्यर्थ-सा प्रयत्न कर रही थी।

वह एक वृद्ध पर नाराज हो रही थी जो अपनी पतलून की सलवटे ठीक करता-करता दबी जबान से उसके प्रश्नो का उत्तर दे रहा था।

"अपनी बीमारी ठीक ठीक बताओ—कब से तुम्हारे दर्द है ? क्या इससे पहिले भी अस्पताल आये हो ? ज़रा-सी बीमारी के लिये दौडे चले आते हो—तुम बैठ जाओ—डाक्टर आकर तुमको देखेगा और दवा देगा।"

फिर वह चिल्लाई—"अगला मरीज़ !" और घड़ी की ओर देख कर कुछ बड़बडाई।

टेरेन्स, वलोना और रिक सावधानी से उस भीड मे आगे बढते जा रहे थे। आदिवासियो की शक्ले देख कर मानो वलोना मे साहस आ गया था, उसकी ज़बान खुल गई थी और वह भी कुछ न कुछ फुसफुसाती हुई जा रही थी।

"मुखियाजी, मुझे आप लोगो के पीछे आना ही पडा। मैं अपने आपको और अधिक सयत न रख सकी। मुझे रिक की चिन्ता सता रही थी और लग रहा था कि आप उसे वापस न ला सकेंगे।"

टेरेन्स ने पीछे की ओर देखते हुए कहा, "पर तुम वहाँ पहुँची कैसे ?" वह गाँव के लोगो को धक्का देता आगे बढता ही गया।

"मैं आप लोगो के पीछे-पीछे आई। मैने आप लोगो को लिफ्ट पर चढ़ते देखा। फिर जब लिफ्ट नीचे आई तो मैंने उससे कहा कि मैं आप लोगो के साथ हूँ और वह मुझे ऊपर ले गया।"

"बस, इसी प्रकार ?"

"हाँ, मैंने थोडी उसकी मरम्मत भी की।"

"हाय रे सार्क ! अब क्या होगा ?"

"और कोई चारा ही न था," वलोना ने समझाते हुए कहा "फिर मैंने देखा कि सतरी एक अट्टालिका की ओर इशारा करके आपको कुछ

बतला रहा था। जब तक संतरी रहे, मै छिपी रही। उसके बाद मै भी वहाँ पहुँच गई। परन्तु अन्दर जाने का साहस न हुआ, क्योकि मैं वहाँ की बातो से एकदम अनभिज्ञ थी। मै एक कोने मे छिप गई और आप लोगो के लौटने की प्रतीक्षा करने लगी। जब आप लोग बाहर आये और सतरियो ने आपको रोका—"

"ए! ए! सुनो!" रिसेप्शनिस्ट की तेज़ व खीझ-भरी आवाज़ सुनाई पडी, और उसके हाथ का डडा सीमेट मिश्रण के डेस्क पर बज उठा, "मै तुम्ही लोगो से कह रही हूँ जो चुपके-चुपके भागने का प्रयत्न कर रहे हो। तुम लोग बिना बीमारी दिखाये नही जा सकते। क्या तुम लोग सोचते हो कि बीमारी का बहाना कर तुम लोग झूठ-मूठ छुट्टी मार सकते हो? चलो, इधर आओ!"

परन्तु वे तीनो पलक मारते ही निचले शहर की धूप-छाँह मे खो गये। अब आदिवासी घरो का शोर व बदबू उन तक आ रही थी। सार्क-वासी उनको 'गँवारो के घर' कहकर पुकारते थे। ऊपरी शहर अब फिर से एक छत ही रह गया था।

ऊपरी शहर की घुटन तथा रईसी के वातावरण से निकलकर रिक व वलोना चाहे जितने प्रसन्न हो पर टेरेन्स के मन की चिन्ता ज़रा भी कम न हुई थी। उन लोगो ने बहुत सारे नियमो का उल्लघन किया था और अब शायद कोई भी स्थान उनके लिये सुरक्षित न था। और अभी वह यह सोच ही रहा था कि रिक चिल्लाया "उधर देखो!"

उधर देखते ही टेरेन्स की जान सूख गई। निचले शहर के आदिवासियो के लिये इससे अधिक भयानक दृश्य कोई भी नही हो सकता था। वे एक दानवी आकार की चिडियाँ-सी थी जो कि ऊपरी शहर के खुले स्थानो द्वारा नीचे को उतर रही थी। उजाला रुक गया था और उसके स्थान पर एक भयकर अँधेरा चारो ओर छा गया था। यह कोई चिड़ियाँ न थी वरन् सतरियो के धरित्री-वाहन थे।

आदिवासी चीखते-चिल्लाते इधर-उधर भागने लगे। चाहे उनके

इस प्रकार आतंकित होने का कोई कारण न था, फिर भी वे तितर-बितर हो गये। एक मनुष्य बडी अनिच्छा से पीछे को हटा, शायद वह अपने किसी आवश्यक कार्य से जा रहा था। उसने चारो ओर देखा। इस उथल-पुथल मे वही एक ऐसा व्यक्ति था जो पत्थर की भाँति शान्त था। वह साधारण रूप से लम्बा था, पर उसके कधो की चौडाई देखने योग्य थी। उसकी एक आस्तीन फटी हुई थी और उससे जघा के बराबर उसकी मोटी बाँह चमक रही थी।

टेरेन्स को कुछ भी नही सूझ रहा था। रिक और वलोना तो उसकी सहायता बिना कुछ कर ही नही सकते थे। टेरेन्स का आत्म-विश्वास भी छिन्न-भिन्न हो रहा था। यदि वे लोग भागते हैं तो भाग कर जायेंगे कहाँ ? यदि वे जहाँ के तहाँ रहे तो भी क्या कर सकते हैं ! पर यह भी तो सम्भव था कि ये सतरी किसी और की खोज मे आये हों। किन्तु ऊपर पुस्तकालय के फर्श पर एक सतरी की लाश को छोड आने के बाद इसकी सम्भावना जरा भी नही थी।

वह मोटा-तगडा आदमी उन्ही की ओर आ रहा था। वह उसके पास आकर जरा-सा रुका और धीरे से बोला, "खुरोव की बेकरी, लाडरी से दो दुकाने छोडकर है।" और फिर वह पीछे हट गया।

"चलो", टेरेन्स ने कहा।

डर के मारे उसके पसीना छूट रहा था। उस शोर मे उसने दौडते हुए सतरियो का गम्भीर गर्जन सुना। उसने पीछे की ओर मुडकर देखा। आधा दर्जन सतरी गाडी से उतर रहे थे। उनको ढूँढने मे सतरियो को कठिनाई भी क्या होगी। मुखिया की वर्दी मे वह फ़ौरन पहचान लिया जायगा।

दो सतरी उन्ही की ओर लपक रहे थे। यह तो उसे ज्ञात नही था कि सतरियों ने उन लोगो को देख लिया है अथवा नही, पर इससे अन्तर ही क्या पडता था, थे तो वे ठीक दिशा मे ही। उस मोटे-तगडे आदमी से उन दोनों की टक्कर हो गई। टेरेन्स ने उस आदमी को चिल्लाते तथा

संतरियो को गाली देते सुना। टेरेन्स जल्दी से वलोना और रिक को लेकर गली मे मुड गया।

'खुरोव बेकरी' की नाम-प्लेट धीमी-धीमी चमक रही थी और छः जगहो से टूटी थी, परन्तु डबलरोटी और मिठाइयो की सुगन्ध के कारण उसे पहचानने मे कठिनाई न हुई। सिवाय उसमे घुसने के कोई चारा भी तो न था।

एक बूढा आदमी अन्दर के कमरे से झाँक रहा था। वहाँ आटे से सनी भट्टियाँ दिखाई पड रही थी।

टेरेन्स ने हाथ से इशारा करते हुए कहा "एक मोटे-तगडे आदमी ने......" कि 'सत्री ! सत्री' की आवाज कानों मे आई।

बूढे आदमी ने कहा, "जल्दी से। इधर आ जाओ।"

टेरेन्स रुका "क्या उस भट्टी मे ?"

"अरे ! यह तो बनावटी है।" बूढे ने कहा।

पहिले रिक, फिर वलोना और बाद मे टेरेन्स एक-एक करके उस भट्टी मे घुस गये। एक खटका हुआ, भट्टी की पिछली दीवार अपनी जगह से हट गई। एक-एक करके वे लोग उसके पीछे वाले कमरे मे घुस गये।

वे लोग बैठ गये। कमरे का वायु-सचार अच्छा नही था और ऊपर से खाने की सुगन्ध उनकी भूख को तृप्त करने के स्थान पर और बढा रही थी। वलोना रिक का हाथ पकडे उसको दिलासा देने के लिये मुस्कुराती रही और रिक उसकी ओर सूनी आँखो से निहारता रहा। कभी-कभी वह अपने चेहरे को अपने हाथो से छुपा लेता था।

"मुखियाजी !" वलोना ने कहना आरम्भ किया। मुखिया खीझ कर बोला, "लोना ! मेहरबानी करके चुप भी रहो।"

वह सिर पकड कर अपने पसीने से लथपथ शरीर को ताकता रहा।

एक खटका हुआ जो कि उस कमरे मे द्विगुणित जोर से सुनाई दिया। टेरेन्स चौक उठा और अनजाने ही उसने मुक्का तान लिया।

यह वही मोटा-तगडा आदमी था और इस समय दरवाजे मे मुश्किल से फँस कर आ रहा था।

उसने टेरेन्स की ओर देख मुस्कुराते हुए कहा, "क्या युद्ध के लिये प्रस्तुत हो ?"

टेरेन्स ने अपने मुक्को की ओर देखा और फिर हाथ नीचे कर लिये।

उस आदमी की हालत पहिले से भी अधिक दयनीय हो रही थी। उसकी कमीज बिल्कुल फट गई थी, उसके गाल पर नीली धारियाँ पड गई थी तथा आँखे सूज आईं थी।

उसने कहा, "उन लोगो की खोज समाप्त हो गई है। अब यदि तुम लोगो को भूख लगी हो तो दुकान मे खाना बहुत है और दाम कम। बोलो, क्या खाओगे ?"

अब शहर मे रात हो गई थी। ऊपरी शहर की रोशनी तो आकाश मे मीलो दूर तक फैल रही थी। परन्तु निचले शहर मे भयकर अधकार का राज्य था। कर्फ्यू के बाद की अवैधानिक रोशनी को छिपाने के लिये बेकरी के दरवाजो पर मोटे-मोटे पर्दे डाल दिये गये थे।

रिक खाने के पश्चात् कुछ स्वस्थ हो चला था। उसका सिर-दर्द भी कम हो गया था। उसने उस मोटे तगडे आदमी के गाल की ओर देखते हुए कहा, "क्या उन्होने तुमको पीटा है मिस्टर ?"

"हाँ! थोडा बहुत" उसने उत्तर दिया" पर कोई बात नही। मेरे साथ तो यह रोज का किस्सा है।" वह हँसा और फिर बोला "उन्हे यह मानना ही पडा कि मैंने कुछ नही किया था, पर किसी और का पीछा करने मे बाधक अवश्य सिद्ध हुआ था और किसी आदिवासी को हटाने के लिये......।" उसने हाथ ऐसे ऊपर उठाया और गिराया, जैसे कोडा चला रहा हो।

रिक ने दुःख से मुँह छुपा लिया और वलोना ने उसे अपनी गोद मे खीच लिया।

उस मनुष्य ने दीवार से कमर टिकाई और ऐसे मुँह चलाते हुए, मानो दाँतो मे से खाना निकाल रहा हो, कहा, "मै मैट खुरोव हूँ, पर लोग मुझे बेकर ही कहते है। तुम लोग कौन हो ?"

टेरेन्स ने अनिच्छा पूर्वक कहा "हाँ तो सुनिये···"

"मैं तुम्हारी बात समझ गया" बेकर ने कहा "यदि मुझे कुछ न मालूम होगा तो किसी का कुछ बिगडेगा नही—शायद यह ठीक भी है—मैंने तुम लोगो को बचाया है—तुम मेरा विश्वास तो कर सकते हो—ठीक है न ?"

"हाँ ! उसके लिये धन्यवाद !" पर टेरेन्स अपने स्वर मे इच्छा करने पर भी सौहार्द का भाव न ला सका, "आपने यह कैसे जान लिया कि वे हमी लोगो का पीछा कर रहे थे, दौड तो बहुत से लोग रहे थे ?"

"हाँ ! परन्तु तुम्हारे जैसे चेहरे और किसी के भी न थे। तुम्हारे चेहरों पर हवाइयाँ उड रही थी", उसने कहा।

टेरेन्स ने उत्तर मे मुस्कराने का प्रयत्न किया पर असफल रहा। उसने कहा, "मुझे नही मालूम कि आपने हमे बचाने का सकट क्यो मोल लिया; पर चाहे जो हो इसके लिये धन्यवाद ! वैसे तो कोरे धन्यवाद से होता भी क्या है, पर इस समय हम आपके लिये और कर भी क्या सकते हैं।"

"इसकी कोई आवश्यकता नही है", बेकर ने कमर सीधी करते हुए कहा, "यह कार्य तो जब-जब मुझसे हो सकता है मै किया ही करता हूँ। यह किसी विशेष व्यक्ति के लिए नही करता। यदि सतरी किसी का भी पीछा करते है तो मैं उसको भरसक बचाने का प्रयत्न करता हूँ। मुझे सतरियों से अत्यन्त घृणा है।"

"क्या आप मुसीबत मे नही फँसते ?" वलोना ने आश्चर्य से कहा।

"हाँ ! फँसता क्यो नही ? इसको ही देखो न।" उसने अपने गाल की चोट दिखाते हुए कहा, "पर क्या इसके कारण मै अपने कर्तव्य से विचलित हो जाऊँ ? नहीं। इसीलिये तो मैंने यह बनावटी भट्टी बनवाई

है, जिससे कि सतरी लोग मुझे पकड न पायें; नहीं तो मेरा जीना भी दूभर हो जायगा।"

वलोना की आँखे भय से फैल गईं पर फिर भी उनमे सराहना का भाव था।

बेकर ने कहा "क्यो ? देखो न ! ये महानुभाव लोग है ही कितने ? केवल दस हजार ही न, और सतरी केवल बीस हजार, और हम आदिवासी पच्चीस करोड से भी अधिक हैं। यदि हम सब मिलकर उनका सामना करें तो ·· · " उसने अपनी उँगलियाँ चटखाईं।

"हम लोग सुई तथा विस्फोटक बन्दूको का सामना कर सकेंगे बेकर ?" टेरेन्स ने कहा।

बेकर ने तुरन्त उत्तर दिया, "हम लोग भी तो अपनी बना सकते हैं। तुम मुखिया लोग इन महानुभावो के निकट सम्पर्क मे रहते हो, इसी से उनसे डरते हो।"

वलोना का तो ससार ही आज उलट रहा था। यह मनुष्य सतरियो से लडकर आया था, और अब मुखिया से ऐसे आत्म-विश्वास से बोल रहा था मानो बराबर का हो। इसी से जब रिक ने उसकी बाँह पकड कर खीची तो उसने धीमे से उसे छुडाकर रिक को सो जाने की आज्ञा दी। उसने रिक की ओर देखा भी नही। वह इस मनुष्य की बाते ध्यान से सुनना चाहती थी।

वह मनुष्य कह रहा था, "सुई बन्दूक व विस्फोटक तोपो के होते हुए भी थोडे-से सार्की फ्लोरिना पर कुछ लाख मुखियो द्वारा ही तो राज्य करते है ?"

टेरेन्स को कुछ क्रोध भी आया, पर वह मनुष्य अपनी बात कहता ही गया, "तुम ही देखो, तुम्हारे पास बढिया कपडे हैं—अच्छा घर है—घर मे पुस्तक-फिल्मे भी है—अपनी गाडी है—कर्फ्यू तुम्हारे ऊपर नही है—ऊपरी शहर मे तुम्हारी पहुँच है—और यह महानुभाव इस सबके बदले मे क्या कुछ भी आशा नही करेंगे ?"

टेरेन्स की स्थिति इस समय गुस्सा करने की नही थी, उसने कहा "अच्छा ! आखिर तुम चाहते क्या हो ? क्या मुखिया सतरियो से लडने लगें ? पर इससे क्या लाभ होगा ? मैं मानता हूँ कि मैं अपने गाँव मे शान्ति रखता हूँ तथा अपना कोटा पूरा कराके देता हूँ, पर मैं उनको मुसीबत से बचाता भी तो हूँ। नियमो के अन्तर्गत रहकर भी मैं उनकी भरसक सहायता करने का प्रयत्न भी तो करता हूँ। क्या यह कुछ भी नही है ? किसी दिन······"

"ओहो ! किसी दिन ? पर इस किसी दिन की प्रतीक्षा कौन करेगा ? जब हम-तुम मर जायेंगे, फिर फ्लोरीना पर कोई भी राज्य करे, हमें इससे क्या ?"

टेरेन्स ने कहा, "मैं इन महानुभावो को तुमसे अधिक ही घृणा करता हूँ। फिर भी···" वह एकदम रुक गया।

बेकर हँसा, "हाँ ! हाँ ! आगे कहो न—फिर से कहो न ! मैं तुम्हे महानुभावो से घृणा करने के अपराध मे पुलिस मे नही दूँगा ? पर तुमने किया क्या है जो सतरी तुम्हारे पीछे लगे हैं ?"

टेरेन्स चुप हो रहा।

बेकर ने कहा, "मैं कल्पना कर सकता हूँ। जब सतरियो ने मुझे मारा तो वह बडे क्रोधित थे मानो क्रोध व्यक्तिगत हो, ऐसा नही जैसा कि किसी महानुभाव की आज्ञा पर होता है। मैं इन लोगो की नस-नस पहचानता हूँ और बतला सकता हूँ। इस प्रकार मेरे विचार मे केवल एक ही बात हो सकती है—वह या तो तुमने किसी संतरी पर आक्रमण किया है या हत्या कर दी है। क्यो है न ?"

टेरेन्स फिर भी चुप ही रहा।

बेकर ने फिर भी शान्तिपूर्वक ही कहा, "यह ठीक है ! तुम चुप रह सकते हो। पर मुखिया इतनी सावधानी भी ठीक नही। तुम्हें सहायता की आवश्यकता है। वे लोग जानते है कि तुम कौन हो ?"

"नही, वे नही जानते।" टेरेन्स ने जल्दी से कहा।

"उन्होंने ऊपरी शहर मे तुम्हारा कार्ड तो देखा ही होगा।"

"किसने कहा कि मैं ऊपरी शहर मे था ?"

"मैं सोचता हूँ। मैं शर्त लगाकर कह सकता हूँ कि तुम वहाँ गये थे।"

"उन्होने मेरा प्रमाण-पत्र देखा अवश्य था पर ज़रा देर के ही लिये; इतनी देर मे वह नाम न पढ सके होगे।"

"पर इतनी देर मे यह तो जान गये कि तुम मुखिया हो, और उन्हे केवल इतना ही तो करना होगा कि यह पता लगाये कि कौन से कस्बे से मुखिया गायब था या कौन आज की दिनचर्या पूर्ण रूप से नही बतला सकता। सारे फ्लोरीना पर तार तो खडक ही गये होगे। तुम इस समय भयकर विपत्ति मे हो।"

"शायद।"

"यह तो तुम भी जानते हो कि इसमे सदेह का स्थान नही है। तुम्हे सहायता चाहिये ?"

ये लोग बडे धीमे-धीमे बाते कर रहे थे। रिक एक कोने मे पड कर सो गया था और वलोना ध्यानपूर्वक उन दोनो की बाते सुन रही थी।

टेरेन्स ने सिर हिलाकर कहा, "नही धन्यवाद! मै स्वय ही इस मुसीबत से छुटकारा पा लूँगा।"

बेकर जोर से हँस पडा, "यह तो देखने लायक़ बात होगी। मुझे हीन दृष्टि से मत देखो, मैं अनपढ ही सही, पर मैं काफी शक्तिशाली हूँ। देखो, रातभर तुम उस विषय में सोच देखो। शायद सुबह तक तुम किसी निर्णय पर पहुँच सको।"

वलोना अँधेरे मे आँखे खोले पडी थी। बिस्तर के नाम पर केवल एक कम्बल बिछा हुआ था। उसके अपने घर मे भी कौन-सा इससे अच्छा बिस्तर था! रिक दूसरे कोने मे एक कम्बल पर गहरी निद्रा मे निमग्न था। जब भी उसका सिर-दर्द ठीक हो जाता था, वह ऐसी ही

निद्रा मे निमग्न हो जाता था।

मुखिया ने बिस्तर स्वीकार नही किया था। इसपर बेकर खूब हँसा था (वह हर बात पर ही हँसता था) और उसने बत्ती बुझाते हुए कहा था, "मुझे क्या, तुम चाहो तो सारी रात बैठे रहो।"

वलोना की आँखे खुली हुई थी। उसे नीद नही आ रही थी। क्या वह कभी सुख की नीद सो सकेगी ! उसने एक सतरी की हत्या जो कर दी थी।

आज अचानक ही वह अपने माता-पिता के विषय मे सोचने लगी। उनकी याद बडी हल्की थी। इतने दिन मे वह उनको भूल भी चुकी थी, परन्तु अब उसे उनकी रातभर की कानाफूसी, जो वह उसको सोती समझकर किया करते थे तथा छिपकर लोगो का आना सब उसे याद आ रहे थे।

एक दिन सतरियो ने उसको रात मे जगाया था और कुछ प्रश्न पूछे थे, जो उसकी समझ मे नही आये पर उसने उत्तर देने का प्रयत्न किया था। उसके बाद उसने अपने माता-पिता को कभी नही देखा। वे सतरी उनको ले गये थे, और अगले दिन ही उसको काम पर लगा दिया गया था, जब कि उसकी आयु के बालक और दो वर्ष तक खेल-कूद मे लगे रहे थे। लोग उसकी ओर उँगली उठाते और अपने बच्चो को उसके साथ खेलने को मना करते थे। इस कारण उसने बचपन से अपने में व्यस्त रहना सीख लिया था; साथ ही सीख ली थी चुप्पी। लोग उसे 'भीमकाय लोना' कह कर उसका मज़ाक उडाते तथा उसको आधा पागल समझते। पर आज की बाते उसे अपने माता-पिता की याद क्यो दिला रही थी ?

"वलोना !"

यह स्वर इतने निकट था कि बोलने वाले की साँस उसके बालों को छू रही थी, और इतना धीमा था कि वह कठिनाई से ही कुछ सुन पा रही थी। वह डर गई, कुछ तो भय से, और कुछ···। उसके ऊपर केवल

एक चादर ही तो थी।

वह मुखिया था। उसने कहा, "तुम कुछ मत बोलो, केवल मेरी बात ध्यान से सुनो। मैं जा रहा हूँ। दरवाजे मे ताला नही लगा है। मैं लौटूँगा जरूर। समझी! सुन तो रही हो न?"

उसने अँधेरे मे ही मुखिया का हाथ पकड कर दबाया। मुखिया सतुष्ट हो गया।

"रिक पर निगाह रखना। उसे अपनी दृष्टि से ओझल मत होने देना। और वलोना!" वह कुछ रुका, और फिर बोला, "इस बेकर पर बहुत अधिक विश्वास मत करना। उसके विषय मे कुछ भी नही मालूम है। समझी!"

कुछ हल्की-सी आहट हुई और फिर वह चला गया था। वलोना ने जरा-सा सिर उठाया, वहाँ सिवाय उसके और रिक के कोई न था। वह फिर उसी अँधेरे मे सोचने लगी। मुखिया ने ऐसा क्यो कहा। बेकर तो सतरियो से घृणा करता है, और उसने हम लोगो को बचाया भी है फिर ऐसा क्यो?

उसको केवल एक ही कारण समझ मे आ रहा था। बेकर ने घोर सकट काल मे इतनी शीघ्रता से कार्य किया जैसे वह पहले से ही इसके लिये तैयार हो और इस घटना की प्रतीक्षा ही कर रहा हो। फिर भी उसकी समझ मे कुछ भी न आ रहा था। यदि मुखिया ने ऐसा न कहा होता तो वह इतना भी नही समझ पाती।

इतने ही मे एक आवाज आई, "अच्छा! अभी तक यही हो?"

जैसे ही उस पर रोशनी पडी वह एकदम जड़ हो गई। धीरे-धीरे उसकी जान मे जान आई और उसने चादर तान ली।

उसे यह जानने मे कि अब कौन बोला था कोई खास परिश्रम नही करना पडा। उस मनुष्य की मोटी-तगडी देह अँधेरे मे भी पहचानी जा रही थी।

बेकर ने कहा, "मैंने सोचा था, तुम उसके साथ चली जाओगी।"

वलोना ने धीरे से कहा "किस के साथ श्रीमान् ?"

"बनो मत ! तुम्हे सब मालूम है।"

"वह फिर लौट आयेगा श्रीमान्।"

"क्या उसने कहा है कि वह लौटेगा ? क्या व्यर्थ की बात है ! संतरी उसे पकड लेगे। तुम्हारा मुखिया बहुत चतुर तो नही लगता; नही तो क्या इतना भी नही समझता कि दरवाजा कब जानबूझ कर खुला छोडा जाता है। क्या तुम भी जाने का विचार कर रही हो ?"

"मैं मुखिया की प्रतीक्षा करूँगी।"

"जैसी तुम्हारी इच्छा ! पर यह प्रतीक्षा बडी लम्बी होगी। तुम भी इच्छानुसार जा सकती हो।"

उसके हाथ की टार्च वलोना को छोड अब रिक के लम्बे चेहरे पर पडी। रोशनी पडने के कारण उसकी पलके कुछ सिकुडी, फिर भी वह सोता ही रहा।

बेकर ने कुछ सोचते हुए कहा, "पर तुम्हे इसको छोड कर ही जाना होगा, समझी ! यदि तुम जाना चाहो तो तुम्हारे लिये दरवाज़ा खुला है; पर इसके लिये नही।"

"यह तो बेचारा एक बीमार मनुष्य है।" वलोना ने कहना आरम्भ किया।

"हाँ ! हाँ ! मैं बेचारे बीमार आदमी ही इकट्ठे करता हूँ। याद रखना, वह यही रहेगा।"

और उसकी टार्च रिक के सोते हुए चेहरे पर ही जमी रही।

: ५ :

वैज्ञानिक

डा० सलीम जु ज लगभग साल-भर से व्यग्र थे। व्यग्रता एक ऐसी चीज है जो समय के साथ घटती नही वरन् बढ ही जाती है। हाँ, यह अवश्य था कि इतने समय मे उन्हे यह शिक्षा मिल गई थी कि सार्की सिविल सरविस से कोई भी कार्य शीघ्रता से करा लेना आसान नही है। इसका सबसे बडा कारण यह था कि इस सिविल सरविस के अधिकाश कर्मचारी फ्लोरीना के थे और उन्हे अपनी प्रतिष्ठा का अत्यधिक ख्याल था।

एक बार उसने ट्रानटोरियन राजदूत आबेल से, जो कि सार्क पर इतने वर्षों से थे कि उन्होने यहाँ अपनी जडे भी जमा ली थी, पूछा था कि ये सार्क-वासी अपना सारा राज्य-कार्य उन्ही फ्लोरीना-वासियो से क्यो कराते है जिन्हे कि वह इतनी हीन दृष्टि से देखते है ?

आबेल ने हरी शराब का प्याला हाथ मे लेकर भौहे सिकोडते हुए उत्तर दिया था, "नीति ! जु ज यह नीति है। सार्की तर्क के अनुसार यह एक 'व्यावहारिक उत्पत्ति' का विषय है। सार्क एक छोटा-सा अर्थ-हीन ससार है; जब तक इसका इस सोने के संसार फ्लोरीना पर राज्य है तभी तक यह महत्त्वपूर्ण है। इसी से यह प्रति वर्ष फ्लोरीना के गाँवो से

उनके सर्वोत्तम युवको को सार्क मे शिक्षा के लिये ले आते है। उनमे जो साधारण सिद्ध होते उन्हे ये क्लर्की का कार्य दे देते है जो कि उनके कागज पत्र सँभालते है; और जो वास्तव मे चतुर है उनको वह देसी अधिकारी बना कर फ्लोरीना पर ही भेज देते है और उनको 'मुखिया' का पद देते हैं।"

डा० जु ज ठहरे एक अन्तराल-विशेषज्ञ। भला एक वैज्ञानिक की समझ मे यह सब कैसे आता? अतएव उन्होने फिर अपनी शका प्रकट की, "पर इससे लाभ क्या होता है?"

आबेल ने अपनी उँगली उनकी ओर उठाते हुए कहा, "आप कभी भी एक सफल शासक नही हो सकते। यदि कभी बनना चाहे तो मेरे पास सिफारिश के लिए न आइयेगा। सुनिये! फ्लोरीना के सब बुद्धिमान् मनुष्यो को ये अपनी ओर मिला लेते हैं, और जब तक वे सार्क की सेवा करते हैं उनका अच्छा ध्यान रखते हैं। फिर वे लोग भी जानते है कि यदि वे सार्क के विरुद्ध आवाज़ उठायेगे तो वापस फ्लोरीना ही भेज दिये जायेगे। फ्लोरिना! जहाँ का जीवन नरक समान है मित्र! पूरे नरक के समान!"

उन्होने एक ही घूँट मे शराब समाप्त करते हुए कहा, "और भी सुनिये! किसी मुखिया या किसी भी क्लर्क को सन्तानोत्पत्ति की आज्ञा नही है। यदि वह ऐसा करता है तो अपने उच्च पद से हाथ धो बैठता है, चाहे वह नारी ही क्यो न हो। फ्लोरीन नारियों का सार्क-वासियो के साथ ससर्ग का तो कोई प्रश्न ही नही उठता। इस प्रकार फ्लोरीना का उत्तम वर्ग समाप्त होता जाता है और अन्त मे फ्लोरीना केवल कुली-कबाडियो तथा मजदूरो का ससार रह जायगा।"

"पर इस प्रकार उनकी क्लर्क-सख्या भी तो कम हो जायगी?" जुंज ने फिर शंका प्रकट की।

"यह तो सुदूर भविष्य की समस्या है।"

अब डा० जू ज फ्लोरीना से सम्बन्धित कार्यालय के बाह्य कमरे मे बैठे

उस अभेद्य दीवार के अन्दर बुलाये जाने की बडी व्यग्रता से प्रतीक्षा कर रहे थे, उनके चारो ओर फ्लोरीना के गद्दार इस नौकरशाही की भूल-भुलैया मे इधर से उधर दौड रहे थे।

एक बुजर्ग फ्लोरीनी जो इस नौकरशाही मे ही बूढा हो चला था, उनके सामने खडा था।

"डा० जुंज ?"

"हाँ।"

"मेरे साथ आओ।"

यह बुलाने का कार्य, उतनी ही दक्षता से, पर्दे पर नम्बर डाल कर भी किया जा सकता था और राह दिखाने के लिये एक प्रतिदीप्त प्रकाशरेखा ही पर्याप्त थी। डा० जुंज सोच रहे थे कि जहाँ पुरुष शक्ति इतनी सस्ती है वहाँ ऐसी प्रगतिशील वस्तुओ की आवश्यकता भी क्या है—हाँ! पुरुष शक्ति ही तो! उन्होने अभी तक कोई भी महिला सार्क के किसी भी कार्यालय मे कार्य करती नही देखी थी। फ्लोरीनी नारियाँ तो वही छोड दी जाती थी, केवल वही यहाँ आती थी जो घरो मे दासियो का कार्य करती थी। पर उन्हे भी सन्तानोत्पत्ति की आज्ञा नही थी। और आबेल के कथनानुसार सार्क महिलाओ के कार्य करने का तो कोई प्रश्न ही नही उठता।

उनको अण्डर सेक्रेटरी के क्लर्क के सम्मुख बैठा दिया गया। उन्हे उसका पद उसके डेक्स पर लिखे 'क्लर्क' शब्द से ज्ञात हो गया था। फ्लोरीना का कोई भी पुरुष क्लर्क से ऊँचा नही उठ सकता था चाहे सार्क का सारा काम उसकी गोरी उँगलियो से ही निकलता था। अण्डर सेक्रेटरी तथा सेक्रेटरी सब सार्क-वासी ही होते थे। डा० जुंज उन लोगो से दफ्तरो के बाहर सामाजिक स्तर पर तो मिल सकते थे पर कार्यालय मे तो वह लोग पहुँच के बाहर थे।

अब भी वह यद्यपि उतने ही व्यग्र थे पर फिर भी अपने लक्ष्य के काफी निकट आ गये थे। क्लर्क [illegible] उलटता जाता था और

उनको सावधानी से पढता जाता था, मानो उनमे ब्रह्माण्ड की सारी गुप्त बाते लिखी हो। यह मनुष्य अभी युवा ही था और शायद अभी अभी पढ कर ही निकला होगा। अन्य फ्लोरीनियो की भाँति वह भी गोरा था तथा उसके बाल भी सुनहरे थे।

डा० जुज को एक प्रकार का रोमाच हो रहा था। वह लिबेर के निवासी थे। अन्य लिबेर निवासियो की ही भाँति वह भी गहरे काले रग के थे। इस नीहारिका मे कुछ ही ग्रह ऐसे थे जिनके निवासी या तो एकदम काले होते या एकदम गोरे, अन्यथा बीच का गेहुँआ वर्ण ही सारे ग्रहो पर मिलता था।

कुछ मौलिक युवा नरतत्व-विज्ञान-वेत्ता तो यहाँ तक कहते थे कि लिबेर जैसे मनुष्य एक स्वतन्त्र परन्तु केन्द्रीभूत विकास का फल है। पर कुछ बुजुर्ग लोग इस बात पर का जोर से खण्डन करते और कहते कि विकास कभी इतना केन्द्रीभूत नही हो सकता कि वह लोगो को अन्तर-विभाजन के लिये इतना लाचार कर दे जैसा कि नीहारिका के प्रत्येक ग्रह का हाल था। इन लोगो का कहना था कि मूल ग्रह पर ही जहाँ के सब लोग है, भिन्न भिन्न वर्ण हो गये थे और इसी कारण अधिकांश ग्रहो पर गेहुँआ रग मिलता है।

डा० जुज को इस समस्या का कोई भी हल ठीक न लगता था और उनके मन की समस्या ज्यो की त्यो ही थी, जो अक्सर उनके सम्मुख आ खडी होती। प्राचीन सघर्ष की किवदन्तियाँ अब भी लिबेर मे सुनी जाती थी। कहा जाता है कि एक बार विभिन्न वर्णों वाली जातियो मे झगडा हुआ था और काले वर्ण की जाति हारने पर भाग कर लिबेर मे आ बसी थी।

डा० जुज लिबेर को छोड कर अन्तराल टेक्नोलाजी के आरक्ट्यू-रियन इन्सीटीट्यूट मे आये और उसके बाद अपने वर्तमान कार्य पर नियुक्त होने के पश्चात् वह इस कथा को बिल्कुल भूल गये। तत्पश्चात् उन्होने केवल एक बार इस [illegible] विचार किया था। एक बार

वह सैचारियन सेक्टर की एक पुरानी दुनिया मे अपने कार्य के सम्बन्ध मे पहुँच गये थे। उस दुनिया का इतिहास युगो पुराना था और भाषा इतनी पुरानी थी कि उसके बोलने का ढग युगो पुरानी आँग्ल भाषा से मिलता था। और उनकी भाषा मे काले मनुष्य के लिये एक विशेष शब्द का प्रयोग होता था।

इससे वह समस्या फिर उनके सम्मुख आ खडी हुई थी कि काले मनुष्य के लिये एक विशेष शब्द का प्रयोग क्यो होना चाहिये। नीली आँखो वाले, लम्बे कानो वाले या घु घराले बालो वाले के लिये तो कोई विशेष शब्द नही था। फिर.......... ..

इतने मे क्लर्क की आवाज़ ने उनकी विचार धारा को तोड दिया "रेकार्ड के अनुसार आप पहिले भी एक बार इस दफ्तर मे आये हैं।"

डा० जु ज ने कुछ रूक्ष हो कहा "जी हाँ ! अवश्य आया हूँ।"

"लेकिन अभी हाल मे नही।"

"नही ! हाल मे नही।"

"क्या आप अभी तक उस अन्तराल विशेषज्ञ की खोज मे लगे हुए हैं जो लगभग ग्यारह महीने तेरह दिन पहले गुम हो गया था ?" क्लर्क ने पन्ने पलटते हुये कहा।

"जी हाँ।"

"और इतने समय मे," क्लर्क ने सूखे स्वर में कहा जैसे उसका सारा रस निचोड लिया गया हो "उस मनुष्य का कोई भी चिह्न या सुराग नही मिला जिससे यह पता चले कि उसने कभी सार्क-साम्राज्य मे पदार्पण भी किया था ?"

"उसने अन्तराल से अन्तिम रिपोर्ट सार्क के निकट से की थी।"

क्लर्क ने डा० जु ज की ओर दृष्टि उठा कर कहा "पर इससे उसकी सार्क पर उपस्थिति की कोई गवाही तो नही मिलती।"

'गवाही नही मिलती' यही तो अन्तर-तारकीय-अन्तराल-विश्लेषण-ब्यूरो भी महीनो से कह रही है। वह कहती है 'कोई पता नही लगता

डा० जुंज ! आप अपना समय किसी और कार्य मे लगाइये। व्यूरो खोज जारी रखने की प्रतिज्ञा करती है।' पर उनका वास्तविक अर्थ यही था कि जुज क्यो हमारा पैसा व समय व्यर्थ बरबाद कर रहे हो।

यह खोज जैसा कि क्लर्क ने कहा था अन्तर तारकीय समय मानक के अनुमार ११ महीने १३ दिन पहिले आरम्भ हुई थी। उससे दो दिन पश्चात् वह इस ग्रह की व्यूरो का साधारण निरीक्षण करने आये थे और तब से यही फँसे थे।

व्यूरो का एक प्रतिनिधि उनको स्टेशन पर मिला था। वह एक होशियार युवक था तथा सार्क पर बनी एक प्रकार की च्यू गम को हर समय चबाता रहता था, इसी से डा० जुँ ज को वह याद भी रहा था।

यह उस समय की बात है जब कि निरीक्षण लगभग समाप्त हो चुका था कि उस प्रतिनिधि को कुछ याद आया और उसने कान मे पेंसिल लगाते हुये कहा "यह एक क्षेत्र विशेषज्ञ की सूचना है, शायद किसी महत्व की न भी हो, आप तो उन लोगो को जानते ही हैं।"

यह लोगो का आम प्रचलित तरीका था 'आप तो इन लोगो को जानते हैं'। डा० जुंज को इस पर बडा क्रोध आया था और वह यह कहने को ही थे कि १५ साल पहिले वह स्वयं भी एक क्षेत्र विशेषज्ञ ही थे परन्तु फिर उनको याद आया कि इस जीवन को वह तीन माह से अधिक सहन नही कर पाये थे। किन्तु इसी क्रोध के कारण वह इस सूचना को पूरे ध्यान से पढने में सफल हो सके थे। वह सूचना इस प्रकार थी—

'एक अत्यधिक महत्वपूर्ण विषय की विस्तारपूर्वक सूचना देने के लिये अन्तराल विश्लेषण व्यूरो के केन्द्रीय मुख्यालय की अबाध साकेतिक लाइन को खुला रखे। सारी नीहारिका प्रभावित है। सबसे छोटे व्योम पथ से उतर रहा हूँ।'

उस प्रतिनिधि को हँसी-सी आई। उसने च्यूंगम चबाते हुए कहा "अहा हा ! हा ! क्या कहने ! सारी नीहारिका प्रभावित है। हा ! हा ! यह क्षेत्र विशेषज्ञ तो सबसे ही आगे बढ गया। मैं ने यह सूचना

पाने पर उससे फिर बाते करने का प्रयत्न किया था जिससे कि मैं उस की बात समझ सकूँ, पर बेकार ही रहा, वह यही कहता रहा कि फ्लोरीना के प्रत्येक जीव का जीवन सकट मे है—सोचिये ! ५० अरब जीव । मुझे तो वह मानसिक रोगी-सा लग रहा है। सो अब जब वह उतरेगा तो मैं उससे अकेला नही मिलना चाहता। क्यो आपकी क्या राय है ?"

डा० जु ज ने कहा "क्या तुम्हारे वार्तालाप की कोई लिपि तुम्हारे पास है ?"

"जी हां ! श्रीमान् ।" और कुछ ढूँढने के बाद एक फिल्म का टुकडा मिल गया था।

डा० जु ज ने उसको रीडर द्वारा पढ कर कहा, "यह प्रतिलिपि है न ?"

"मूल लिपि तो मैंने सार्क के अन्तर-तारकीय-वाहन व्यूरो को भेज दी थी। मैंने यही उचित समझा कि वह लोग भी एम्बुलेस के साथ वहाँ मिले। हो सकता है कि उसकी तबियत बहुत खराब हो, ऐसे मे यही उत्तम रहेगा।"

डा० जु ज उस युवक से पूर्णतया सहमत थे। जब इन एकाकी विशेषज्ञो की अन्तराल की गहराइयो मे कार्य करते-करते कमर टूट जाती थी तो उनका मानसिक रोग अति उग्र रूप धारण कर लेता था।

फिर उन्होने कहा, "लेकिन सुनो ! तुम्हारी बातो से लगता है कि वह अभी तक नही उतरा !"

प्रतिनिधि ने भी चकित होते हुए कहा "हाँ ! उतर तो अवश्य आया होगा। परन्तु किसी ने भी मुझे इसकी सूचना नही दी है।"

"अच्छा वाहन विभाग को फोन करके सब बाते विस्तारपूर्वक पता करो। वह मानसिक रोगी हो या न हो पर उसकी विस्तृत गणना हमारे पास अवश्य होनी चाहिये।"

डा० जु ज अगले दिन, इस ग्रह से जाने से पहले, अन्तिम निरीक्षण

के लिये फिर वहाँ पहुँचे थे। दूसरे ग्रहो मे भी उनको कुछ महत्वपूर्ण विषयो को देखना था इस कारण वह जल्दी मे थे। जब वह दरवाजे से बाहर निकल रहे थे तभी उनको याद आया और उन्होने पीछे मुडते हुये पूछा था, "हाँ! हमारे क्षेत्र विशेषज्ञ का क्या हुआ ?"

प्रतिनिधि ने उत्तर दिया था, "हाँ सुनिये! मैं आपको बताने ही वाला था। वाहन विभाग वालो का कहना है कि उन्हे उसकी कोई सूचना नही मिली। मैंने क्षेत्र विशेषज्ञ की मोटर का शक्ति चित्र उनके पास भेज दिया है और वह कहते है कि इस प्रकार की कोई भी मोटर उनके यहाँ नही। शायद उसने अपना उतरने का विचार ही स्थगित कर दिया हो।"

डा० जुंज ने अपना प्रस्थान एक दिन के लिये स्थगित कर दिया था। अगले दिन वह सार्क के अन्तर-तारकीय-वाहन ब्यूरो मे गये थे। वह फ्लोरीना के अधिकारियों से तब पहिली ही बार मिले थे और उन लोगो ने सिर हिलाते हुए कहा था कि उन्हे अन्तराल ब्यूरो के इस विशेषज्ञ के उतरने की सूचना तो अवश्य मिली थी पर ऐसा कोई यान उतरा तो नही था।

डा० जुंज ने पूरा जोर लगाते हुए कहा था, "यह विषय बहुत ही महत्वपूर्ण है। वह वेचारा बहुत बीमार था। क्या आपको स्थानीय अन्तराल ब्यूरो के प्रतिनिधि तथा अन्तराल विशेषज्ञ के वार्तालाप की प्रतिलिपि नही मिली ?"

इस पर उनके नेत्र आश्चर्य से फैल गये और उन्होने कहा, "प्रतिलिपि ?" उस कार्यालय मे किसी ने भी उस प्रतिलिपि को नही देखा था। यदि वह बीमार था तो उन्हें अत्यन्त खेद है—पर अन्तराल ब्यूरो का कोई भी यान यहाँ नही उतरा और न ही कही आस-पास के अन्तराल मे है।

डा० जुंज अपने होटल मे लौट गये थे। तरह-तरह के विचार उनके मन मे घूम रहे थे। प्रस्थान की दूसरी तिथि भी निकल गई थी।

उन्होने होटल के मैनेजर से कह कर एक दूसरा सेट ले लिया जो ज्यादा दिन ठहरने के लिये अधिक उपयुक्त था। और फिर उन्होने ट्रानटोरियन राजदूत लुडगिन आबेल से मिलने का समय नियत किया था।

अगला दिन उन्होंने सार्की इतिहास पढने मे व्यतीत किया और जब तक आबेल से मिलने का नियत समय आया, उनका हृदय क्रोध से उबलने लगा था और उन्होने मन-ही-मन निश्चय कर लिया था कि वह आसानी से इस समस्या का पीछा नही छोडेगे।

उस वृद्ध राजदूत ने इस भेंट को सामाजिक भेंट के रूप मे ही लिया था। उन्होने ज़ोर से हाथ मिलाया, शराब मँगाई, और प्रथम दो पेग समाप्त होने तक कार्य सम्बन्धी कोई भी वार्ता न करने दी। जुज ने वह समय भी उचित वार्ता करने मे ही व्यतीत किया। उन्होने फ्लोरीनी सिविल सरविस के विषय मे पता किया और उसी समय उन्हे सार्क की 'व्यावहारिक उत्पत्ति' वाली नीति के विषय मे मालूम हुआ। उनका क्रोध और भी उग्र होता गया।

आबेल का उस दिन का रूप जुंज को सदैव ही याद रहा। उनकी डरावनी सफेद पलको के बीच चमकते अर्धमीलित नेत्रो की गहराइयाँ, शराब के प्याले पर स्पिट तोतेनुमा नाक, गालो के गड्ढे जो कि उनके चेहरे के दुबलेपन को और भी बढा रहे थे, और उनकी चलती हुई उगलियाँ, मानो किसी मौन सगीत पर ताल दे रही थी। जुज ने अपनी कहानी सक्षेप मे कह सुनाई और आबेल ने बिना किसी हस्तक्षेप के सारी कहानी चुपचाप ध्यान पूर्वक सुनी थी। जब जुज समाप्त कर चुके तो आबेल ने मुँह पोछते हुए कहा, "सुनिये! क्या आप इस लुप्त मनुष्य को जानते है?"

"नही।"

• "कभी मिले भी नही?"

"सब क्षेत्र विशेषज्ञो से मिलना बहुत कठिन है।"

"क्या इससे पहले भी उसे कभी इस प्रकार की भ्राति हुई थी?"

"यदि यह भ्राति ही है तो अन्तराल ब्यूरो के रेकार्ड के अनुसार प्रथम ही है।"

"यदि !" पर राजदूत ने इसको आगे न बढाते हुए कहा, "पर आप इसके लिये मेरे पास क्यो आये है ?"

"सहायता के लिये।"

"यह तो प्रत्यक्ष ही है। पर किस रूप मे ? मैं क्या कर सकता हूँ ?"

"सुनिये ! मुझे समझाने दीजिये। हमारे विशेषज्ञ के यान की मोटर के शक्ति चित्र को सार्क की वाहन व्यूरो ने निकट अन्तराल मे खोज कर देख लिया है और उसका कही चिह्न तक नही है। वह इस विषय मे झूठ नही कह सकते। मेरा अर्थ यह नही है कि सार्की झूठ बोलते ही नही है पर व्यर्थ ही झूठ बोलने मे कोई लाभ भी तो नही, साथ ही वह यह भी जानते है कि उनकी इस बात की पुष्टि मै जब चाहे तब करा सकता हूँ।"

"अच्छा तो फिर ?"

"केवल दो ही प्रकार से शक्ति चित्र की खोज विफल रहती है, पहली जब कि यान निकट अन्तराल मे न होकर अति-अन्तराल के बीच मे से कूदकर नीहारिका के किसी दूसरे ही भाग मे पहुँच गया हो, दूसरी जबकि वह अन्तराल मे हो ही नही अर्थात् वह किसी ग्रह पर उतर गया हो। मैं विश्वास नही कर सकता कि हमारा आदमी कूदकर दूसरी जगह गया होगा क्योकि चाहे फ्लोरीना की विपत्ति और सारी नीहारिका पर उसका असर दोनो उसके प्रभावित मन की भ्राति ही हो, पर सार्क पर उतर कर उसकी सूचना देने से उसको कोई रोक नही सकता। वह अपना निश्चय बदल कर दूसरी जगह नही जा सकता, मेरा पन्द्रह वर्ष का अनुभव यही कहता है। यदि उसका कथन वास्तविक और सच्चा है तब यह विषय और अधिक गम्भीर हो जाता है। यह मानी हुई बात है कि ऐसी स्थिति मे उसको निकट अन्तराल के बाहर नही जाने दिया जा सकता।"

ट्रानटोरियन राजदूत ने अपनी उँगली उठाते हुये कहा, "तो आपका निष्कर्ष यही है कि वह सार्क पर ही है।"

"अवश्य ! अब भी दो बातें हो सकती है। पहली, यदि वह मानसिक विकार के वश मे है और वह स्वीकृत हवाई अड्डे के स्थान पर कही और उतर गया है तो कही पागल-सा घूम रहा होगा। यद्यपि क्षेत्र विशेषज्ञ मे भी यह स्थिति बडी अस्वाभाविक है पर ऐसा हो चुका है। अधिकतर यह मानसिक विकार बडे अल्प समय के लिये रहता है और जैसे ही वह ठीक होते है तो उन्हे अपने कार्य के विषय मे सबसे पहले याद आता है और अपनी निजी बाते बाद मे। अन्तराल विशेषज्ञ का कार्य ही तो उसका जीवन है। अक्सर यह पागल पुस्तकालयो मे अन्तराल विश्लेषण की पुस्तके ढूँढता मिल जाता है।"

"तो आप चाहते है कि पुस्तकालय बोर्ड से मै इसका प्रबन्ध करा दूँ ?"

"नही ! मैं चाहता हूँ कि आप यह प्रबन्ध करा दे कि अन्तराल विश्लेषण सम्बन्धी मानी हुई पुस्तके अलग रखवा दी जाँय और यदि सार्की के अलावा अन्य कोई भी मनुष्य इन पुस्तको को मांगे तो उसको रोक रखा जाय। इस बात को वह लोग मान भी जायेगे क्योकि वह लोग या उनके बडे अधिकारी इस बात को जानते है कि उसका कोई फल न निकलेगा।"

"क्यो ?"

क्योकि !" अब जु ज ने क्रोधित हो जल्दी-जल्दी बोलना आरम्भ किया, "क्योकि मुझे पूरा विश्वास है कि हमारा आदमी सार्क पर अपनी योजनानुसार उतरा है। चाहे वह पागल अवस्था मे हो या अच्छी। उसके बाद सार्की अधिकारियो ने या तो उसको बन्दी बना लिया है या जहाँ तक सम्भावना है उसकी हत्या करादी है।"

आबेल ने अपना प्याला नीचे रखते हुये कहा "आप मजाक तो नही कर रहे ?"

"क्या ऐसा लगता है कि मैं मजाक कर रहा हूँ ? अभी आधा घण्टा पहिले आपने ही तो मुझे सार्क के विषय मे बतलाया है कि किस प्रकार वह अपने ऐश्वर्य और धन के लिये फ्लोरीना पर निर्भर है। मेरे इस २४ घटे के अध्ययन ने भी मुझे यही बतालाया है कि फ्लोरीना के काईट के खेत ही सार्क की धन दौलत हैं। और अब एक मनुष्य आता है, चाहे वह पागल अवस्था मे या अच्छा इससे कोई अन्तर नही पडता, जो यह कहता है कि नीहारिका की एक महत्त्वपूर्ण उथल पुथल फ्लोरीना के समस्त जीवो को विनष्ट कर देगी। देखिये यह रही हमारे मनुष्य के अतिम सवाद की प्रतिलिपि।"

यह कहकर जुंज ने उस फिल्मी टुकडे को आबेल की गोद मे फेंक दिया। आबेल ने उसे रीडर द्वारा पढकर कहा, "इससे कोई अधिक सूचना तो नही मिली।"

"एकदम नही। यह तो केवल इतना ही कहता है कि कोई विपत्ति है जो कि अत्यन्त निकट है। केवल इतना ही ! पर यह सूचना सार्कियो को कदापि न दी जानी चाहिये थी। सम्भवतः वह आदमी गलत ही हो। गलत होने पर भी इस पागलपन को (यदि वह केवल पागलपन ही है) सार्की सरकार कभी भी नीहारिका मे नही फैलने देगी। यदि एक बार फ्लोरीना के आतंक और तत्पश्चात् काईट की उपज मे घटती की ओर भी ध्यान न दिया जाय, तो भी यह सार्क तथा फ्लोरीना के गन्दे सम्बन्धो का कच्चा चिट्ठा नीहारिका के सम्मुख प्रस्तुत कर देता। अब सोचिये केवल एक मनुष्य को हटाने से ही उनका काम बन जाता है। और वह लोग जानते है कि केवल इस प्रतिलिपि के आधार पर मैं उनका कुछ भी नही बिगाड सकता। क्या ऐसे मे सार्क हत्या करने से हिचकेगा ? कम-से-कम इस 'व्यावहारिक उत्पत्ति' को मानने वाले तो कदापि नही।"

"पर आप मुझे क्या करने की आज्ञा देते है। मैं तो अभी भी किसी निश्चय पर नही पहुँच सका हूँ।" आबेल ने दृढता से कहा।

"इस बात को मालूम कीजिये कि इन्होने उसकी हत्या की है या नही। आपका कोई गुप्तचर विभाग तो होगा ही। ओह! बनिये मत, मैं नीहारिका भर मे व्यर्थ ही इधर उधर मारा-मारा नही फिरता हूँ कि मुझे इतना भी पता न हो। इस मामले की तह तक पहुँचिये और इधर मैं इनको पुस्तकालय की खोज द्वारा बहलाये रखता हूँ। जब आप इन हत्यारो का पता लगा ले तब मैं चाहूँगा कि ट्रानटर इस बात पर उनको ऐसे आडे हाथो ले कि इन लोगो को भी पता चल जाय कि कोई भी सरकार अन्तराल ब्यूरो के कर्मचारी की हत्या करके चैन से नही बैठ सकती।"

इस प्रकार उनकी आबेल से पहली भेंट समाप्त हुई थी।

जुंज की एक बात तो बिल्कुल ठीक निकली। सार्की अधिकारियो ने पूरे सहयोग व सहानुभूति के साथ पुस्तकालयो मे प्रवन्ध करा दिया। परन्तु, ऐसा प्रतीत होता था जैसे उनकी और बाते ठीक न थी। महीनो निकल गये पर आबेल के गुप्तचर उस क्षेत्र विशेषज्ञ, मरे या जिन्दा का, कोई पता नही लगा सके, मानो सार्क की धरती ही उसे निगल गई हो।

ग्यारह महीने तक यही हाल रहा और अब जुंज निराश हो चुके थे, पर उन्होने एक माह और रहने का निश्चय किया, फिर उसके बाद नही। और अब इतने दिन बाद कुछ सूचना मिली—वह भी आबेल द्वारा नही—पर उनके अपने बिछाये टूटे-फूटे जाल द्वारा। यह सार्क के 'जनता पुस्तकालय' से सूचना आई थी और अब फिर डा० जुंज फ्लोरीना से सम्बन्धित कार्यालय मे एक फ्लोरीनी क्लर्क के सम्मुख बैठे थे।

क्लर्क ने मन-ही-मन सारा ब्यौरा पढ डाला और फिर सिर उठा कर पूछा, "कहिये! मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?"

जुंज ने सतर्कता से कहा, "कल सायकाल ४२२ पर मुझे सूचना मिली थी कि फ्लोरीना पर सार्क पुस्तकालय मे एक मनुष्य को, जिसने अन्तराल विश्लेषण पर दो मान्य पुस्तकें मांगी थी, मेरे लिये रोका गया।

यह सार्क का वासी भी नही था, और फिर उसके पश्चात् मुझे कोई भी सूचना नही मिली।"

क्लर्क ने कुछ कहना चाहा पर डा० जुंज ने बीच मे काट कर और जोर से कहा, "कल टेलीसूचना द्वारा जो मैने अपने होटल मे सुनी थी ज्ञात हुआ है कि कल ही ५-०५ बजे उसी पुस्तकालय मे किसी ने एक संतरी की हत्या कर दी है। यह तो आदिवासी फ्लोरीनी है। पुलिस उनका पीछा कर रही है। यह सूचना दोबारा खबरें पढते समय नही दी गई।"

क्लर्क ने रूखी-सी आवाज मे कहा, "सार्क की सरकार अन्तराल ब्यूरो के किसी भी अधिकारी की आज्ञा मानने को बाध्य नही है। मेरे अधिकारियो ने कल ही मुझे इसकी सूचना दे दी थी कि आप इस विषय मे प्रश्न करने आयेंगे और उन्होने यह भी बतलाया था कि मैं आपको क्या उत्तर दूँ। उस आदमी के साथ जो कि पुस्तके देखने आया था एक मुखिया और एक फ्लोरीनी नारी भी थी। उन्होने ही संतरी पर आक्रमण किया है। पुलिस पीछा कर रही है पर अभी तक पकडने में असफल है।"

डा० जुंज एकदम हताश हो उठे, "तो फिर वह लोग भाग गये ?"

"एकदम नही। वह लोग एक मैट खुरोव नामक बेकर की दुकान की ओर जाते देखे गये थे।"

"और वह लोग वहाँ रहने दिये गये ?"

"क्या आप अभी हाल मे ही हिज् एक्सेलेसी श्री लुडिगन आबेल से मिले है ?"

"हाँ ! पर इससे आपको क्या ?"

"हमे सूचना मिली है कि आप अक्सर ट्रानटोरियन दूतावास मे देखे गये हैं।"

"मैं एक सप्ताह से उनसे नही मिला हूँ।"

"तो मैं आपको सलाह दूँगा कि आप उनसे मिलिये। हमने अपने

अन्तर तारकीय सम्बन्धो के कारण ही उनको बेकरी मे रहने दिया है। और मुझे यह भी सूचित करने की आज्ञा मिली है कि हमारे सुरक्षा विभाग मे खुरोव का नाम ट्रानटर के गुप्तचरो मे लिखा हुआ है।"

: ६ :

राजदूत

ज्ुंज और क्लर्क का यह वार्तालाप जिस समय हो रहा था, उससे दस घटे पहिले ही टेरेन्स खुरोव की बेकरी से भागा था।

टेरेन्स मजदूरो की उन काल कोठरियो की खुरदुरी सतह को टटोलते टटोलते तेजी से निचले नगर की गलियो से आगे बढ रहा था। हल्की-सी रोशनी के सिवा जो कि ऊपरी शहर के फर्श से कभी-कभी छन कर आ जाती थी, वह एकदम अधकार मे थी। इसके अतिरिक्त उस निचले शहर मे प्रकाश का कोई साधन ही न था। हाँ सतरियो की टार्चों की नन्ही-नन्ही रोशनी अवश्य ही यदाकदा चमक उठती थी। यह संतरी दो-दो और तीन-तीन की टोलियो मे गश्त लगाते रहते थे।

निचला शहर एक सुप्त दानव के समान शान्त था जिसका ऊपरी शहर मानो एक चमकदार आंवरण हो जो कि उसकी भयानकता को छिपाये रहता था। उसके कुछ भागो मे शायद काला बाजार हो क्यो कि ग्रामो की उपज यही आ कर जमा होती थी। यहाँ से ही सारा व्यापार होता था, पर उस गदगी भरे वातावरण मे इस काले बाजार का किसी बाहर वाले को पता चलना कठिन ही था।

इतने मे ही उसे पदचाप सुनाई थी तथा रोशनियाँ इधर से उधर

चलती दिखाई दी। वह झटपट एक धूल धूसरित गली मे घुस गया। धूल धूसरित ही तो थी वह गलियाँ—ऊपरी शहर के कारण फ्लोरिना की रात्रि-वर्षा की बूदे वहाँ तक पहुँचती ही कहाँ थी।

सतरी सारी रात गश्त लगाते थे। उनका गश्त लगाना ही निरीह आदिवासियो को भयभीत करने के लिये पर्याप्त था। बिना प्रकाश के, शहर के इस गहन अँधकार मे छिपे-छिपे चोरी का हो जाना अत्यत आसान था, यदि सतरियो का भय न भी होता तो भी वहाँ चोरी की सम्भावना कम ही थी क्यो कि प्रथम तो अनाज की मडी व वर्कशाप भलीभाँति सुरक्षित थे और द्वितीय आदिवासी इतने निर्धन थे कि एक दूसरे से कुछ भी चुराने को उनके पास था ही क्या। और धनी सार्क वासी तो उनकी पहुँच के बाहर थे ही। इस कारण फ्लोरीना मे चोरी डकैती जैसे अपराधो का नाम निशान भी न था।

टेरेन्स बढता चला गया। यदाकदा ऊपर से प्रकाश छन कर उसके चेहरे पर पड जाता जिससे उसका गौर वर्ण और भी चमक उठता। उस समय उसकी दृष्टि अपने आप ही ऊपर उठ जाती और वह सोचने लगता—हाँ! पहुँच के बाहर!

क्या सचमुच ही वह पहुँच के बाहर था? अपने जीवन मे ही सार्क के महानुभावो के प्रति उसके मन व दृष्टिकोण मे कितना अन्तर आ गया था! बचपन मे! हाँ तब वह बच्चा ही तो था—सतरी अपनी काली रुपहली वर्दी मे उसे दानव की भाँति लगते थे। उसे मालूम था कि उनसे डर कर भागना ही चाहिये, चाहे आप अपराधी हो या न हो। और महानुभाव!—अहा! वह तो देवतास्वरूप थे—अच्छे-अच्छे काम करने वाले—सार्करूपी स्वर्ग मे रहने वाले और फ्लोरीना के बेवकूफ गँवार लोगो की भलाई मे दिन रात व्यस्त रहने वाले।

• स्कूल मे भी दिन प्रतिदिन यही प्रार्थना की जाती थी कि नीहारिका की आत्माये उन महानुभावो की भी हमारी ही भाँति सदा रक्षा करे।

हमारी ही भाँति! हाँ! अब वह सोच रहा था—बिल्कुल ठीक,

बिल्कुल उसी तरह व्यवहार करे जैसा कि वह हमारे साथ करते है। न कुछ कम और न कुछ अधिक। गुस्से मे स्वयमेव ही उसकी मुट्ठी भिच गई।

जब वह दस वर्ष का था उसने सार्क-जीवन पर जो निबंध लिखा था, वह केवल कोरी कल्पना ही तो थी। और वह केवल भाषा की दृष्टि से लिखा भी गया था।

उस निबध क। थोडा सा भाग ही उसे याद था, वह भी एक पैरा, उसमे उसने महानुभावो का वर्णन किया था, और लिखा था कि किस प्रकार वह प्रतिदिन एकत्र हो कर फ्लोरीना-वासियो के पापो पर दुख प्रकट करते थे और फिर उनके विमोचन का प्रयत्न करते थे।

उसका शिक्षक इससे बडा प्रसन्न हुआ था और अगले वर्ष जब कि और लडके कच्ची मे, जो कि थोडा बहुत पढ लेने भर की कक्षा थी, पडे रह गये, उसे विशेष कक्षा मे चढा दिया गया। और सोलह वर्ष की आयु मे उसे अध्ययन के लिये सार्क भेज दिया गया था।

उस दिन के गर्व व प्रसन्नता को वह आज तक नही भूला था। किंतु अब वह उसके स्मरण से भी दूर भागना चाहता था—उसकी याद करते ही वह शर्म से झुक जाता था।

टेरेन्स अब तक शहर की सीमा पर पहुँच गया था और जब-तब हवा के तेज झोके उसकी नाक मे काईट की सुगन्ध भर रहे थे। बस कुछ मिनट मे वह खुले खेतो मे पहुँच जायगा जहाँ सतरियो की पदचाप नही होगी और होगा तारो भरा आकाश—जिसमे सार्क का पीला चमकता सूर्य भी होगा।

अपने जीवन के आधे भाग मे वह भी इसी सूर्य को अपना सूर्य मानता आया है। जब उसने अन्तराल वायुयान की खिडकी से प्रथम बार इस तारे को देखा था तो घुटने के बल बैठ कर नमस्कार करने की इच्छा उसे हुई थी। और इस विचार ने कि अब वह सार्क-रूपी स्वर्ग मे पहुँच जायगा, उसे इतना उद्वेलित कर दिया था कि वह अन्तराल उडान के भय

को भी भूल गया था।

अब वह अपनी कल्पना के स्वर्ग पर आ गया था। वहाँ उसको एक वृद्ध फ्लोरीनी के सुपुर्द कर दिया गया और उसने उसे नहला-धुला कर उचित कपडे पहिनाये थे। उसके बाद वह एक बडी अट्टालिका मे लाया गया, राह मे उसके उस वृद्ध पथदर्शक ने किसी मनुष्य को खूब झुक कर सलाम बजाया था।

"झुको !" उसने टेरेन्स से क्रोधित हो कर कहा, जिस पर टेरेन्स एकदम झुक गया और उसने घबरा कर पूछा "वह कौन था ?"

"वह महानुभाव थे ! समझा बेवकूफ, गवार कही का।"

"वह एक महानुभाव !"

वह तभी ठगा-सा रह रह गया था। वह उसका प्रथम महानुभाव-दर्शन था—तो महानुभाव बीस फुट ऊँचे नही थे ? वह तो बिल्कुल अन्य मनुष्यों की भाँति ही थे। फ्लोरीना के और युवक शायद इस धक्के को सहन कर जाते पर टेरेन्स ? सहसा उसके हृदय मे कुछ परिवर्तन आ गया था—शायद सदा के लिये ही। और उसके बाद चाहे उसने जितनी भी ट्रेनिग ली—चाहे जितना भी पढा—पर वह एक दिन के लिये भी यह न भूल सका कि महानुभाव भी मनुष्य ही है।

उसने दस वर्ष तक शिक्षा ली। और जब वह खाली होता तो उसे अन्य विविध उपयोगी कार्य सिखाये जाते—उसको इधर से उधर फाइले ले जाना सिखाया गया—टोकरी ढुलवाई गई—और महानुभावो के सम्मुख फर्शी सलाम झुकाना सिखाया गया—इसके अतिरिक्त सिखाया गया था, महिला महानुभावो को देखते ही दीवार की ओर मुँह फेर कर खडे होना।

तत्पश्चात् पाँच वर्ष तक वह सिविल सरविस मे रहा था। वहाँ वह एक स्थान् से दूसरे स्थान पर नियुक्त किया गया जिससे कि उसकी योग्यता मापी जा सके और यह पता लग सके कि वह किस कार्य के लिये सर्वोपयुक्त है।

उस समय एक बार एक मोटा सा फ्लोरीनी उसके पास आया था।

उसने मुस्कुरा कर उसका कधा थपथपाया और महानुभावो के विषय मे उसके विचार जानने चाहे ।

टेरेन्स ने उसके पास से भागने की इच्छा को बडी कठिनाई से दबाया—कही उसके विचार उसके चेहरे पर न आ जायें—और यह सोच उसने बडे जोर से महानुभावो की अच्छाइयो का वही रटा-रटाया पाठ दोहरा दिया था ।

उस मोटे मनुष्य ने अपना मुँह बिचका कर, एक पर्ची देते हुए कहा था, "मै सब जानता हूँ तुम्हारा क्या मतलब है । आज रात को इस स्थान पर आना ।" और फिर तुरत ही उसने उस पर्ची को फाड कर जला दिया था ।

टेरेन्स गया तो अवश्य, पर उसको डर ही लगता रहा । परन्तु उसकी जिज्ञासा भी तो तीव्र थी । वहाँ उसको अपने बहुत से मित्र मिले जिन्होने रहस्य भरे नेत्रो से उसकी ओर देखा । पर बाद मे दफ्तर मे, उपेक्षा का भाव ही व्यक्त किया था । वहाँ उसने उनकी बाते सुनी और उसे यह जान कर अत्यन्त आश्चर्य हुआ था कि जो भाव उसने अपने हृदय के अन्तरतम मे छुपा रखे थे, वह उनके मुँह से भी निकल रहे थे ।

उसे यह जान कर अत्यन्त सतोष हुआ कि कम से कम कुछ फ्लोरीनी तो ऐसे हैं जो महानुभावो की दुष्टता से भलीभाँति परिचित है, और जानते है कि वह फ्लोरीना को चूस कर अपना घर भर रहे है तथा परिश्रमी आदिवासियो को दरिद्रता व अज्ञानता के सागर मे डुबाये जा रहे हैं । वही उसे यह भी पता लगा था कि वह समय शीघ्र ही आने वाला है जब कि सार्क के विरुद्ध भारी विद्रोह होगा और फ्लोरीना का समस्त धन उसके उचित उत्तराधिकारियो को मिल जायगा ।

परन्तु कैसे ? टेरेन्स बार-बार पूछता था—कैसे ?—महानुभावों और सतरियो के पास तो तरह-तरह के हथियार हैं और दूसरी ओर हैं बेचारे निहत्थे फ्लोरीनी ।

फिर उन्होने उसको ट्रानटर के विषय मे समझाया था । वह विराट

साम्राज्य जो कि अभी कुछ ही शताब्दियो मे आधी से अधिक नीहारिका का स्वामी बन बैठा था—उन्होने कहा था कि ट्रानटर फ्लोरीना की सहायता से सार्क को विनष्ट कर देगा ।

परन्तु टेरेन्स ने पहिले अपने मन मे सोचा और फिर औरो से अपनी शका का समाधान कराया था । यदि ट्रानटर इतना शक्तिशाली है और फ्लोरीना इतना निर्बल, तो क्या ट्रानटर बाद मे सार्क का स्थान लेकर वैसे ही अत्याचार नही करेगा । यदि यही होना है तो सार्क क्या बुरा है ? एक अनजान स्वामी से तो जाना-बूझा ही उत्तम है ।

इस पर उसको सभा से निकाल दिया गया था । साथ ही उसे धमकी भी दी गई थी कि यदि उसने इस सभा का कही भी जिक्र किया तो उसके जीवन की खैर नही ।

फिर उसने देखा कि धीरे-धीरे उस गुप्त पचायत के सभी सदस्य लुप्त हो गये थे और केवल वह मोटा मनुष्य ही रह गया था । फिर भी अक्सर वह मोटा मनुष्य नवागतुको से काना-फूसी करता दृष्टिगोचर होता था, पर उनको सावधान करना कितना कठिन था कि यह सब कुछ नही केवल एक लोभ है तथा एक अत्यत कठिन परीक्षा है । उनको भी टेरेन्स की भाँति अपनी राह स्वय ही चुननी थी ।

टेरेन्स ने कुछ समय सुरक्षा विभाग मे भी व्यतीत किया, जहाँ तक कुछ ही फ्लोरीनी पहुँच सके थे । वह थोडे समय के लिये ही वहाँ गया था क्यो कि सुरक्षा विभाग मे बहुत अधिक अधिकारी थे इस कारण थोडे-थोडे दिन बाद प्रत्येक अधिकारी की बदली हो जाती थी ।

यहाँ आ कर टेरेन्स को पता चला था कि वास्तविक विद्रोह भी कोई चीज है । फ्लोरिना पर नर और नारी मिल कर विद्रोह की योजना बनाया करते थे । अधिकतर इनको ट्रानटर से आर्थिक सहायता मिलती थीं । परन्तु कतिपय विद्रोहियो का यह भी विचार था कि फ्लोरीना बिना किसी सहायता के भी स्वतत्र हो सकता है ।

टेरेन्स इस विषय पर अत्यधिक विचार करता था । कही उसके

विचार किसी पर प्रकट न हो जाये इस कारण वह अपने शब्दो पर पर्याप्त प्रतिबध रखता था, परन्तु मन के विचारो पर कौन नियन्त्रण रख सकता है। उसको मन ही मन महानुभावो से घोर घृणा थी क्यो कि प्रथम तो वह उसी की तरह साधारण मनुष्य थे द्वितीय वह उनकी नारियो की ओर निगाह उठा कर नही देख सकता था, तृतीय उनमे से कुछ की वह सिर झुकाये सेवा भी कर चुका था, और तब उसने देखा था कि वह मूर्ख भी थे तथा उनका ज्ञान उससे भी कम था और कुछ तो बुद्धि मे भी अत्यत हीन थे। परन्तु इस दासता के उद्धार की राह भी क्या थी ? सार्की महानुभावो के स्थान पर ट्रानटर के महानुभावो को लाना तो और भी मूर्खता थी। फ्लोरीनी कृषको से यह आशा करना कि वह स्वय कुछ कर सकेगे, उससे भी बडी मूर्खता थी। कोई भी राह उसकी समझ मे न आती थी।

यह समस्या उसके मन को वर्षों से कुरेदती आ रही थी—जब वह विद्यार्थी था तब भी—जब वह अदना क्लर्क था तब भी और आज जब वह मुखिया है तब भी।

और फिर एकाएक उसके हाथ, अकिचन पुरुष के रूप मे, तब एक अन्तराल विशेषज्ञ पड गया था, इस समस्या का एक ऐसा हल उसने पाया जिसकी उसे स्वप्न मे भी आशा न थी। इस मनुष्य का कहना था कि फ्लोरीना के प्रत्येक वासी का जीवन एक भारी सकट मे है।

टेरेन्स बाहर खेतो मे आ चुका था। अब रात्रि-वर्षा समाप्त होने को थी और आकाश मे भीगे-भीगे तारे बादलो मे से झाँक रहे थे। उसकी नाक मे काईट की भीनी-भीनी सुगन्ध पहुँच रही थी—वही काईट जो कि फ्लोरीना का धन था, साथ ही उसका श्राप भी।

वह किसी भुलावे मे न था। अब वह मुखिया नही था, और अब तो वह एक स्वतत्र किसान भी नही था। अब तो वह एक अपराधी था जो न्याय से बच कर भाग रहा था।

फिर भी उसके हृदय मे एक टीस-सी उठ रही थी। पिछले २४ घंटो

मे उसके पास सार्क के विरुद्ध एक अत्यन्त शक्तिशाली अस्त्र था। इसमे कोई भी सदेह न था। उसे विश्वास था कि रिक को ठीक ही याद आ रहा था। वह अवश्य ही कभी अन्तराल विशेषज्ञ रहा होगा। उस पर मस्तिष्क-बेधन यत्र का प्रयोग इस बुरी तरह किया गया था कि वह पागल हो गया था और अब जो कुछ उसे याद आ रहा था वह सत्य तो था ही, अत्यन्त भयकर एव शक्तिशाली भी था। इसका उसे पक्का विश्वास था।

और अब यह रिक ऐसे मनुष्य के पजे मे फँस गया था जो बनता तो था फ्लोरीना का देशभक्त, पर वास्तव मे ट्रानटर का एजेन्ट था।

उसके मन के क्रोध का पारावार न था। वह बेकर ट्रानटर का एजेन्ट ही तो था। इसमे उसे कभी भी कोई सशय न था, नही तो भला निचले शहर के किसी भी निवासी के पास झूठी भट्टी लगाने का पैसा कहाँ से आया। नही! वह रिक को ट्रानटर के हाथ मे नही पडने देगा—कभी भी उसको उन हाथो मे न पडने देगा—चाहे इसके लिये उसे कुछ भी सकट मोल लेना पडे और अब सकट का प्रश्न ही क्या था। उसके अब तक के अपराधो के कारण उसको मृत्यु दड मिलेगा ही तो यदि वह और भी जघन्य अपराध कर डाले तो भी क्या बिगडता है।

पौ फट चुकी थी। अन्तरिक्ष मे ऊषा की लालिमा छा गई थी। यह अवश्य था कि भिन्न-भिन्न थानो मे उसकी हुलिया पहुँच गई होगी, परन्तु उसकी हुलिया दर्ज करने मे कुछ तो समय लगेगा ही।

अब भी कुछ काल के लिये तो वह मुखिया है ही। और अब भी—हाँ! अब भी—उसको कुछ करने का समय मिल सकता है। पर इस विषय मे सोचने का साहस भी उसमे नही रहा है।

× × ×

डा० जुज क्लर्क से भेट करने के दस घटे पश्चात् फिर लुडिगन आबेल से मिले।

राजदूत ने ऊपरी तौर पर नम्रता से डा० जुंज की अभ्यर्थना की,

पर मन ही मन वह अपने आप को धिक्कार रहे थे। प्रथम भेंट मे जो कि लगभग एक वर्ष पूर्व हुई थी, उन्होने इस मनुष्य की बातो की ओर कोई विशेष ध्यान नही दिया था। उनके मन मे उस समय केवल यही विचार आया था कि क्या यह ट्रानटर की किसी रूप मे सहायता कर सकता है।

ट्रानटर! वह तो सदैव ही उसके मन मे सबसे ऊपर रहता था परन्तु फिर भी वह इतने मूर्ख नही थे कि एक नक्षत्र या 'अन्तराल यान व सूर्य' की जो कि ट्रानटर का सैनिक चिह्न था, पूजा करे। वास्तव मे तो साधारण अर्थों मे वह देशभक्त भी नही कहे जा सकते थे और ट्रानटर, ट्रानटर ग्रह के रूप मे उनके समक्ष कोई मतलब नही रखता था।

परन्तु वह शान्ति की पूजा करते थे। वह शान्ति से इसलिये और भी अधिक प्रेम करते थे क्योकि अब वह वृद्ध हो चले थे। वह शान्ति-पूर्वक अपनी शराब, अपने सुगधित सगीत-भरे वातावरण तथा अपनी मध्याह्न काल की निद्रा का सम्पूर्ण आनन्द उठाना चाहते थे, और इस प्रकार शान्ति पूर्वक मृत्यु की प्रतीक्षा करना चाहते थे। उनकी कल्पना मे प्रत्येक मनुष्य उन्ही की भाँति सोचता था, फिर भी मनुष्यो को युद्ध और विनष्टि सहनी ही पडती थी, वह अन्तराल की ठड मे जम जाते थे, या फटते हुए एटम से भाप बन जाते थे—अन्यथा किसी त्यक्त ग्रह पर भूखे मर जाते थे।

समस्या यह थी कि शान्ति का प्रचार कैसे किया जाय। यह न तो तर्क द्वारा ही हो सकता था और न ही शिक्षा द्वारा। यदि एक मनुष्य शान्ति व युद्ध के हानि और लाभ की तुलना करके भी शान्ति के पक्ष मे नही हो सकता तो फिर कौन-सा तर्क ऐसा रह जाता है जो उसके निश्चय को बदल सकता है? युद्ध अपनी हानियाँ दिखाने के लिये स्वर ही पर्याप्त है, कौन-सी भाषा एक विनष्ट हुये यान की भीषण दशा क उससे अधिक व्यक्त कर सकती है?

फिर अनुचित शक्ति प्रयोग की रोक के लिये एक ही अस्त्र रह जार

है, वह है स्वय-शक्ति ।

आबेल ने अपने पढने के कमरे मे ट्रानटर का एक मानचित्र टाँग रखा था । यह मानचित्र ट्रानटर की शक्ति का पूरा परिचायक था । यह एक क्रिस्टल की अंडाकार वस्तु थी, जिसमे त्रैदेशिक शीशा लगा था । उसमे तारे हीरे के चूर्ण से बने थे, बीच की तरगे हलके या गहरे कोहरे से बनी थी और उसके बीच मे लाल रगो द्वारा ट्रानटर गणराज्य प्रतिबिम्बित था । यह ट्रानटर का पाँच सौ वर्ष पूर्व, जबकि उसमे केवल पाँच ससार ही सम्मलित थे, चित्र था । यह एक ऐतिहासिक चित्र था और तभी दिखलाई देता था जबकि आप सूई सून्य पर रखते थे । सूई को तनिक आगे बढाते ही ट्रानटर गणराज्य का पचास वर्ष बाद का चित्र दिखाई देने लगता जिसमे ट्रानटर के निकटवर्ती तारो का रग भी लाल हो गया था ।

इस प्रकार दस बार घुमाने मे आधा चक्कर पूरा हो जाता था और चित्र की लाली खून की तरह फैलती जाती थी और अन्त मे आधे से अधिक नीहारिका लाल हो जाती थी ।

इस लाली की उपमा खून द्वारा देना एक काल्पनिक उडान ही नही है । जैसे-जैसे ट्रानटर गणराज्य, ट्रानटर सगठन और फिर ट्रानटर साम्राज्य मे बदला, वैसे-वैसे उसका इतिहास बलि बने मनुष्यो, विनष्ट हुए यानो तथा ध्वस हुए ससारो से भरता गया । इतना होते हुये भी ट्रानटर की शक्ति निरन्तर बढती ही रही । हाँ यह अवश्य है कि अब इस लाल घेरे मे पूर्ण शान्ति का राज्य है ।

अब ट्रानटर, ट्रानटर साम्राज्य मे नीहारिका साम्राज्य की ओर अग्रसर हो रहा है । फिर समस्त नक्षत्र लाल हो जायेगे और सारी नीहारिका मे शान्ति का राज्य होगा । वाह रे, ट्रानटर ।

आबेल यही चाहते थे । ५०० वर्ष पहले, ४०० वर्ष पहले, यहाँ तक कि २०० वर्ष पहले भी उन्होने ट्रानटर का विरोध किया होता और उसको बदमाश, झगडालू, दूसरे के बीच हस्तक्षेप करने वाला, अपने

यहाँ पूर्ण स्वतन्त्रता न होने पर भी, दूसरे की दास प्रथा पर उनको धिक्कारने वाला तथा दूसरो का राज्य हडप जाने वाला कहा होता। परन्तु अब बात ही दूसरी थी।

वह ट्रानटर के पक्ष मे नही थे, पर उसके द्वारा होने वाले फल के पक्ष मे थे। इसलिये यह प्रश्न कि 'यह नीहारिका की शान्ति पर क्या प्रभाव डालेगा' स्वयमेव ही 'यह ट्रानटर पर क्या प्रभाव डालेगा' बन गया था।

सारी कठिनाई यही थी कि वह उस समय कुछ भी निश्चय नही कर पा रहे थे। जु ज के सम्मुख इस समस्या का हल साफ था। उनका मत था कि ट्रानटर को अन्तराल ब्यूरो का पक्ष लेकर सार्क को दड देना ही चाहिये।

यदि सार्क के विरुद्ध कुछ सिद्ध किया जा सकता तो यह सुगमता से सभव हो जाता। पर कदाचित भी कुछ न किया जा सके। और यदि उसके विरुद्ध कुछ भी सिद्ध न हो पाये तब तो यह अत्यन्त ही कठिन कार्य था। फिर ट्रानटर बिना सोचे समझे भी तो कुछ नही कर सकता था। सारी नीहारिका को मालूम है कि ट्रानटर नीहारिका-साम्राज्य बनाना चाहता है और अब भी यह हो सकता है कि सारा ससार, जो ट्रानटर के बाहर है, एक साथ मिल कर ट्रानटर के विरुद्ध हो जाय। ट्रानटर की इस युद्ध मे भी जीत जाने की सम्भावना थी पर यह उसके लिये इतना महँगा पडता कि विजय नाममात्र की ही रहती। इस लिये ट्रानटर को फूँक-फूँक कर कदम रखना होगा। ऐसा न हो कि अन्त समय मे खेल ही बिगड जाय।

इसी लिए आबेल बडी सावधानी से कदम रख रहे थे। सार्क की सिविल सरविस व महानुभावो की महानुभावी के चारो ओर उन्होने गुप्त रूप से जाल बिछा दिया था और मुस्कुराते हुये छिपे-छिपे प्रश्न पूछने की चेष्टा कर रहे थे। जु ंज के पीछे भी वह गुप्तचर लगाना नही भूले थे। कही ऐसा न हो कि वह क्रोधित लिबेरी क्षण भर मे ही इतनी हानि कर

दे जितनी कि वह पूरे साल मे भी न सुधार सके।

उस लिबेरी के निरन्तर क्रोध पर आबेल को अत्यधिक आश्चर्य हो रहा था, और उन्होने जु ज से एक बार पूछा भी था, "आखिर आप एक कर्मचारी के लिये इतने परेशान क्यो है ?"

उत्तर मे उनको अन्तराल ब्यूरो की न्याय निष्ठा व उसको केवल एक ससार की वस्तु न समझ कर, मनुष्यता का सहारा समझने के विषय मे एक पूरा व्याख्यान सुनने की आशा थी, परन्तु उत्तर कुछ और ही मिला।

आशा के विपरीत जु ज ने भौंहे सिकोडते हुए कहा, "क्यो कि इसकी तह मे फ्लोरीना-सार्क के सारे सम्बन्ध छिपे पडे है और मैं उनका पर्दा फाश करना चाहता हूँ।"

आबेल की तबियत घबरा उठी थी। हर जगह, हर कोई सदैव केवल एक दो ससारो के विषय मे ही सोचता आया है। जिससे नीहारिका-सगठन मे बार बार बाधा पडती थी। यह अवश्य था कि कही-कही अन्याय विद्यमान था और यह भी सत्य ही था कि उस अन्याय की उपेक्षा करना भी कठिन था। परन्तु इस अन्याय को नीहारिका के सिवाय किसी और के लिये दूर कर सकना भी तो असम्भव ही जैसा था। पहिले तो सासारिक स्पर्धा व युद्धो का अत अनिवार्य था और तभी आपसी क्लेश जिनका मुख्य कारण बाहरी झगडे थे, दूर किये जा सकते थे।

और जु ज तो फ्लोरीना निवासी भी न थे। उनके लिये इस तरह उद्वेलित हो कर अदूरदर्शी हो जाना जरा भी शोभा न देता था।

आबेल ने कहा, "आपका फ्लोरीना से क्या सम्बन्ध है ?"

जु ज ने कुछ रुक कर कहा, "मुझे उनसे अपनत्व का अनुभव होता है।"

"परन्तु आप तो लिबेर-वासी है ?"

"हाँ हूँ तो! परन्तु इसी मे तो अपनत्व निहित है। हम दोनो ही नीहारिका के 'मध्यवर्ती नियम' के दो सिरे हैं।"

"सिरे ! मै नही समझा ?"

जु ज ने कहा, "हाँ ! त्वचा के रग मे । वह लोग अत्यधिक गोरे हैं और हमलोग काले ! इसका कुछ न कुछ अर्थ तो है ही । यह बात हम लोगो को साथ-साथ बाँध कर रखनी है कि हम लोगो मे अवश्य ही कोई समानता है । मुझे लगता है कि हमारे पूर्वजो का इतिहास सबसे पृथक ही रहा होगा इसीलिये हम लोगो का अन्तर विभाजन नही हुआ । इसी लिये हम लोग दो अभागे गोरे और काले है—सबसे भिन्न और इसी मे हमारी समानता है ।"

उस समय तक आबेल की तीक्ष्ण दृष्टि से जु ज घबरा गये थे और फिर इस बिषय को उन्होने कभी नही छेडा ।

अब—एक बर्ष—बिना किसी पूर्व सूचना के—जब कि सारा झगडा लगभग समाप्त ही हो गया था—जु ज का उत्साह भी फीका पड चुका था—उस समय एकाएक ही विस्फोट हो पडा और अब तक क्रोधित जु ज जिनका क्रोध केवल सार्क पर सीमित न रह कर उन तक पहुँच चुका था, उनके सम्मुख था ।

वह कह रहे थे : "मै इस बात पर तनिक भी क्रोधित नही हूँ कि आपने मेरे पीछे गुप्तचर लगा रखे है । मैं जानता हूँ आप पूरी सतर्कता से कार्य करते है और किसी का भी विश्वास नही करते । यह ठीक भी है परन्तु यह तो बतलाइये कि मेरे कर्मचारी का पता लगते ही आपने मुझे सूचना क्यो नही दी ?"

आबेल ने कुर्सी का हत्था सहलाते हुये कहा, "कुछ मामले उलझे हुए होते है—अत्यधिक उलझे हुए—मैने यह प्रबध किया था कि पुस्तकालय मे अन्तराल विश्लेषण सम्बन्धी पूछ-ताछ की सूचना आपके साथ-साथ मेरे एक एजेन्ट को भी दी जाय । मैने सोचा था कि उसको रक्षा की आवश्यकता हो सकती है, और फ्लोरीना पर··· ·······"

जु ज ने खून का घूंट पीते हुए कहा, "हाँ हम लोग बेवकूफो की भाँति इस बात को सोच ही न सके और एक वर्ष हमने यही प्रमाणित

करने मे लगा दिया कि वह सार्क पर नही है। वह सारे समय फ्लोरीना में था। हमारी तो आँखे फूट गई थी। खैर अब तो वह हमे मिल ही गया है। क्या अब उससे मेरी भेट कराई जा सकती है ?"

आबेल ने सीधे से उत्तर नही दिया और कहा, "आप कहते है कि उन्होने यह बतलाया है कि यह मैट खुरोव ट्रानटर का एजेन्ट है।"

"क्या वह नही है ? वह झूठ क्यो बोलेगे ? या उनकी सूचना ग़लत है ?"

"वह लोग न तो झूठ ही बोल रहे हैं और न उनकी सूचना ही गलत है। वह बीसियो वर्ष से हमारा एजेन्ट था। और इस सूचना से कि यह उनको ज्ञात था, मै चकित हो उठा हूँ और सोचता हूँ कि वह हम लोगो के विषय मे न जाने और क्या क्या जानते होगे ? कदाचित् हम लोग एक बालू की भीत पर ही खडे है ? परन्तु क्या आपको यह सोच कर आश्चर्य नही हुआ कि यह सूचना उन्होने बिना किसी हिचक के आपको दे कैसे दी ?"

"क्योकि यह सत्य है। और शायद मेरे से छुटकारा पाने के लिए जिससे ट्रानटर व सार्क के सम्बन्ध और दूषित न हो जाये।"

"राजनीतिज्ञो के लिये सत्य नाम की कोई वस्तु नही होती मेरे दोस्त ! रही हमारे सम्बन्ध दूषित होने की, सो इससे अधिक और क्या मूर्खता हो सकती थी कि वह हम लोगो को यह सूचना दे दे कि वह हमारे भेद जानते है और हम को अपना जाल सुदृढ करने का अवसर दे।"

"तो अपने प्रश्न का उत्तर आप स्वय ही दीजिये।"

"मैं कहता हूँ, यह सूचना उनकी विजय का प्रतीक है क्यो कि उन्हे ज्ञात है कि बारह घण्टे पहिले ही मुझे मालूम हो गया होगा कि उन्हे हमारा भेद, कि खुरोव हमारा एजेन्ट है, मालूम है। और इस सूचना के मिलने न मिलने से कोई अन्तर नही पडता।"

"परन्तु कैसे ?"

"इस तरह, इसमे कोई गलती नही हो सकती। अच्छा सुनो, बारह घण्टे पहिले मैट खुरोव, ट्रानटर के एजेन्ट की, फ्लोरीनी सतरी दल के एक सदस्य ने हत्या कर दी है और दो फ्लोरीनी, एक आदमी और एक औरत, जो सम्भवत आप ही के आदमी रहे होगे, कही भाग गये। वह एकदम लापता है। सम्भवत वह किसी महानुभाव के अधिकार मे है।"

जुज चीख कर एकदम कुर्सी से उठ खडे हुए।

आबेल ने शान्ति पूर्वक शराब का प्याला होठो से लगाते हुये कहा, "मैं विधान के अनुसार इसमे कुछ भी नही कर सकता। मृत मनुष्य एक फ्लोरीनी था और दो जो भाग कर गये है, जहाँ तक मालूम है फ्लोरीनी ही है। अब आया समझ मे? हम लोग बुरी तरह पराजित है जुज, बुरी तरह! और अब हम लोगो की खिल्ली उडाई जा रही है।"

: ७ :

संतरी

रिक ने स्वय अपनी आँखो से बेकर की हत्या होती देखी। उसके मुँह से आह तक न निकल सकी। उसकी छाती अन्दर धँस गई थी, और विध्वसक से जल कर कोयला हो गई थी। यह दृश्य इतना भयानक था कि वह आगे पीछे का सबकुछ भुला बैठा।

अब उमे केवल धुँधली-सी याद रह गई थी कि कैसे सतरी उनकी ओर बढा था और किस प्रकार उसने दृढता के साथ अपने यत्र निकाल कर प्रहार किया था। फिर किस प्रकार बेकर ने अपना मुँह ऊपर उठा कर कुछ अन्तिम शब्द कहने चाहे थे पर वह उसके मुँह से बाहर भी न आ सके थे। एक क्षरण मे ही यह सब काण्ड समाप्त हो गया था। चारो ओर से जन समूह के चिल्लाने व दौडने का शोर रिक के कानो मे पडने लगा। ऐसा लगता था मानो समुद्र उमड पडा हो।

इस सारे काण्ड के कारण रिक की जो मानसिक उन्नति कुछ घटो की निद्रा द्वारा हुई थी, बेकार हो गई। सतरी उनकी ओर भी झपटा। परन्तु उस भीड को चीर कर इन तक पहुँच न पाया, मानो वह एक दलदल मे फँस गया हो और यह लोग जन समूह की दूसरी धारा मे फँस कर दूसरी ओर को बह गये। उस जन समूह मे अनेक धाराएँ व उप-

धाराएँ थी जो कि संतरी वाहन के साथ साथ अपना प्रवाह बदल रही थी। वलोना रिक को शहर की सीमा के बाहर जाने की दिशा मे ढकेलती लिये जा रही थी। और कुछ समय के लिये रिक प्रातःकाल का वयस्क न रह कर फिर से कल जैसा भयभीत बालक हो गया था।

वह सुबह सूर्योदय के साथ-साथ ही उठा था, उसी सूर्य के उदय के साथ- जिसको कि वह खिडकी रहित कमरे मे से देख भी नही सकता था। कुछ मिनटो तक वह अपने मानस को टटोलता रहा। रात ही रात मे मानो वहाँ कुछ सतुलित हो गया था। कुछ चित्र जुड कर पूरे हो चले थे। यह अनिवार्य ही था। तब से ही जब कि दो दिन पहिले उसे याद आना आरम्भ हुआ था यह चित्र बराबर ही जुडते चले जा रहे थे। वह लोग कल सारा दिन चलते ही रहे थे—ऊपरी शहर और पुस्तकालय की यात्रा—वहाँ सतरी पर आक्रमण—फिर डर कर भागना—बेकर से भेंट—यह सभी कुछ तो उसके चेतन मन को उद्वेलित कर रहे थे। उसके मस्तिष्क के टूटे-फूटे तार जो कि सिकुडे सिमटे पडे थे अब सुलझ रहे थे, जुडते जा रहे थे, और अच्छी निद्रा के उपरान्त उनमे सचालन भी पैदा हो गया था।

अब वह अन्तराल, तारक मडल तथा नक्षत्रो के बीच की लम्बी सूनी राहो के विषय मे सोच रहा था।

फिर उसने लोना की ओर झुक कर कहा "लोना!"

"रिक?"

"मैं यही हूँ, लोना!"

"तुम ठीक तो हो न?"

"एकदम!" वह अपनी उत्तेजना को छिपा नही पा रहा था। "मैं बिल्कुल ठीक हूँ। लोना! सुनो, मुझे और भी याद आया है। मैं एक यान मे था इसका मुझे पक्का विश्वास है।"

पर लोना ने उसकी बात नही सुनी थी, वह तो उसकी ओर पीठ करके अपने कपड़े ही पहनती रही। उसके बाद उसने कपडो की सलवटें

अपने हाथ से निकालने का प्रयत्न किया। और घबराते-घबराते अपनी पेटी बाँधी।

फिर उसी प्रकार दबे पैरो उसके पास आ कर कहा था, "मै सोना नही चाहती थी रिक, मेरा तो सारी रात जागने का इरादा था।"

रिक ने उसे घबराते देख, पूछा, "क्या कुछ गडबड है ?"

"हुश···इतने जोर से न बोलो, सबकुछ ठीक है।"

"मुखिया कहाँ है ?"

"वह यहाँ नही है। उसे एकाएक जाना पड गया। तुम सो क्यो नही जाते रिक ?"

उसने लोना की सात्वना भरी बाँह को अलग हटाते हुए कहा, "मैं बिल्कुल ठीक हूँ। मेरी सोने की इच्छा नही हो रही है, मै तो मुखिया को अपने यान के विषय मे बतलाना चाहता था।"

परन्तु मुखिया तो वहाँ था ही नही और वलोना को यान मे कोई रुचि न थी। रिक झक मार कर चुप हो गया और उस समय पहली ही बार उसको वलोना पर बडा क्रोध आया। वह उसके साथ ऐसा व्यवहार करती थी मानो वह निरा बच्चा ही हो, परन्तु अब तो वह एक वयस्क की भाँति अनुभव कर रहा था।

कमरे मे एक प्रकाश हुआ और उसके साथ प्रविष्ट हुई बेक़र की लम्बी चौडी देह। रिक ने उसकी तरफ देखा। एक क्षण के लिये वह डर-सा गया। उस समय जब लोना ने उसके कधे थपथपाये तो उसे तनिक भी बुरा न लगा।

बेकर के मोटे-मोटे होठो पर मुस्कान की लहर दौड गई और उसने कहा, "तुम लोग बहुत जल्दी उठ गये ?"

किसी ने कोई उत्तर न दिया।

"चलो अच्छा ही हुआ। आज तुम लोगो को प्रस्थान भी तो करना है।" बेकर ने कहा।

भय से वलोना का मुँह सूख गया, "आप हमे सतरियो के सुपुर्द तो

न करेगें ?"

वलोना को याद आया कि मुखिया के जाने के पश्चात् बेकर किस प्रकार रिक को देख रहा था। इस समय भी तो वह उसी को घूर रहा था। केवल रिक को।

"नही! चिंता मत करो," उसने कहा "उचित लोगो को सूचना दे दी गई है और तुम लोग सर्वथा सुरक्षित रहोगे।"

फिर वह चला गया और कुछ देर पश्चात् खाना, कपडे व मुँह हाथ धोने का पानी ले कर आया; कपडे नये व अजीब तरह के थे।

खाना खाते समय वह बराबर उन पर निगाह रखे रहा और उसने कहा, "तुम लोगो को नये नाम व नया इतिहास दिया जायेगा। सुनो! ठीक से सुनो! और भूलना मत। अब तुम लोग फ्लोरीनी नही हो, समझ मे आया! तुम लोग वोटेक्स ग्रह के भाई बहिन हो! तुम लोग फ्लोरीना देखने आये थे।"

इस प्रकार उसने विस्तारपूर्वक सब बाते बतलाई फिर उनसे प्रश्न पूछे तथा उनके उत्तर सुने।

रिक को अपनी स्मरण शक्ति तथा जल्दी सीखने की दक्षता पर गर्व हो रहा था पर बेचारी वलोना का तो डर के मारे बुरा हाल था।

बेकर भी इस बात से अनभिज्ञ नही था और उसने वलोना से कहा, "यदि तुम जरा भी टाग अडाओगी तो मैं रिक को अकेला ही भेज दूँगा और तुमको यहाँ पर ही छोड दूँगा।"

वलोना ने मुट्ठी भीचते हुए कहा था, "मैं आपको ज़रा भी परेशान न करूँगी।"

दिन काफी चढ आया था। बेकर उठ खड़ा हुआ और बोला "आओ चलें!"

चलते समय उसने उसकी जेब मे एक काले चमडे का कार्ड-सा डाल दिया था।

रिक ने बाहर रोशनी मे आकर जो अपनी ओर देखा तो वह

स्तम्भित रह गया। क्या कोई पोशाक इतनी जटिल हो सकती है। इस समय तो बेकर ने यह पोशाक पहिना दी थी पर इसको उतारेगा कौन ? वलोना भी अब इन कपडो मे एक गँवार लडकी नही लग रही थी, उसके पैर तक कपडो से ढके थे तथा उसके जूतो मे ऊँची एडियाँ लगी थी जिनके कारण उसे सँभल-सँभल कर चलना पड रहा था।

राह चलते लोग भी उनको देख कर आश्चर्य चकित हो रहे थे तथा आपस मे फुसफुसा रहे थे। अधिकतर उनमे बच्चे, बाजार की ओर जाती हुई औरते तथा आवारा पुरुष ही थे। बेकर को जैसे उनकी कोई परवाह ही नही थी। उसके पास एक मोटा डडा था जिसको वह निकट आने वाले लोगो की टाँगो मे ऐसे फँसा देता था मानो ऐसा उससे अनजान मे ही हो गया हो।

वह बेकरी से केवल सौ गज दूर ही गये होगे और केवल एक मोड ही मुडे होगे कि उस अथाह जन समूह को चीर कर आती हुई सतरी की काली व रुपहली वर्दी दीख पडी।

और उसी समय यह काड हो गया। वह विध्वसक हथियार—एक विस्फोट और भगदड मच गई थी। क्या कभी भी ऐसा समय था जब उनका मन भय रहित था और सतरियो की छाया उनके पीछे नही दौड रही थी ?

अब वह शहर के बाहर एक और भी गदे भाग मे आ गये थे। वलोना बडे जोर-जोर से हाँफ रही थी और पसीने से लथपथ हो रही थी।

रिक भी हाँफते हुए बोला, "अब मै और नही दौड सकता।"

"पर हमे दौडना तो पडेगा ही।"

"पर इस प्रकार नही !" उसने वलोना का हाथ पीछे की ओर खीचते हुए कहा, "मेरी बात तो सुनो !"

अब उसके मन का भय व आतक दूर हो रहा था।

"सुनो ! हम क्यो न आगे बढते जायें, और जैसे-जैसे बेकर ने बताया था वैसे-वैसे करते जाये।"

"तुम्हे कैसे मालूम कि वह हमसे क्या कराना चाहता था ?" उसने आगे बढते हुए कहा। वह बडी चिन्तित थी और भागते ही रहना चाहती थी।

"हमे किसी दूसरी दुनिया से आये हुए लोगो की भाँति अभिनय करना था, और देखो उसने हमको यह भी दिया था। रिक उत्तेजित था और उसने अपनी जेब से काले कार्ड को निकालकर उसे चारो ओर से उलट-पुलट कर देखा और खोलने का प्रयत्न किया।

पर इसमे वह असफल ही रहा। वह तो चारो ओर से बन्द था। फिर उसने कार्ड से किनारे छूने आरम्भ किये। जैसे ही एक कोने मे उसकी उँगली छुई, एक खटका हुआ और कार्ड के ऊपर का भाग सफेद हो गया तथा उस पर कुछ अक्षर चमक उठे। जिनको पढना उसके वश का न था।

"यह पासपोर्ट है।" वह बोला।

"पासपोर्ट क्या होता है ?" वलोना ने पूछा।

"यह ऐसी चीज है, जिसकी सहायता से हम भाग सकेंगे।" ऐसा वह निश्चयपूर्वक कह सकता था। यह शब्द जैसे उसके मस्तिष्क मे कौंध गया हो। "तुम्हारी समझ मे नही आया क्या कि वह हम लोगो को फ्लोरीना के बाहर भेज रहा था—एक यान द्वारा—चलो। हम लोग उसीसे चले।"

लोना ने कहा, "नही ! उन्होने उसे रोक दिया है—उसकी हत्या कर दी है—हम नही जा सकते रिक—हम नही जा सकते।"

रिक ने इसे अत्यन्त आवश्यक समझकर कहा, "परन्तु यही राह सर्वोत्तम रहेगी। वह लोग अब हमसे ऐसा करने की आशा नही कर रहे होगे। फिर हम उस यान से थोड़े ही जायेगे जिससे जाने के लिये उसने निश्चित किया था। उस पर तो पहरा होगा। हम किसी दूसरे यान पर चलेंगे—किसी भी यान पर—बस फ्लोरीना के बाहर।"

एक यान ! कोई भी यान ! यह शब्द उसके कानों मे गूँजते रहे।

उसका वह विचार अच्छा था या बुरा पर अब वह एक यान पर उडना चाहता था। वह अन्तराल की सैर करना चाहता था।

"लोना ! मान भी जाओ" उसने कहा।

"अच्छा ! जैसी तुम्हारी इच्छा। मुझे मालूम है कि हवाई अड्डा कहाँ है। जब मैं छोटी थी तो अवकाश के समय जहाज़ को ऊपर उठता देखने के लिये मैं वहाँ जाया करती थी।"

वह फिर चलने लगे। रिक के चेतन मन मे कुछ कुरेदना-सी हो रही थी। उसे कुछ याद आना चाहिये था—बहुत पहले की बात—नही अभी कुछ ही दिन पहिले की बात—कुछ ऐसी बात जो उसे याद आनी चाहिये थी पर नही आ रही थी—कुछ बात थी तो अवश्य !

फिर वह यान पर चढने के शौक मे उसको भूल गया था।

वायु अड्डे के फाटक पर जो फ्लोरीनी बैठा हुआ था, उसे बडा आनन्द आ रहा था पर वह आनन्द दूर-दूर का ही था। कल सध्या की घटना बढ-चढ कर उसके कानो तक पहुँच चुकी थी। सतरियो पर आक्रमण की और अपराधियो के भाग जाने की। सुबह तक इन किस्सो मे और भी नमक-मिर्च लग गया था। अब अन्य सतरियो की हत्याओ की भी सूचना मिली थी।

वह अपने स्थान से हटने का साहस तो नही कर सकता था परन्तु वही से अपनी गर्दन निकाल-निकाल कर आते-जाते वायु अड्डे के वायु-वाहन तथा वहाँ से गुजरते हुए सतरियो के उतरे चेहरो को देख कर अनुमान लगा रहा था। वायु अड्डे के सतरी पर्याप्त सख्या मे जा चुके थे और वहाँ नाममात्र को ही पहरा रह गया था।

वह सारे शहर को सतरियो से भर रहे थे। वह एकदम डर गया पर अन्दर ही अन्दर प्रसन्न भी हो रहा था। भला क्यो ? उसे सतरियो की हत्याओ से प्रसन्नता क्यो हो रही थी ? सतरियो ने उसका क्या

बिगाडा था ? उससे तो उन्होने कभी कुछ न कहा था—उसकी नौकरी भी अच्छी थी—फिर भला वह क्यो प्रसन्न था, पर प्रसन्न वह अवश्य था।

उसे इन दोनो पर ध्यान देने का समय नही था। बेवकूफ पसीने मे लथपथ थे। पहनावे से विदेशी लगते थे और वह औरत खिडकी से पासपोर्ट दिखा रही थी।

उसने उस पर नजर डाली—फिर पासपोर्ट पर और फिर आरक्षण सूची पर। उसने एक बटन दबाया और दो पट्टी उनके सम्मुख आ गईं। उसने बडी अधीरता से कहा, "यह लो, इनको अपनी कलाइयो पर बाधकर चलते बनो।"

उस औरत ने धीमे से विनय पूर्वक पूछा "हमारा वायुयान कौन-सा है ?"

इससे वह बहुत प्रसन्न हुआ। विदेशी लोग फ्लोरीना मे वैसे ही कम आते थे और पिछले कुछ वर्षो मे तो बिल्कुल ही कम हो गये थे, पर जो भी आते थे वह न तो सतरी ही होते थे और न महानुभाव। वह फ्लोरीनी आदिवासी व सार्की महानुभावो के भेदभाव को भी नही समझते थे। इस कारण वह लोग बडी विनय पूर्वक बाते करते थे। इस नम्रता से वह फूल उठा था। "श्रीमतीजी यह यान सत्रहवे कक्ष मे मिलेगा। वोटेक्स के लिये शुभयात्रा श्रीमतीजी।" उसने ज़रा अकडते हुए कहा।

फिर वह अपने डेस्क पर बैठ कर अपने शहरी दोस्तो से और सूचनायें लेने का प्रयत्न करने लगा और छिपे छिपे ऊपरी शहर की व्यक्तिगत किरणों को टैप करने लगा।

कई घण्टो तक उसको यह पता न लग सका कि उसने बडी भारी गलती कर दी थी।

रिक ने कहा, "लोना !" और फिर उसकी कोहनी छू कर एक यान की ओर इशारा करके कहा, "उसमे चलो।"

वलोना ने उस वायुयान की ओर देखा। सत्रहवे कक्ष वाले यान

की तुलना मे, जिसके टिकट उनके पास थे, यह यान कही अधिक छोटा था। परन्तु था अत्यन्त शानदार। वह एक दानव की भाँति अपने कक्ष मे खडा हुआ था। उसके चारो वायुपाश इस प्रकार खुले हुये थे मानो वह जम्हाई ले रहा हो। उसमे से ढालू लाल लोह-पथ ऐसे निकल कर ज़मीन को छू रहा था मानो उसकी लम्बी जिह्वा पृथ्वी तक पहुँच कर उसे चाटने का प्रयत्न कर रही हो।

"यह उसमे वायु सचार कर रहे है। उडने से पहिले प्रत्येक यात्री वायुयान मे वायु सचार किया जाता है जिससे कि उसमे प्रयुक्त बद ओषजन की बासी गध निकल जाय।" रिक ने कहा।

"यह तुम्हे कैसे मालूम ?" लोना ने आश्चर्य से उसकी ओर देखते हुए कहा।

रिक ने कुछ गर्व से कहा, "मुझे मालूम है। तुम देख लेना, इस समय इसमे कोई भी न होगा। इस वायु सचार के समय उसमे बैठना अत्यन्त कष्टदायक होता है।"

उसने चारो ओर शकित दृष्टि से देख कर फिर कहा, "पर इस समय यहाँ कितना सन्नाटा है क्या जब तुम आया करती थी तब भी ऐसा ही रहता था ?"

वलोना के विचार मे ऐसा नही था। परन्तु वह बात तो बचपन की थी किसको इतना याद रह सकता है।

कपित कदमो से दालान की ओर जाते समय राह मे उनको कोई भी सतरी दिखाई न पडा। कुछ दूरी पर उनको दूसरे कर्मचारी अपने अपने कार्य मे जुटे हुए अवश्य दिखाई दे रहे थे।

वायुयान मे घुसते समय वायु प्रवाह उनके बदन मे घुसा जा रहा था। वायु वलोना के कपडो मे घुस कर उसको उडा ले जाने का निष्फल प्रयत्न कर रही थी। बडी कठिनाई से वह उनको यथास्थान रख पा रही थी।

"क्या सारे समय ऐसा ही रहेगा ?" उसने पूछा। इससे पहिले वह

कभी भी अन्तराल यान पर नही चढी थी । उसने स्वप्न मे भी इसकी कल्पना न की थी । वह अवाक् रह गई तथा उसका हृदय जोरो से धडकने लगा ।

"नही ! केवल वायु सचार के समय ।" रिक ने कहा । वह वायुयान मे बनी धातु-राहो पर बढता गया । उसका मन बडा प्रसन्न था, उसने शीघ्रता से सारे कमरे देख डाले ।

"यहाँ ! इधर !" उसने कहा, और जहाज पर रखी नौका को देखने लगा ।

उसने वहाँ तरीके से रखे बर्तनो को टटोल कर एक बडा-सा बर्तन निकाल लिया । फिर चारो ओर नल के लिए देख कर बुदबुदाया, "पानी की टकी मे पानी तो भर ही दिया होगा उन्होने ।" नल मे से जब पानी निकला तो उसने संतोष की साँस ली ।

"कुछ बर्तन और साथ मे ले लो पर अधिक नही । उन्हे हमारे यहाँ होने का पता नही लगना चाहिये ।" उसने इस तरह सोच डाला और भरसक यह प्रयत्न किया कि उनकी उपस्थिति का पता न लग सके । उसी समय उसके मन मे कही से एक शका-सी उत्पन्न हुई पर पूरी तौर पर कुछ याद नही आया और उसने कायर की भाँति उसको वही दबा दिया, जैसे कि वह बेकार की ही शका हो ।

आकस्मिक दुर्घटनाओ के लिये आग बुझाने का सामान, दवाइयाँ तथा औजार रखने का कमरा उसको दिखाई दिया और उसने कुछ हिचकते हुये कहा, "चलो यही छिप जाये, जब तक कोई सकट न आयेगा, वह लोग इसमे नही घुसेगे । क्या तुम्हे डर लग रहा है लोना ?"

"तुम्हारे होते, मुझे काहे का डर, रिक !" उसने विनीत भाव से कहा । दो दिन पहिले, नही केवल बारह घण्टे पहिले, स्थिति ठीक इसके विपरीत थी परन्तु यान मे मानो किसी जादू द्वारा रिक वयस्क हो गया था और वलोना एक बच्ची ।

"हम लोग बत्ती नही जला सकेंगे क्योकि उससे उनको अधिक

विद्युत शक्ति के खर्च होने का आभास मिल जायगा। शौच स्थान भी हमे अवकाश के समय ही प्रयोग करना पडेगा।"

वायु सचार एकदम रुक गया था। उनके चेहरो पर ठण्डी-ठण्डी हवा का लगना तथा वायु सचार की ध्वनि दोनो ही बद हो गए थे और अब पूर्ण निस्तब्धता छा गई थी।

"अब सब शीघ्र ही यान मे बैठ जायेगे और फिर हम लोग अन्तराल मे उड चलेगे।" रिक बोला।

वलोना ने रिक को कभी भी इतना प्रसन्न नही देखा था। जैसे वह एक प्रेमी था जो अपनी प्रेमिका से मिलने जा रहा हो।

यदि रिक उस दिन प्रात काल एक वयस्क के समान अनुभव कर रहा था, तो इस समय वह एक देव के सदृश्य शक्तिशाली अनुभव कर रहा था। अब उसकी बाहे सारी नीहारिका मे फैली हुई थी। तारे मानो उसके खेल की गुट्टियाँ थी और उनके झुड मानो ऐसे जाले थे जिनको वह आसानी से हटा कर अपना कार्य कर सकता था।

अब वह एक यान पर था। बीती बातो की याद बाढ की तरह उसके मस्तिष्क मे भरती जा रही थी। इनको स्थान देने के लिये निकट अतीत की घटनाये भूलती जा रही थी। फ्लोरीना के काईट के हरे-भरे खेत व मिले तथा वलोना की उसके लिये चिंता वह भूलता जा रहा था। मानो वह किसी बडी-सी तस्वीर का, जो धीरे-धीरे उसके मानस-पट पर पूरी होती जा रही थी एक छोटा-सा भाग हो।

यह सब यान ही के कारण था।

यदि उसको पहिले ही यान पर बैठा दिया जाता तो शायद उसके दिमाग के जले हुए अगो को स्वस्थ होने मे इतनी देर न लगती।

उस अधकार मे उसने वलोना से स्नेह पूर्वक कहा, "अब चिंता न करो! तुम्हे एक धक्का-सा लगेगा। और फिर एक धडाके की आवाज

आयेगी, पर वह तो केवल मोटर चलने की ध्वनि होगी। फिर अपने ऊपर तुम्हे एक बोझ-सा लगेगा, ऐसा गुरुत्वाकर्षण के कारण होता है।"

फ्लोरीनी भाषा मे गुरुत्वाकर्षण का पर्यायवाची कोई शब्द ही न था, रिक ने दूसरे शब्द का प्रयोग किया पर वलोना बेचारी यह भी न समझ पाई।

"इससे क्या कोई कष्ट होगा ?"

"हाँ इससे पीडा तो अवश्य होगी। वह भी इसीलिये क्योकि हमारे पास उसको दूर करने का यत्र नही है, पर यह अधिक देर तक नही रहेगी। इस दीवार के सहारे खडी हो जाओ, और जब तुम्हे ऐसा लगे जैसे कोई तुम्हे दीवार की ओर धकेल रहा है तो और आराम से खडी हो जाना। देखो धक्का लगना आरम्भ हो रहा है।"

अब वह लोग सीधे हाथ की दीवार के सहारे खडे हो गये, और जैसे-जैसे तीव्र आणविक शक्ति की घरघराहट बढती गई वैसे-वैसे प्रकट गुरुत्वाकर्षण-रेखा बदलती गई। जो दीवारे अब तक सीधी लग रही थी, अब तिरछी लगने लगी।

वलोना एक बार आह भर कर एकदम चुप हो गई। उसको साँस लेने मे भी कठिनाई हो रही थी, क्योकि न तो उनके पास बाँधने की पेटी ही थी, न धक्के से बचाने के लिये प्रवचालित गद्दे। साँस लेने मे इसे इतना कष्ट हो रहा था कि उसके गले से खरखराहट की आवाज भी निकलने लगी थी।

रिक भी बड़ी कठिनाई से कुछ शब्द कह पाया। वह वलोना को सान्त्वना देना चाहता था। बेचारी वलोना अवश्य ही अज्ञात के भीषण भय से ग्रस्त होगी। यह तो एक यान था, एक बहुत ही सुन्दर यान। परन्तु वह बेचारी कब किसी यान मे बैठी होगी।

"जब हम लोग अति-अन्तराल मे आयेंगे और बहुत-सी तारिकाओ की दूरी एक साथ पार करेंगे तो एक और धक्का लगेगा। पर वह इतना अधिक न होगा, उससे तुम्हे कोई कष्ट न होगा। उसका तो पता भी न

लगेगा। बस पेट मे कुछ ऐंठन सी होगी और फिर सब ठीक हो जायगा।" वह एक-एक शब्द बडी कठिनाई से बोल रहा था। इतनी सी बात कहने मे भी उसे काफी समय लग गया।

धीरे-धीरे उनकी छाती का बोझ उतर गया। मानो वह अदृश्य जजीर जो अब तक उनको दीवार से बाँधे हुए थी अचानक ही टूट कर गिर गई। और उसके साथ ही वह भी हाँफते हुए फर्श पर गिर पडे।

"तुम्हे चोट तो नही लगी रिक ?" अत मे वलोना ने पूछा

"मुझे और चोट ?" वह हँस पडा। अभी उसकी साँस पूरी तरह ठीक नही हुई थी पर उसे यही सोच कर हँसी आ रही थी कि क्या कभी यान पर उसको चोट लग सकती है।

"मैं तो यान पर एक बार वर्षों तक रहा था और महीनो तक किसी ग्रह पर नही उतरा था।" उसने कहा।

"क्यो ?" अब वलोना उसके पास सरक आई थी और यह विश्वास करने के लिये कि वह ठीक है, उसने रिक के गाल छुये।

रिक ने उसके कधे पर अपनी बाँह रख कर उसे अपने पास खीच लिया और वलोना ने चुपचाप उसके कन्धे पर अपना सिर रख लिया। इससे उसे बडा आराम व सात्वना मिली थी। यह उलट फेर उसने चुपचाप स्वीकार कर ली थी।

"क्यो ?" उसने फिर पूछा

रिक को कारण याद नही आ रहा था। पर हाँ ऐसा हुआ अवश्य था। वह किसी भी ग्रह पर उतरने मे डरता था, पर क्यो यह उसे याद नही था। वह इस प्रश्न को टाल गया।

"मेरी कही नौकरी थी।" उसने कहा

"हाँ ! तुम 'कुछ नहीं' का विश्लेषण करते थे" लोना ने कहा

"हाँ ! एकदम ठीक।" वह एकदम प्रसन्न हो कर बोला, "बिल्कुल ठीक। यही तो मै करता था, इसका अर्थ जानती हो ?"

"नही।"

उसे आशा भी नही थी कि वह इसे समझ सकेगी। पर वह बोलते ही जाना चाहता था, अपनी बीती बाते याद करते जाना चाहता था। इस बात से कि उसे बीती बाते याद आ रही है वह अत्यन्त प्रसन्न व उत्साहित हो रहा था।

"सुनो! ब्रह्माण्ड की समस्त वस्तुएँ लगभग सौ विभिन्न प्रकार के पदार्थो से बनी है। इन पदार्थो को हम लोग तत्व कहते है। लोहा और ताँबा भी तत्व ही है।"

"मै तो उन्हे धातु समझती थी।"

"वह तो ठीक है पर धातुऍ भी तो तत्व ही है। पर धातु न होते हुये भी ओषजन, नाइट्रोजन, कारबन पैलेड्रियम भी तत्व ही है। तत्वो मे हाइड्रोजन और हीलियम सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। यह अत्यत साधारण व सर्वमान्य तथ्य है।"

"मैने तो इनका नाम भी नही सुना" वलोना ने कहा।

"९५ प्रतिशत् ब्रह्माण्ड हाइड्रोजन का बना है और बाकी अधिकाश हीलियम का। यहाँ तक कि अन्तराल भी।"

"मुझे तो एक बार बतलाया गया था कि अन्तराल तो शून्य है, शून्य का अर्थ उन्होने बतलाया था कि वहाँ कुछ भी नही है। क्या वह गलत था?"

"नही गलत तो नही है। वहॉ जो कुछ भी है वह कुछ नही के बराबर ही है। मै एक अन्तराल विशेषज्ञ था जिसका काम अन्तराल के न्यून से न्यून तत्व को ढूँढ कर निकालना तथा उसका विश्लेषण करना होता है। इसका अर्थ है कि मैं यह पता लगाता था कि वहॉ कितना हाइड्रोजन, कितना हीलियम और कितने अन्य तत्व है।"

"क्यो?"

"यह तो बहुत जटिल बाते है। सुनो! तत्वो की व्यवस्था अन्तराल के हर भाग मे एक सी नही है। किसी स्थान मे साधारण से अधिक हीलियम है, तो कही सौडियम, इत्यादि इत्यादि। इस प्रकार के भाग अन्त-

राल मे विभिन्न प्रकार की लहरे उत्पन्न करते है। यही अन्तराल की लहरे कहलाती है। इन लहरो की व्यवस्था को जानना अत्यत आवश्यक है, क्योकि इन्ही के द्वारा पता लगता है कि यह ब्रह्माण्ड कैसे बना, किस प्रकार इसकी प्रगति हुई तथा आगे क्या-क्या हो जाने की सम्भावना है।"

"पर इनसे यह सब पता कैसे लगेगा ?" लोना ने पूछा।

"यह तो अभी अज्ञात ही है।" रिक ने कुछ सोचते हुए कहा। यह बात उसको अत्यन्त व्यग्र कर रही थी, कि उसकी सारी स्मरण शक्ति, ज्ञान का सारा भण्डार, इस प्रश्न पर अटक गया था और वह भी एक गँवार लडकी के प्रश्न पर। हाँ वलोना फ्लोरीना की एक गँवार लड़की हो तो थी। वह शीघ्रता के साथ बोलता ही रहा।

उसने कहा, "फिर हम सारी नीहारिका की विभिन्न गैसो का घनत्व यानी भारीपन मापते है। यह भिन्न भिन्न स्थानो पर भिन्न होता है। वायुयानो के अति-अन्तराल को सुगमता से पार करने मे इनका अध्ययन बडा सहायक होता है। यह इस प्रकार है······" और एकाएक वह चुप हो गया।

वलोना एकदम चौक पडी और बडी अधीरता से उसके आगे बोलने की प्रतीक्षा करने लगी। परन्तु जब रिक एकदम चुप ही रहा तो वह अधीर हो बोली, "रिक ! क्या हुआ रिक ?"

फिर भी कोई उत्तर न आया तो उसने रिक को झिझोडते हुए कहा, "रिक ! रिक।"

अब फिर से पुराने रिक का वह परिचित कमज़ोर व डरा हुआ स्वर ही उसको सुनाई दिया। उसका सारा आत्मविश्वास व प्रसन्नता न जाने कहाँ लुप्त हो गये थे।

"लोना ! गजब हो गया। हमने बडी भारी गलती कर दी।"

"क्यो ? क्या हुआ ? कहाँ गलती हो गई ?"

उसकी आँखो के सम्मुख बेकर की हत्या का चित्र शीशे की तरह साफ बना हुआ था, मानो इस सारे स्मरण के साथ वह भी उसके सामने

उतर आया हो ।

उसने कहा, "हम लोगो को भागना नही चाहिए था । हम लोगो को इस यान पर नही आना था ।"

वह बुरी तरह काँप रहा था और लोना उसका पसीना पोछने का व्यर्थ-सा प्रयत्न कर रही थी ।

"क्यो !" उसने पूछा, "क्यो ?"

"क्योकि यदि बेकर हम लोगो को दिन दहाडे ही भगा कर ले जा रहा था तो वह सतिरियो की ओर से निश्चित था । तुम्हे उस सतरी की याद है जिसने बेकर की हत्या की थी ?"

"हाँ ।"

"उसका चेहरा भी ?"

"मुझे तो उसकी ओर देखने का साहस भी नही हो रहा था ।"

"मैने देखा था । वह कुछ अजीब-सा लगा था । तब मैने सोचा ही नही था । अब मुझे याद-सा आ रहा है लोना—वह सतरी नही था—वह तो मुखिया था लोना । सतरी के वेश मे वह मुखिया ही था ।"

: ८ :

महिला

'फाइफ की सेमिया' पूरे पाँच फुट लम्बी थी और इस समय उसके साठो इच क्रोध से कांप रहे थे। उसका वजन डेढ पौड प्रति इच था और सारे के सारे ९० पौड उसके भारी क्रोध को प्रतिबिम्बित कर रहे थे।

वह कमरे मे तेजी के साथ इधर से उधर चक्कर काट रही थी। उसके बाल ऊपर बँधे थे। उसके जूते की ऊँची नोकीली एडी उसको भ्रमित ऊँचाई दे कर लम्वा बना रही थी। उसके होठ व आगे को निकली ठोडी गुस्से से कॉप रही थी।

"वह मेरे साथ यह व्यवहार नही कर सकते—वह मेरे साथ ऐसा कर ही नही सकते कप्तान!"

उसका स्वर तेज व अधिकारपूर्ण था। कप्तान रेसिटी उसके क्रोध के तूफान के साथ नीचे को झुक गये और उनके मुँह से केवल यही शब्द प्रस्फुटित हुए।

"श्रीमतीजी!"

कप्तान रेसिटी एक फ्लोरीनी के सम्मुख तो एक महानुभाव ही थे क्योकि उनके लिये तो सारे सार्कवासी ही महानुभाव थे। परन्तु सार्कियो

मे भी वर्गभेद था जिसके अनुसार कुछ महानुभाव थे और कुछ वास्तविक महानुभाव। कप्तान केवल साधारण महानुभाव था और फाइफ की सेमिया एक वास्तविक महानुभाव था या यो कहिये कि उसका स्त्रीलिंग थी पर मतलब एक ही है।

"श्रीमतीजी!" कप्तान ने फिर कहा।

"मुझे आज्ञा कौन दे सकता है? मै अब वयस्क हूँ और स्वय अपनी स्वामिनी हूँ। मेरा इरादा यहाँ रहने का है कप्तान!" सेमिया ने कहा।

कप्तान ने शब्दो को तोलते हुए सावधानी पूर्वक कहा, "श्रीमती जी! आप समझने का प्रयत्न कीजिये। इस सम्बन्ध मे मेरी राय ही कब पूछी गई है। मुझे तो बस केवल यह कार्य करने की आज्ञा मिली है।"

उसने बडे सकोच से उस आज्ञापत्र को फिर निकाला। दो बार और वह इसी प्रकार उसको निकाल चुके थे, परन्तु सेमिया ने उस आज्ञापत्र को देखने से भी इन्कार कर दिया था, मानो उसको न देखने पर वह साफ अन्त करण से कप्तान को उसके कर्तव्य-पालन से दूर रखने मे सफल हो सकती हे।

उसने पहिने की ही भाँति एक बार फिर कहा, "मुझे तुम्हारे आज्ञापत्र मे कोई रुचि नही है।"

और वह अपनी एडी पर घूम कर एकदम उससे दूर हट गई मानो उसे कोई छुतहा रोग हुआ हो। पर कप्तान साहस करके उसके पीछे-पीछे गये और धीरे से बोले "आज्ञापत्र मे तो यहाँ तक कहा गया है कि यदि आप चलने को तैयार न हो तो मैं आपको बलपूर्वक यान मे उठा लाऊँ।"

उसने घूम कर कहा, "तुम्हारा इतना साहस?"

"वैसे तो नही है! परन्तु यह देखते हुए कि यह आज्ञा किसकी है, मैं कुछ भी करने का साहस कर सकता हूँ।" कप्तान ने कहा।

अब सेमिया ने खुशामद का हथियार अपनाया, "सुनो कप्तान!

यह भी कोई सकट है, यह तो बे सिर पैर की बाते है—बिल्कुल पागल-पन ! नगर एकदम शात है। सारी दुर्घटना केवल यही तो है कि कल पुस्तकालय मे एक सतरी की हत्या हो गई।"

"आज प्रात भी तो एक फ्लोरीनी ने एक और सतरी का कत्ल कर दिया है।"

इस बात से वह डाँवाँडोल हो उठी, फिर भी उसकी आँखो की चमक उसी प्रकार बनी रही और उसने फिर दृढतापूर्वक कहा, "उससे मुझे क्या ? मैं क्या कोई सतरी हूँ ?"

"श्रीमतीजी ! यान तैयार है, और शीघ्र ही छूटने वाला है। आपको उस पर प्रस्थान करना ही होगा।"

"और मेरा काम ?—मेरी रिसर्च ? तुम जानते हो—नही तुम क्या जानोगे ?"

कप्तान कुछ नही बोला। सेमिया ने भी मुँह फिरा लिया था। काईट के चमचमाते रुपहले सुनहरे कपडो मे से झाँकते हुए उसके मुलायम व सुडौल कधे बडे ही भले लग रहे थे। कप्तान की दृष्टि मे आदर के अलावा जो कि इतने ऊँचे स्तर की महिला के लिये होना चाहिये कोई और भाव भी था और वह सोच रहे थे, इतनी सुन्दर लडकी—किसी घर की शोभा बढाने के स्थान पर विश्वविद्यालय का 'डान' बनने का प्रयत्न क्यो कर रही है। यह विडम्बना कप्तान की समझ से परे थी।

सेमिया भी इस बात से भलीभाँति परिचित थी कि उसकी यह सरस्वती उपासना उन लोगो के उपहास का विषय बनी हुई थी जो कि सार्क की महिलाओ को समाज की तितलियाँ ही समझते थे, जिनका ध्येय केवल विवाह कर के कम से कम दो सार्क बच्चों की माँ बन जाना ही होता था। वह लोग उसके निकट आ कर पूछती "सेमिया ! क्या सचमुच तुम कोई पुस्तक लिख रही हो ?" और फिर पुस्तक देखने के लिये माँगती और हँसती।

यह तो औरते थी पर पुरुषो का व्यवहार इससे भी अधिक अपमानजनक था। वह उसकी ओर कृपाभाव से देखते और यही सोचते प्रतीत होते थे कि केवल एक नजर या कमर मे हाथ डालने भर की कसर है; बस, यह सरस्वती उपासना का सारा अलाप भूल, महत्वपूर्ण बातो पर आ जायगी।

उसको अध्ययन का यह शौक बचपन से ही हो गया था। जब से उसे याद आता था तब से ही वह काईट से अत्यधिक प्रेम करती थी। अन्य लोग तो उस काईट को जो कि कपडो का सिरताज था, जिसके लिये जो भी उपमा दी जाय थोडी है, केवल एक कपडा समझ कर उसके विषय मे कुछ भी जानने का प्रयत्न न करते थे।

रासायनिक दृष्टि से तो वह कई प्रकार के सेल्यूलोज (रेशम बनाने वाले पदार्थ) के अतिरिक्त और कुछ भी न था। रसायन विज्ञेता इस बात को शपथ खा कर कहते थे। फिर भी सारे सिद्धातो की जानकारी व सारी मशीनो के होते हुए भी वह इसका पता नही लगा सके थे कि क्यो सारी नीहारिका मे केवल फ्लोरीना पर ही सेल्यूलोज, सेल्यूलोज़ न रह कर काईट हो जाता था। उन लोगो का मत था कि किसी भौतिक दशा के अन्तर से ही ऐसा होता है। पर यह अन्नर क्या है, इस प्रश्न पर उनको मूक ही रह जाना पडता था।

इस अनभिज्ञता का पता उसे सबसे पहले अपनी नर्स से लगा था। एक दिन उसने उससे पूछा था :

"नैनी ! यह इतना चमकीला क्यो है ?"

"क्योकि वह काईट है, मेरी बच्ची।"

"दूसरे कपडे इतने क्यो नही चमकते ! नैनी।"

"क्योकि वह काईट नही हैं रानी !"

सक्षेप मे यही सब कुछ था। इस विषय पर दो मोटे-मोटे पाण्डित्यपूर्ण ग्रन्थ लिखे जा चुके थे, जिनका सेमिया ने अक्षर-अक्षर चाट डाला था और वह भी नैनी के समान इसी निष्कर्ष पर पहुँच जाती थी

कि काईट काईट है क्योकि वह काईट है और जो काईट नही है वह काईट नही है क्योकि वह काईट नही है।

काईट मे अपनी कोई चमक न थी पर ठीक प्रकार से कातने के पश्चात् तो वह शीशे की तरह विविध रगो मे चमकता दिखाई देता था और कभी-कभी तो उसमे सारे रग एक साथ ही दिखाई देते थे। यदि उसको एक भिन्न प्रकार से काता जाय तो वह हीरे की भाँति चमकने लगता था। थोडे से प्रयत्न से ही वह ६००° तापमान तक को सह सकता था। अन्य रासायनिक पदार्थों का उस पर कोई प्रभाव न होता था। उसके रेशे बाल से भी अधिक महीन काते जा सकते थे और इस्पात से भी अधिक मजबूत होते थे।

मनुष्य की परिचित वस्तुओ मे काईट के अतिरिक्त कोई भी वस्तु अब तक ऐसी नही थी जो इतनी उपयोगी हो तथा इतने विभिन्न कार्यों मे प्रयुक्त होती हो। यदि यह इतनी कीमती न होती तो शीशा धातु, प्लास्टिक सबका स्थान ले लेती।

इतनी मँहगी होने पर भी काईट, तीव्र आणविक मोटर के साँचे, चश्मे, तथा हल्की-फुल्की जाली बनाने के काम मे लाई जाती थी। यह जालियाँ उसी स्थान पर लगाई जाती थी जहाँ धातु की जाली या तो टूट जाती थी या बहुत भारी रहती थी।

इन वस्तुओ मे भी उसका सीमित प्रयोग ही होता था क्योकि काईट का अधिक प्रयोग वर्जित था। काईट की अधिकाश पैदावार नीहारिका के सुन्दर-सुन्दर वस्त्र व कपडे तैयार करने मे प्रयुक्त होती थी। फ्लोरीना लाखो ससारो के धनी लोगो को कपडे प्रदान करता था और इसी कारण अन्य किसी प्रकार अधिक मात्रा मे उसका प्रयोग वर्जित था। फिर भी एक ससार मे २० स्त्रियो से अधिक ऐसी नही थी जो अपने वस्त्र काईट के बनवा सकती और केवल दो हज़ार ऐसी थी जो कि एक जाकेट या दस्ताने कभी-कभी पहिनने के लिए बना पाती थी और बाकी दूसरो को देखकर ही आहे भरती थी।

इस प्रकार सारी नीहारिका मे शेखी-खोरो के लिए यह कहावत बन गई थी कि 'वह अपनी नाक भी काईट से साफ करता है।'

जब सेमिया कुछ बडी हो गई तो उसने अपने पिता से पूछा था :

"पिताजी ! काईट क्या है ?"

"यह तुम्हारी रोटी है बेटी।"

"मेरी ?"

"केवल तुम्हारी ही नही रानी ! यह सारे सार्क की रोटी है।"

इसका कारण आसानी से उसकी समझ मे आ गया था। नीहारिका मे कौन-सा ग्रह ऐसा था जिसने काईट उगाने का प्रयत्न न किया था। पहिले तो काईट के बीज चोरी से दूसरे ग्रह मे ले जाने पर सार्क मे मृत्युदण्ड तक की व्यवस्था थी, पर उससे क्या चोरी रुक सकती थी। जैसे-जैसे समय बीतता गया यह नियम हटा दिया गया। अब किसी भी जगह के आदमी काईट के मूल्य पर काईट के बीज ले जा सकते थे।

वह लोग बीज ले जा सकते थे क्योकि यह सर्व विदित हो चुका था कि किसी और ग्रह पर उगाया गया काईट केवल सेल्यूलोज ही रह जाता था—सफेद—कमजोर और बेकार जो कि साधारण सून के समान भी नही होता था।

क्या यह वहाँ की धरती का अन्तर था ! या फ्लोरीना के सूर्य की किरणो का ? या फिर वहाँ के जीव कीटाणुओ का ? तरह-तरह के अन्वेषण किये गए। फ्लोरीना की मिट्टी का विश्लेषण हुआ, उसके सूर्य की रोशनी की नकल कर उन पौधो पर डाली गई और फ्लोरीनी जीव कीटाणु दूसरी जगह छिडके गए पर प्रत्येक बार काईट सफेद, कमज़ोर और बेकार ही निकला।

काईट के विषय मे अब तक जो कुछ लिखा जा चुका था उसके अतिरिक्त भी बहुत कुछ बाकी रह गया था। पाँच साल से सेमिया, काईट की कहानी, उस धरती की कहानी, जहाँ काईट उगता है और उन लोगो की कहानी जो काईट को उगाते हैं, लिख कर उपाधि लेने

का स्वप्न देखती आ रही थी ।

इस स्वप्न की लोग हँसी उडाते थे, पर इस उपहास के उपरान्त भी वह अपने लक्ष्य पर अडी हुई थी । यह जिद करके फ्लोरीना पर्यटन के लिए आई थी । वह खेती और मिलो का अध्ययन करना चाहती था—और वह ·· · पर क्या लाभ ! अब तो यह सोचना ही व्यर्थ है कि वह क्या-क्या करती । उसे तो वापस लौटने की आज्ञा मिल चुकी थी ।

फिर एकाएक उसे ध्यान आया कि कदाचित वह सार्क पर इसके लिए आसानी से लड सके और उसने मन ही मन प्रतिज्ञा की कि यदि वह सप्ताह भर मे फिर वापस न लौट आई तो अपना नाम बदल लेगी ।

और वह शान्ति पूर्वक कप्तान से बोली, "कप्तान हम लोग कब प्रस्थान करेगे ?"

यान की खिडकी से जब तक फ्लोरीना दिखाई देता रहा वह उसको देखती रही । वह एक हरी-भरी दुनिया थी, सार्क से कही अधिक मनोहर। वहाँ के निवासियो का वह अध्ययन करना चाहती थी । सार्क पर जो फ्लोरीनी थे उसे तनिक भी अच्छे न लगते थे । क्या आदमी थे ? जरा भी साहस न था उनमे—उसकी ओर देखने का भी साहस नही था—उसको देखते ही विधान-अनुसार मुँह फिरा लेते थे । सुना जाता है कि अपने ससार मे वह लोग अधिक सुखी रहते है । बच्चो की तरह लापरवाह और गैर जिम्मेदार और उसी प्रकार मधुर ।

उसकी विचार धारा तोडते हुए कप्तान रेसिटी ने कहा "श्रीमतीजी ! क्या अब आप अपने कमरे मे आराम फरमायेगी ?"

सेमिया ने भौहे सिकोड कर कप्तान से कहा "क्या यह भी एक नई आज्ञा है ? क्या मै एक बन्दी हूँ ?"

"जी ! बिल्कुल नही ! यह तो केवल सतर्क रहने के लिए ही किया जा रहा है । हवाई अड्डा असाधारण रूप से सुनसान था । ऐसा पता लगा

है कि एक और सतरी की हत्या हो गई और वह भी एक फ्लोरीनी द्वारा और अड्डे के सतरी उसे ही पकडने चले गये थे ।"

"परन्तु इसका मुझसे सम्बन्ध ?"

"यह हो सकता है कि ऐसे समय · ······हाँ ऐसे समय मुझे जहाज पर पहरा बैठा देना चाहिए था । मै अपनी त्रुटि को कोई कम महत्व नही दे रहा हूँ·········ऐसे समय कोई भी इस यान पर छिप कर बैठ सकता है।"

"पर किस लिए ?"

"यह तो मै नही बतला सकता, पर इतना अवश्य कह सकता हूँ कि वह हमारे कल्याण के लिए नही छिपे होगे ।"

"वहम की दवा तो किसी के पास भी नही, कप्तान।"

"बिल्कुल नही श्रीमतीजी । जब तक हमारा यान ग्रह के निकट था हमारे शक्तिमापक यंत्र काम नही कर रहे थे। पर अब उनके अनुसार सकट-कक्ष से गर्मी साधारण से अधिक मात्रा मे आ रही है ।"

"सच ?"

कप्तान ने उसकी ओर बिना देखे ही उत्तर दिया "और गर्मी की मात्रा इतनी ही अधिक है जितनी दो सामान्य मनुष्यो की होनी चाहिए।"

"ऐसा भी तो हो सकता है कि किसी ने कोई गर्म करने वाला यंत्र खुला छोड दिया हो ?"

"हमारे यत्र उस गर्मी को नही नापते। श्रीमतीजी हम इसकी खोज करना चाहते है और इसीलिए यह चाहते है कि आप अपने कक्ष मे विश्राम करे ।"

वह चुपचाप अपने कमरे मे चली गई। उसके जाने के दो मिनट पश्चात् कप्तान ने बोलने वाली ट्यूब से आज्ञा दी, "सकट-कक्ष को खोल डालो।"

मारलीन टेरेन्स के तने हुए स्नायु ज़रा भी शिथिल पड़ते तो शायद

उसे हिस्टीरिया के दौरे पडने लगते। उसे बेकरी वापस लौटने मे क्षण भर की देर हो गई थी। वह लोग वहाँ से कुछ देर पहिले चल दिए थे और भाग्यवश ही उसको गली मे मिल गए थे। उसके बाद तो उस पर कोई शैतान सवार हो गया था जिसके फलस्वरूप बेकर उसके सामने मरा पडा था।

उसके पश्चात् भीड का एक रेला आया और रिक तथा वलोना उसी मे बह गये थे। इतनी देर मे सतरियो के वायु वाहन आने आरम्भ हो गए थे और तब कुछ भी न किया जा सकता था।

रिक के पीछे दौडने की इच्छा को वह दबा गया था। उससे कोई लाभ न होगा। उन्हे वह कभी भी ढूंढ न पायेगा, और पीछे दौडने से सम्भवत सतरी उसे ही खोज निकालते, यह सोच वह बेकरी की ओर मुड गया।

अब उसका बचाव केवल सतरियो की अव्यवस्थित अवस्था के कारण ही सम्भव हो सकता था। सदियो से फ्लोरीना पर शाति का साम्राज्य था और लगभग दो सौ वर्ष से वहाँ कोई विद्रोह न हुआ था। यह भी केवल मुखिया-व्यवस्था के कारण। मुखियो की नियुक्ति ने, (उसने कटुता के साथ सोचा) कमाल कर दिया था। इससे सतरियो का कार्य नाम-मात्र को ही रह गया था और उनको सह-कार्य का अभ्यास लेशमात्र भी नही रहा था। इसी कारण वह थाने मे आसानी से घुसने मे सफल हो गया था। यद्यपि जहाँ तक सम्भव है उसका ब्यौरा वहाँ अवश्य पहुँच गया होगा पर आलस्यवश शायद किसी ने उस पर ध्यान भी न दिया हो। जो अकेला सतरी उस समय थाने मे था, वह एकदम आलसी तथा लापरवाह मालूम होता था। उसने टेरेन्स को तब तक नही टोका जब तक वह उसके बिल्कुल निकट न पहुँच गया। पास पहुँचने पर जब सतरी ने उसका अभिप्राय पूछा तो इस ललकार का उत्तर उसने अपनी २×४ की पिस्तौल से दिया। यह पिस्तौल वह नगर के बाहर सड़क के किनारे की एक झोपडी मे से चुरा लाया था।

उसने पिस्तौल सतरी की खोपडी पर दाग दी। फिर संतरी के कपडे और हथियार बदल लिए थे। उसके अपराध की सूची पहले ही इतनी अधिक हो चुकी थी कि एक और सतरी की हत्या से कोई अन्तर नही पडता था।

फिर भी वह अभी तक फरार था और संतरियो की जग लगी मशीनरी उसको ढूढने का विफल प्रयत्न कर रही थी।

वह बेकरी मे पहुँच गया था। वहाँ बेकर का वृद्ध सेवक बाहर झाँक-झाँक कर झगडे की पूरी खबर प्राप्त करने की चेष्टा कर रहा था। वह सतरी की काली रुपहली वर्दी देख कर दुकान के अन्दर घुस गया।

मुखिया ने उसके पीछे अन्दर जा कर उसका कालर पकड जोर से खीचा और पूछा, "बेकर कहाँ जा रहा था ?"

उस बुड्ढे का मुँह खुला का खुला रह गया, उसमे से एक भी स्वर न निकला।

मुखिया ने कहा, "मै दो मिनट पहले एक आदमी की हत्या करके आया हूँ और अब दूसरे की भी कर सकता हूँ।"

"दया ! दया ! मुझे नही मालूम !"

"तो फिर तुम अपनी अनभिज्ञता के कारण ही स्वर्ग सिधारोगे।"

"उसने मुझे बतलाया तो नही पर उसने कुछ आरक्षण अवश्य कराये थे।"

"तुमने इतना सुना है तो आगे भी सुना होगा, जल्दी बतलाओ।"

"उसने एक बार वोटेक्स का नाम लिया था। शायद अन्तराल यान पर आरक्षण कराया था।"

टेरेन्स ने उसको एक धक्का दिया। बुड्ढा अलग जा गिरा।

उसको बाहर भगदड कम होने की प्रतीक्षा करनी ही पडेगी। और असली संतरियो के बेकरी तक पहुँच जाने की सम्भावना का सकट मोल लेना ही पडेगा।

परन्तु अधिक देर नही—अधिक देर नही—वह बड़ी सरलता से यह

अनुमान लगा सकता था कि ऐसी अवस्था मे उसके दोनो साथी क्या करेगे। रिक का तो कुछ भी नही कहा जा सकता पर वलोना एक समझदार लडकी है। जिस प्रकार वह डर कर भागे है, उन्होने मुझे अवश्य ही एक संतरी समझा होगा और वलोना ने यही उचित समझा होगा कि बेकर द्वारा नियत राह पर ही कदम उठाये जाएँ।

तो बेकर ने उनके लिए आरक्षण कराया है। एक यान उनकी प्रतीक्षा मे होगा। वह अवश्य ही वहाँ होगे।

पर उसको उन लोगो से पहिले वहाँ पहुँचना होगा। स्थिति की गम्भीरता तो यही थी। इस समय उसे और किसी बात की परवाह न थी। यदि रिक उसके हाथो से निकल गया ? यदि वह सार्क के विरुद्ध इस रामबाण को खो बैठा तो उसका खुद का जीवन ही कितना मूल्य रखता है।

अतएव जब वह बेकरी से बाहर निकला तो जरा-सा भी किसी प्रकार का भय उसके मन मे न था—यद्यपि उस समय पूर्णरूप से दिन चढ चुका था—यद्यपि तब तक सतरियो को यह ज्ञात हो चुका होगा कि उनका अपराधी सतरी की वर्दी मे है—और यद्यपि उसको इस समय भी सामने से दो सतरी वायुवाहन से आते दिखाई दे रहे थे।

टेरेन्स हवाई अड्डे की राह से भली भाँति परिचित था। सारे ग्रह पर ऐसा अड्डा केवल एक ही था। ऊपर शहर मे तो निजी यानो के लिए छोटे-छोटे अड्डे बडी सख्या मे थे पर निचले शहर मे भी सौ अड्डे ऐसे थे जो केवल सामान ढोने के काम मे आते थे। वह काईट कपडे की बडी-बडी गाठे सार्क ले जाते, और वहाँ से कल पुर्जे तथा प्रतिदिन के उपभोग का सामान वापस लाते थे। पर केवल एक ही अड्डा ऐसा था जिससे यात्री जाते थे। यह यात्री गरीब फ्लोरीनी, नौकरी पेशे वाले तथा कुछ विदेशी होते थे। धनी सार्की केवल सकटकाल मे ही इसका प्रयोग करते थे।

अड्डे के प्रवेश द्वार पर जो फ्लोरीनी बैठा था टेरेन्स को आते देख

बडा प्रसन्न हुआ। उसके मन मे बातो का गुब्बार लबालब भरा था।

"शुभ कामनाएँ जनाब!" उसका स्वर एक अजीब प्रकार की नटखट उत्सुकता से भरा था। 'शहर मे काफी गडबड़ी मची है, है न!"

टेरेन्स बातो मे नही उलझना चाहता था। उसने टोपी को आगे खिसका कर कोट के बटन ऊपर तक बद किये और फिर गुर्रा कर बोला, "क्या दो व्यक्ति, एक नर और नारी वोटेक्स को जाने के लिये अड्डे पर आये थे ?"

द्वार रक्षक एकदम चौकन्ना हो गया। उसने अपना थूक निगला और बडी नम्रतापूर्वक बोला, "जी जनाब! लगभग आधा घण्टे पहिले या शायद उससे भी कम।"

वह एकदम लाल हो उठा, "क्या किसी प्रकार का सम्बन्ध उनमे और . . ...."

"जनाब उनके आरक्षण बिल्कुल ठीक थे। मैं विदेशी लोगो को बिना उचित आज्ञापत्र के कैसे जाने दे सकता हूँ ?"

टेरेन्स ने उसकी परवाह न की। उचित आज्ञापत्र! और बेकर एक रात मे उचित आज्ञा भी ले आया। वाह री नीहारिका! ट्रानटर के गुप्तचर सार्क मे किस हद तक फैले हैं!

"उनके नाम क्या थे ?"

"गारेथ और हँमा बारेन।"

"क्या उनका यान छूट चुका! जल्दी ...."

"न ..नही... . जनाब।"

"कौन-सा कक्ष ?"

"सत्रह।"

टेरेन्स ने दौड़ लगाने की इच्छा को कठिनाई से दबाया फिर भी वह चल ऐसे रहा था मानो दौड रहा हो। अभाग्यवश यदि कोई सतरी वहाँ होता तो इस अभद्र ढंग से चलना ही उसकी स्वतत्रता का काल हो जाता।

एक अधिकारी उस यान पर खड़ा था।

टेरेन्स ने हाँफते हुए कहा, "क्या गारेथ और हँसा बारने यान पर चढ चुके है ?"

"नही वह नही आये है।" उस अधिकारी ने अवज्ञापूर्वक कहा। वह एक सार्की था और उसके सम्मुख सतरी एक अदना सिपाही ही तो था।

"क्या उनसे कुछ कहना है ?" उसने फिर पूछा।

टेरेन्स ने लुटे हुए मनुष्य के समान कहा "वह अभी तक नही आये ?"

"यही तो मैं कह रहा हूँ। और मैं सावधान किये देता हूँ हम लोग उनकी प्रतीक्षा नही करेगे। यथासमय चल देगे, चाहे वह आये या न आये।"

टेरेन्स वापस लौटा। वह फिर द्वार रक्षक के पास आया और पूछा, "क्या वह लोग चले गये ?"

"चले गये ? कौन जनाब ?"

"बारने लोग ! जो वोटेक्स को जाने वाले थे। वह यान पर तो नही है। क्या वह इधर से गये है ?"

"नही जनाब ! मेरी जान मे तो नही !"

'और दूसरे फाटक भी तो है ?"

"परन्तु वह बाहर जाने के लिए नही है। बाहर जाने का केवल यही रास्ता है।"

"उनको ढूढो बेवकूफ !"

द्वार रक्षक ने घबरा कर अपनी बोलने वाली ट्यूब उठाई। अभी तक कोई भी संतरी उसमे इतने क्रोधपूर्वक नही बोला था और वह इसका फल सोच कर ही घबरा रहा था। दो मिनट बाद हो उसने ट्यूब रख दी।

"नही जनाब ! कोई नही गया।" उसने कहा

टेरेन्स देखता ही रह गया। उसके हैट के नीचे उसके सुनहरे बाल

चिपक गये थे और पसीना बह कर उसके दोनो गालों पर आ रहा था।

"उनके प्रवेश करने के बाद क्या कोई यान यहाँ से गया है ?"

द्वार रक्षक ने अपनी लिस्ट देखते हुए कहा "जी हाँ। एक एडेवर लाईनर।" वह सतरी का गुस्सा उतारने के लिए बोलता ही गया।

"एडेवर एक खास यात्रा कर रहा है। वह फाइफ की श्रीमती सेमिया को फ्लोरीना से सार्क ले जा रहा है।" पर उसने यह नही बताया कि किस प्रकार चोरी से उसने इस बात का पता लगाया था।

परन्तु टेरेन्स के लिए अब सब कुछ निरर्थक था। वह धीरे-धीरे वापस लौट पडा। चाहे बात कितनी ही असम्भव क्यो न हो पर यह निश्चित था कि रिक और वलोना उसी यान पर चढ गए है। वह पकडे नही गए है, नहीं तो द्वार रक्षक को पता होता। वह अड्डे पर इधर उधर नही घूम रहे है नही तो अब तक पकडे जाते। वह उस यान पर भी नही है जिसके टिकट उनके पास है। वह अड्डे से बाहर भी नही गए है। अड्डे से बाहर केवल एडेवर यान ही गया है। इसलिए उसी पर चाहे कैदी के रूप मे चाहे छिप कर वह लोग गए है। पर दोनो तरह बात एक ही है। यदि वह छिप कर बैठे है तो जल्दी ही कैद हो जायेंगे। केवल एक फ्लोरीनी गँवार लडकी और पागल आदमी ही इस बात को नही समझ सकते कि आजकल यान मे कोई भी छिपकर यात्रा नही कर सकता।

विडम्बना तो देखो। सारे यानो मे चुना भी तो कौन सा यान, जिसमे फाइफ के महानुभाव की पुत्री यात्रा कर रही थी।

'फाइफ का महानुभाव !'

: ९ :

महानुभाव

फाइफ के महानुभाव सार्क के सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण मनुष्य थे। इसलिए वह पसन्द नही करते थे कि लोग उन्हे खडा हुआ देखे। अपनी पुत्री की भाँति वह भी नाटे थे, पर उसकी तरह ठीक अनुपात मे नही बने थे। उनका सारा नाटापन उनके पैरो मे ही सीमित था, अर्थात् उनका लम्बा-चौडा धड तथा रोबीला चेहरा, उनके छोटे-छोटे पैरो पर रखा हुआ था। इस कारण जब वह चलते या खडे होते तो एक कार्टून से लगते और पैर बडे कष्ट से डगमगा जाते।

यही कारण था कि वह सदा ही डेस्क के पीछे बैठे दृष्टिगोचर होते। सिवाय उनकी पुत्री के, घर के नौकरो के या जब उनकी पत्नी जीवित थी, किसी ने भी उनको अन्य किसी रूप मे नही देखा था।

उस स्थिति मे ही वह अपने व्यक्तित्व के साथ न्याय कर पाते थे। उनका बडा-सा सिर, चौडा चेहरा, पतले-पतले होठ, लम्बी-चौडी बडी-सी नाक और नोकीली ठोडी वही से वास्तविक रूप मे दृढता से भरी लगती थी। उनके बाल फैशन के विपरीत पीछे को कढे हुए तथा कधे तक लटकते होते थे। उनका एक भी बाल सफेद न था। उनके गाल, ऊपर के होठ व ठुड्डी हल्का नीलापन लिए थे और एक फ्लोरीनी नाई दिन

मे दो बार उनके चेहरे को उस्तरे से रगडता था जिससे उनके चेहरे के बाल इससे अधिक न बढ पाये ।

महानुभाव इस बात से अनभिज्ञ नही थे कि यह सब स्वाभाविक नही है, पर उन्हे इसकी आदत-सी पड गई थी । उनके शक्तिशाली चौडे-चौडे हाथ, जिसकी छोटी-छोटी उँगलियाँ एक दूसरे मे गुंथी रहती थी, डेस्क पर रखे रहते थे । डेस्क पर बहुत बढिया पालिश थी तथा वह एकदम खाली रहती थी । उस पर न तो कोई कागज, न कोई सवाद-ट्यूब और न सजावट की ही कोई वस्तु रहती थी । इस सादगी के कारण उनका अपना व्यक्तित्व और भी प्रभावशाली हो उठता था ।

अपने गौर वर्ण सेक्रेटरी से वह ऐसे बाते कर रहे थे मानो कोई मशीन बोल रही हो । उन्होने उससे कहा, "मै अनुमान करता हूँ कि सबकी स्वीकृति है ?"

इस प्रश्न के उत्तर मे उन्हे तनिक भी सदेह न था । उस सेक्रेटरी ने भी उसी बेजान-से स्वर मे कहा, 'बोर्ट के महानुभाव कहते है कि उन्होने अपना यह समय पहिले ही अति आवश्यक कार्य के लिए किसी को दे रखा है इससे वह तीन बजे से पहले उपस्थित न हो सकेगे ।"

"तुमने उन लोगो को सभा के महत्त्व से तो परिचित करा दिया होगा ?"

"जी हाँ ! मैने उनसे प्रार्थना की थी कि इस सभा का कार्यक्रम अत्यधिक गम्भीर है और उसमे जरा-सा भी विलम्ब उचित न होगा ।"

"उसका फल ?"

"वह समय पर उपस्थित होंगे श्रीमान् ! और बाकी लोग तो पहले ही सहयोग देने को तैयार थे ।"

फाइफ मन-ही-मन मुस्कुरा उठा । आधे घटे की देर से कुछ भी अन्तर न पडता था । पर यह सिद्धात का विषय था । यह बडे महानु-भाव अपनी स्वतत्रता मे हस्तक्षेप होने पर बुरी तरह खीझ उठते हैं, और यह खीझे दूर होनी ही चाहिएँ ।

अब वह उन लोगो के उपस्थित होने की प्रतीक्षा कर रहा था। उसका कमरा काफी बडा था, दूसरो के लिए स्थान तैयार था। बडी समय-सारिका, जिसकी रेडियो-शक्ति ने सहस्रो वर्षो मे कभी भी धोखा न दिया था, इस समय २-२१ का समय दिखा रही थी।

पिछले दो दिनों मे कितना बडा विस्फोट हुआ है। और शायद यह पुरानी समय-सारिका न जाने क्या-क्या गुल खिलते देखेगी। अपने हजार वर्ष के जीवन मे इसने कितनी-कितनी महत्त्वपूर्ण घटनाएँ घटती देखी है। जब इसने अपने घटे पहली बार बजाए थे उस समय सार्क हाथो से गढी एक नई दुनिया के रूप मे ऊपर उठ रहा था। पुरानी बडी-बडी दुनियाओ से उसका सम्पर्क नही के बराबर ही था। उस समय यह समय-सारिका ईंटो से बने किसी पुराने घर की दीवार मे लगी हुई थी। उस घर की तो सारी ही ईटे मिट्टी हो चुकी थी। इसने अपने समय मे सार्क के तीन साम्राज्यो का बनते-बिगडते देखा है। एक तो तब जब सार्क के अनुशासनहीन सिपाही निकटवर्ती पाँच छोटे-मोटे ग्रहो पर राज्य करते थे और दो बार तब जब विदेशी ससारो की सेना सार्क के सारे नियम बनाती थी। उस हलचल से भरे, उथल-पुथल के दिनो मे भी इस समय-सारिका की रेडियो-शक्ति निरतर अपना कार्य करती रही थी।

पाँच सौ वर्ष पूर्व जब सार्क ने यह खोज की थी कि उसके निकटवर्ती ससार फ्लोरीना मे अनुपमेय खजाना भरा पडा है तो भी यह शातिपूर्वक अपना समय बिताती रही थी। यह दो महायुद्धो तथा उनके पश्चात् विजयी लोगो की सधि के समय भी निरपेक्ष रूप से अपना कार्य करती रही थी। सार्क ने अपने आधीन सारे ग्रहो को स्वतत्र कर दिया था, और अब अकेली फ्लोरीना के बल पर ही उसकी शक्ति इतनी अधिक थी कि ट्रानटर भी उसका कुछ न बिगाड सकता था।

ट्रानटर फ्लोरीना को हडपना चाहता था। ट्रानटर ही क्या, नीहारिका की और शक्तियो की भी हार्दिक इच्छा यही थी। सैकडो वर्षो से सारे

ससार फ्लोरीना के लिए अपना हाथ फैलाये है कि अवमर पाते ही उसे अपने पजे मे दाब ले। सयोग से वह सार्क के हाथ लग चुकी थी और अब बिना नीहारिका युद्ध के सार्क उसको छोडने वाला नही है।

'ट्रानटर को यह ज्ञात है! ट्रानटर को यह ज्ञात है!'

ऐसा मालूम होता था मानो समय-सारिका ही यह मधुर गान महानुभाव के कानो मे भर रही थी।

अब समय २-२३ हो चुका था।

लगभग एक वर्ष पूर्व सार्क के पाँचो बडे महानुभाव एकत्रित हुए थे। उस समय भी इसी हाल मे सभा बुलाई गई थी। उस बार भी अब की ही भाँति प्रत्येक महानुभाव ग्रह के ऊपर अपने-अपने महाद्वीप मे बैठे हुए थे, और प्रत्येक त्रिदैशिक मूर्तीकरण द्वारा ही वहाँ उपस्थित थे।

मोटे-मोटे अक्षरो मे त्रिदैशिक मूर्तीकरण का अर्थ है त्रिदिशा मे टेलीविज़न द्वारा किसी की मूर्ति, आवाज तथा विभिन्न रगो सहित उपस्थित कर देना। ऐसी मशीनें सार्क के सभी खाते-पीते घरो मे थी। उन मशीनो और इस विशेष मशीन मे केवल यही अन्तर था कि इसमे मशीन गौण रहती थी तथा दिखलाई नही पडती थी। सिवाय फाइफ के, प्रत्येक महानुभाव वहाँ वास्तविक को छोड बाकी हर रूप मे उपस्थित थे। उनके पीछे की दीवार आप नही देख सकते थे, उनमे किसी प्रकार की कोई चमक भी नही थी। वैसे वह बिल्कुल वास्तविक लगते थे, पर यदि उनको हाथ से छुआ जाता तो स्थान खाली मिलता और आपका हाथ उनके शरीर से आर-पार निकल जाता।

रुन के महानुभाव का शरीर ग्रह के दूसरी ओर बैठा हुआ था, केवल उनका ही महाद्वीप इस समय रात्रि के अन्धकार मे डूबा हुआ था। फाइफ के कार्यालय मे भी, रुन के मूर्तीकरण कक्ष मे इस समय रात की बत्ती की ठडी रोशनी फैली हुई थी जो बाहर के उजाले के समक्ष बिल्कुल फीकी लग रही थी।

देखा जाय तो उस कमरे मे उस समय पूरे सार्क का व्यक्तीकरण हो

रहा था। एक अजीब और बेढगा-सा था यह व्यक्तीकरण। इस समय वहाँ सार्क के पाँचो प्रमुख व्यक्ति वर्तमान थे। रुन गजे तथा लाल-लाल मोटे-से थे, बाली के बाल सफेद हो चले तथा मुँह पर झुर्रियाँ पडी हुई थी, स्टीन ने अपना मेक-अप पूरी तरह किया हुआ था, उनके चेहरे पर वृद्ध व्यक्ति की खीझ-भरी मुस्कराहट थी जो कि अपना खोया हुआ पौरुष इसी प्रकार मेक-अप द्वारा छिपाने का प्रयत्न कर रहा हो और उनके बिल्कुल विपरीत बोर्ट के महानुभाव प्रतिदिन की आवश्यकताओ की ओर से भी उदासीन थे, जो इस समय उनकी दो दिन की बढी दाढी व गन्दे नाखूनो द्वारा झलक रही थी।

फिर भी वे सार्क के पाँच प्रमुख महानुभाव थे।

वह तीन स्तर वाली सार्की शासन-शक्ति के पाँच सिरमौर थे। इसका सबसे निचला स्तर फ्लोरीना सिविल सरविस थी जो पूर्ण रूप से स्थिर रहती थी। उसे इससे कोई मतलब न था कि ऊपर कौन-सा घर बिगड या बन रहा है। वास्तव मे तो यही लोग इस सरकार के चक्र को नियमित रूप से चला रहे थे। दूसरा स्तर मन्त्रियो तथा मुख्याध्यक्षो का था जो कि वशागत प्रादेशिक शासको द्वारा नियुक्त किये जाते थे। इन लोगो की उपस्थिति प्रत्येक फाइल को वैधानिक बनाने के लिए ही आवश्यक थी और इसलिए इनका कार्य हस्ताक्षर करना ही होता था।

सबसे ऊपर के स्तर मे ये पाँचो महानुभाव थे और प्रत्येक के पास एक-एक महाद्वीप था। इन्ही लोगो के हाथो मे काईट का सारा व्यापार था, उसका कर भी यही लोग लेते थे। और यही पाँचो सार्क पर राज्य करते थे तथा सबसे अधिक धनी थे अर्थात् पैसा ही सार्क पर राज्य करता था। इन सब मे भी सबसे अधिक धनी था फाइफ।

एक वर्ष पूर्व, एक दिन फाइफ के महानुभाव ने नीहारिका के द्वितीय धनी ग्रह के अन्य स्वामियो को बुलाया था। हाँ ! द्वितीय धनी ग्रह तो था सार्क ! सब से अधिक धनी ट्रानटर था, होता भी क्यो न ? उसके पास तो सैकड़ो ससार कर वसूलने के लिए थे, सार्क की भाँति केवल दो

ही नहीं।

"मेरे पास एक अजीब-सा पत्र आया है।" उन्होने कहा था।

वह लोग चुप ही रहे थे, शायद वह प्रतीक्षा कर रहे थे। फाइफ ने एक धातु फिल्म अपने सेक्रेटरी के हाथ मे दी थी जिसने वह फिल्म अन्य महानुभावो को दिखलाई थी।

उन चारो के लिए जो उस समय फाइफ के कमरे मे उपस्थित थे अपने को छोड, फाइफ समेत, बाकी चारो केवल छाया ही थे। यह धातु फिल्म भी छाया ही थी, वह केवल फाइफ से निकल कर बाली, बोर्ट, स्टीन तथा रुन के महाद्वीप पर पडती रोशनी की किरणे भर देख सकते थे। जो शब्द अब वह पढ रहे थे छाया पर छाया थे।

केवल बोर्ट ही ऐसे थे जो इस सूक्ष्मता को भूल, उस फिल्म को लेने के लिए हाथ बढाने लगे थे।

उनका हाथ उस छाया-ग्राही कक्ष के अत तक आकर कट गया था। उनकी बाँह बिना उगलियो के ठूठ-सी रह गई थी। अपने कमरे मे बैठे फाइफ को अच्छी तरह मालूम था कि बोर्ट की बाँह,फिल्म के आर-पार होगी। वह मुस्करा उठे, और लोग भी मुस्करा दिए और स्टीन के मुँह से तो हँसी का फव्वारा छूट पडा।

बोर्ट का मुँह लाल हो गया। उन्होने अपनी बाँह खीच ली और फिर उनके हाथ दृष्टिगोचर होने लगे थे।

फाइफ ने कहा, "अच्छा अब आप लोगो ने इस पत्र को पढ लिया है। यदि आप लोग आज्ञा दे तो मैं इसको ज़ोर से पढ कर सुनाता हूँ जिससे कि आप लोग इसके अभिप्राय का ठीक से निरूपण कर सके।"

फाइफ ने फिल्म उठाने का प्रयत्न किया और तुरन्त ही उसके सेक्रेटरी ने उसे उठा कर उनको दे दिया।

फाइफ उस पत्र को मजा ले-ले कर पढते रहे। शब्दो मे ऐसे अर्थ भर कर मानों यह स्वय उनके हाथ का लिखा हुआ हो और उसको पढ़ने मे उन्हे मजा आ रहा हो।

उन्होने कहा "यह पत्र इस प्रकार है—आप सार्क के महानुभाव है, आपके धन व शक्ति की स्पर्धा कोई भी नही कर सकता। परन्तु वह धन और शक्ति एक छोटी सी डगमगाती नीव पर खडी है। आप अवश्य चौक पडेगे कि काईट से भरा-पूरा ग्रह किस प्रकार एक छोटी-सी डगमगाती नीव है, परन्तु आप सोचिए फ्लोरीना कब तक जीवित रहेगा ? क्या सदा ?

"नही ! फ्लोरीना का कभी भी विध्वस हो सकता है, कल भी और हज़ार वर्ष बाद भी। जहाँ तक सम्भव है वह कल ही विध्वस हो जायगा। वह विध्वंस मेरे द्वारा नही होगा, और न ही आपके द्वारा होगा—यह विध्वस एक ऐसी शक्ति द्वारा होगा जिसकी कल्पना भी आप नही कर सकते। उस विध्वस का ध्यान करिए और समझ लीजिये आप का धन व शक्ति दोनो ही विनष्ट हो गए है, क्यो कि उसका अधिकतर भाग मुझे चाहिए। आपके पास सोचने का समय है पर बहुत अधिक नही।

"आप अधिक समय लेने का प्रयत्न करिए और फिर देखिए मैं सारी नीहारिका विशेष कर सारे फ्लोरीना मे इस विध्वंस का समाचार फैला दूँगा। उसके बाद न तो काईट होगा—न धन और न शक्ति ही। मुझे भी कुछ न मिलेगा—पर मुझे निर्धनता का अभ्यास है। आपको भी कुछ न मिलेगा, और वह अत्यत कष्टदायक होगा क्योकि आप लोग इस ऐश्वर्य मे ही पले हैं और उसके बिना एक पल भी न रह पायेगे।

"इससे जिस रूप मे मैं बताऊँ आप अपना धन व सम्पत्ति मुझे भेट कर दीजिए, फिर बचा-खुचा वैभव आपका ही रहेगा। आज के वैभव की तुलना मे तो वह कुछ भी न होगा पर बिल्कुल न होने से तो अधिक ही होगा। जो कुछ बचेगा उसे बेकार न समझिएगा। यह भी सम्भव है कि फ्लोरीना आपके जीवन-काल मे विनष्ट न हो और इस भाँति वह जीवन आराम का तो होगा ही चाहे वैभव पूर्ण न हो।"

फाइफ समाप्त कर चुके थे। उन्होने उस फिल्म को गोल-गोल मोड

कर एक पारदर्शक नली मे बद कर दिया। और कहा, "यह बडा ही रोचक पत्र है। इस पर कोई हस्ताक्षर नही है, पर यह पत्र है बडा ही अधिकारयुक्त व आडम्बरपूर्ण! आप सब महानुभाव इस विषय मे क्या राय देते हैं?"

रुन के लाल चेहरे पर क्रोध के लक्षण झलक रहे थे। उन्होने कहा, "यह तो किसी आधे पागल मनुष्य का कार्य लगता है, मानो वह कोई उपन्यास लिख रहा हो। मेरी समझ मे नही आ रहा फाइफ कि इस व्यर्थ की बकवास के लिए हम लोगो को बुलाना किस भाँति उचित था। और ऐसे समय मुझे तुम्हारे सेक्रेटरी की उपस्थिति भी पसन्द नही।"

"मेरा सेक्रेटरी! क्योकि वह एक फ्लोरीनी है? क्या आप सोचते है कि इस पत्र का उसके मन पर कोई प्रभाव पडेगा?" अब उनके स्वर मे आज्ञा का आभास आ गया था और उन्होने सेक्रेटरी से कहा, "रुन की ओर मुँह करो!"

सेक्रेटरी ने ऐसा ही किया। उसने आँखे नीची की हुई थी, उसके सफेद रक्तहीन चेहरे पर न तो कोई शिकन थी और न भाव, मानो जीवनहीन हो वह।

उसकी उपस्थिति की अवज्ञा करते हुए फाइफ ने कहा, "यह फ्ला-रीनी मेरा अपना निजी नौकर है। यह मुझ से कभी भी अलग नही होता और न ही अपने लोगो से मिलता है। परन्तु केवल इसीलिए वह विश्वस्त नही माना जा सकता। इसकी ओर देखिए—इसकी आँखो को देखिए। क्या यह स्पष्ट नही है कि इस मनुष्य पर मस्तिष्क-बेधन यन्त्र का प्रयोग हो चुका है। मेरे विरुद्ध थोडी-सी भी विद्रोह की भावना इस मनुष्य मे नही आ सकती। बुरा मानने की कोई बात नही पर यह अवश्य है कि आप लोगो से अधिक मैं इस पर विश्वास कर सकता हूँ।"

बोर्ट ने मुस्कुराते हुए कहा, "मैं आपको दोष नही दे सकता। हम लोग एक बेधित फ्लोरीनी सेवक की भाँति आपकी भक्ति का दावा ही कब करते हैं।"

स्टीन ही ही करके हँस दिया, ऐसा लगता था मानो उसकी कुर्सी उसे काटने को दौड रही हो।

किसी ने भी फाइफ के इस कार्य पर टीका टिप्पणी न की। यदि टिप्पणी होती तो फाइफ को अत्यधिक आश्चर्य ही होता। वैसे तो इस यन्त्र का प्रयोग अपराधियो को छोड किसी पर भी करना अवैधानिक था। यहाँ तक कि यह प्रमुख महानुभाव भी न्यायानुसार इसका प्रयोग नही कर सकते थे। फिर भी आवश्यकतानुसार फाइफ इसका प्रयोग करते ही थे। विशेषकर फ्लोरीनी सेवको पर। सार्की का बेधन तो बडा गहन अपराध हो जाता था। स्टीन के लिए तो यहाँ तक प्रसिद्ध था कि वह नर नारी दोनो प्रकार के बेधित फ्लोरीनी सेवक, सेक्रेटरियो के अलावा अन्य कार्यो के लिए भी रखता था।

फाइफ ने अपना हाथ हिलाते हुए कहा, "अब सुनिये ! मैं ने आप लोगो को केवल इस व्यर्थ से पत्र को पढने के लिये ही नही बुलाया है, वास्तव मे हम लोगो के सम्मुख एक गहन समस्या प्रस्तुत है। प्रथम तो यह प्रश्न उठता है कि यह पत्र मेरे पास ही क्यो आया है ? यह अवश्य है कि मैं आप सब महानुभावो से अधिक धनी और इस कारण अधिक शक्तिशाली हूँ फिर भी मेरे पास केवल एक तिहाई काईट का ही नियन्त्रण है और हम पाँचो मिल कर सारे काईट का व्यापार करते है, और फिर इस पत्र की पाँच प्रतियाँ बनाना कुछ भी कठिन नही है !"

"आप बहुत अधिक बोलते है। आखिर आपका मतलब क्या है ?" बोर्ट ने बुदबुदाते हुए कहा।

बाली के सूखे होठ उसके पोपले चेहरे पर से बोले, "श्रीमान् बोर्ट के महानुभाव ! फाइफ जानना चाहते है कि हम लोगो के पास इस पत्र की प्रतिलिपि आई है अथवा नही !"

"फिर ऐसा क्यो नही कहते ?"

"अपने विचार मे तो मै यही कह रहा हूँ।" फाइफ ने कहा "तो फिर.........."

अपने-अपने व्यक्तित्व के अनुसार प्रत्येक ने उसकी ओर संदेह व क्रोध से देखा ।

रुन सब से पहले बोले । उनके गुलाबी माथे पर पसीना उभर आया था और उन्होने काईट के रुमाल से उस पसीने को माथे की शिकनो के बीच से पोछा । मोटापे के कारण वह बडी गहरी तथा कान से कान तक फैली हुई थी ।

उन्होने कहा, "मुझे नही मालूम फाइफ, मैं अपने सेक्रेट्री से पूछ देखूँगा । मेरे सेक्रेटरी सब सार्की ही है। यदि दफ्तर मे ऐसा पत्र आया भी होगा तो वह रद्दी की टोकरी मे डाल दिया गया होगा । यह तो आपकी अजीबोगरीब सेक्रेटरी व्यवस्था ही है जो आपको यह सब व्यर्थ के पत्र स्वय पढने पडते है ।"

वह चारो ओर देख कर मुस्कराये । उनके मसूढे उनके होठो और चमकीले इस्पात के बने दाँतों के बीच चमक उठे । यह दाँत अन्दर तक मसूढो मे फँसे हुए थे और असली दाँतो से भी अधिक मजबूत थे । पर इनके कारण उनकी मुस्कराहट बडी भयावनी हो उठी थी ।

बाली ने कधे हिलाते हुए कहा, "मेरे विचार से तो रुन का कथन हम सब पर लागू होता है ।"

स्टीन ने कहा, "मैं तो कभी भी चिट्ठियाँ नही पढता । सचमुच कभी नही । मैं पत्र पढ़ते-पढते ऊब जाता हूँ, फिर पत्र भी तो कितने सारे आते हैं ! मेरे पास इतना समय ही कहाँ ?" उन्होने चारो ओर इस प्रकार देखा मानो इस कथन का सब को विश्वास दिला देना चाहता हो ।

बोर्ट ने कहा, "काहिलो ! क्या हो गया आप लोगो को ? क्या फाइफ से डरते हैं ? फाइफ ! सुनिये, मै कोई सेक्रेटरी नही रखता, क्यों कि मैं उसकी आवश्यकता नही समझता । मैं अपने कार्य के मध्य किसी की उपस्थिति सहन नही कर कर सकता । मेरे पास इसकी प्रतिलिपि आई है और मुझे पूरा विश्वास है कि औरो के पास भी आई होगी । सुनेगे मैंने उसके साथ क्या व्यवहार किया ? मैं ने उसको फाड़-फूड कर

रद्दी की टोकरी मे डाल दिया। यदि मेरी राय माने तो आप भी ऐसा करे। अब इस सभा को समाप्त करिये, मैं बिल्कुल थक गया हूँ।" और उन्होने ऊपर लगे स्विच की ओर हाथ बढाया जिससे वह स्थापित संबध कट जाए और वह फाइफ के सामने से हट जाँय।

"बोर्ट रुकिये!" कडकडाती आवाज मे फाइफ बोले। "ऐसा मत करिये, अभी सब बाते समाप्त नही हुई हैं! आप भी यह पसन्द नही करेंगे कि आपके पीछे कुछ निर्णय कर लिया जाय। क्यो ठीक है न?'

'कुछ देर रुके रहिये न! बोर्ट के महानुभाव!" रुन ने नम्रता भरे स्वर मे कहा। यद्यपि नेत्रो का भाव कुछ और ही था जो कह रहा था कि पता नही फाइफ के महानुभाव इस छोटी-सी बात को इतना तूल क्यो दे रहे हैं।

"शायद!" बाली ने अपनी सूखी-सी आवाज़ मे कहा, "फाइफ सोचते है कि पत्र लिखने वाले को फ्लोरीना पर ट्रानटर आक्रमण की कोई सूचना मिली है।"

"छि!" फाइफ ने घृणापूर्वक कहा, "उसको क्या ज्ञात! इसके लिये तो हमारे गुप्तचर ही काफी है और फिर धन मिल जाने के बाद वह इस आक्रमण को किस प्रकार रोकेगा? ज़रा सुनू ं तो! नही भाई नही! इस पत्र से फ्लोरीना ध्वस का कोई भौतिक कारण लगता है, ट्रानटर का आक्रमण नही।"

"यह तो फिजूल की बकवास है" स्टीन ने कहा।

"अच्छा!" फाइफ ने कहा, "तो फिर पिछले दो सप्ताह की घटनाओ को आप लोग कोई महत्व नही देते?"

"कौन सी घटनाएँ?" बोर्ट ने पूछा।

"ऐसा सुना जाता है कि एक अन्तराल विशेषज्ञ गुम हो गया है। आप लोगो ने भी सुना तो अवश्य होगा?"

बोर्ट काफी क्रोधित मालूम होते थे। कम से कम वह शांत भी नही थे, "हाँ! हाँ! मैंने ट्रानटर के आबेल से सुना है। तो फिर क्या हुआ?

मैं किसी अन्तराल विशेषज्ञ के विषय मे नही जानता।"

"कम से कम आप लोगो ने उसकी अन्तिम सूचना तो पढी ही होगी। उसके बाद से ही वह गायब है।"

"आबेल ने मुझे वह भी दिखलाई थी। परन्तु मैंने तो उस पर कोई विशेष ध्यान नही दिया था।"

"बाकी लोग क्या कहते है ?" फाइफ ने एक के बाद एक की ओर देखते हुए कहा, "क्या आप लोग एक सप्ताह पहले की बाते याद कर सकते है ?"

"हाँ ! मैंने पढा था।" रुन ने कहा "मुझे याद भी है, उसमे विध्वस के विषय मे भी कुछ था। क्या आपका तात्पर्य उसी से है ?"

"सुनिये !" स्टीन ने कहा, "उस अन्तराल विशेषज्ञ ने तो न जाने क्या-क्या निरर्थक बाते कही थी। सचमुच अब आप लोग उस पचडे को नही ले बैठेगे। मैंने पहले भी आबेल से बडी मुश्किल से पीछा छुटाया था। सचमुच मे।"

"लाचारी है स्टीन ! और किया भी क्या जा सकता है।" फाइफ ने अधीरता से कहा, मानो कह रहा हो कि इस स्टीन का क्या किया जाय। "हमे उस विषय मे बाते करनी ही पडेगी। वह अन्तराल विशेषज्ञ फ्लोरीना विध्वस के विषय मे ही कह रहा था। उसके गुम होने के बाद ही हमे यह धमकी भरा पत्र मिलता है। क्या यह केवल सयोग ही है ?"

"क्या आप कहना चाहते है कि अन्तराल विशेषज्ञ ही हमे यह धमकी दे रहा है ?" बाली फुसफुसाया।

"नही कतई नही ! एक बार अपने नाम से कोई बात कह कर फिर कोई गुमनाम क्यो कहेगा ?"

"पहली बार जब उसने सूचना दी थी तो वह अपने कार्यालय से बाते कर रहा था।" बाली ने कहा, "सब से नही।"

"फिर भी ! धमकी देने वाला सीधे अपने शिकार से ही बाते करता

है, सब से नही।"

"तो फिर ?"

"वह गायब हो गया। अन्तराल विशेषज्ञ निष्कपट है, परन्तु उसका सूचना अत्यन्त भयकर है। और वह उन लोगो के पजे मे है जो निष्कपट नही है। वह धमकी देकर रुपया ऐंठना चाहते है।"

"कौन दूसरे ?"

फाइफ अपनी कुर्सी पर गम्भीर हो कर बैठ गया और बोला "यदि आप लोग पूछते ही है तो सुनिये, ट्रानटर!"

स्टीन कांप उठा, "ट्रानटर ?"

"क्यो नही ? फ्लोरिना को हथियाने का इससे अधिक अच्छा उपाय कौन सा है ? उनकी विदेश नीति का यही तो विशेष लक्ष्य है और यदि बिना युद्ध के ही वह उस लक्ष्य पर पहुँच सकते हो तो इससे अधिक अच्छा और क्या होगा। यदि हम उनकी यह असम्भव-सी धमकी मान लेते है तो फ्लोरीना उनका ही समझिये। वह हम लोगो को दे ही कितना रहे है—और वह भी हम लोग कितने दिन रख पायेगे ?"

"दूसरी ओर यदि हम लोग इस धमकी की उपेक्षा करे ?—और इसके अतिरिक्त हम कर भी क्या सकते हैं—तो ट्रानटर फिर क्या करेगा ? फिर वह लोग इस अवश्यम्भावी अत की सूचना फ्लोरीना मे प्रसारित कर देगे। जैसे—जैसे अफवाहे फैलती जाँयगी, कृषक आतकित हो उठेगे और फिर विनष्टि मे कसर ही क्या रह जायगी। यदि एक मनुष्य यह सोचने लगे कि कल मर ही जाना है तो नीहारिका की कौन-सी शक्ति उससे आज काम करवा सकती है ? खेती चौपट हो जायगी और मिलो मे उल्लू बोलने लगेगे।"

छाया-ग्राही के ग्रहण से परे रखे शीशे मे देखकर स्टीन ने अपने चेहरे के पाउडर को ठीक करते हुए कहा, "मेरे विचार मे इससे कोई विशेष हानि न होगी, यदि उत्पादन कम होगा तो कीमते भी तो ऊँची होगी। और कुछ समय व्यतीत होने पर भी फ्लोरीना जब वही का वही

रहेगा तो मजदूर तथा कृषक फिर काम पर वापस आ जायेंगे। साथ ही हम लोग किसी समय भी निर्यात बन्द करने की धमकी दे सकते हैं। वास्तव मे मै तो कल्पना भी नही कर सकता कि कोई भी सभ्य ससार बिना काईट के जीवित भी रह सकता है। काईट तो राजा है राजा! मेरे विचार मे तो यह व्यर्थ का बखेडा फैला रखा है।"

वह एकदम ऐसे बैठ गये जैसे थक गये हो। बाली जो सारे समय आँखे बन्द किये बैठे थे बोले, "अब कीमते और ऊँची नही हो सकती, वह अभी भी हद से ज्यादा ऊँची है।"

"बिल्कुल ठीक!" फाइफ ने कहा "स्थिति बहुत अधिक गम्भीर कभी नही हो सकती। ट्रानटर, फ्लोरीना पर थोडा-सा झगडा होते ही, नीहारिका के सम्मुख, सार्क के ऊपर, काईट सम्भरण ठीक न रख सकने का दोषारोपण करेगा। फिर वह लोग अनुशासन रखने के लिए आक्रमण कर भी दे तो क्या अनुचित होगा? वह तो यही कहेगे कि वह काईट का सम्भरण ठीक रखने का ही प्रयत्न कर रहे है, इसमे सबसे बडा सकट यही है कि नीहारिका के स्वतत्र साम्राज्य भी काईट के लिए उनका हाथ बटायेंगे। विशेषकर तब, जब कि ट्रानटर, एकाधिकार विनष्ट करने, काईट की उपज व सम्भरण बढाने तथा दामो को गिराने का आश्वासन देगा। बाद मे चाहे जो हो पर इस समय तो उनको सहायता मिल ही जायगी। केवल यही एक उपाय है जिससे कि ट्रानटर फ्लोरीना को ले सकता है। यदि वह अकारण ही आक्रमण करता है तो सारे स्वतत्र ससार आत्म-सुरक्षा के लिए हमारा साथ देंगे।"

रुन ने कहा, "परन्तु अन्तराल विशेषज्ञ का इससे क्या सम्बन्ध? उसका स्थान इस कहानी मे कहाँ है? यदि आपका विश्लेषण ठीक है, तो आप इस समस्या को भी हल कर सकते हैं।"

"मेरे विचार मे तो बडा भारी सम्बन्ध है। इन अन्तराल विशेषज्ञो का अधिकतर कोई-न-कोई पेंच ढीला ही रहा है। इस विशेषज्ञ का विश्लेषण भी कुछ-कुछ इसी तरह का है। वह विश्लेषण क्या है, इससे

कोई मतलब नही। ट्रानटर नीहारिका मे इस समाचार को कभी भी नही प्रसारित करेगा, इस डर से कि कही अन्तराल ब्यूरो उसकी धज्जियाँ ही न उडा दे। पर उस मनुष्य को कैद कर उसका ब्यौरा प्राप्त कर, कुछ समय के लिए तो वह अनभिज्ञ आदिवासियो को विश्वास दिलाने मे समर्थ हो ही जायेगे। वह उसको वास्तविकता का रूप देकर उस समाचार के प्रयोग से पर्याप्त हानि कर सकते हैं। रही ब्यूरो की बात, वह तो ट्रानटर के हाथ की कठपुतली है ही और इस कारण उनका विरोध ऐसा होगा जो ट्रानटर के फैलाये इस भ्रम को कदापि दूर न कर पायेगा।"

"कैसी जटिल समस्या है।" बोर्ट ने कहा, "वह उसको फैलने नही दे सकते, फिर भी वह उसको फैलायेगे। क्या अजीब बात है! कुछ समझ मे नही आता।"

"सुनो! वह उसको एक गम्भीर वैज्ञानिक सूचना के रूप मे न तो फैलने ही देगे और न ब्यूरो को ही उसकी सूचना देगे। पर एक अफवाह के रूप मे? उसके लिए उन्हे कौन रोक सकता है? अब आया समझ मे?"

"फिर आबेल लुप्त अन्तराल विशेषज्ञ को ढूँढने मे समय क्यो नष्ट कर रहा है?"

"क्या! आपके विचार मे वह ज्ञात होने देगा कि उसीने उस मनुष्य को छिपाया है? आबेल क्या करता है और क्या करता प्रतीत होता है, दो विभिन्न वस्तुएँ है।"

"अच्छा! जो कुछ आप कहते हैं, यदि वही ठीक है, तो हमे क्या करना चाहिए?"

फाइफ ने कहा, "हमे संकट की सूचना मिल गई है। और यही सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। यदि निकाल सके तो, हम लोग अन्तराल विशेषज्ञ को ढूँढ निकालेगे। हमे ट्रानटर के एजेन्टो पर बिना हस्तक्षेप किए कडी निगाह रखनी पडेगी। उनकी चालो से ही हमें भविष्य का पता लग सकेगा। फ्लोरीना पर विध्वस की किसी भी अफवाह को

रोकना होगा। हल्की से हल्की अफवाह का आरम्भ से ही जोरदार खंडन करना होगा। इसके लिए सबसे बडी बात है कि हम लोगो को एक होकर रहना होगा। मेरे विचार मे इस सभा का मुख्य ध्येय यही है। हम लोगो को एक मोर्चा बनाना होगा। हम सब लोगो को महाद्वीपी विधान का पता है। साधारण स्थिति मे उसका पालन मेरे से अधिक और कोई भी न करेगा। परन्तु, आप लोगो को भी मानना पडेगा कि यह साधारण स्थिति नही है।"

और लोगो ने भी अनमने मन से इस बात को स्वीकार किया। तब फाइफ ने कहा, "और अब हम उनकी दूसरी चाल की प्रतीक्षा करेगे।"

यह एक वर्ष पूर्व की बात थी। फाइफ के महानुभाव को अपने जीवन मे शायद ही कभी इतनी असफलता मिली हो।

कोई भी दूसरी चाल उसके बाद नही चली गई। किसी के पास भी कोई अन्य पत्र नही आया। अन्तराल विशेषज्ञ उसी तरह लुप्त रहा और ट्रानटर की खोज बदस्तूर जारी रही। फ्लोरीना पर किसी भी प्रकार की कोई अफवाह न फैली और काईट के कृषक तथा श्रमिक बराबर अपना कार्य करते रहे।

रुन के महानुभाव हर सप्ताह फाइफ को फोन अवश्य कर लेते थे, "फाइफ!" वह कहते थे "और कोई नई बात?" और कटाक्षभरी मुस्कुराहट से उसका चेहरा भर उठता था।

फाइफ चुपचाप उस कटाक्ष को सहन कर जाते। वह कर भी क्या सकते थे। बार-बार वह बातो को दोहराते पर कोई फल न निकलता। कही कोई कडी खोई हुई थी—कोई महत्वपूर्ण कडी।

और फिर एकदम विस्फोट हो उठा। उन्हे उत्तर मिल गया, उनके ख्याल मे उन्हे उत्तर मिल गया। और उत्तर भी वह जिसकी उन्हे आशा तक न थी।

उन्होने सभा फिर बुलाई थी। घडी दो उन्नतीस बता रही थी। दूसरे महानुभाव प्रकट होने लगे थे। बोर्ट सबसे पहले प्रकट हुए

उनके होठ बद थे तथा उनके गदे नाखूनो वाली उँगलियाँ उनकी बढी हुई दाढी को छू रही थी। उसके बाद स्टीन आये, उन्होने उसी समय अपना मुँह धोया था और जो मेक-अप के उतर जाने से बडा भद्दा लग रहा था। बाली उदासीन और थके हुए थे तथा उनके गाल पिचके हुए थे, उनकी कुर्सी पर गद्दे लगे थे तथा गर्म दूध का गिलास उनके पास रखा था। सब के पश्चात् रुन रात्रि के आँचल मे लिपटे हुए, क्रोधित से, दो मिनट देरी से उपस्थित हुए। इस बार उनकी रोशनी इतनी धीमी थी कि छाया-ग्राही मे उसकी छाया बहुत धुँधली-सी दिखाई पड रही थी। फाइफ के कमरे की रोशनी भी उसको प्रकाशित नही कर सकती थी चाहे उसमे एक सूर्य जैसी शक्ति थी।

फाइफ ने कहना आरम्भ किया, "पिछली बार मैने एक गम्भीर सुदूर के सकट का जिक्र किया था और ऐसा कर मैं स्वय ही एक जाल मे फँस गया हूँ, सकट है अवश्य, पर वह दूर नही है, वह हम लोगो के अत्यन्त निकट है। आप लोगो मे से एक सदस्य अवश्य ही मेरा तात्पर्य समझ गया होगा और दूसरे भी शीघ्र ही समझ लेगे।"

"क्या तात्पर्य है आपका ? महाशय !" बोर्ट ने तुनक कर कहा।

"देशद्रोह !" फाइफ ने तत्काल उत्तर दिया।

: १० :

छद्मवेशी

मारलीन टेरेन्स जल्दबाजी मे कोई कार्य न कर सकता था। यही कह कर वह मन को समझा रहा था, क्योकि जब से वह अन्तराल हवाई अड्डे से बाहर आया था उसका मस्तिष्क निकम्मा हो गया था।

उसे सावधानी से कदम बढाना होगा। उसकी चाल बहुत धीमी भी नही होनी चाहिए, वह लक्ष्यहीन-सा लगेगा। उसकी चाल बहुत तेज भी नही होनी चाहिए नही तो वह दौडता-सा दिखाई देगा। उसकी चाल तो चुस्त तथा लक्ष्यपूर्ण होनी चाहिए जैसे कि एक सतरी की—एक सतरी जो अपना कार्य समाप्त कर अपने वायुवाहन मे चढने जा रहा हो।

काश कि वह वायुवाहन मे चढ सकता—उसको चला सकता! अभाग्यवश इन वाहनो का चालना उसको कभी भी नही सिखाया गया था, मुखिया की हैसियत से भी नही। वह चलते हुए अगली चाल सोचने मे असमर्थ था, उसे उस समय आराम चाहिए था।

इस समय चलने मे भी वह कमजोरी अनुभव कर रहा था। वह शीघ्रता से कार्य करने वाला व्यक्ति न रहा हो पर पिछले २४ घटो मे उसने इतनी शीघ्रता से सोचा तथा कार्य किया था कि उसके स्नायुयो की

सारी शक्ति उसी मे लग गई थी। वह पूर्णरूप से थक चुका था।

फिर भी कही रुक कर विश्राम करने का साहस उसमे न था। यदि रात होती तो वह कही थोडा रुक कर विश्राम कर भी लेता परन्तु इस समय तो तीसरा ही प्रहर था।

काश कि वह वायुवाहन चला सकता—उसमें बैठ कर शहर से मीलो दूर जा सकता, इतनी देर के लिए ही सही जितने में कि वह आगामी चाल को सोच सके—परन्तु उसके पास तो केवल अपनी दो टाँगो की ही सवारी थी।

यदि वह सोच सकता—हाँ! यदि वह सोच सकता। यदि वह क्षण भर के लिए ब्रह्माण्ड की सारी गति और उसके समस्त कार्यों पर प्रतिबध लगा सकता। काश! वह समस्त नीहारिका को रुक जाने की आज्ञा दे पाता जिससे कि उसे सोचने का समय मिल सके, उसे कुछ तो करना ही होगा।

अब वह निचले शहर के अंधकार मे. पहुँच गया था। इस समय वह एक सतरी की भाँति अकड़ कर चल रहा था, अपने स्नायु कोडे को भी बडे विश्वास से पकडे था। गलियाँ सूनी थी। आदिवासी अपनी-अपनी झोपडियो मे छिपे थे। यह और भी अच्छा था।

मुखिया ने सावधानी पूर्वक अपने लिए एक मकान चुना। मकान का बढिया होना उसके लिए अधिक लाभप्रद था। ऐसा मकान जिसमे लाल प्लास्टिक की ईटे तथा शीशे लगे हो। निचले स्तर के लोग तो उसके लिए बेकार ही सिद्ध होते क्योकि उनके पास खोने को था ही क्या, और इस कारण सम्भवत: उसकी योजना मे सहयोग देने मे असफल रहते, परन्तु ज़रा उच्च वर्ग के लोग शीघ्र ही उसकी चाल मे फँस सकते थे।

ऐसे ही एक मकान की ओर वह चल पडा। यह मकान गली से थोडा हट कर था, यह और भी अच्छी बात थी। उसे ज्ञात हो गया था कि अन्दर घुसने के लिए उसे खटखटाने की आवश्यकता न पडेगी क्योकि

उसको आते देख खिडकी मे कुछ हलचल हुई थी, पता नही कैसे सदियो से सतरी के आगमन का आभास पाने की आदत इन लोगो को पड गई थी, अब द्वार स्वय ही खुल जायगा।

और द्वार खुल गया था।

एक युवती ने दरवाजा खोला था, उसके नेत्र आश्चर्य से फैले हुए थे। वह ज़रा भडकीले कपडे पहिने थी। कपडो मे झालरें लगी थी। ऐसा प्रतीत होता था मानो अपने आप को जरा ऊँचे स्तर का सिद्ध करने के लिए ही उसके माता-पिता ने उसके लिए ऐसे कपडे बनवा दिए थे। वह एक ओर हट कर खडी हो गई और उसको अन्दर जाने की राह दे दी। उस समय उसकी साँस तेजी से चल रही थी।

मुखिया ने उसे द्वार बद करने का इशारा किया

"ए लडकी! तुम्हारा बाप कहाँ है?"

लडकी चिल्लाई "बाबा!"

बाबा दूसरे कमरे से डरा हुआ चला आ रहा था। उसके लिए भी सतरी का आगमन कोई नया समाचार न था। ऐसे मे एक युवती का दरवाजा खोलना ही अधिक उत्तम था, यदि सतरी क्रोधित हो तो एक लडकी को ही पिटने का सकट सब से कम था।

"तुम्हारा नाम?" मुखिया ने पूछा।

"जेकोफ है, हुजूर!"

संतरी की वर्दी मे एक पतली-सी नोटबुक रखी थी। मुखिया ने उसे खोला और देखकर कहा "जेकोफ! हाँ ठीक है। घर के प्रत्येक प्राणी को उपस्थित करो। फौरन!"

यदि उसके हृदय पर चिन्ता का इतना भार न होता तो टेरेन्स को इस समय आनन्द आता। शक्ति के नशे का आनन्द ऐसा ही होता है।

घर के सब लोग एक कतार मे खडे हो गए। सबसे पहिले दो साल के बालक को लिए, एक दुबली-सी घबराई हुई औरत थी। उसके बाद द्वार खोलने वाली लड़की और फिर उसका छोटा भाई।

"केवल इतने ही।"

"जी हाँ! हर कोई यहाँ उपस्थित है।" जेकोफ ने विनीत भाव से कहा।

"क्या बच्चे को दूध पिला सकती हूँ?" औरत ने घबराये स्वर मे कहा, "यह उसके सोने का समय है। मैं उसे सुला रही थी।" उसने बच्चे को आगे कर दिखाते हुए कहा, शायद इसी से सतरी का हृदय पिघल जाय।

मुखिया ने उसकी ओर देखा भी नही। एक सतरी ऐसा कदापि न करता, और इस समय वह एक सतरी था। उसने कहा, "उसे नीचे रख दो, और एक गुड का डला दे दो। चुप हो जायगा। और हाँ जेकोफ!"

"जी हुजूर।"

"तुम समझदार छोकरे लगते हो।" एक आदिवासी चाहे, जिस आयु का भी हो सदैव एक छोकरा ही था।

"जी जनाब!" उसके स्वर मे प्रसन्नता का पुट आ गया और उसके कधे कुछ गर्व से ऊँचे हो गए, "मैं खाद्य विभाग मे एक क्लर्क हूँ। मैंने गणित और लम्बा भाग सीखा है तथा मुझे लागरिथम भी आता है।"

"हाँ।" मुखिया ने सोचा "तुम्हे लागरिथम का प्रयोग सिखा दिया गया है तथा शब्द का उच्चारण भी।"

वह ऐसे लोगों को अच्छी तरह जानता था। इस मनुष्य को अपने लागरिथम पर इतना गर्व होगा जितना कि एक महानुभाव के बच्चे को अपने यान पर भी न होगा। खिडकी का शीशा उसके लागरिथम तथा प्लास्टिक की ईंटे उसके लम्बे भाग की दक्षता के ही द्योतक थे। वह निरक्षर लोगो से उतनी ही घृणा करता होगा जितनी महानुभाव लोग आदिवासियो से करते थे, या शायद थोडा अधिक ही क्योंकि उसे उन्ही लोगो के मध्य रहना पड़ता था और उन्ही मे उसकी गिनती भी होती थी।

"ऐ छोकरे! तुम न्याय और अच्छे महानुभावो मे तो विश्वास करते हो न ?" रोब जमाने के लिए मुखिया अपनी नोटबुक देखता जाता था।

"मेरा पति एक अच्छा आदमी है।" उसकी औरत ने बोलना आरम्भ किया, "वह सब बेकार के लोगो से नही मिलता-जुलता, न मै और न बच्चे ही। इनको हमेशा · · ·· "

टेरेन्स ने उसे चुप रहने का सकेत किया और कहा, "हाँ! हाँ! अच्छा अब सुनो ऐ छोकरे! मैं चाहता हूँ कि तुम यहाँ बैठे रहो और जैसा मैं कहूँ करते जाओ। मै इस ब्लाक मे रहने वाले प्रत्येक प्राणी की सूची चाहता हूँ। उनका नाम, पता, क्या कार्य करते है तथा किस तरह के है वह लोग ? यदि इनमे कोई शैतान का बच्चा है तो उसका नाम विशेषकर। समझे ?"

"जी जनाब। सबसे पहिले हीरा है वह इसी ब्लाक मे है, वह "

"ऐसे नही छोकरे! एक कागज ले आओ और इधर बैठकर सब लिख डालो—सब कुछ जरा धीरे-धीरे साफ-साफ लिखना, मुझसे देसी लिखावट के कीडे मकोडे नही पढे जाते।"

"मेरा लेख बडा खुशकत है जनाब।"

"अच्छा! देखूँगा।"

जेकोफ अपना कार्य करने बैठ गया। वह बहुत साफ-साफ और धीरे-धीरे लिख रहा था। उसकी पत्नी पीछे से झाँक रही थी।

टेरेन्स ने लडकी को आदेश दिया "जाओ, खिडकी से देखकर बताओ कि कोई सतरी तो नही आ रहा, मैं उनसे बातें करना चाहता हूँ। उनको बुलाना मत, बस मुझे बतला देना।" और अब वह आराम से साँस ले सकता था। उसने अपने लिए चाहे थोडी देर के लिए ही सही, इस सकट के मध्य भी एक सुरक्षित स्थान बना लिया था।

बच्चे के गुड चबाने की आवाज़ के अतिरिक्त सब कुछ शान्त था। उसे यह भी सतोष था कि शत्रु आगमन की सूचना उसे समय से पहिले ही मिल जायगी। अब वह सोच सकता था।

सर्व प्रथम तो उसका सतरी वेश समाप्त होना चाहिये। अब शहर के सारे दरवाजो पर पहरा बैठ गया होगा क्योकि उन लोगो को यह मालूम ही है कि स्कूटर के अलावा वह और कोई गाडी नही चलाना जानता, और शीघ्र ही उनकी यह भी समझ मे आ जायगा कि प्रत्येक घर तथा गली की सावधानी पूर्वक खोज करने से उनका अभियुक्त तुरंत ही पकडा जायगा।

और जब ऐसा सोच लेगे तो बाहर से खोज आरम्भ कर अन्दर को बढेगे। इस प्रकार यह मकान खोज मे सर्व प्रथम ही रहेगा। और इस हिसाब से उसका समय अब समाप्ति पर ही है।

अब तक तो सतरी की वर्दी अपना कार्य करती ही आई है। आदि-वासियो को तो सदेह करने का कोई स्थान ही नही है। उनमे से किसी ने भी उसके गोरे फ्लोरीनी चेहरे पर ध्यान नही दिया, न ही उसकी सूरत शक्ल का अध्ययन किया। उनके लिये तो सतरी की वर्दी ही पर्याप्त है।

शीघ्र ही पीछा करने वाले कुत्तो की समझ में यह बात आ जायगी, और फिर फौरन ही वह आदिवासियो को आज्ञा देंगे, कि ऐसे सतरी को जो अपने प्रमाण पत्र न दिखा सके पकड रखे। वास्तविक सतरियो को अस्थायी प्रमाण पत्र दे दिए जांयगे। उसको पकडने के लिए पुरस्कार घोषित हो जायगा। फिर भी सौ मे से एक आदिवासी ही उस वर्दी को चुनौती देने का साहस कर सकता है, चाहे वर्दी पहनने वाला कितना ही छद्मवेशी क्यो न हो। पर सौ मे से एक ही काफी है।

इसलिए उसे इस वर्दी का परित्याग करना ही होगा। यह तो एक बात थी। दूसरी यह थी कि वह अब फ्लोरीना पर कही भी सुरक्षित न था। सतरी-हत्या बडा भारी अपराध है। पचासो वर्ष मे भी ऐसा अपराध न हुआ होगा। वह इतनी देर पकड से बाहर रह सका है, सो खोज और भी ज़ोर से आरम्भ होगी, अतएव उसे फ्लोरीना, अपनी मातृभूमि भी छोडनी ही पडेगी।

पर कैसे ?

अव्यवस्थित सतरियों की असावधानी तथा अपने अच्छे भाग्य को पूरी तरह मिला कर भी उसे केवल एक दिन की मोहलत और मिलती थी।

वैसे तो जीवन मे एक दिन कुछ भी अर्थ नही रखता। पर हाँ यह अवश्य था कि इस एक दिन मे वह भागने का कोई उपाय खोज सकता था।

वह खडा हो गया।

जेकोफ ने काग़ज पर से नज़र उठाते हुए कहा, "मैं अभी समाप्त नही कर पाया हूँ जनाब। बडी सावधानी से लिख रहा हूँ।"

"मुझे दिखाओ, तुमने क्या लिखा है ?"

उसने कागज़ देख कर वापस देते हुए कहा, "बस यही काफी है। यदि दूसरे सतरी आये तो यह कह कर कि मैने सूची बना रखी है उनका समय मत नष्ट करना। उनका समय मूल्यवान है जैसे-जैसे वह बतलाते जाँय, करते जाना। क्या कोई आ रहा है ?"

खिडकी पर से लडकी ने कहा, "नही जनाब! क्या मैं बाहर जा कर देख आऊँ ?"

"नही! इसकी कोई आवश्यकता नही। अच्छा! सब से निकटवर्ती लिफ्ट कौन सी है ?"

"वह बाईं ओर से दो फर्लांग दूर है। अब............"

"हाँ! हाँ! मुझे बाहर जाने दो।"

जैसे ही मुखिया ने लिफ्ट मे पैर रखा, संतरियो का एक दल उस गली के मोड पर मुडा। मुखिया के हृदय की धडकन बढ गई। व्यवस्थित खोज आरम्भ हो गई, और अब वह शीघ्र ही उसे पकड लेगे।

एक मिनट बाद धडकता हृदय लिए मुखिया ने ऊपरी शहर मे कदम रखा। यहाँ पर वह कहाँ छिपेगा ? यहाँ न तो खम्भे ही होगे और न सीमेन्ट-मिश्रण का अधकार ही।

वह उस चमकते शहर मे एक काले धब्बे के समान लगेगा। वह सडक

पर दो मील दूर, तथा आकाश मे पाँच मील दूर से देखा जा सकता था। उसे ऐसा लग रहा था मानो हर कोई उसी को देख रहा है।

कोई भी सतरी दृष्टिगोचर नही हो रहा था। और महानुभाव तो उसकी ओर दृष्टिपात किए बिना ही आगे चल देते थे। एक सतरी निचले शहर मे तो आतक का विषय हो सकता था, पर यहाँ महानुभाव उसकी क्या परवाह करते। यही उसके बचाव का एकमात्र साधन था।

उसे ऊपरी शहर के भूगोल का धुधला-सा ज्ञान था। यही कही शहर का उद्यान था। सब से उत्तम तो यही रहता कि वह किसी से रास्ता पूछ लेता या फिर किसी ऊँची अट्टालिका पर चढ कर देख लेता। पहला तरीका बेकार था क्योकि किसी सतरी को राह पूछने की आवश्यकता ही न थी और दूसरे तरीके मे विपत्ति मे फँस जाने का भय था। किसी अट्टालिका के भीतर एक सतरी बडा अजीब लगेगा— बहुत ही अजीब।

यह सोच वह अपनी याद के सहारे ही उद्यान की ओर चल पडा और कुछ ही देर मे वहाँ पहुँच गया।

यह बगीचा एक सौ एकड मे बना हुआ था। यहाँ की सुन्दरता व हरियाली देखने योग्य थी। इसके विषय मे बडी-बडी किवदतियाँ फैली हुई थी। सार्क पर प्रसिद्ध था कि इस उद्यान मे हर समय एक प्रकार की शाति छाई रहती है और रात मे तात्रिक पूजा भी होती है। फ्लोरीना पर इसको वास्तविक से सौ गुना बडा और ऐश्वर्य मे सौ गुना ऐश्वर्य-शाली समझा जाता था।

वास्तविकता तो यही थी कि वह काफी सुहावना था और फ्लोरीना की शीतोष्ण जलवायु के कारण सदैव ही हरा-भरा रहता था। इसमे कही घास के मैदान थे तो कही पेडो के झुण्ड और कही कृत्रिम कंदराएँ भी बनी हुई थी। बीच मे एक छोटा-सा तालाब था जिसमे सुन्दर-सुन्दर मछलियाँ पडी हुई थी। रात को वर्षा आरम्भ होने तक वहाँ रग-बिरगा प्रकाश रहता और सध्या से उस समय तक खूब भीड़ रहती। वहाँ भाँति भाँति के नाच तथा त्रिदैशिक नाटक होते रहते और प्रत्येक मोड पर एक

न एक प्रेमी युगल दिखाई दे ही जाता था।

वास्तव मे टेरेन्स इससे पहले कभी भी उस उद्यान के अन्दर नही गया था। वहाँ की कृत्रिमता को देख कर उसकी तबियत मिचलाने लगी थी। उसे मालूम था कि यह जमीन, यह पेड, यह चट्टाने, यह पानी, सब एक निर्जीव सीमेट-मिश्रण पर बने हैं। इससे उसका मन और भी खीझ उठा। उसे काईट के लम्बे-चौडे खेत तथा दक्षिण मे फैली पहाडियाँ याद आने लगी, उसे इन विदेशियो से, जिन्होने उस असीम शोभा को छोड अपने लिये छोटे-छोटे खिलौने बना लिये थे, बडी घृणा हुई।

उस उपवन के टेढे-मेढे रास्तो मे वह घण्टो लक्ष्यहीन घूमता रहा। जो कार्य वह करना चाहता था उसे वह इस बगीचे मे ही कर सकता था। कदाचित यहाँ भी वह सफल न हो पाये पर और किसी स्थान मे तो सफलता मिलनी सर्वथा असभव ही थी।

वहाँ उसे किसी ने नही देखा, न उस पर किसी का ध्यान गया है। उद्यान के इन महानुभाव व महिलाओ से यदि पूछा जायगा कि क्या कल बगीचे मे उन्होने किसी सतरी को देखा था तो वह मुँह ताकते ही रह जायँगे। उनके लिये यह प्रश्न वैसा ही होगा जैसे किसी से पूछा जाय कि क्या कल तुमने पेड पर एक गौरय्या देखी थी।

उद्यान प्रतिदिन की भाँति ही सूना पडा था, अभी भीड के आने का समय नही हुआ था। उसे अपने मन का भय बढता-सा प्रतीत हुआ। वह दो बडी चट्टानो के बीच बनी सीढी से चढ कर दूसरी ओर, ऐसे गोलाकार गर्त मे जो चारो ओर कन्दराओ से घिरा हुआ था, उतर गया। यदि कोई युगल प्रेमी सयोगवश रात मे वहाँ रह जाय तो रात्रि वर्षा मे आश्रय देने के लिये यह कन्दराये बनाई गई थी। परन्तु प्रतिदिन इतने जोडे वहाँ रह जाते थे कि उनको संयोग की सूची मे रखना शायद ही उचित हो।

और फिर उसने, जिसे वह खोज रहा था, उसको देखा। एक मनुष्य! एक महानुभाव जो उतावली से इधर से उधर चक्कर लगा रहा था।

वह सिगरेट का अन्तिम कश ले रहा था, उसके बाद उसने उस बचे-खुचे टुकडे को फेंक दिया जो थोडी देर बाद बुझ गया। फिर उसने अपनी कलाई मे बँधी घडी की ओर देखा।

उस गर्त मे और कोई भी न था। इस स्थान का प्रयोग अधिकतर सध्या व रात्रि के समय ही होता था। यह प्रत्यक्ष था कि यह महानुभाव किसी की प्रतीक्षा कर रहा था। टेरेन्स ने चारो ओर देखा। उसके पीछे सीढियो पर भी कोई न था। अन्य सीढियाँ भी तो हो सकती है—शायद होगी भी—पर कोई चिंता नही—वह इस अवसर को हाथ से न जाने देगा।

वह उस महानुभाव की ओर बढा। महानुभाव ने उसकी ओर तब तक नही देखा जब तक उसने एकदम निकट जा कर यह न कहा, "क्षमा कीजियेगा!"

वैसे तो यह बडा आदर पूर्ण सम्बोधन था, परन्तु एक महानुभाव एक संतरी द्वारा इस प्रकार सम्बोधित होने का आदी नही था।

"क्या है?" उसने पूछा। टेरेन्स ने अपने स्वर के आदर व आग्रह के भाव मे तनिक भी अन्तर न आने दिया। उसके बोलते रहने मे ही उसका कल्याण था जिससे कि कम से कम आधे मिनिट तक उसका ध्यान बँटा रहे, उसने कहा, "सुनिये श्रीमान्! एक देसी हत्यारे की खोज··· · ···"

"क्या कह रहे हो तुम?"

"बस केवल एक क्षण और!"

और यह कह कर टेरेन्स ने अपना कोडा उठाया और महानुभाव के सिर पर दे मारा। वह वही ढेर हो गया।

मुखिया ने आजतक किसी महानुभाव पर हाथ नही उठाया था। उसे अपनी इस समय की दहशत और घबराहट पर स्वय ही आश्चर्य हो रहा था। उसने अपने आप को इतना दोषी तो कभी भी नही ठहराया था। यह सदियो की आदत का ही फल था शायद।

अब भी वहाँ कोई दिखलाई नही पड रहा था। उसने लाश को जल्दी से एक गुफा मे खीच लिया और पीछे तक घसीटता ले गया।

उसने जल्दी से फिर महानुभाव के कपडे उतारे जो अकड़ते हुए शरीर पर से बडी कठिनाई से उतरे। उसके बाद उसने अपनी गदी व पसीने से लथपथ सतरी-वर्दी को उतारा। पहले महानुभाव के अन्दर के कपडे पहने। जीवन मे पहली बार उसने काईट के कपडे को अपनी उँगलियो के अलावा बदन के और भागो से छुआ था।

फिर उसने ऊपर के कपडे पहने और सबके बाद सिर की टोपी। यह टोपी बालो को छिपाने के लिए अति आवश्यक थी। यद्यपि टोपी पहनने का रिवाज पुराना हो गया था फिर भी कुछ पुराने विचारो के लोग तो टोपी पहनते ही थे। सयोगवश या भाग्यवश यह महानुभाव भी उन्ही मे से थे अन्यथा उसका यह छद्मवेश बेकार ही रहता। वह बिना टोपी के अपने सुनहरे बाल किस प्रकार छिपाता और उनके कारण फौरन पकडा जाता, उसने टोपी को नीचे तक खीच अपने कान तक ढक लिए।

जो कुछ उसको करना था, वह कर चुका था। अब उसके लिए सतरी-हत्या ही अन्तिम अपराध न रह गया था, वह उससे भी भीषण अपराध कर चुका था—एक महानुभाव की हत्या।

उसने अपना विस्फोटक अन्तिम माप पर रख कर महानुभाव के मृत शरीर की ओर कर दिया और दस पल मे ही वहाँ केवल राख रह गई। इस प्रकार इस महानुभाव को पहचानना कठिन हो जायगा इससे पीछा करने वालो को कुछ देर तो लगेगी ही।

उसने सतरी की वर्दी को भी जला कर राख कर दिया और फिर राख मे से बटन व बकलस चुन लिए। इस प्रकार पीछा करने वालों का कार्य और भी कठिन हो जायगा। यह देर चाहे कुछ घण्टो की ही क्यो न हो पर थी अति आवश्यक। इन घण्टो मे तो वह कुछ का कुछ कर सकता था।

अब उसे शीघ्र ही वहाँ से खिसक जाना चाहिए, वह गुफा के द्वार

तक आया। उसने वायु को सूँघा। कोई विशेष गध न थी। थोडी-सी गध माँस जलने जैसी आ रही थी। वह भी शुद्ध हवा मे कुछ ही देर में विलीन हो जायगी।

वह सीढियो से नीचे उतर रहा था कि एक युवती उसके निकट से हो कर ऊपर आई। एक क्षण के लिए आदत के अनुसार उसने अपने नेत्र नीचे कर लिये। वह आखिर एक महिला थी, पर फिर शीघ्र ही उसने निगाह उठा कर देखा, वह युवती अत्यन्त सुन्दर व नवयौवना थी, साथ ही वह इतनी जल्दी मे थी मानो उसे देर हो रही हो।

उसने सोचा, वह इसे नही मिलेगा। इसे देर हो गई है वरना वह अपनी घडी न देखता होता। उसे वहाँ न पाकर वह यह भी सोच सकती है कि प्रतीक्षा करते-करते, थककर वह वापस लौट गया है। टेरेन्स शीघ्रता से आगे बढ़ने लगा। वह नही चाहता था कि उसका इस लडकी से फिर सामना हो।

अब वह उद्यान से बाहर निकल आया था और फिर लक्ष्यहीन की तरह घूमने लगा था। इस प्रकार आधा घण्टा और निकल गया।

क्या करे ? अब वह एक सतरी न होकर एक महानुभाव था। पर अब करे क्या ?

वह एक छोटे-से चौराहे पर रुक गया। इस चौराहे के बीच घास का मैदान था जिसमे फव्वारा चल रहा था। इसके पानी मे रसायन मिला दिया गया था जिससे पानी मे झाग निकल रहे थे और प्रकाश में विविध रगो मे चमक रहे थे।

वह रेलिंग के सहारे खडा हो गया, और धीरे-धीरे एक-एक करके वह बटन और वकलस पानी मे डाल दिये।

ऐसा करते समय उसे सीढियो पर चढती उस युवती का ध्यान आ रहा था। बेचारी ! कितनी अल्पवयस्क थी ! और फिर अपने निचले नगर का ध्यान आते ही उसका सारा पश्चाताप हवा हो गया।

वह बटनो से छुटकारा पा गया था, उसके हाथ अब खाली थे। धीरे-

धीरे उसने अपनी जेबे टटोली जैसे कुछ खोज रहा हो।

जेबो मे कोई विशेष वस्तु थी। चाबियाँ, कुछ सिक्के तथा परिचय कार्ड। हे सार्क! तो महानुभावो को भी परिचय-कार्ड रखना होता है पर उनको यह कार्ड प्रत्येक सतरी को तो नही दिखाना पडता होगा।

उसका नया नाम अब आलस्टेर डिमोन था। शायद उसे यह कार्ड किसी को दिखाना न पडे। ऊपरी शहर मे दस सहस्त्र पुरुष व नारियाँ थी। इतने लोगो के बीच किसी परचित व्यक्ति के मिलने की आशा तो कम थी, पर इस सयोग की उपेक्षा नही की जा सकती थी।

डिमोन की आयु २६ वर्ष थी। कन्दरा की घटना को याद करके टेरेन्स का मन परेशान होने लगा पर उसने उस भावना को दबा दिया। महानुभाव आखिर एक महानुभाव था—कितने ही २६ साल के फ्लोरीनी उनके हाथो से या उनके इशारो पर कुर्बान हो चुके है, और २६ वर्ष के ही क्यो? न जाने कितने ६ वर्ष के मासूम बच्चो को भी वे वेदी पर चढ़ा चुके है?

उस कार्ड पर डिमोन का पता भी लिखा था, पर टेरेन्स के लिये वह व्यर्थ ही था, उसे ऊपरी शहर के भूगोल का ज्ञान ही कितना था।

अरे! यह क्या?

यह एक ३ वर्ष के बच्चे का चित्र था। यह चित्र छद्म त्रिदैशिक मे बना था। जैसे-जैसे वह चित्र को उसके खोल मे से निकालता गया उसके रंग चमकीले होते गए और जैसे ही उसने उसको अन्दर रखा वह विलीन हो गये। यह या तो उसका पुत्र है या भतीजा। पर उद्यान की उस युवती को देखते हुए तो पुत्र होने की सम्भावना कम ही थी। पर पुत्र भी तो हो सकता है।

तो क्या उसका विवाह हो चुका था? क्या यह प्रेम एक अबाध प्रेम था? क्या ऐसी भेट दिन मे भी हो सकती है। क्यो नही—किसी-किसी स्थिति मे ऐसा भी तो हो सकता है।

टेरेन्स चाहता था कि ऐसा ही हो। यदि ऐसा था और वह युवती

किसी विवाहित पुरुष से भेंट करने आई थी तो वह शायद ही उसकी अनुपस्थिति की सूचना दे। वह यही सोचेगी कि वह अपनी पत्नी से पीछा न छुटा पाया होगा। और इस प्रकार उसे और भी समय मिल सकेगा।

नही। उसे और समय न मिल सकेगा। बच्चे आँखमिचौनी खेलते हुये भी तो उस जली लाश को देख सकते है, और फिर वह चीखते हुये वहाँ से भागेंगे। २४ घटो के अन्दर अवश्य ही कुछ न कुछ हो जायगा।

एक बार फिर उसने जेब मे रखी वस्तुएँ निकालनी आरम्भ की। एक यान चालक का लाइसेस था। उसने इस पर ध्यान न दिया। सार्की लोग अपना-अपना यान रखते थे और उसे स्वय चलाते भी थे। यह तो आजकल के सार्कियो का नवीनतम शौक था। और उसके बाद जेब मे से कुछ सार्की नोट निकले। हाँ! यह अवश्य उसके काम मे आ सकते थे।

उसे ध्यान आया कि उसने बेकर के यहाँ से निकलने के बाद से कुछ भी न खाया था। अब उसे एकदम से भूख का अनुभव होने लगा।

अचानक ही उसने यान लाइसेंस को देखना शुरू कर दिया। अब इसका क्या होगा? इसका स्वामी तो स्वर्ग सिधार चुका है। यह तो उसका ही यान था जो पोर्ट न० ६ के २६वे हैगर मे रखा था। तो ..

यह पोर्ट न० ६ कहाँ था, इस बात का उसे ज़रा भी ज्ञान न था। उसने अपना सिर रेलिंग के सहारे टिका लिया। अब क्या किया जाय? अब क्या किया जाय?

एक आवाज ने उसे चौका दिया।

"हैलो" किसी ने कहा "क्या आपकी तबियत खराब है?"

टेरेन्स ने मुँह ऊपर उठा कर देखा। वह एक अधेड आयु का महानुभाव था और एक बढिया लम्बी-सी सिगरेट पी रहा था। उसके चेहरे पर दया-भाव था जिसे देख टेरेन्स को बडा आश्चर्य हुआ। फिर उसे याद आया कि अब वह स्वय भी तो उन्ही मे से एक है। और अपने लोगो से तो महानुभाव भी मनुष्यता का ही व्यवहार करते होगे।

मुखिया ने कहा, "नहीं ! जरा दम ले रहा हूँ । मै घूमने निकला था फिर समय का ध्यान न रहा, मुझे देर भी हो गई है । "

ऐसा कह कर उसने एक थके हुये मनुष्य की भाँति हाथ हिलाया । वह सार्क के अधिक सम्पर्क मे रहने के कारण सार्की लहजे मे बोल सकता था, पर इस समय इस शक्ति की परीक्षा का अवसर नही था, क्योकि अधिक बोलने मे भेद खुलने का डर था ।

"अच्छा ! बिना स्कीटर के राह भूल गये है ? क्यो ठीक है न ?" मानो वह युवको की मूर्खता का आनद ले रहा हो ।

"हाँ स्कीटर नही है ।" टेरेन्स ने कहा ।

"तो मेरा ले लो" उसने तुरत कहा "वह बाहर ही खडा है । अपना कार्य समाप्त करके उसके कन्ट्रोल ठीक करके उसे वापस भेज देना । मुझे घटे भर उसकी जरूरत नही है ।"

टेरेन्स के लिये यह सार्की देन थी । स्कीटर एक अत्यन्त तीव्र गति वाहन था और सतरियो का वायु वाहन भी उसको नही पकड सकता था । इस योजना मे केवल एक ही कमी थी । उसको स्कीटर चलाना उतना ही आता था जितना कि हवा मे उडना ।

"यहाँ से सार्क तक । " उसे सार्की धन्यवाद की यह रीति मालूम थी "मैं अभी पैदल ही चलूँगा । पोर्ट नं० ९ कोई अधिक दूर तो नही है ।"

"हाँ वह अधिक दूर तो नही है ।" दूसरे मनुष्य ने विदा लेते हुये कहा ।

पर इससे टेरेन्स को कुछ भी पता न लग सका । अब उसने दूसरी तरह बाते आरम्भ की "काश कि मैं पोर्ट के थोडा और निकट होता । वैसे तो काईट मार्ग पर घूमना लाभप्रद ही है ।"

"काईट मार्ग का इससे क्या सम्बन्ध ?"

टेरेन्स को लगा जैसे वह उसको अजीब ढग से देख रहा हो फिर उसको ख्याल आया कि कही उसने कपडे तो गलत तरीके से नही पहन लिये, और उसने जल्दी से कहा, "मुझे दिशा भ्रम हो गया है । मैं चलते-

चलते राह भटक गया हूँ।" उसने अपने चारो ओर खोजती निगाहो से देखा।

"सुनो! इस समय तुम रेकेड रोड पर हो। अब तुम ट्रिफिस तक सीधे जाकर बाये मुड जाना, सीधे पोर्ट मे पहुँच जाओगे।" उसने उगली से सकेत करते हुये कहा।

टेरेन्स ने मुस्कराते हुये कहा, "आप ठीक कहते है! अब मुझे स्वप्न लोक छोड वास्तविक ससार मे आ जाना चाहिए । यहाँ से सार्क तक श्रीमान्।"

"मेरा स्कीटर ले सकते हो।"

"बडी कृपा है आपकी। लेकिन..."

टेरेन्स आगे को चल दिया—शीघ्रता से—अपना हाथ हिलाते हुये और वह महानुभाव उसकी ओर ताकता ही रह गया।

शायद कल जब गुफा से लाश बरामद होगी तो इस महानुभाव को इस भेट की याद आयेगी और वह मन ही मन सोचेगा, 'वह कुछ अजीब सा तो था, उसके बोलने का ढग भी कुछ असाधारण था और उसे दिशा का भी ज्ञान न था। मैं शपथ खाकर कह सकता हूँ कि उसने ट्रिफिस ऐवन्यू के बारे मे भी कभी नही सुना था।'

पर यह सब तो कल की बात है।

महानुभाव की बताई दिशा मे वह चल दिया और फिर उसे अगले चौक पर 'ट्रिफिस ऐवन्यू' लिखा दिखाई दिया। वह बाँई ओर मुड गया।

पोर्ट न० ६ इस समय वर्दी पहने युवा यान चालको से भरा था। वह लोग एक ऊँची टोपी तथा बिर्जिस पहने थे। टेरेन्स को बिना वर्दी के बहुत विचित्र-सा लग रहा था, परन्तु उसकी ओर किसी ने ध्यान भी न दिया। सारा वातावरण उन लोगो के स्वरो से गूँज रहा था जिसका एक भी शब्द उसकी समझ मे नही आ रहा था।

उसे २६वा कक्ष मिल तो गया पर कुछ समय तक तो उसमे घुसने का साहस तक वह न एकत्र कर पाया, और कुछ मिनट तक वह वैसे

का वैसे ही खडा रहा। वह नही चाहता था कि जिस समय वह अन्दर घुसे उस समय कोई भी महानुभाव वहाँ हो। निकटवर्ती यानो के स्वामी महानुभाव थोडा बहुत तो आलस्टेर डिमोन को जानते ही होगे। किसी अपरिचित को यान मे घुसते देख वह न जाने क्या सोचे।

अन्त मे जब कक्ष के आस-पास शान्ति छा गई तो वह कक्ष मे घुस गया। यान का अग्र भाग अपने हैंगर से कक्ष के चारों ओर की भूमि को ताकता-सा दिखाई दिया। वह उसकी ओर निगाह उठाकर देखने लगा।

अब वह क्या करे ?

वह पिछले १२ घटे मे तीन मनुष्यो की हत्या कर चुका था। वह मुखिया से सतरी और सतरी से महानुभाव तक पहुँच चुका है। वह निचले शहर से ऊँचे शहर मे और ऊँचे शहर से पोर्ट तक आ गया है। अब वह यथासम्भव एक यान का स्वामी है। एक सवारी जो उसे आसानी से नीहारिका की किसी भी दूसरी दुनियाँ के सरक्षण मे पहुँचा सकती है।

पर एक ही मुसीबत थी।

वह यान का चालन ही नही कर सकता था।

अब वह थक कर चूर होगया था। भूख के मारे उसका हाल बेहाल था। वह जितनी दूर आ सकता था आ गया था, अब और आगे न जा सकता था। वह अन्तराल के छोर तक पहुँच गया था, उसे पार करने का साधन उसके पास था पर वह उसका उपयोग न कर सकता था। कैसी थी यह भाग्य की विडम्बना।

अब तक सतरियो ने पता लगा ही लिया होगा कि वह निचले शहर मे नहीं है, और अब जैसे ही उनकी मोटी अक्ल मे यह घुसेगा कि एक फ्लोरीनी ऊपरी शहर मे जाने का साहस भी कर सकता है तो वह अपनी खोज यहाँ भी शुरू कर देंगे। फिर लाश का पता चलेगा और खोज की दूसरी दिशा आरम्भ होगी। तब वह छद्मवेशी महानुभाव की खोज आरम्भ कर देंगे।

वह यहाँ था। वह अन्तिम छोर तक पहुँच चुका था और अब वह पीछा करने वालो की प्रतीक्षा करने के अतिरिक्त कर भी क्या सकता था, अन्त मे वह खूंख्वार कुत्ते पकड ही लेगे।

३६ घटे पहले उसके जीवन की बागडोर स्वय उसके हाथ मे थी। अब बागडोर उसके हाथ से छिन चुकी थी और उसके साथ ही शायद उसका जीवन भी।

: ११ :

कप्तान

कप्तान रेसिटी अपने जीवन मे पहली बार ही अपने किसी यात्री को समझाने मे असफल रहे थे। वह यात्री यदि स्वय प्रमुख महानुभावो मे से भी कोई होता तो वह उससे भी सहयोग प्राप्त करने की आशा कर सकते थे। यह प्रमुख महानुभाव अपने-अपने महाद्वीप पर समस्त शक्ति के स्वामी होते है पर यान पर वह भी कप्तान की आज्ञा का समुचित पालन करते है।

परन्तु एक नारी की बात भिन्न है। वैसे तो सभी स्त्रियो का एक ही हाल है परन्तु जब वह स्त्री फाइफ के महानुभाव की कन्या हो तब तो ईश्वर ही मालिक है।

उन्होने कहा, "श्रीमतीजी ! आप स्वय ही सोचिए कि मैं एकांत मे आपकी भेट उन लोगो से कैसे करा सकता हूँ ?"

फाइफ की सेमिया ने कहा, "क्यो नही कप्तान ! क्या उनके पास शस्त्र है ?"

"जी ! नही तो ! पर बात यह नही है।"

"कोई भी देख सकता है कि वह दो भयभीत व्यक्तियो की जोडी मात्र है। वह तो स्वय ही भय के मारे मृत तुल्य हैं।"

"भयग्रस्त व्यक्ति कभी-कभी बडे भयकर हो जाते हैं, देवीजी ! वह समझ से कार्य करने मे असमर्थ हो जाते है।"

"तब फिर आपने उनको भयग्रस्त क्यो कर रखा है ?" जब वह क्रोध मे होती थी तो थोडा हकलाने लगती थी, "आपने उनके ऊपर तीन सिपाही विस्फोटक ले कर खडे कर रखे है। बेचारे ! सुनो कप्तान ! मैं इसको आसानी से नही भूलूँगी।"

"नही ! वह कभी नही भूलेगी" कप्तान ने सोचा और उसे लगा जैसे उसे सेमिया की बात माननी ही पडेगी।

"जैसे आपकी इच्छा ! पर क्या आप बतलाने की कृपा करेगी कि आप चाहती क्या है ?"

"अत्यत साधारण-सी बात है। मैं आपको पहले ही बतला चुकी हूँ कि मैं उनसे बाते करना चाहती हूँ। यदि आपके कथनानुसार वह लोग फ्लोरीनी है तो मुझे अपनी पुस्तक के लिए काफी मसाला मिल जायगा। इस समय तो शायद ही मै उनसे कुछ बाते कर पाऊँ क्योकि वह लोग अत्यत भयभीत हैं। यदि मैं उनसे अकेले मे बातें कर सकती तो बहुत अच्छा रहता। अकेले ! कप्तान क्या आप यह साधारण-सा शब्द भी नही समझ सकते। अकेले ! बिल्कुल अकेले।"

"और मैं आपके पिता को क्या उत्तर दूँगा, जब उन्हे यह पता लगेगा कि मैंने आपको दो घोर अपराधियो के सम्मुख अरक्षित ही जाने दिया।"

"घोर अपराधी ! हा ! हा ! हाय रे अन्तराल ! क्या कहने हैं ? दो भयभीत मूर्ख ! जो अपने ग्रह से भागने के लिए एक यान मे घुस जाते हैं पर जिनको इतनी भी समझ नही कि कम से कम सार्क जाने वाले यान पर तो न चढे। और फिर मेरे पिता को पता ही कैसे चलेगा ?"

"यदि उन्होने आप पर आक्रमण कर दिया तो उन्हे पता चल ही जायगा।"

"वह मुझ पर आक्रमण क्यो करेगे ? यह मेरी आज्ञा है कप्तान ।" उसने क्रोध मे मुट्ठी भीच कर चिल्लाते हुए कहा ।

कप्तान रेसिटी ने कहा, "अच्छा ! तो फिर यह रही रानीजी। भेट के समय मै भी उपस्थित रहूँगा । मै सविस्फोट तीन सिपाही न हो कर बिना विस्फोट का निरीह प्राणी हूँगा । नही तो ·· ।" उन्होने पूरे आत्मविश्वास से कहा "मैं आपकी आज्ञा का पालन करने मे असमर्थ हूँ ।"

"अच्छा तो फिर ऐसा ही सही । पर यदि आपकी उपस्थिति के कारण मै उनसे ठीक प्रकार बात न कर पाई, तो कप्तान मैं भी देख लूँगी कि आगे से आप किसी यान का कैसे चालन करते है ।"

सेमिया के कमरे मे पदार्पण करते ही वलोना ने रिक के नेत्र अपने हाथो से बद कर दिए ।

"ए ! लडकी क्या करती हो !" सेमिया क्रोधपूर्वक चिल्लाई । उसे इतना भी याद न रहा कि वह उनसे सरल रूप से बाते करने आई थी न कि क्रोध से ।

वलोना का स्वर बडी कठिनाई से निकला। उसने कहा, "इसे बिल्कुल अक्ल नही है श्रीमतीजी ! इसे यह भी पता न चलेगा कि आप एक सम्मानित महिला हैं । वह शायद आपकी ओर देखने लगता, चाहे, मेरा मतलब है, उसका अनुचित इरादा न होता श्रीमतीजी ।"

"हे सार्क !" सेमिया ने कहा, "उसे देखने दो न ?" फिर उसने कप्तान से पूछा, "क्या इन लोगो को यहाँ ही रखा जायगा ? कप्तान !"

"श्रीमतीजी ! तो क्या आप इनके लिये राज्यकक्ष की व्यवस्था करायेगी ?" कप्तान ने उत्तर दिया ।

"परन्तु एक अच्छे कमरे की व्यवस्था तो कर सकते हैं आप ! जिसमे इतना अधेरा न हो ।"

"यह आपके लिए ही अधकार युक्त है श्रीमतीजी ! इनके लिये—

इनके लिये तो यह एक महल है। यहाँ पानी का नल भी है। उनसे पूछ देखिये कि उनकी फ्लोरीनी झोपडियो मे क्या कही भी ऐसी व्यवस्था है।"

"अच्छा ! इन सिपाहियो को तो बरखास्त कर दीजिए।"

कप्तान ने उन लोगो को सकेत दिया। वह घूमे और धीरे-धीरे कमरे से बाहर निकल गये।

कप्तान ने टूटवाँ एलमोनियम की कुर्सी जिसे वह अपने साथ लाये थे वहाँ रख दी और सेमिया उस पर विराज गई।

कप्तान ने वलोना तथा रिक से कडक कर कहा, "खडे हो जाओ।"

सेमिया ने फौरन उन्हे टोकते हुये कहा, "नही। उन्हे बैठे ही रहने दें। और आप बीच मे मत बोलिये कप्तान !"

फिर वह वलोना की ओर मुड कर बोली, "अच्छा तो तुम एक फ्लोरीनी लडकी हो।"

वलोना ने अपना सिर हिलाते हुए कहा, "नही हम लोग वोटेक्स से आये हैं।"

"तुम्हे डरने को कोई आवश्यकता नही। यदि तुम लोग फ्लोरीना से ही आए तो भी क्या हानि है। तुमसे कोई कुछ न कहेगा !"

"हम लोग वोटेक्स के ही है।"

"क्या तुम्हे नही मालूम कि तुम पहले ही लगभग स्वीकार कर चुकी हो कि तुम फ्लोरीना की हो। तुमने इस लडके की आँखे क्यो बन्द की थी ? बताओ तो।"

"उसे एक महिला की ओर आँखे उठा कर देखने की आज्ञा नही है।"

"यद्यपि वह वोटेक्स का है। तो भी ?"

वलोना इस बार चुप ही रही।

सेमिया ने उसे कुछ देर सोचने दिया। फिर मित्रतापूर्वक मुस्करा कर बोली "केवल फ्लोरीनियो को ही महिलाओ की ओर आँखें उठा कर देखना वर्जित है। इस प्रकार तुम पहले ही स्वीकार कर चुकी हो कि तुम फ्लोरीना की हो।"

वलोना एकदम बोली, "पर यह नही है ।"

"और तुम ?"

"जी हाँ । मैं फ्लोरीना की-ही हूँ । परन्तु यह नही है । इसको कुछ मत कहियेगा । यह सचमुच फ्लोरीना का नही है । यह एक दिन राह मे पडा मिला था । मुझे यह नही मालूम कि यह कहाँ का है, परन्तु यह अवश्य है कि यह फ्लोरीना का नही है ।" वह जल्दी-जल्दी बोलती गई ।

सेमिया उसकी ओर आश्चर्यचकित सी देखती रह गई । "अच्छा । फिर मैं उसी से बाते कर लूँगी । ए ! छोकरे ! तुम्हारा क्या नाम है ?" उसने पूछा ।

रिक उसे निर्निमेष नेत्रो से देख रहा था । क्या सब महिलाये इसी तरह की होती है । नन्ही और प्यारी-सी । इसके शरीर से कैसी अच्छी सुगन्ध आ रही है । वह प्रसन्न था कि उसे उसकी ओर देख सकने की आज्ञा मिल गई है । सेमिया ने फिर कहा, "ए छोकरे ! तुम्हारा क्या नाम है ?"

रिक मे अचानक जीवन का सचार हो उठा । परन्तु बोलते समय वह फिर भी लडखडा गया ।

"रिक !"उसने कहा । फिर उसे याद आया कि यह तो उसका नाम नहीं है और उसने फिर कहा, "मैं सोचता हूँ, शायद रिक ही है ।"

"क्या तुमको नही मालूम ?"

वलोना घबरा उठी । उसने उत्तर देने का प्रयत्न किया, पर सेमिया ने उसको रोक दिया ।

रिक ने सिर हिलाते हुये कहा, "जी नही ! मुझे नही मालूम ।"

"क्या तुम फ्लोरीनी हो ?"

रिक इस बात का निश्चयपूर्वक उत्तर दे सकता था । उसने कहा, "मैं एक यान पर था, फिर न जाने कैसे यहाँ आ गया ।"

वह सेमिया पर से आँख नही उठा पा रहा था, परन्तु उसके साथ साथ उसे एक यान भी दिखाई दे रहा था । एक छोटा-सा जाना-पहचाना

घर की तरह।

उसने कहा, "मैं एक यान मे सार्क पर आया था और उससे पहले एक ग्रह पर था।"

"कौन से ग्रह पर?"

ऐसा मालूम होता था मानो उसके विचार बडी कठिनाई से उसके मस्तिष्क की अपर्याप्त नलियो मे से ठेल-ठेल कर आगे बढ रहे हो। फिर रिक को याद आया और वह उस शब्द को याद कर बडा प्रसन्न हुआ। वह प्यारा-सा शब्द जिसको वह अब तक भूले बैठा था।

"पृथ्वी! मैं पृथ्वी से आया हूँ।"

"पृथ्वी?"

रिक ने सिर हिला कर कहा, हाँ।

सेमिया ने कप्तान की ओर मुँह करके कहा, "यह पृथ्वी कहाँ पर है?"

कप्तान रेसिटी ने मुस्कुरा कर कहा, "मैंने तो नाम भी नही सुना। इस छोकरे की सारी बातो को सच न समझ लेना श्रीमतीजी। एक फ्लोरीनी प्रत्येक साँस मे झूठ बोलता है। झूठ उसकी नस-नस मे भर जाता है। जो कुछ उसके मन मे आता है बक देता है।"

"पर यह एक फ्लोरीनी के समान तो नही बोल रहा है।" फिर रिक से पूछा, "यह पृथ्वी कहाँ है रिक?"

"मैं......" उसने कुछ देर सर पर हाथ रखकर सोचा, और फिर कहा, "वह साईरस खड मे है।" यह उसने इस प्रकार कहा मानो स्वयं से ही प्रश्न कर रहा हो।

सेमिया ने कप्तान से पूछा, "साईरस तो है, है न कप्तान?"

"जी हाँ! बडा आश्चर्य है। उसकी यह बात तो ठीक है। परन्तु इससे पृथ्वी की वास्तविकता तो नही सिद्ध होती।"

रिक ने पूरे जोर से कहा, "परन्तु वह विद्यमान है श्रीमान्। मुझे याद आ रहा है। मैं आपको बतलाता हूँ। इतने दिनो तक मुझे कुछ भी

याद नही था, और अब मैं गलत नही हो सकता—कभी नही !"

उसने मुडकर वलोना का हाथ पकडकर कहा, "वलोना उनको बतलाओ न, मैं पृथ्वी से आया हूँ। सचमुच पृथ्वी से आया हूँ।"

वलोना चिन्तित हो उठी। उसने कहा, "श्रीमतीजी ! यह हमे एक दिन पडा मिला था। इसका दिमाग एकदम बेकार था, यह स्वय न कपडे पहन सकता था—न चल सकता था और न बोल ही सकता था। मानो इसके दिमाग था ही नही। अब धीरे-धीरे इमे बाते याद आ रही है। अभी तक तो जो कुछ इसे याद आया है सब ठीक ही है।" उसने डरते-डरते एक क्षणिक दृष्टि उदामीन-से कप्तान की ओर डाली और कहा, "यह सचमुच पृथ्वी का ही वासी हो सकता है महानुभावजी, मैं आपकी बात काटना नही चाहती।"

यह अंतिम वाक्य उसी समय कहा जाता था जिस समय कोई अपने से बडों की बाते काटता था।

कप्तान रेसिटी बडबडाया, "इस कहानी से तो कुछ भी सिद्ध नहीं होता। आने को तो वह सार्क के गर्भ से भी आ सकता है श्रीमतीजी।"

"हो सकता है। पर यह सब कुछ बड़ा ही आश्चर्यजनक है।" सेमिया ने नारी सुलभ एक रोचक कथानक की आशा करते हुए मन मे कुछ निश्चय किया और पूछा, "ऐ ! छोकरी ! जब वह तुमको मिला था तो इतना असहाय क्यो था ? कुछ मालूम है ? क्या वह आहत दशा मे था ?"

वलोना चुप रही। वह इधर-उधर देखने लगी। पहले उसने रिक की ओर देखा जो अपनी उँगलियों से अपने बालो को खीच रहा था, फिर कप्तान की ओर देखा जो झूठ-मूठ मुस्कुरा रहा था और अन्त मे सेमिया की ओर देखा जो उत्तर की प्रतीक्षा कर रही थी।

"उत्तर दो ! ऐ लडकी !" सेमिया ने कहा।

वलोना कठिनाई से निश्चय कर पा रही थी। पर इस समय कोई भी झूठ इस सत्य का स्थान नही ले सकता था। यह सोचकर उसने कहा,

"एक बार एक डाक्टर ने उसको देखा था और कहा था कि मेरे रिक पर मस्तिष्क-बेधन यन्त्र का प्रयोग हुआ है।"

"मस्तिष्क-बेधन!" सेमिया का मन घृणा से भर उठा। उसने अपनी कुर्सी पीछे खिसका ली। कुर्सी ने धातु के फर्श पर एक अजीब-सी ध्वनि की, "तुम्हारा मतलब है यह मनोविकृत था?"

"मुझे नही मालूम उसका क्या अर्थ है श्रीमतीजी।" वलोना ने नम्रतापूर्वक उत्तर दिया।

"श्रीमतीजी! जैसा आप सोच रही है वैसा नही है।" कप्तान ने उसी समय कहा, "यह आदिवासी मनोविकृत नही होते। उनकी आवश्यकताएँ अत्यन्त साधारण होती है, मैंने तो अपने जीवन काल में किसी भी आदिवासी को मनोविकृत होते नही देखा।"

"परन्तु फिर · "

"बिल्कुल साधारण-सी बात है महामान्या! यदि हम इस लडकी की इस बेतुकी-सी कहानी पर विश्वास करते है तो यह मानना पडेगा कि वह लड़का अपराधी रहा होगा, जो शायद मनोविकार का ही दूसरा रूप है। यदि ऐसा है तो यह मस्तिष्क-बेधन किसी नौसिखिये ने ही किया होगा जो कि आदिवासियो पर अभ्यास करते है। फिर यह बेचारा मृत-तुल्य किसी अज्ञात स्थान पर छोड दिया गया होगा, जिससे किसी को कुछ पता न लग सके और सजा से बचे रहे।"

"परन्तु उस मनुष्य के पास उस यन्त्र का होना तो अनिवार्य है" सेमिया ने कहा, "कही आदिवासी भी उसका प्रयोग कर सकते हैं?"

"शायद नही! पर किसी अधिकृत डाक्टर से यह भी तो आशा नही की जा सकती कि वह इतनी मूर्खता से इसका प्रयोग करेगा। एक बात दूसरी को काटती है। इससे यह कहानी सरासर झूठी व मनगढन्त मालूम होती है। यदि आप मेरी बात मानो तो इन लोगो को हमारे ऊपर छोड दे। इनसे कुछ भी आशा करना बेकार है।"

"शायद आप ठीक ही कह रहे हैं" सेमिया ने झिझकते हुए कहा।

वह उठी, उसने अविश्वास से रिक की ओर देखा। कप्तान उसके पीछे खडा हो गया। उसने कुर्सी उठाकर झटके से बन्द कर दी।

रिक भी कूद कर खडा हो गया, "रुकिये !" उसने कहा, "यदि आप आज्ञा दे श्रीमतीजी" कप्तान ने दरवाजा खोलते हुए कहा, "मेरे कर्मचारी इनको ठीक कर लेगे।"

सेमिया दहलीज पर रुक गई "वह लोग उसको कोई कष्ट तो न देगे ?" उसने पूछा।

"मेरे विचार मे तो यह लोग आसानी से ही चुप हो जायेगे और हमे जरा भी बल प्रयोग की आवश्यकता न होगी।" कप्तान ने उत्तर दिया।

"श्रीमतीजी ! श्रीमतीजी !" रिक ने कहा, "मैं सिद्ध कर सकता हूँ कि मैं पृथ्वी का निवासी हूँ।"

सेमिया ने एक क्षण सोचने के बाद कहा, "चलो इसकी बात सुन ही ले तो क्या हर्ज है ?"

कप्तान ने रुष्ट होकर सहमति प्रकट कर दी। वह वापस लौटी—परन्तु अधिक अन्दर नही—वही द्वार पर ही खडी रही।

याद करने की चेष्टा मे रिक का चेहरा लाल हो गया था तथा होठो पर एक विशेष प्रकार की मुस्कराहट आ गई थी। उसने कहा, "मुझे पृथ्वी के विषय मे याद आ रहा है। वह रेडियो सक्रिय थी। मुझे उसके वर्जित भाग तथा रात्रि का नीला आकाश अच्छी तरह याद आ रहा है। वहाँ की धरती चमकती थी और उस पर कुछ भी पैदा नही होता था। बस केवल थोडे से स्थान ही ऐसे थे जहाँ मनुष्य रह सकते थे, इसी कारण मैं अन्तराल विशेषज्ञ बन गया था। इसी कारण मुझे सारा समय अन्तराल मे रहना बुरा नही लगता था। मेरी दुनिया एक उजडा हुआ ससार है।"

सेमिया ने कंधे हिलाते हुए कहा, "चलो कप्तान ! यह तो बकवास ही कर रहा है।"

परन्तु इस बार कप्तान रेसिटी मुँह बाये खड़े रह गये थे, "एक रेडियो सक्रिय ससार !"

सेमिया ने कहा, "तो फिर क्या कोई ऐसा ससार है ?"

"जी हाँ" फिर आश्चर्यचकित हो कर कहा, "यह सब इसने कहाँ से सुन लिया !"

"किसी रेडियो सक्रिय संसार पर जीवन किस प्रकार मिल सकता है ?" सेमिया ने सदिग्ध भाव से पूछा।

"परन्तु एक ऐसा ससार है और वह है भी साईरस खड मे। मुझे उसका नाम याद नही। पृथ्वी भी हो सकता है।"

"जी हाँ ! पृथ्वी ही है।" रिक ने गर्व तथा आत्मविश्वास के साथ कहा, "यह नीहारिका का सब से प्राचीन ग्रह है। यह वह ग्रह है जिस पर मनुष्य जाति का जन्म हुआ था।"

कप्तान ने धीमे स्वर मे कहा, "हाँ ! है तो ऐसा ही।"

सेमिया का सिर चकरा रहा था, "आपका मतलब है कि मनुष्य जाति का प्रारम्भ इस पृथ्वी से ही हुआ था।"

"नही ! नही" कप्तान ने अन्यमयस्क भाव से कहा, "यह तो एक किंवदती है। पर इसी प्रसंग मे मैंने रेडियो सक्रिय ससार की चर्चा सुनी थी। यह ससार मनुष्य का आदि ग्रह होने का दावा करता है।"

"मुझे नही मालूम था कि हमारा कोई आदि ग्रह भी होना चाहिए।"

"हम लोग कही से तो आरम्भ हुए होगे श्रीमतीजी ! पर इसका ज्ञान कदाचित ही किसी को होगा।"

फिर एकदम मानो कुछ निश्चय करके वह रिक के निकट गया और पूछा, "और तुम्हे क्या याद आ रहा है ?"

वह 'छोकरे' शब्द का प्रयोग करने जा रहा पर फिर उसने अपने आप को रोक लिया था।

"अधिकतर यान !" रिक ने उत्तर दिया, "या फिर अन्तराल विश्लेषण।"

सेमिया भी कप्तान के निकट आ गई थी। वह दोनो रिक के सम्मुख खडे थे। सेमिया मे फिर से उत्कण्ठा जागृत हो रही थी, "फिर तो यह सब सत्य है, परन्तु इसका मस्तिष्क-बेधन फिर क्यो हुआ ?" उसने कहा।

"मस्तिष्क-बेधन !" कप्तान रेसिटी ने कुछ सोचते हुए कहा।

"चलो इसी से पूछे। ऐ ! चाहे तुम आदिवासी हो चाहे विदेशी, पर यह तो बतलाओ कि तुम्हारा मस्तिष्क-बेधन क्यो हुआ था ?"

रिक ने उत्तर दिया, "आप सभी लोग ऐसा कहते हैं, यहाँ तक कि लोना भी। पर मैं इस शब्द का अर्थ नही जानता।"

"तुम्हारी स्मरण शक्ति कब से खराब हो गई थी ?"

"मुझे कुछ भी याद नही।" उसने कहना आरम्भ किया, "मैं एक यान पर था।"

"यह हमे मालूम है आगे बोलो।"

सेमिया ने कहा, "बेकार बकवास करने से क्या लाभ कप्तान ! तुम तो बेचारे का रहा-सहा दिमाग भी खराब कर दोगे।"

रिक पिछली बाते याद करने मे ही व्यस्त था। उसके पास किसी भी भावना को अनुभव करने का समय नही था। उसे स्वयं भी बडा अचम्भा हुआ जब उसके मुँह से एकदम निकला, "मुझे उनसे डर नही लग रहा है। मै तो याद करने का प्रयत्न कर रहा हूँ ! कुछ भयकर सकट था, मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ। फ्लोरीना पर बड़ी भारी विपदा आने वाली थी, परन्तु विस्तारपूर्वक मुझे उस विषय मे कुछ भी याद नही आ रहा है।"

"सारे ग्रह पर विपदा ?" सेमिया ने एक दृष्टि कप्तान पर डालते हुए कहा।

"जी हाँ ! वह सकट लहरो से था।"

"कौन सी लहरें ?" कप्तान ने पूछा।

"अन्तराल की लहरें।"

कप्तान ने हाथ हिलाते हुए कहा, "यह तो पागलपन है।"

'नही ! नही ! उसे बोलने दो।" सेमिया ने कहा। अब विश्वास की लहर फिर से सेमिया की ओर बह आई थी। उसके होठ खुले थे, नेत्र चमक रहे थे तथा गालों के गढ्ढे उसके मुस्कराने से और भी सुन्दर हो गये थे।

"यह अन्तराल की लहरे क्या होती है?"

"ओह ! यह विभिन्न प्रकार के तत्व होते हैं?" उसने लापरवाही से कहा। वह इस बात को एक बार समझा चुका और अब फिर से उनको नही दोहराना चाहता था।

जैसे-जैसे, जिस अव्यवस्थित ढग से बातें उसके दिमाग मे आती गई वह बोलता गया, "मैंने सार्क के स्थानीन कार्यालय मे अपनी सूचना भेजी थी। यह मुझे ठीक-ठीक याद है। मुझे सब कार्य सावधानी से करना था। यह सकट फ्लोरीना से आगे भी था। जी हाँ फ्लोरीना से आगे यह संकट आकाश गगा के समान लम्बा चौडा था। ज़रा-सी भी असावधानी से सारा कार्य बिगड सकता था। अतएव बडी सतर्कता की आवश्यकता थी।"

रिक की मानसिक दशा इस समय ऐसी थी मानो जो लोग उसके सामने खड़े हैं, उनके अस्तित्व की ओर उसका ध्यान ही न हो—मानो वह अतीत मे विचरण कर रहा हो जिसका पर्दा धीरे-धीरे ऊपर उठ रहा था। वलोना ने उसके कधे पर सहानुभूति-भरा हाथ रख कहा, "बस, करो" पर रिक ने उसकी ओर कोई ध्यान न दिया।

उसने फिर कहा, "पता नही, किसी प्रकार मेरी सूचना, सार्क के किसी अधिकारी द्वारा बीच ही मे रोक ली गई। यह एक भूल ही थी, पर पता नही कैसे हो गई।"

"मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ कि मैंने वह सूचना ब्यूरो की विशेष विद्युत लहर पर ही दी थी। क्या आपके विचार मे सब-ईथर को ट्रैप किया जा सकता है?" इस समय वह इस 'सब-ईथर' शब्द पर भी

चकित नही हुआ था जो इतनी सरलता से उसके मस्तिष्क मे आ गया था।

कदाचित वह उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा था। पर उसकी आँखें अब भी खोई-खोई सी ही थी, "खैर ! किन्तु जब मैं सार्क पर उतरा तो वह लोग मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे।"

फिर वह रुक गया। इस बार काफी देर चुप रहा। कप्तान ने भी उस चुप्पी को तोडने का प्रयत्न न किया। वह भी कुछ सोच रहे थे।

परन्तु सेमिया ने कहा, "तुम्हारी प्रतीक्षा कौन कर रहा था ? कौन था वह ?"

रिक ने कहा, "मुझे...... मुझे नही मालूम। कुछ याद ही नही आ रहा। इतना जरूर है कि ब्यूरो का कर्मचारी नही था। वह कोई सार्क का ही निवासी था। मैंने उससे बाते की थी इतना तो याद है। उसे इस सकट के विषय मे ज्ञात था। इस विषय मे उसने बाते भी की थी, यह मै पूर्ण विश्वास से कह सकता हूँ कि उसने बाते की थी। हम लोग एक मेज के दोनो ओर बैठे हुये थे। मुझे मेज की याद है। वह मेरे सामने बैठा था, यह अन्तराल की भाँति साफ है। हम लोग काफी देर तक बाते करते रहे थे। मुझे ऐसा याद पडता है जैसे मै पूरी बाते उसको नही बतलाना चाह रहा था। मैं अपने कार्यालय से पहले बाते करना चाहता था। और फिर उसने.. ... "

"हाँ फिर ?" सेमिया ने बढावा दिया।

"फिर उसने कुछ कर दिया। उसने... .. और मुझे कुछ भी याद नही आ रहा ...मुझे कुछ भी याद नही आ रहा।"

वह एकदम चीख उठा और फिर शान्त हो गया। उस शान्ति की चरम सीमा को, कप्तान के कलाई-सम्भाषण-यन्त्र की घूं घू ने ही तोड़ा।

कप्तान ने कहा "क्या है ?"

उत्तर में जो आवाज आई वह आदरपूर्वक बोल रही थी, "सार्क से कप्तान के लिये समाचार है और यह प्रार्थना की गई है कि वह स्वयं

इस सूचना को लें।"

"अच्छा ! मैं अभी सब-ईथर पर आता हूँ।"

उन्होने सेमिया की ओर मुड कर कहा, "श्रीमतीजी ! क्या मैं याद दिला सकता हूँ कि भोजन का समय होगया ?"

उन्होने देखा कि सेमिया भूख न होने का बहाना करने वाली है जिससे कि वह थोडी देर और वहाँ रह सके। उन्होने अब कूटनीति का प्रयोग करते हुये कहा, "इन लोगो के भोजन का भी तो समय होगया है।"

सेमिया इस तर्क के विरुद्ध क्या कह सकती थी।

"मै उससे फिर बाते करूँगी कप्तान !"

कप्तान ने सिर झुका लिया। इसमे सहमति थी अथवा नही, यह कौन कह सकता है।

फाइफ की सेमिया को रोमाँच हो आया था। उसका फ्लोरीना का अध्ययन उसके मानस के कुछ भागो को तृप्त करता था। परन्तु इस मस्तिष्क बेधित मानव का रहस्य तो उसके अतरतम को बीध रहा था। उसका कौतूहल पूर्ण रूप से जागृत हो चुका था।

क्या रहस्य था ?

इस समय तीन बाते सेमिया को आकर्षित कर रही थीं। परन्तु सबसे स्वाभाविक प्रश्न कि "यह कहानी कपोल कल्पित और सत्य से बहुत परे हो सकती है, उसके भावुक मन मे कही भी कोई स्थान न था। इन बातो को कपोल कल्पित मान लेने से ही सारे रहस्य का सत्यानाश हो जाता था और सेमिया इसके लिये तैयार नही थी। फिर इस सबको सच तो मानना ही था।

वह तीन प्रश्न इस प्रकार थे·

१. वह कौन सा संकट है जो फ्लोरीना—फ्लोरीना ही नही वरन् सारी नीहारिका पर आने वाला है ?

२ इस मनुष्य का मस्तिष्क-बेधन करने वाला कौन था ?"

३. और उसने ऐसा क्यो किया ?

उसने मन ही मन इसका रहस्योद्घाटन करने का पूर्ण निश्चय कर लिया। वैसे तो प्रत्येक विनीत से विनीत मनुष्य भी अपने आप को थोडा बहुत जासूस समझता ही है। फिर सेमिया से विनीत भाव तो कोसो दूर था। वह तो अपने आप को पूर्णरुपेण गुप्तचर ही समझ बैठी थी। अत: भोजन समाप्त करते ही वह रिक के कमरे की ओर चल दी।

उसने प्रहरी से कहा, "द्वार खोलो।"

वह नाविक शात भाव से आदर पूर्वक सर उठाये सीधा खडा रहा। उसने कहा, "महामान्या धृष्टता क्षमा हो। द्वार नही खुल सकता।"

सेमिया क्रोध से लाल हो उठी," तुम्हारा इतना साहस ! यदि तुरत ही दरवाजा नही खुल जाता तो तुम्हारी कप्तान से शिकायत होगी।"

"महामान्या की आज्ञा शिरोधार्य। पर यह द्वार नही खुल सकता। कप्तान की यही आज्ञा है।"

सेमिया ने भभकते हुए कप्तान के कमरे मे प्रवेश किया। मानो उसके साठो इचो मे एक बवडर उठ खडा हुआ हो।

"कप्तान !"

"जी श्रीमतीजी !"

"क्या आपने पृथ्वी-पुत्र व उस आदिवासी औरत को मुझसे दूर रखने की आज्ञा दी है ?"

"जी श्रीमतीजी ! मेरे विचार से तो यह निश्चय हो चुका था कि आप मेरे सम्मुख ही उनसे मिलेगी !"

"खाने से पहले ? अवश्य आप स्वय ही देख चुके है, कि वह कितने निरीह हैं।"

"जी हाँ ! वह निरीह प्रतीत तो हुये थे।"

"तो फिर, मैं आपको आज्ञा देती हूँ कि आप मेरे साथ उनके कमरे मे चले।"

"यह नही हो सकता श्रीमतीजी ! स्थिति बदल चुकी है।"

"किस प्रकार ?"

"सार्क पर उचित अधिकारियो द्वारा उनसे प्रश्न किये जायेंगे और उस समय तक यदि उनको अकेला ही छोड दिया जाय तो ठीक रहेगा।"

सेमिया का मुँह लटक गया पर तुरन्त ही उसने अपने आप को सम्भाल कर कहा, "आप उनको 'फ्लोरीना विद्रोही' ब्यूरो के सुपुर्द तो नही करेंगे ?"

कप्तान ने समयानुकूल उत्तर दिया, "मूलत तो हमारा यही विचार था । वह बिना आज्ञा अपना गाँव यहाँ तक कि अपना ग्रह भी छोड आये है और दूसरे बिना आज्ञा उन्होने सार्की यान मे यात्रा करने का साहस किया है ।"

"यह दूसरी बात तो वास्तव मे सख्त ग़लती थी।"

"क्या सचमुच ?" कप्तान ने ताना मारा ।

"पर पिछली भेंट से पहले भी तो आपको उनके यह सारे अपराध विदित थे ?"

"परन्तु भेट के समय ही तो मैंने तथाकथित पृथ्वी-पुत्र की बातें सुनी हैं ।"

"तथाकथित ! आपने स्वय ही तो कहा कि पृथ्वी नीहारिका का एक ग्रह है ।"

"मैंने कहा था कि कदाचित है। परन्तु श्रीमतीजी क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आप इनके साथ क्या व्यवहार करना चाहेगी ?"

"मेरे विचार मे पृथ्वी-पुत्र की कहानी की पूरी खोज होनी ही चाहिए। वह फ्लोरीना-संकट की बात करता है, और सार्क पर किसी ने इस सूचना को उचित अधिकारियो से दूर रखने का प्रयत्न किया है । मैं तो समझती हूँ कि यह समस्या मेरे पिता के सम्मुख जानी चाहिए। उचित समय आने पर मैं स्वय ही इनको पिताजी के पास ले जाऊँगी !"

कप्तान ने कहा, "आह हा ! क्या ही बढिया योजना है !"

"कप्तान ! क्या आप व्यग्य कस रहे है !"

कप्तान उत्तेजित हो कर बोला, "क्षमा करना श्रीमतीजी ! मैं

अपराधियो के विषय मे कह रहा था। क्या मुझे विस्तार पूर्वक कुछ कहने की आज्ञा मिल सकती है ?"

"मैं आपके इस 'कुछ' का तात्पर्य नही समझी" सेमिया ने क्रोधित हो कहा "पर आप कह सकते है !"

"धन्यवाद ! श्रीमतीजी ! प्रथम तो आप फ्लोरीना पर हुए उपद्रव की अवहेलना नही कर सकती !"

"कौन-सा उपद्रव ?"

"आप पुस्तकालय काड को तो नही भूली होगी !"

"एक सतरी की हत्या हो गई थी। यही न ? आप भी कप्तान..."

"आज प्रात भी एक सतरी तथा एक आदिवासी की हत्या और हो गई है ! आदिवासियो के लिए एक सतरी की हत्या कर देना कोई साधारण बात नही है, और यहाँ कोई दो-दो सतरियो की हत्या कर चुका है और अभी भी फरार है ! क्या वह अकेला है—क्या यह केवल दुर्घटनाये है या यह किसी सावधानी पूर्वक बनाई गई योजना का भाग है !"

"स्पष्ट है कि आप अन्तिम बात पर विश्वास करते है !"

"जी हाँ ! यह ठीक ही है ! इस हत्यारे के दो साथी और है और उनका विवरण हमारे इन दो बदियो से बहुत कुछ मिलता-जुलता है !"

"आपने पहिले तो ऐसा नही बतलाया था !"

"रानी ! मैं आपको भयभीत नही करना चाहता था, आपको स्मरण होगा कि मैं बराबर कहता आ रहा हूँ कि यह लोग भयकर हो सकते हैं !"

"अच्छा ! तो फिर ? इससे निष्कर्ष क्या निकलता है ?"

"फ्लोरीना की हत्याये यदि बाह्य दिखावा ही हो, जिससे कि संतरियो का ध्यान इस ओर लगा रहे और इस बीच यह दोनो भाग कर हमारे यान पर चढ जाँय।"

"यह तो बेवकूफी जैसी बात लगती है।"

"क्या सचमुच ही यह मूर्खता है ? यह फ्लोरीना से भाग क्यो रहे हैं यह तो हमने उनसे पूछा ही नही। मान लीजिये कि वह सतिरयो से डर कर भाग रहे है,इसी की अत्यधिक सम्भावना भी है तो क्या वह सारे ब्रह्माण्ड को छोड कर सार्क की ओर ही भागेगे और उस पर भी उस यान मे जिस पर आप यात्रा कर रही है ! और उस पर वह अन्तराल विशेषज्ञ होने का दावा करता है।"

"तो उससे क्या हुआ।" सेमिया ने कहा

"एक वर्ष पूर्व एक अन्तराल विशेषज्ञ के गुम हो जाने की सूचना मिली थी। इस बात को गुप्त ही रखा गया था। मुझे भी केवल इसी लिए विदित है कि मेरे ही यान ने निकट अन्तराल मे इसकी खोज की थी। जिस किसी का भी हाथ इन फ्लोरीनी उपद्रवो के पीछे है वह इस बात से अनभिज्ञ नही है। और यह जानकारी ही यह सिद्ध कर देती है कि यह गिरोह कितना अधिक शक्तिशाली, कार्य कुशल और दक्ष है !"

"यह भी तो सम्भव है कि इस पृथ्वी-पुत्र और खोये हुए अन्तराल विशेषज्ञ मे कोई भी सम्बध न हो !"

"श्रीमतीजी यह हो सकता है। पर इसका इस घटना चक्र से कोई सम्बंध न हो यह मानने को मन नही करता। यह अवश्य ही कोई धूर्त है। और इसी कारण वह अपने आप को मस्तिष्क बेधित बतलाता है !"

"ओह !"

"हम यह कैसे सिद्ध कर सकते हैं कि यह अन्तराल विशेषज्ञ नही है ? इसे इसके अतिरिक्त कि पृथ्वी रेडियोसक्रिय है और कोई भी पृथ्वी का विवरण नही मालूम। वह यान नही चला सकता—न ही उसके विषय मे उसे कुछ मालूम है। यह सब वह मस्तिष्क-बेधन की आड में छिपा लेता है ! अब आया समझ मे ?"

सेमिया निरुत्तर हो गई पर फिर भी बोली "पर इस सबका तात्पर्य क्या है ?"

"जिससे कि जो कुछ आप करने को कह रही है, वह करे।"

"रहस्य की खोज ?"

"नही श्रीमतीजी ! इस मनुष्य को पिता के सामने ले जाना।"

"मै अब भी नही समझी !"

"सम्भावना बहुत-सी बातो की हो सकती है। सम्भवतः यह आपके पिता के पीछे गुप्तचर लगाया गया हो, चाहे फ्लोरीना की ओर से या ट्रानटर की ओर से। मेरे विचार मे ट्रानटर का आबेल इसका परिचय पृथ्वीपुत्र के रूप मे ही देगा, चाहे केवल इसी कारण कि इस मस्तिष्क बेधित मनुष्य को सामने करने से सार्क की स्थिति नीहारिका के सम्मुख खराब हो जाय। दूसरी सम्भावना यह हो सकती है कि यह आपके पिता की हत्या करना चाहता हो।"

"कप्तान !"

"श्रीमतीजी !"

"यह एकदम वाहियात बात है।"

"सम्भवतः श्रीमतीजी। फिर आपके विचार से सुरक्षा विभाग भी वाहियात है। आपको याद होगा कि भोजन से पहले मुझे एक आवश्यक समाचार लेने के लिए बुलाया गया था।"

"हाँ।"

"वह यह रहा।"

सेमिया ने उस न्यून पारदर्शी फिल्म को पढना शुरू किया। वह इस प्रकार थी, "हमे सूचना मिली है कि दो फ्लोरीनी आपके यान पर अवैध व गुप्तरूप से यात्रा कर रहे हैं। उनमे से एक अन्तराल विशेषज्ञ व पृथ्वीनिवासी होने का दावा करेगा। आपको इस विषय मे कुछ भी न करना होगा। आप इन लोगो की सुरक्षा के लिये स्वय उत्तरदायी होगे। यहाँ पहुँच कर आप इनको सुरक्षा विभाग के सुपुर्द कर देगे। अत्यन्त गुप्त, अत्यन्त आवश्यक।"

"सुरक्षा विभाग ! हे नीहारिका।" सेमिया ने आह भरी।

"अत्यन्त गुप्त !" कप्तान ने कहा "आपने मुझे बतलाने को मजबूर किया है।"

"वह उनके साथ न जाने क्या व्यवहार करेंगे !"

"मै कुछ निश्चित रूप से नही कह सकता। पर एक हत्यारे व गुप्तचर के साथ सद्व्यवहार की आशा तो नही की जा सकती। जब उसका यह झूठा दावा वास्तविकता मे परिणत हो जायगा, तब उसे पता लगेगा कि मस्तिष्क-वेधन क्या होता है।"

: १२ :

गुप्तचर

चारो बडे महानुभावो ने अपनी-अपनी मनोवृत्ति के अनुसार फाइफ के महानुभाव की ओर दृष्टिपात किया। बोर्ट ने क्रोधपूर्वक, रुन ने आनन्द-पूर्वक, बाली ने झुँझलाहट के साथ तथा स्टीन ने भय-मिश्रित।

रुन उनमे सब से पहले बोले। उन्होने कहा, "देशद्रोह! क्या आप इस शब्द से हम लोगो को आतंकित करना चाहते है? इसका तात्पर्य आखिर है क्या? विद्रोह किसके विरुद्ध? आपके, बोर्ट के या अपने? फिर विद्रोह हुआ किसके द्वारा और कैसे? सार्क की सौगध फाइफ! यह सभाये मेरी निन्द्रा मे बडा विघ्न डालती है।"

"जो कुछ होने वाला है वह तो न जाने कितनी नीद खराब करेगा, यह भी कभी सोचा है?" फाइफ ने कहा, "यह विद्रोह किसी एक के विरुद्ध नही है रुन! मेरा तात्पर्य है कि यह विद्रोह सारे सार्क के विरुद्ध है।"

बोर्ट ने कहा, "सार्क! यदि हम लोग सार्क नही है तो सार्क है क्या?"

"यह कोरी कल्पना ही सही। पर यह वही है जिसमे प्रत्येक सार्की अपना विश्वास जमाये हुए है।"

"मेरी समझ मे नही आता" स्टीन दुखित हो कर बोला, "आप

लोग सदा ही एक दूसरे को नीचा दिखाने का प्रयत्न करते रहते हैं। काश ! कि आप लोग जल्दी ही इस झगडे का निपटारा कर ले।"

बाली ने समर्थन किया, "मैं स्टीन से अक्षरश सहमत हूँ।"

इससे स्टीन बडे कृतज्ञ हुए।

फाइफ ने कहा, "मैं आप लोगो को अभी समझाता हूँ। आप लोगो ने फ्लोरीना के वर्तमान झगडो के विषय मे तो सुना होगा ?"

रुन ने कहा, "सुरक्षा विभाग कई सतरियो की हत्या की सूचना दे रहा था। क्या आप उसी ओर इगित कर रहे हैं ?"

बोर्ट उबल पडे, "सार्क की सौगध ! यदि हमे सभा करनी भी है तो क्या वार्तालाप का विषय केवल यही रह गया है ? सतरियो की हत्या हुई है ! वह तो होनी ही चाहिये। क्या आपका मतलब है कि कोई भी आदिवासी एक सतरी के निकट तक आ कर उसे अपनी पिस्तौल का निशाना बना सकता है। वाहियात ! वह पिस्तौल लिए हुए व्यक्ति को अपने निकट आने ही क्यो देता है ? सतरी को तो चाहिए था कि उस आदिवासी को बीस कदम पर ही जला देता। सार्क की सौगध, मै सतरियो की पल्टन की पल्टन को, कप्तान से लेकर सिपाही तक, देश-निकाला दे दूँगा। कम्बख्त हर समय हराम की खाते है बैठे बैठे मोटे हो रहे है। मै कहता हूँ, हर पाँचवे वर्ष फ्लोरीना पर सैनिक शासन हो जाना चाहिए जिससे कोई भी विद्रोही सस्था पनप ही न सके और हमारे सतरी भी सतर्क रहे।"

"क्या आप अपना भाषण समाप्त कर चुके ?" फाइफ ने व्यग्य किया।

"फिलहाल तो हाँ ! परन्तु इस विषय मे मै फिर बातचीत करूँगा। इसमे मेरी पूँजी भी लगी है, आपकी बराबर तो नही फाइफ, परन्तु मेरे लिए चिन्ता करने को पर्याप्त है।"

फाइफ ने अपने कधे हिलाये और स्टीन की ओर मुख करके पूछा, "क्या आपने उन उपद्रवो के विषय मे सुना है ?"

स्टीन उछल पडा "जी हाँ ! मेरा मतलब है मैने अभी आप लोगों के मुख से सुना है··· ·"

"आपने सुरक्षा विभाग की घोषणा नही पढी ?"

"सचमुच," अब स्टीन अपने लम्बे पतले नाखूनो से उलझ गया। "मुझे सदा सारी घोषणाये पढने का समय नही मिलता और मैं इस ओर से अनिभिज्ञ हूँ कि वह मुझे पढनी ही चाहिए।" उसने अपना सारा साहस बटोर फाइफ की आँखो मे आँखे डाल कर कहा, "मुझे यह भी ज्ञात नही था कि अब आप मेरे लिए नियम बना रहे है। क्या कहने !"

"मैं नियम नही बना रहा हूँ। फिर भी यदि आपको कुछ भी नही ज्ञात तो मै आपके सम्मुख स्थिति का सम्पूर्ण विवरण प्रस्तुत करूँगा। शायद दूसरे लोग भी इसमे रुचि ले।" फाइफ बोला।

"पूरे ४८ घटे की घटनाये सक्षेप मे और अरोचक ढग से यो कही जा सकती है पहले तो अन्तराल-विश्लेषण पुस्तको की आशातीत माँग सामने आई; फिर एक बूढे सतरी के सिर पर प्रहार हुआ और सिर फटने के कारण दो घटे पश्चात् उसका स्वर्गवास हो गया, फिर हत्यारो का पीछा हुआ जो ट्रानटर के एजेन्ट की सुरक्षा मे समाप्त हो गया। उसके पश्चात् दूसरे दिन सवेरे ही एक दूसरे सतरी की हत्या हुई और हत्यारा सतरी की वर्दी मे भाग गया। फिर कुछ ही घटे पश्चात् ट्रानटर के ऐजेन्ट की हत्या ! · ···"

"यदि आप इन समाचारो मे और कुछ जोडना चाहते है," फाइफ ने समाप्त करते हुए कहा, "तो इस तिहरे हत्याकाण्ड मे आप कुछ घटे पहिले पाई गई लाश या कहिये उसकी राख को, जो फ्लोरीना के शहरी उद्यान मे पाई गई है, और जोड सकते है।"

"किसकी लाश ?" रुन ने पूछा।

"एक मिनट श्रीमान् ! उसके निकट ही कुछ जले हुए कपडो की राख का ढेर पडा हुआ था ! उसमे से धातु के बटन व बिल्ले सावधानीपूर्वक बीन लिये गए थे, परन्तु राख के विश्लेषण से ज्ञात हुआ है कि वह एक

संतरी की वर्दी थी।"

"हमारा छद्मवेशी मित्र ?" बाली ने पूछा।

"कुछ जरूरी नही।" फाइफ ने कहा, "उसकी इस गुप्त रूप से कौन हत्या करेगा ?"

"आत्महत्या !" बोर्ट ने कहा, 'वह हत्यारा कब तक हमारे पजो से निकल कर भाग सकता था ! मेरे विचार मे तो इस प्रकार उसने बडी सुखद मृत्यु पाई। सच कहता हूँ, मै इस बात का पता लगा कर ही छोड़ूँगा कि वह किसके हाथ से निकल कर आत्महत्या करने मे सफल हो सका है, और उसको विस्फोटक से उडवा दूँगा।"

"आत्महत्या की सम्भावना भी कम ही है।" फाइफ ने कहा "यदि उसने आत्महत्या की है तो पहले उसने अपनी हत्या की है, फिर अपने कपडो को जलाया फिर उसमे से बटन व बिल्ले बीन कर छिपाए। या फिर पहले उसने वर्दी उतारी, बटन वगैरह बीने, उनको नगा बाहर ले कर गया, उनको कही फेका और आत्महत्या की।

"मृत शरीर क्या किसी कन्दरा मे मिला ?" बोर्ट ने पूछा।

"उद्यान की कृत्रिम कन्दरा मे।"

"फिर तो हत्यारे को पर्याप्त समय व एकान्त मिल गया होगा।" बोर्ट ने कहा, वह अपने सिद्धान्त को नही त्यागना चाहता था। "अपने बटन वगैरह पहले निकाल कर.........."

"ज़रा एक सतरी वर्दी को बिना जलाए उसके बटन वगैरह निकालने का प्रयत्न तो कर देखिये।" फाइफ ने व्यग्य कसा "और फिर मुझे डाक्टरी रिपोर्ट जो उस लाश के परीक्षण की मिली है उससे न तो वह कोई सतरी था और न फ्लोरीनी। उस राख से जो हड्डियाँ मिली है उनकी बनावट से वह एक सार्की महानुभाव की लाश थी।"

"सचमुच" स्टीन चीखा। बाली के नेत्र विस्फारित हो उठे। रुन के धातु के दाँत, जो उसके कक्ष के कृत्रिम धीमे प्रकाश मे यदा-कदा चमक कर उसको जीवन प्रदान कर रहे थे, एकाएक मुँह बन्द हो जाने के

कारण गायब हो गए थे, यहाँ तक कि बोर्ट की भी बोलती बन्द हो गई थी।

"समझ मे आया आप लोगो के ?" फाइफ ने पूछा "अब तो समझ गए होगे कि बटन वगैरह क्यो निकाल लिए गए थे। जिस किसी ने भी उस सार्की की हत्या की है, वह चाहता है कि वह राख उस सार्की के कपडो ही की मान ली जाए जो कि उसकी हत्या से पहिले उतार कर जला दिये गए हो और इस प्रकार उसे आत्महत्या या पारस्परिक झगडे का ही रूप दिया जा सके और उस छली सतरी से उसका सम्बन्ध स्थापित न किया जा सके। सम्भवत. उसे यह पता नहीं था कि राख के विश्लेषण द्वारा यह पता लगाया जा सकता है कि जले हुए कपडे काईट के बने है या सेलूलाइट के जो कि सतरी-वर्दी मे प्रयुक्त होता है।

"अब एक सार्की की लाश और जली हुई सतरी-वर्दी द्वारा यह अनुमान लगाया जा सकता है कि ऊपरी शहर मे ही एक मुखिया कही सार्की वस्त्रो मे छुपा बैठा है। वह फ्लोरीना मे बहुत समय तक सतरी-वर्दी मे रहा, पर उसमें उसका सकट बढता ही जा रहा था और उसने स्वय को एक सार्की मे परिणित करने का निश्चय किया। इस योजना को एक ही प्रकार से पूर्ण किया जा सकता था—वही उसने किया भी।"

"क्या वह पकडा गया ?" बोर्ट ने भर्राये स्वर मे पूछा।

"नही, अभी तक नही।"

"क्यो नही ! सार्क की सौगध ! क्यो नही ?"

"वह तो पकडा ही जायगा।" फाइफ ने उदासीनता पूर्वक कहा, "पर इस समय हमारे सम्मुख इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण बाते विचारने के लिए है।"

"उन्हे शीघ्र सुनाइये," रुन ने तत्परता से कहा।

"शान्ति ! शान्ति ! पहले तो आप लोग यह बतलाएँ कि आपको इस लुप्त अन्तराल-विशेषज्ञ की भी याद है ?"

स्टीन हँस पड़े।

बोर्ट घृणापूर्वक बोला, "अब फिर वही बेसुरा राग शुरू हो गया।"

स्टीन ने पूछा, "क्या उसका इन काडो से कोई सम्बन्ध है, या पिछले वर्ष का पुराना पचडा हम फिर दोहरायेगे। मै तो थक गया हूँ। सचमुच।"

फाइफ किंचित भी विचलित न हुए। उन्होने कहा "क्या परसो का विस्फोट फ्लोरीनी पुस्तकालय मे अन्तराल-विश्लेषण की पुस्तक की माँग से आरम्भ नही हुआ था ? मेरे लिए तो यही सम्बन्ध पर्याप्त है। देखिये, कदाचित मै आप लोगो को भी इस सम्बन्ध से परिचित करा सकूँ। पुस्तकालय की घटना से सम्बन्धित तीनो व्यक्तियो के वर्णन से मै आरम्भ करूँगा और कृपा करके बीच मे मत बोलियेगा।

"पहला एक मुखिया है। तीनो मे यही सबसे अधिक भयकर है। सार्क मे इसका रिकार्ड बहुत ही अच्छा रहा। वह सदा ही एक चतुर तथा स्वामिभक्त मनुष्य रहा है। दुर्भाग्यवश वह हमारे विरुद्ध हो गया है। वही इन चारो हत्याओ के लिए उत्तरदायी है। एक अकेले के लिए यह काफी बडा रिकार्ड है। यह सोचते हुए इन हत्याओ मे दो सतरी और एक सार्की महानुभाव भी है, एक आदिवासी के लिए यह बडा ही साहसपूर्ण कार्य हो जाता है और वह अभी भी नही पकडा जा सका है।

"दूसरा सम्बन्धित व्यक्ति एक स्त्री है। यह बिल्कुल बेपढी और अत्यन्त क्षुद्र है। पिछले दो दिनो मे इस हत्याकाड का प्रत्येक पहलू से विचार हो चुका है और इस स्त्री का समस्त इतिहास हमारे सम्मुख है। इसके माता-पिता 'काईट की आत्मा' नामक आन्दोलन के सदस्य थे। वही बेतुका-सा आन्दोलन जो कि चार-पाँच दिन मे बिना किसी कठिनाई के बीस वर्ष पूर्व दबा दिया गया था।

"अब तीसरे व्यक्ति की बारी आती है। यह तीनों मे सबसे अधिक आश्चर्यजनक है। यह तीसरा व्यक्ति एक मिल का श्रमिक है और साथ ही पागल भी है।"

बोर्ट ने एक लम्बी साँस ली और स्टीन खी-खी करके हँस पडे।

बाली अपनी आँखें बद किये सुनते रहे और रुन अँधेरे मे चुपचाप बैठे रहे।

फाइफ ने कहा, "यह 'पागल' शब्द अलकारिक रूप से नही प्रयुक्त हुआ है। सुरक्षा विभाग ने उसका इतिहास जानने के लिए आकाश-पाताल एक कर दिया है; पर पिछले साढे दस महीने उसके विषय मे कुछ भी ज्ञात न हो सका। उस समय वह फ्लोरीना की राजधानी के पास ही एक गांव की सीमा पर एकदम मस्तिष्क-रहित अवस्था मे पाया गया था। न वह बोल सकता था, न चल ही सकता था। वह अपने आप खाना भी नही खा सकता था।

"अब आप ध्यान दीजिये : वह अन्तराल-विशेषज्ञ के गुम होने के कुछ ही सप्ताह बाद मिला था और इस पर भी ध्यान दीजिये कि वह दो सप्ताह मे बोलना भी सीख जाता है यहाँ तक कि काइट मिल मे नौकरी भी करने लगता है। कौन-सा ऐसा पागल है जो इतनी शीघ्रता से इतना कुछ सीख सकता है।"

स्टीन ने जल्दी-जल्दी कहना आरम्भ किया, "यदि ठीक से मस्तिष्क-वेधन न हो तो ऐसा सम्भव है .. .."

फाइफ ने व्यग्य किया, "आप से अधिक प्रवीण इस विषय मे और कौन हो सकता है! आपको मालूम होना चाहिए कि आपकी इस प्रवीण राय के बिना ही मैं इस निष्कर्ष पर पहुँच गया था। इसका केवल यही कारण हो सकता था।

"यह मस्तिष्क-वेधन या तो सार्क मे हो सकता है या ऊपरी शहर मे। पूरी खोज के लिए शहर के सारे डाक्टरो के औषधालयो की खोज की गई। कही भी अनधिकृत मस्तिष्क-वेधन का पता न चल सका। फिर हमारे गुप्तचर के दिमाग मे विचार उठा कि मृत डाक्टरो की भी तलाशी ली जाय। मैं उस गुप्तचर की इस सूझ के लिए उसकी तरक्की तो करा ही दूँगा।

"उन्ही मे से एक औषधालय मे हमारे इस पागल मनुष्य का भी

रिकार्ड मिला है। छै माह पूर्व एक कृषक स्त्री (जो इन तीन मे से दूसरी है) उसको लेकर आई थी। वह और किसी निमित्त मिल से अनुपस्थित रही, इससे साफ पता चलता है कि यह कार्य गुप्तरूप से किया गया। डाक्टर ने परीक्षा की थी और मस्तिष्क-वेधन को रिकार्ड किया था।

"यहाँ अब एक बडी ही मार्के की बात आती है। यह चिकित्सक ऐसा था जो ऊपर तथा निचले शहरो मे अपने दो-तल्ले औषधालय को चलाता था। वह उन आदर्शवादी मनुष्यो मे से था जो यह सोचते थे कि आदिवासियो को भी चिकित्सा का पूर्ण अधिकार है। वह बडा कायदे का डाक्टर था। यहाँ तक कि वह अपने सारे केसो के रिकार्ड अपने दोनो औषधालयो मे रखता जिससे व्यर्थ लिफ्ट का प्रयोग बच जाता था और मेरे विचार मे यह उसके आदर्श के अनुकूल भी था। इससे कम से कम फाइलो मे तो सार्की और आदिवासियो मे भेदभाव नही था। पर इस पागल का रिकार्ड दोनो जगह नही था और केवल यही रिकार्ड ऐसा था जो दोहरा न था।

"ऐसा क्यो होना चाहिए ? यदि किसी अज्ञात कारण से उसने ऐसा किया भी हो तो यह रिकार्ड ऊपरी शहर जहाँ वह मिला क्यो होना चाहिए था, केवल निचले शहर के रिकार्ड मे क्यो नही ? आखिर यह मनुष्य एक फ्लोरीनी था और एक फ्लोरीनी द्वारा लाया भी गया था और उसकी परीक्षा भी निचले शहर के औषधालय मे ही हुई थी। इस रिकार्ड को जो कापी हमे मिली है उसी मे यह सब लिखा है।

"इस पहेली का केवल एक ही हल है कि रिकार्ड दोनो स्थानो पर रखा गया था, पर निचले शहर मे किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा नष्ट कर दिया गया जिसे ऊपर के रिकार्ड का कोई पता न था। अब आगे चलिये.

"इस पागल की डाक्टरी रिपोर्ट के साथ एक पर्चा भी था जिसमे उसने इस केस को सुरक्षा विभाग मे भेजने के लिए लिखा था। यह उचित भी था। मस्तिष्क-वेधन किसी भी अपराध से सम्बधित हो सकता है। पर ऐसा नही हुआ। सुरक्षा विभाग को कोई सूचना नही मिली। एक

सप्ताह के अन्दर ही वह डाक्टर दुर्घटना का शिकार हो गया।"

"ये आकस्मिक घटनाये एक के बाद एक बढती ही जा रही हैं।" बाली ने अपने नेत्र खोलते हुए कहा, "आप तो हम लोगो को जासूसी उपन्यास सुना रहे है।"

"जी हाँ!" फाइफ ने पूर्ण सतोष के साथ कहा, "जी हाँ! एक जासूसी उपन्यास ही तो है और इस समय जासूस मै स्वय हूँ।"

"और अपराधी कौन है?" बाली ने थके हुए से स्वर मे पूछा।

"अभी नही, अभी थोडी देर और मुझे जासूसी करने दे।"

वैसे तो फाइफ के विचार मे इस समय सार्क को एक अत्यन्त भयकर स्थिति का सामना करना पड रहा था, पर इस समय भी वह एक अपूर्व आनन्द का अनुभव कर रहे थे।

"अब हमे इस कथानक पर दूसरे पहलू से विचार करना चाहिए। एक क्षण के लिए इस पागल मनुष्य को भूल कर उसके स्थान पर अन्तराल विशेषज्ञ को याद रखेगे। पहली बात जो हमने उसके विषय मे सुनी वह यातायात-ब्यूरो को उसके उतरने की सूचना का मिलना था। यह उसकी पहली सूचनाओ के साथ नत्थी थी।

"पर अन्तराल-विशेषज्ञ नही उतरता। उसका निकट अन्तराल मे भी कही पता नही लगता और यातायात कार्यालय मे उसकी प्रेषित सूचना भी खो दी जाती है। अन्तराल-ब्यूरो का कहना है कि हम जान-बूझ कर वह खबरे छिपा रहे है। सुरक्षा विभाग सोचता है कि यह काल्पनिक विचार उपद्रव कराने के लिए गढे जा रहे है। अब मुझे लगता है कि हम दोनो ही भूल कर रहे थे। वह समाचार आये अवश्य थे पर सार्क द्वारा भी नही छिपाये गये।

"कुछ देर के लिए मान लीजिये कि कोई ऐसा मनुष्य है जिसने यह सब किया है, हम उसे श्री 'क' के नाम से पुकार सकते हैं। इस 'क' की पहुँच यातायात-ब्यूरो तक है। उसे इस अन्तराल-विशेषज्ञ की सूचना तथा समाचार मिलते है। उसमे शीघ्रातिशीघ्र कार्य करने की बुद्धि और

क्षमता है। वह अन्तराल-विशेषज्ञ को एक निजी सब-ईथर पर सूचना भेजता है और किसी एकान्त स्थान पर उसका यान उतरवा लेता है। अब 'क' उस अन्तराल-विशेषज्ञ को वहाँ जाकर मिलता है। साथ ही अन्तराल-विशेषज्ञ द्वारा भेजी गई उस विध्वस-सूचना को भी अपने साथ ले जाता है। इसके भी दो कारण है। प्रथम तो प्रमाण हटा देने से खोज मे बाधा पड जाती है दूसरे इसके द्वारा अन्तराल-विशेषज्ञ को भी विश्वास दिलाया जा सकता था। यदि वह विशेषज्ञ यह कहता कि वह अपने अधिकारियो से ही बाते करेगा जैसा कि स्वाभाविक भी है, तो श्री 'क' उसको यह बतला कर कि पहले से ही उन्हे इस बात की जानकारी है, उसे विश्वास दिला सकते है और आगे की बातो का पता लगा सकते हैं।

"नि सन्देह अन्तराल-विशेषज्ञ ने सब कुछ बतला दिया होगा—चाहे वह बाते कितनी ही बेसिर-पैर की क्यो न रही हो। और तब 'क' ने उसकी धमकी का अच्छा साधन समझ कर धमकी-भरे पत्र सब प्रमुख महानुभावो को यानी हम लोगो को भेजे, और उसके बाद उसकी कार्य-प्रणाली वही रहती जिसके लिए पिछली बार मैं ट्रानटर को दोषी ठहरा रहा था, अर्थात् यदि हम लोग उसकी बात न मानेगे तो वह फ्लोरीना पर विनष्टि के मिथ्या समाचार तब तक फैलाता रहेगा जब तक हम हथियार न डाल देंगे।

"और उस समय कोई बात उसकी राह मे रुकावट डालती है, कोई बात उसको भयभीत कर देती है। वह बात क्या है, इस पर बाद मे बिचार करेगे। खैर, जो भी हो उसने कुछ समय प्रतीक्षा करना ही उचित समझा। इस प्रतीक्षा मे भी एक गडबड होने की सम्भावना थी। अन्तराल-विशेषज्ञ इस खबर को छिपाने के लिए कभी तैयार न होता, क्योकि वह एकदम निष्कपट था। 'क' को अन्तराल विशेषज्ञ के सिद्धान्तो मे तनिक भी विश्वास न था। पर अपनी योजना की सफलता के लिए उसे ऐसा कार्य करना था जिससे अन्तराल-विशेषज्ञ भी प्रतीक्षा करने को बाध्य

हो जाय ।

"अन्तराल-विशेषज्ञ ऐसा तब तक कदापि न कर सकता था जब तक उसका दिमाग ही न खराब हो जाता। क' उसकी हत्या भी कर सकता था पर उसका जीवित रहना 'क' की योजना का एक आवश्यक अग था, क्योकि वह स्वय तो अन्तराल-विश्लेषण के सम्बन्ध मे कुछ भी नही जानता था, केवल कल्पना के ही बल पर तो धमकी नही दी जा सकती। योजना के असफल हो जाने पर एक धरोहर के रूप मे भी वह प्रयुक्त हो सकता था। इसलिए उसने उसका मस्तिष्क वेधन कर डाला। ऐसा करने के बाद उसके हाथ मे अन्तराल-विशेषज्ञ के स्थान पर एक मस्तिष्क-रहित पागल रह गया था। कुछ काल के लिए तो वह पगु हो ही गया था, कुछ गडबड न कर सकता था। उचित समय आने तक उसकी इन्द्रियाँ जागृत हो ही जाती।

"उसके बाद यह निश्चित करने के लिए कि अन्तराल-विशेषज्ञ साल भर तक न खोजा जा सके और न ही कोई महत्वपूर्ण मनुष्य उसको पागल-पन की दशा मे देख सके, उसने बडे साधारण तरीके से काम लिया। उसने अपने इस आदमी को फ्लोरीना पहुँचा दिया और साल भर तक यह अन्तराल-विशेषज्ञ काईट मिल मे अर्ध-पागल अवस्था मे कार्य करता रहा।

"मेरे विचार मे साल भर मे या तो वह स्वय या उसका विश्वस्त आदमी बराबर वहाँ आता-जाता रहा जिससे कि विशेषज्ञ की सुरक्षा पर बराबर ध्यान रखा जा सके। इसी तरह की एक यात्रा पर उसको यह पता लगा होगा कि वह डाक्टर के पास भी ले जाया गया था जिसने उसका रोग मस्तिष्क-वेधन बतलाया था। फिर उसके बाद उस डाक्टर की हत्या हो गई और कम से कम निचले शहर से डाक्टर की रिपोर्ट गायब हो गई। यही 'क' की पहली भूल थी। उसने यह कभी भी नही सोचा था कि दोहरी रिपोर्ट ऊपरी शहर मे भी होगी।

"और इसी समय उससे दूसरी भूल होती है। उस पागल की

इन्द्रियाँ जल्दी ही ठीक काम करना आरम्भ कर देती हैं, और गाँव के मुखिया मे इतनी बुद्धि है कि वह उसे पागल नही समझता। शायद वह लडकी जिसने रिक को पाला है मुखिया को डाक्टर के विषय मे भी बतला देती है, यह केवल मेरी कल्पना ही है। बस, यही कहानी है।"

फाइफ ने अपने शक्तिशाली हाथ मेज पर रख दिये और वह प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा करने लगा।

रुन सबमे पहले बोले। अब उनके कक्ष मे भी प्रकाश होने लगा था। वह आँखे मलते तथा मुस्कराते हुए उठ बैठे और बोले, "क्या ही नीरस कहानी थी यह फाइफ ! यदि कुछ देर और प्रकाश न होता तो मैं सो ही गया होता। जहाँ तक मै सोचता हूँ पिछले वर्ष की भाँति इस साल भी एक सार-रहित कहानी गढ डाली है आपने। यह नब्बे प्रतिशत कपोल-कल्पित है।"

"वाहियात !" बोर्ट ने कहा।

"आखिर यह 'क' है कौन ?" स्टीन ने कहा। "यदि यह नही मालूम कि 'क' कौन है तो सब बेकार है।" उन्होने मुँह पर हाथ रख जम्हाई ली।

फाइफ ने कहा, "कम से कम आप मे से एक तो स्थिति को पूर्ण रूप से समझता है। 'क' का परिचय ही तो इस कहानी का सार है। अब यदि मेरी कहानी ठीक है तो उसके अनुसार 'क' का चरित्र-चित्रण कीजये।"

"पहली बात तो यह निश्चित है कि 'क' एक ऐसा मनुष्य है जिसकी सिविल सरविस मे पहुँच है। वह एक ऐसा मनुष्य है जो मस्तिष्क-वेधन की आज्ञा दे सकता है। वह एक ऐसा मनुष्य है जो यह जानता है कि वह शक्तिशाली धमकी की योजना बना सकना है—वह एक ऐसा मनुष्य है जो अन्तराल-विशेषज्ञ को आसानी से सार्क से फ्लोरीना ले जा सकता है। वह एक ऐसा मनुष्य है जो फ्लोरीना पर एक डाक्टर की हत्या करा सकता है, और वह कोई अदना-सा मनुष्य नही हो सकता, यह मानी हुई

बात है ।

"वास्तव मे तो वह अत्यत ही शक्तिशाली 'कोई' है। वह कोई प्रमुख महानुभाव ही हो सकता है। क्या आप लोग ऐसा नही सोचते ?"

बोर्ट एकदम अपनी कुर्सी से उठ खडे हुए। जिससे उनका सिर गायब हो गया और फिर वह अपनी कुर्सी पर बैठ गए। स्टीन एकदम हो-हो करके हँसने लगे। रुन के मोटे चेहरे पर उनकी छोटी-छोटी आँखे चमकने लगी। बाली ने अपना सिर हिलाया।

बोर्ट चिल्लाये, "अन्तराल की सौगध! यह दोषारोपण किस पर किया जा रहा है फाइफ ?"

"अभी तक किसी एक पर नही।" फाइफ ने शातिपूर्वक उत्तर दिया "विशेष किसी पर भी नही। इस स्थिति पर इस प्रकार विचार करिये। हम लोग पांच है। सार्क पर कोई दूसरा ऐसा नही कर सकता जैसा श्री 'क' ने किया है। अब प्रश्न यह है कि हम पाँचो मे से 'क' कौन है। मैं तो नही हूँ।"

"हम लोग आपके इस कथन को सत्य मान ले ?" रुन ने खीभते हुए कहा।

"मैं आपसे सत्य मानने को कब कह रहा हूँ ?" फाइफ ने तत्काल उत्तर दिया, "मैं ही एक ऐसा हूँ जिसको कि ऐसा करने का कोई हेतु नही है। 'क' का तात्पर्य काईट का सारा व्यापार अपने हाथ मे लेना है और मेरे पास वह अभी भी है। मै एक-तिहाई फ्लोरीना का स्वामी हूँ। मेरे पास इतनी मिले, मशीने और यान है कि जब चाहे तब सारा व्यापार हथिया सकता हूँ। मुझे धमकी की योजना बनाने की कोई आवश्यकता नही है।"

अब वह उनके सम्मिलित स्वरो से ऊँचे स्वरो मे चिल्ला रहा था, "मेरी बात सुनिये! आप बाकी लोगों का ऐसा करने का कारण हो सकता है। रुन के पास थोडा-सा भाग व छोटा-सा महाद्वीप है। मुझे मालूम है उसे यह अच्छा नही लगता, न ही वह अच्छा लगने का

दिखावा ही करता है। बाली शासक परिवार का है। एक समय था जब कि उसके पूर्वज सारे सार्क पर शासन करते थे। वह शायद इस बात को भूल नही पाया है। बोर्ट को शायद यह बुरा लगता है कि ससद मे वह सदैव हार जाता है और जिस कडाई से, यानी कोडे व विस्फोटक द्वारा वह शासन करना चाहता है, कर नही पाता। स्टीन शौकीन तबियत का है, और उसका खर्च अधिक बढा हुआ है, उसको अपना धन बढाने की बडी आवश्यकता है। सभी प्रकार के कारण विद्यमान है। ईर्ष्या, शक्ति-लोभ, धन-लोलुपता, आदर का प्रश्न। अब बताइये, आप लोगो मे से 'क' कौन है ?"

बाली के नेत्र दुष्टता से चमक उठे, "आपको नही मालूम ?"

"खैर, कोई परवाह नही। अब सुनिये—मैने कहा था न कि हम लोगो को पत्र लिखने के बाद 'क' किसी बात से भयभीत हो उठा। आप लोगो को पता है कि वह क्या बात थी ? वह हमारी पहली सभा थी, जिसमे मैंने एकता का पाठ पढाया था। 'क' यहाँ उपस्थित था, 'क' हम लोगो मे से ही कोई था और है। वह जानता था कि एकता का अर्थ है 'असफलता'। उसे विजय की आशा केवल इसीलिए थी क्योकि उसे मालूम था कि महाद्वीपी स्वतत्र सत्ता हम लोगो को एकत्र होने से रोके रहेगी। उसे अपनी भूल मालूम हो गई और उसने तब तक चुप रहने का निश्चय किया जब तक कि बात आई-गई न हो जाय।

"परन्तु वह अब भी भूल पर ही है। हम लोग अब भी एक होकर ही कार्य करेगे और यह जानते हुए कि 'क' हमी मे से एक है, ऐसा करने का केवल एक ही मार्ग है—महाद्वीपी स्वतत्रता का अत कर दिया जाय। यह एक ऐसी व्यवस्था है जिसको हम अधिक दिन नही चला सकते। 'क' की योजनाये या तो हम लोगो की आर्थिक हार से समाप्त होगी या फिर ट्रानटर के हस्तक्षेप से। मैं केवल अपना ही विश्वास कर सकता हूँ। सो अब से मै सयुक्त सार्क का शासक हूँ। क्या इसमे आप लोग मेरे साथ हैं ?"

वे सब लोग अपनी-अपनी कुर्सियो से उठ गए थे। बोर्ट अपने मुक्के दिखा रहा था तथा क्रोध मे उसके मुँह से झाग निकल रहे थे। पर वास्तव मे कुछ भी न कर सकते थे। फाइफ मुस्करा दिये। प्रत्येक उससे एक-एक महाद्वीप दूर था। वह अपनी कुर्सी पर बैठे उन्हे क्रोध से उबलता हुआ देखते रहे। उन्होने कहा, "आप लोग और कुछ नही कर सकते। एक वर्ष पूर्व हुई हमारी प्रथम सभा के उपरात मैने भी कुछ तैयारियाँ कर डाली है। जितने समय आप चारो सभा मे मेरे साथ बाते करते रहे, उतने समय मे मेरे स्वामिभक्त अधिकारियो ने नौ सेना को अपने अधिकार मे ले लिया है।"

"विश्वासघात !" वे लोग चिल्लाये।

"महाद्वीपी स्वतत्रता के विरुद्ध विश्वासघात हो सकता है," फाइफ ने कहा, "पर सार्क के प्रति देशभक्ति ही है।"

स्टीन ने अपनी उँगलियाँ उलझा कर घबराते हुए कहा, "पर यह तो 'क' की बात है। मान लीजिये कि हम मे से ही कोई 'क' है, पर बाकी तीन तो निरपराध ही है, मैं 'क' नही हूँ।" उसने अपने चारो ओर विषैली दृष्टि डालते हुए कहा "अन्य लोगो मे से ही कोई होगा।"

"आप लोगो मे से जो निरपराध होगे वे मेरे शासन का एक भाग रहेगे और उनको कोई हानि न पहुँचाई जायगी।"

"किंतु आप न बतलायेगे कि 'क' कौन है। हम लोगो को अँधेरे मे ही रखेगे और इस कहानी के आधार पर···· ·पर······ ···पर" इतना कहते-कहते उनकी साँस फूलने लगी और वह हाँफने लगे।

"नही, ऐसा नही होगा। चौबीस घण्टो के अन्दर मुझे पता लग जायगा कि 'क' कौन है। मैंने आप लोगो को अभी तक नही बतलाया। अन्तराल-विशेषज्ञ अब मेरे अधिकार मे है।"

वे लोग चुप हो गये थे। अब सब लोग सदेह की दृष्टि से देख रहे थे।

फाइफ ने हँसते हुए कहा, "आप लोग सोच रहे हैं कि 'क' कौन

है। आप मे से एक को मालूम है और २४ घण्टों मे हम सबको ज्ञात हो जायगा। अब महानुभावो, आप सब असहाय है। युद्ध के सारे यानो का स्वामी मैं हूँ। नमस्कार !"

यह कह कर उसने विदाई ली।

एक-एक करके सब इस प्रकार चले गये, मानो प्रभात होते ही तारे विलीन हो गये हो। केवल स्टीन रह गये। उन्होने हाँफते हुए कहा, "फाइफ ?"

फाइफ ने ऊपर देखते हुए कहा, "बोलिये, क्या कहना है ? अब तो हम दो ही जने रह गये है, क्या आप स्वीकार करना चाहते हैं कि आप ही 'क' है ?"

स्टीन एक दम घबरा गये, "नही ! नही ! वास्तव मे मैं यह पूछना चाहता हूँ कि क्या आप सच कह रहे है ? मेरा अर्थ महाद्वीपी स्वतत्रता से है। सच बतलाइये !"

फाइफ ने उस प्राचीन घडी की ओर देखा और फिर कहा, "नमस्कार !" स्टीन बडबडाये। उन्होने स्विच की ओर हाथ बढाया और वह भी लुप्त हो गए।

फाइफ वहाँ पत्थर की भाँति निश्चल बैठे रह गये। अब जब सभा समाप्त हो चुकी थी तथा वातावरण की क्षणिक उत्तेजना दूर हो गई थी, तो एक प्रकार के अवसाद ने उन्हे आ घेरा था। उनका चेहरा भावहीन तथा सफेद पड़ गया था।

उनकी सारी योजना इसी पर स्थित थी कि अन्तराल-विशेषज्ञ पागल है तथा कुछ भी अनिष्ट न होगा। पर इस पागल मनुष्य के कारण ही तो इतना सब हो गया। क्या अन्तर-तारकीय अन्तराल-विश्लेषण ब्यूरो का अध्यक्ष डा० जुंज एक पागल की खोज मे पूरा एक वर्ष बरबाद कर देगा ? क्या वह परियो की कहानी के पीछे हाथ धो कर पड जाता ?

फाइफ ने यह किसी को भी न बताया था, वह अपने से भी इस विषय मे बाते करते डरते थे। यदि वह अन्तराल-विशेषज्ञ पागल नही है तो क्या होगा ! क्या काइट के सुन्दर ससार का विध्वस हो जायगा ! यदि ऐसा हो गया तो············।

तभी वह फ्लोरीनी सेक्रेटरी प्रमुख महानुभाव के सम्मुख आ कर बोला, "श्रीमान् !"

"क्या है ?"

"आपकी पुत्री का यान आ पहुँचा।"

"अन्तराल-विशेषज्ञ व देसी औरत भली भाँति है ?'

"जी हाँ ! श्रीमान्।"

"मेरी अनुपस्थिति मे उनसे कोई प्रश्न न किये जाँय। जब तक मैं न पहुँचूँ, उनको अप्रकाश्य ही रखा जाय। क्या फ्लोरीना से भी कोई सूचना मिली ?"

"जी श्रीमान् ! मुखिया पकडा गया है और अब सार्क पर लाया जा रहा है।"

: १३ :

नाविक

सध्या की लालिमा मे वृद्धि के साथ-साथ वायु-अड्डे का प्रकाश तेज़ होता गया। अड्डो पर तीसरे प्रहर के प्रकाश से कम प्रकाश कभी भी न रहता था। पोर्ट न० ९ पर भी और अड्डो की ही भाँति रात-दिन, दिन जैसी ही रोशनी रहती थी। दोपहर को सूर्य के प्रचण्ड प्रकाश मे थोडी-सी चमक और बढ जाती थी। वहाँ केवल उसी के कारण दिन-रात का पता लगता था।

मारकिस जैनरो भी दिन का ढल जाना केवल इसी कारण बतला सकता था क्योकि वह अपने पीछे शहर मे रात्रि की बत्तियाँ जलती छोड़ कर आया था। वह रात्रि के अधकार मे तेज़ अवश्य प्रतीत होती थीं परन्तु दिन के प्रकाश की स्पर्धा थोडे ही कर सकती थी।

जैनरो मुख्य द्वार के भीतर खडा हो गया था। उस बडे से अर्ध-गोलाकार अड्डे, उसके पाँच दर्जन हैंगरो तथा पाँच उडन-गर्तों का मानो उस पर कोई भी प्रभाव नही पड रहा था। प्रत्येक अनुभवी उडाके की भाँति वह उसके भी जीवन का एक आवश्यक अग थे।

उसने लम्बी-सी बैंजनी रग की एक सिगरेट निकाली, जिसके किनारे पर एक अत्यन्त पतला रुपहला काईट लगा हुआ था, और उसे अपने

होठो से लगाया। उसके दूसरे खुले हुए किनारे को अपने हाथ की ओट मे जलाया, जिससे उसमे से हरी-सी रोशनी निकलती दिखाई देने लगी। वह धीरे-धीरे जल रही थी, पर उसमे से कोई राख नही झड रही थी। केवल एक हरा-सा धुआँ उसकी नाक से निकल रहा था।

उसने धीरे से कहा, "चिर परिचित गति से ही कार्य चल रहा है न ?"

नाविक समिति का एक सदस्य, चालक वर्दी मे, जिसमे सावधानी-पूर्वक एक बटन के ऊपर कोने मे कुछ कढा था और जिससे उसके समिति के सदस्य होने का पता चलता था, अपने स्थान से उठकर जैनरो के पास आया।

"ओह ! हाँ जैनरो, प्रतिदिन की ही भाँति कार्य चल रहा है। क्यो न चलता भला ?"

"अच्छा डोरी ! मैंने सोचा, इतना सब उपद्रव होने पर किसी के दिमाग मे अड्डा बन्द कर देने की बात आ सकती है; पर सार्क को धन्य-वाद ! ऐसा नही हुआ।"

समिति का सदस्य बोला, "शायद ऐसा भी हो जाय। क्या आपने सबसे ताजी खबर सुनी है ?"

जैनरो ने कहा, "आप सबसे ताजी और उससे पहले की खबरो मे कैसे अन्तर कर सकते है ? क्या पता, कौन-सी खबर सबसे ताजी है !"

"अच्छा ! तो क्या आपने सुना है कि उन्हे इस आदिवासी के विषय मे सब कुछ ज्ञात हो गया है ? मेरा तात्पर्य उस हत्यारे से है।"

"तुम्हारा मतलब है कि वह पकडा गया ? नही, मैंने तो नही सुना।"

"नही, पकड़ा तो नही गया। पर यह पता लग गया है कि वह निचले शहर मे नही है।"

"अच्छा, तो फिर वह कहाँ है ?"

"क्यों ? यही ऊपरी शहर में।"

"इतनी गप्प मत हाँको।" जैनरो ने अविश्वास-भरे स्वर मे कहा।

'नही सचमुच !" सदस्य ने आहत-से स्वर मे कहा, "मुझे ठीक मालूम है। काइट मार्ग पर सतरी इधर से उधर घूम रहे है, उन्होने शहर के उद्यान के चारो ओर घेरा डाल रखा है। मध्यस्थल को वह समन्वय के लिए प्रयोग मे ला रहे हैं। यह सब समाचार एकदम सच है।"

"अच्छा, कदाचित् ऐसा ही हो।" वहाँ स्थित वायुयानो पर उसने दृष्टि दौडाते हुए कहा, "मैं लगभग दो माह से पोर्ट न० ६ मे नही गया। क्या वहाँ कोई नये यान आये है?"

"नही ! हाँ, वहाँ हजौडोज का 'ज्वाला बाला' आया है।"

जैनरो ने अपना सिर हिलाते हुए कहा, "हाँ ! इसे मैंने कभी नही देखा। सुना है वह सारा क्रोमियम का बना हुआ है। लगता है, मुझे अपने यान का परिकल्प (डिजाइन) स्वय ही करना पडेगा।"

"क्या आप अपने कामेट पाँच को बेच रहे है?"

"बेच रहा हूँ या फेक रहा हूँ। इन नये-नये माडलो से तो मैं तग आ गया हूँ। ये बहुत ही अधिक स्वचालित हैं, और अपने स्वचालित यत्रो द्वारा उडान के समस्त आनन्द को समाप्त किये दे रहे हैं।"

"मैंने और लोगो को भी यही कहते सुना है," सदस्य ने कहा, "और सुनिये, यदि किसी पुराने माडल की बिक्री की सूचना मुझे मिलेगी तो आपको अवश्य दूँगा।"

"धन्यवाद ! क्या मैं यहाँ चक्कर लगा सकता हूँ?"

"हाँ ! हाँ ! अवश्य। आप घूमिये।" समिति के सदस्य ने हँसते हुए कहा और एक ओर को चल दिया।

जैनरो धीरे-धीरे चक्कर लगाता रहा। उसकी सिगरेट अध-बुझी उसके मुँह के एक ओर लटक रही थी। वह प्रत्येक बसे हुए हैंगर पर रुकता और सावधानीपूर्वक उसके यान का निरीक्षण करता चल रहा था। हैगर २६ मानो उसे कुछ अधिक रोचक लगा। उसने रेलिंग के इधर से कहा, "महानुभाव !"

उसका स्वर नम्रता से भरा था। पर कुछ क्षण पश्चात् उसे फिर आवाज देनी पडी—इस बार कुछ अधिक ज़ोर से—और कुछ कम नम्रता के साथ।

जो महानुभाव वहाँ से बाहर आया, वह कुछ यो ही सा लगा। प्रथम तो वह चालक वर्दी मे न था, दूसरे उसकी दाढी बढी हुई थी, उसे हजामत की आवश्यकता थी, और उसकी टोपी पूरी खिची हुई बडे बेढगे तरीके से उसके सिर पर रखी थी। ऐसा लगता था, मानो आधा चेहरा ही छुप गया हो। और सब से आश्चर्यजनक तो उसकी अत्यधिक सदिग्ध सावधानी थी।

जैनरो ने कहा, "मैं मारकिस जैनरो हूँ, क्या यह आपका यान है श्रीमान् ?"

"हाँ !" उसने धीरे-से खिचे-से स्वर मे उत्तर दिया।

जैनरो ने उस पर ध्यान न दिया। उसने अपना सिर पीछे कर यान को बडे गौर से देखा, फिर अपने मुँह से सिगरेट निकाल ऊपर उछाल दी, जो हवा मे ही बुझ गई।

जैनरो ने कहा, "यदि बुरा न माने तो क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ ?"

दूसरा मनुष्य कुछ हिचका, फिर एक ओर को हो गया। जैनरो अन्दर घुस गया। उसने पूछा, "इस यान मे कौन-सी मोटर लगी है ?"

"आप का मतलब ?"

जैनरो एक लम्बा पुरुष था। उसकी आँखे और शरीर का रग काला था। उसके बाल कडे व छोटे कटे हुए थे। वह दूसरे मनुष्य से लगभग छः इच ऊँचा था। उसके दाँत सफ़ेद तथा सुन्दर थे। उसने कहा, "सच पूछिये तो मैं एक यान खरीदना चाहता हूँ।"

"तुम्हारा मतलब, तुम इसको ही लेना चाहते हो ?"

"बिल्कुल यही तो नही, पर कुछ-कुछ इसी तरह का, यदि सौदा पट जाय तो। क्या मैं इसके कट्रोल व ऐंजिन देख सकता हूँ ?"

पहला महानुभाव वहाँ चुपचाप खडा रहा।

जैनरो ने ज़रा उखडती-सी आवाज़ मे कहा, "जैसी आपकी इच्छा!" और एक ओर को चल दिया।

तब वह महानुभाव बोला, "शायद मैं ही बेच दूँ।" और फिर अपनी जेब से लाइसेस निकाल कर कहा, "यह रहा इसका लाइसेंस।"

जैनरो ने अनुभवी आँखो से लाइसेस को दोनो ओर से देख कर कहा, "तो आप ही डिमोन है?"

महानुभाव ने सिर हिला स्वीकार करते हुए कहा, "यदि चाहो तो अन्दर आ सकते हो।"

जैनरो ने बडी-सी पोर्ट-घडी की ओर देखा, उसकी सुइयाँ दिन-जैसी रोशनी मे भी खूब चमक रही थी और सध्याकाल का दूसरा प्रहर दिखा रही थी।

"धन्यवाद! क्या आप आगे-आगे नही चलेगे?"

महानुभाव ने अपनी जेब फिर टटोली और फिर चाभी का गुच्छा जैनरो को देते हुए कहा, "पहले आप।"

जैनरो ने चाभियाँ ले ली, प्रत्येक चाभी को देखा और यान का चिह्न खोजने लगा। दूसरे मनुष्य ने उसकी तनिक भी सहायता न की। अंत मे उसने कहा, "यह है शायद?"

वह ढलान पथ द्वारा वायु-पाश कोष्ठ तक गया। वहाँ उसने दाईं ओर के किनारे भली भाँति देखे और कहा, "मिलता नही," फिर कोष्ठ के दूसरी ओर बढा।

धीरे-धीरे कोष्ठ खुल गया और जैनरो अँधेरे मे ही अन्दर घुसा। जैसे ही उनके पीछे का द्वार बद हुआ, कोष्ठ मे स्वयं ही लाल प्रकाश फैल गया और अन्दर का दरवाज़ा स्वय ही खुल गया। उन लोगो के यान में प्रवेश करते ही सारे यान मे दिन-जैसा उजाला फैल गया।

मारलीन्स टेरेन्स और कर भी क्या सकता था! अब तो उसे वह

समय भी याद नही था जब वह अपनी इच्छानुसार कुछ कर सकता था। वह तीन घटे से डिमोन के यान के आस-पास चक्कर लगा रहा था। वह यान को खोलना तक न जानता था, अत वह यान मे घुस तक न सकता था। वह स्वयं ही कुछ हो जाने की प्रतीक्षा कर सकता था। पर अभी तक तो कुछ हुआ नही था। हो भी क्या सकता था! अब तो केवल उसका बदी हो जाना भर शेष रह गया था।

और फिर यह मनुष्य आ गया। उसे यान पसन्द आ गया था। उससे किसी प्रकार का भी व्यवहार करना एक उन्मत्तता ही तो थी। वह इतने निकट से अपनी छल-भरी योजना चालू न रख पायेगा। पर वह सारे समय बाहर भी तो नही रह सकता था।

शायद यान के भीतर भोजन भी रखा मिल जाय। अभी तक उसे यह क्यो नही सूझा था। और वहाँ भोजन था भी।

टेरेन्स ने कहा, "भोजन का समय हो रहा है। क्या आप कुछ खाना पसन्द करेंगे ?"

दूसरे ने बिना उस ओर देखे उत्तर दिया, "धन्यवाद! फिर बाद में।"

टेरेन्स ने अधिक अनुरोध भी नहीं किया। वह यान पर चारो ओर घूमना छोड खाने पर जुट गया। वहाँ पका-पकाया गोश्त तथा सेलूलाइड मे लिपटे फल रखे थे। शीतल जल भी था जिसको पीकर उसने देर से लगी प्यास को शात किया। रसोई के पास ही गलियारे मे स्नानगृह था। वहाँ फव्वारा लगा हुआ था। सो उसने द्वार बद कर लिया और फिर खूब नहाया। खोपडी की तग टोपी उतार कर उसे बडी शाति मिली, चाहे थोडी देर के लिए ही सही, और वही उसे एक अलमारी मे बदलने के लिए कपडे भी मिल गये।

जैनरो के पास लौटने तक वह पूर्ण स्वस्थ हो चुका था।

जैनरो ने कहा, "यदि मैं इस यान को उड़ा कर देखूँ तो आप बुरा तो न मानेंगे ?"

"नही, बिल्कुल नही ! मुझे कोई आपत्ति नही है। पर क्या आप इस माडल के यान को उडा सकते है ?" टेरेन्स ने बडी लापरवाही से पूछा।

"हां ! शायद !" जैनरो ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया, "मैं हर प्रकार के यान को उडा सकने का दावा करता रहा हूँ। मैं कट्रोल-मीनार को फोन करके उडने वाले गर्त का आरक्षण कराने की धृष्टता पहले ही कर बैठा हूँ। यदि विश्वास न हो तो मेरा चालक-लाइसेस देख ले।" यह कह कर उसने अपना लाइसेंस टेरेन्स को दिया।

टेरेन्स ने उस पर उडती दृष्टि डाल कर उसे वापस कर दिया। "अब कट्रोल आपके है।" उसने कहा।

हवा मे उडती व्हेल की भाँति वह राकेट यान अपने हैंगर से निकला, उसका डायामैगनेटिक हल अपने चारो ओर की मिट्टी को तीन-तीन इच तक उखाडता चला गया।

टेरेन्स ने देखा कि जैनरो एक अत्यत अनुभवी की भाँति उस यान का चालन कर रहा है। उसके छूने मात्र से ही मानो वह यान जीवित हो उठा हो। दृष्टि-प्लेट पर, जो अब तक अड्डे का प्रतिबिंब बना हुआ था, प्रत्येक झटके और उसकी गति के साथ परिवर्तित हो रहा था।

यान उडने वाले गर्त के किनारे आ कर रुक गया। डायामैगनेटिक शक्ति बराबर वायुयान के अग्रभाग की ओर बढ रही थी और अब उसको ऊपर की ओर उठाने लगी थी। टेरेन्स को इसकी कोई खबर न थी। पाइलट-कोष्ठ अपने-आप ही गुरुत्वाकर्षण से घूम गया। अब यान का पिछला भाग गर्त मे फिट हो गया और यान आकाश की ओर मुँह उठा कर खडा हो गया।

उडन-गर्त का मज़बूत कवर अब उठ गया था और १०० फीट गहरी तटस्थ लाइनिंग दृष्टिगोचर होने लगी थी, जो कि अति आणविक मशीनो के पहले धक्के को सम्हाल लेती थी।

जैनरो लगातार कट्रोल-मीनार से अदृश्य सूचना-विनिमय कर रहा था और अंत मे उसने कहा, "उड़ान आरम्भ होने मे १० सेकड और हैं।"

एक ट्यूब मे लाल धागा इन दस सेकडो को मापता जाता था। आखिर सम्पर्क स्थापित हुआ और मोटर शक्ति ने पीछे को धक्का दिया।

टेरेन्स का भार बढता गया। मानो वह कुर्सी मे धँसता जा रहा हो। वह एकदम घबरा गया।

उसने घबरा कर पूछा, "कैसी लगी इसकी चाल ?"

जैनरो इस गति-परिवर्तन की ओर से बेखबर था और उसका स्वर पूर्ण रूप से स्वस्थ था। "काफी अच्छी है," उसने कहा

टेरेन्स अपनी कुर्सी पर पीठ टिका कर बैठ गया। उसने थोडा आराम करने का प्रयत्न किया। पर इस दबाव के कारण असमर्थ ही रहा।

जैसे-जैसे उनके और तारो के बीच का वायुमडल हटता गया, उसने तारो की बढती चमक दृष्टि-प्लेट पर देखी। टेरेन्स के बदन का काइट पसीने से भीग चुका था।

अब वे लोग अन्तराल मे उड़ रहे थे। जैनरो यान को भिन्न-भिन्न प्रकार से चला कर देख रहा था। टेरेन्स तो इस विषय से कतई अनभिज्ञ था। वह दृष्टि-प्लेट पर एक तारे को आते और फिर जाते देखता रहा। चालक की उँगलियाँ कण्ट्रोल पर ऐसे घूम रही थी जैसे एक सगीतज्ञ की अपने वाद्य यत्रो पर। अत मे दृष्टि-प्लेट पर नारगी रग के किसी ग्रह का भाग दिखाई देने लगा था।

"बहुत बढिया !" जैनरो ने कहा, "डिमोन, आपने अपना यान बडी अच्छी तरह रख रक्खा है। यह है तो छोटा-सा, पर बढिया है।"

टेरेन्स ने सावधानी से कहा, "सम्भवतः आप इसकी गति तथा कूदने की शक्ति की भी परीक्षा करना चाहेगे। मुझे इसमे भी कोई आपत्ति

नही है। आप शौक से ऐसा कर सकते हैं।"

जैनरो ने सर हिलाया, "अच्छा तो आपकी क्या राय है ? कहाँ चले ? अच्छा..." वह कुछ सोच फिर बोला, "चलिये सार्क ही चले।"

टेरेन्स की साँस तेजी से चलने लगी। उसे इस बात की आशका पहले से ही थी। वह अब तक जैसे किसी जादू के ससार मे घूम रहा था। कैसे-कैसे वह प्रत्येक कार्य, जो उसने किया, करने को बाध्य होता गया। बहुत से कार्य तो उसकी योजना मे थे भी नही। उसे ऐसा प्रतीत होता था, मानो जो कुछ हो रहा है, कोई अज्ञात शक्ति उसे उसकी ओर धकेल रही है। इतने मे ही उसके ध्यान मे आया कि सार्क पर ही तो रिक भी होगा। उसकी स्मृति वापस लौट रही होगी। अच्छा तो फिर सारा खेल अभी समाप्त नही हुआ है और उसने एकदम कहा, "हाँ ! हाँ ! क्यो नही ? चलिये वही चलिये।"

जैनरो ने कहा, "तो फिर सार्क ही चलते है ?"

जैसे-जैसे गति तीव्र होती गई, फ्लोरीना दृष्टि-प्लेट से ओझल होता गया और फिर से तारे दिखाई देने लगे।

"आपको फ्लोरीना-सार्क से यहाँ तक कम-से-कम कितना समय लगा है ?" जैनरो ने पूछा।

"कोई विशेष नही ! मैंने कोई रेकार्ड थोडे ही तोड़ा है ?" टेरेन्स ने कहा, "यही साधारण तौर पर जितना लगता है।"

"तो फिर आपने छः घण्टे के लगभग मे ही किया है ?"

"हूँ !"

"यदि मैं पाँच में ही करने का प्रयत्न करूँ, तो आपको आपत्ति तो न होगी ?"

"नही ! एकदम नही !" टेरेन्स ने कहा।

अन्तराल मे कूदने की स्थिति मे पहुँचने मे ही घण्टे लग गए। टेरेन्स के लिए जागते रहना एक यत्रणा हो गई थी। वह तीन रात से नही सोया था। और उसके दिन भी तो स्नायविक उत्तेजना व दबाव मे ही

कटे थे, इस कारण निद्रा का अभाव और भी खटक रहा था।

जैनरो ने उसकी ओर कनखियो से देख कर कहा, "क्या बात है ? सो क्यो नही जाते ?"

टेरेन्स ने अपने थके हुए चेहरे पर ताजगी लाने का प्रयत्न करते हुए कहा, "नही ! कोई बात नही।"

उसने जम्हाई ली और थोडा-सा मुस्कराया। चालक फिर अपने यत्रो से उलझ गया और टेरेन्स की दृष्टि फिर उस पर जम गई।

यान की सीट आवश्यकतानुसार ही सुखद बनाई जाती है। तीव्र गति-परिवर्तन को सह सकने के लिए ही उसमे स्प्रिगें लगाई जाती हैं। एक आदमी को चाहे वह अधिक थका हुआ न भी हो उन सीटो पर बैठ कर नीद आ जाती है; और फिर टेरेन्स तो उस समय काँटो पर भी सो सकता था, सो उसको यह पता ही न लगा कि वह कब स्वप्नलोक मे विचरण करने लगा।

वह घण्टो सोता रहा। ऐसे गधे-घोडे बेचकर वह अपने जीवन मे कभी भी न सोया होगा।

उसके सिर से टोपी भी उतार ली गई, तब भी उसने करवट न बदली। इतनी गहरी नीद मे सोया था वह।

टेरेन्स की नीद जिस समय खुली तो उसे कुछ अस्पष्ट-सा दिखाई देना आरम्भ हुआ। काफी समय तक तो उसकी यही समझ मे नही आया कि वह कहाँ था। वह सोच रहा था कि वह अपने मुखिया वाले घर मे ही पड़ा सो रहा है। धीरे-धीरे उसके सम्मुख स्थिति स्पष्ट होती गई। आखिरकार वह जैनरो की ओर, जो अभी भी कण्ट्रोल पर ही बैठा हुआ था, मुँह करके मुस्करा दिया और बोला, "मुझे कुछ नीद आ गई थी।"

"हाँ ! शायद तुम अच्छी तरह सो लिये। लो, सार्क भी आ गया।" उसने दृष्टि-प्लेट पर अकित सफेद आधे गोले की ओर सकेत करते हुए कहा।

"हम लोग कब तक उतरेंगे ? "

"लगभग एक घण्टे मे।"

टेरेन्स अब तक काफी जाग चुका था, और उसे जैनरो का बदला हुआ व्यवहार साफ पता लग रहा था। उसके हाथ मे जो लोहे की वस्तु थी, अब साफ तौर से सुई-बन्दूक दिखाई देने लगी थी। यह देख उसे एक जबरदस्त धक्का लगा।

"अन्तराल की सौगध ···· " टेरेन्स ने उठते हुए कहा।

"बैठे रहो!" जैनरो ने धमकी दी। उसके हाथ मे टेरेन्स की टोपी थी।

टेरेन्स ने हाथ उठा कर जो अपने सिर को छुआ, तो पकड में उसके सुनहरे बाल ही आये।

"जी हाँ!" जैनरो ने कहा, "प्रत्यक्ष है कि तुम एक फ्लोरीनी हो।"

टेरेन्स ताकता ही रह गया। उसने कुछ भी न कहा।

"मुझे तो डिमोन के यान मे घुसने से पहले ही पता लग गया था कि तुम एक आदिवासी हो," जैनरो ने फिर कहा।

टेरेन्स का चेहरा सफेद हो गया था—उसके नेत्र जलने लगे थे। वह बदूक के छोटे से छेद को देख रहा था। वह इतनी दूर · इतनी दूर तक आकर बाजी हार गया था।

जैनरो भी किसी जल्दी मे प्रतीत नही होता था। वह सावधानी से बदूक थामे हुए था और धीरे-धीरे सतुलित शब्दो मे बातें कर रहा था।

"मुखिया तुम्हारी मुख्य भूल इसी मे थी कि तुम यही सोचते रहे कि इतनी बडी सतरी-व्यवस्था को तुम आसानी से चरका दे सकते हो। उस पर और भी बड़ी भूल यह हुई कि शिकार के लिए तुमने डिमोन को चुना।"

"मैंने उसको नही चुना था।" टेरेन्स ने कहा।

"तब फिर उसे भाग्य का खेल ही कहो। आलस्टेर डिमोन १२ घटे पहले शहर के उद्यान मे खडा अपनी पत्नी की प्रतीक्षा कर रहा था।

केवल भावुकता के अतिरिक्त और कोई कारण उन दोनो के वहाँ मिलने का न था। वे सब से पहले उसी स्थान पर मिले थे। उन बातो का कोई विशेष अर्थ नही होता; पर कभी-कभी पति-पत्नी पुन: ऐसा करते ही है और वे बाते उनके लिए बहुत कुछ महत्व भी रखती ही है। वैसे तो डिमोन को क्या ज्ञात था कि उस स्थान का एकान्त ही उसका काल हो जायगा। एक हत्यारे के लिए वही सबसे उपयुक्त स्थान होगा। और फिर ऊपरी शहर मे ऐसा होने की सम्भावना भी किसे हो सकती थी।

साधारणत तो इस हत्या का पता कई दिन तक भी न लगता। परन्तु, डिमोन की पत्नी आधे घटे के भीतर ही घटनास्थल पर पहुँच गई। उसे अपने पति को वहाँ न पाकर बडा अचम्भा हुआ। उसे अक्सर देर हो जाती थी, पर उसका पति कभी भी गुस्सा हो कर वहाँ से गया नही था। उसने सोचा, शायद उसका पति उनकी अपनी कदरा मे ही प्रतीक्षा कर रहा हो।

"डिमोन उसी कदरा के सामने खडा प्रतीक्षा कर रहा था। आक्रमण-स्थल के अत्यन्त निकट होने के कारण उसको उसी मे घसीट कर डाल दिया गया था। उसकी पत्नी गुफा मे घुसी तो उसने देखा। यह तो तुम्हे मालूम ही है कि उसने क्या देखा होगा। खैर, किसी प्रकार उसने सुरक्षा विभाग को सूचना दी; यद्यपि वह उस समय शोक से पागल जैसी हो रही थी।

"मुखिया, तुम्ही बताओ किसी मनुष्य की नृशंस हत्या होना और फिर उसकी पत्नी का लाश को उसी स्थान पर पडे पाना, जहाँ के लिए दोनों के हृदयो मे अत्यन्त सुखद स्मृतियाँ थी, कैसा लगता होगा?"

टेरेन्स का दम घुटने लगा। वह कुछ हताश-सा क्रोध से तमतमा कर बोला, "तुम सार्कियो ने भी इसी प्रकार से न जाने कितने फ्लोरीना-वासियो की हत्यायें की होगी—उनकी औरतो की तथा उनके बच्चो की भी। तुम लोग हमारा लहू पी-पी कर ही तो धनी हुए हो। यह

यान ...." वह इतना ही कह पाया था।

"डिमोन इन सबके लिए उत्तरदायी न था। जो कुछ उसे जन्मसिद्ध अधिकार के रूप मे मिला, उसे वह छोड थोडे ही देता! यदि तुम सार्क में पैदा हुए होते तो तुम क्या करते? क्या अपना धन छोड कर काईट के खेतो मे काम करने चल देते?"

"तो फिर बदूक चलाओ," टेरेन्स ने आतुरता से कहा, "किस बात की प्रतीक्षा कर रहे हो?"

"ऐसी क्या जल्दी है? मुझे अपनी कहानी तो समाप्त कर लेने दो। हम लोगो को यह पता नही था कि यह मृत शरीर किसका है और हत्यारा कौन है, पर अनुमान डिमोन तथा तुम पर ही था। पास मे सतरी-वर्दी के राख के ढेर से यह भी पता चल गया था कि तुम सार्की-वेश मे हो। उसके पश्चात् अत्यधिक सम्भावना यही थी कि तुम डिमोन के यान पर ही जाओगे। हम लोगो को एकदम मूर्ख मत समझो मुखिया!"

"पर समस्या अब भी बडी उलझी हुई थी। तुम एक हताश और उद्दण्ड पुरुष थे। तुम्हारा पता लगा लेने से ही काम नही बनता था। तुम्हारे पास अस्त्र थे और पकडे जाने पर तुम अवश्य ही आत्महत्या का प्रयत्न करते। यह हम लोग नही चाहते थे। वह तुम्हे सार्क पर जीवित ही चाहते हैं।

"यह मेरे लिए आसान कार्य न था। इस कारण सुरक्षा-विभाग को इस बात का विश्वास दिलाने मे कि मैं अकेला ही इस कार्य को कर सकता हूँ, और बिना किसी उपद्रव के ही तुमको सार्क पर पहुँचा सकूँगा, बडी कठिनाई हुई। यह तो तुम भी मानोगे कि मैं अपने कार्य मे पूर्ण रूपेण सफल हुआ हूँ।

"सच पूछा जाय तो आरम्भ मे तुम्हारे अपराधी होने मे मेरे मन में संदेह था। तुम दैनिक वस्त्रो मे अड्डे पर घूम रहे थे, यह बडी ही बेहूदा-सी बात थी। मेरे विचार मे कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति चालक का वेश बिना वर्दी के नही भरेगा। इसी से तुम्हे देख कर एक बार तो मन मे विचार

उठा कि कही तुम्हे धोखा देने और जान बूझ कर पकडे जाने के लिए तो नही रखा गया जब कि असली अपराधी कही और भाग गया हो।

"मै हिचकिचाया, और दूसरी तरह तुम्हारी परीक्षा की। मैंने यान की चाभी उल्टी जगह लगाई। अब तक यान जो भी बने है कोई भी दाईं ओर चाभी लगाने से नही खुलता है, सब बाईं ओर से ही खुलते हैं। तुम मेरी भूल पर चकित नही हुए, ज़रा भी नही। फिर जब मैंने तुम से पूछा कि तुम्हारे यान ने सार्क-फ्लोरीना राह छ: घण्टे मे भी तय की है, तो तुमने हाँ मे उत्तर दिया था। इसमे भी तुमने भूल की; क्योंकि रेकार्ड समय ही ६ घटे है।

"मैंने निश्चय किया कि तुम धोखा दे रहे हो। अनभिज्ञता बहुत अधिक थी। तुम्हे अनभिज्ञ ही होना भी चाहिए था और सम्भवत: इसी कारण तुम्ही वह व्यक्ति थे। अब प्रश्न केवल तुम्हारे सोने का रह जाता था। प्रत्यक्ष था कि तुम्हे नीद की अत्यधिक आवश्यकता थी। उसके बाद तुम्हे निहत्था करके पकड लेना अत्यन्त सरल था। मैंने तुम्हारी टोपी तो केवल कौतूहलवश ही उतारी थी। मैं देखना चाहता था कि सार्की-लिबास सुनहरे बालो पर कैसा लगता है।"

टेरेन्स की दृष्टि जैनरो के कोडे पर जमी हुई थी। जैनरो ने शायद उसके मन की बात भाँप कर कहा, "यह अवश्य है कि चाहे तुम मुझ पर आक्रमण भी कर दो, फिर भी मैं तुम्हारी हत्या न करूँगा। तुम मेरी ओर बढे नहीं कि मैंने तुम्हारी टाँग मे गोली मारी नही।"

टेरेन्स बेचारा लाचार होकर रह गया। वह हाथों मे सिर पकड़ कर बैठ गया।

जैनरो ने धीरे से कहा, "तुम्हे मालूम है, यह सब तुमको क्यो बतला रहा हूँ?"

टेरेन्स ने कोई उत्तर न दिया।

जैनरो ने कहना आरम्भ किया, "पहले तो तुम्हे कष्ट पाते देख मेरा मन मुदित हो उठता है। मुझे हत्यारे ज़रा भी पसद नहीं और उस पर

एक आदिवासी जो सार्की की हत्या करे। मुझे तुम्हे जीवित पहुँचाने भर की ही आज्ञा मिली है। तुम्हारी यात्रा सुखद बनाने की नही। दूसरे, तुम्हे स्थिति का सम्पूर्ण ज्ञान सार्क पर उतरने से पहले ही हो जाना चाहिए, क्योकि उसके बाद का कार्य तुम्हे ही करना होगा।"

टेरेन्स ने ऊपर देख कर कहा,

"सुरक्षा-विभाग को मालूम है कि तुम आ रहे हो। फ्लोरीना के कार्यालय से जैसे ही यह यान उडा था, उनको सूचना दे दी गई होगी। तुम इससे निश्चिन्त रहो। परन्तु मैंने तुम्हे बताया ही है कि सुरक्षा-विभाग को यह विश्वास दिलाना कि मैं अकेले ही इस कार्य को कर सकता हूँ, अत्यन्त आवश्यक था, और मै ऐसा करने मे सफल हो सका, यही सबसे मुख्य बात है।"

"मै नही समझा।" टेरेन्स ने कहा

जैनरो ने उत्तर दिया, "मैंने कहा था न कि वह तुमको जीवित ही सार्क पर चाहते है। 'वह' से मेरा तात्पर्य सुरक्षा-विभाग से नही था, मेरा मतलब था ट्रानटर से।"

: १४ :

विश्वासघाती

सलीम जुंज वैसे तो कभी अकर्मण्य नही रहे थे, पर इस नैराश्य भरे वर्ष ने भी उनकी इस प्रकृति को बदलने मे ज़रा भी सहयोग न दिया, विशेष कर उस समय भी जब कि उनका मानसिक सतुलन ढहती नीव पर ही निर्भर था, वह कभी भी चुपचाप बैठ कर प्याले पर प्याले नही चढा सकते थे। सक्षेप मे वह लुडिगन आबेल नही थे।

उनके क्रोधित होकर चिल्लाने व बडबडाने पर, कि ट्रानटर के गुप्तचरो का इतना जाल फैला होने पर भी सार्क एक अन्तराल-ब्यूरो के कर्मचारी को भगा ले जा सकता है, आबेल ने केवल इतना ही कहा था, "मेरे विचार मे आज की रात्रि यही व्यतीत करे डाक्टर।"

जुंज ने क्रोधपूर्वक कहा था, "मुझे और भी कार्य करने है।"

आबेल ने उत्तर दिया, "बेशक! बेशक! फिर भी यदि मेरे कर्मचारियो की विस्फोटक द्वारा हत्या की जा रही है तो सचमुच सार्क की धृष्टता बढती ही जा रही है। सम्भव है, रात्रि समाप्त होते-होते आप भी किसी दुर्घटना के शिकार हो जाये। एक रात प्रतीक्षा ही कर देखिये कि अगली सुबह क्या-क्या रग खिलाती है।"

इस अकर्मण्यता के प्रतिवाद का फल कुछ भी न निकला। आबेल

की शाति किसी प्रकार भी कम न हुई। अचानक ही वह ऊँघा भी सुनने लगे, और जु ज दृढता के साथ नम्रतापूर्वक एक कमरे मे भेज दिये गये।

अपने बिस्तरे पर लेट कर वह उस चमचमाती चित्रित छत की ओर देखने लगे जिस पर लेन हेडन का चन्द्रमाओ का युद्ध अकित था। उन्हे लगा, मानो वह सो सकने मे असमर्थ है। फिर उन्हे एकाएक सोने वाली गैस की सुगध आई और दुबारा उस सुगध को सूँघ पाने के पहले ही वह गहरी निद्रा मे निमग्न हो गये। पाँच मिनट पश्चात् जब ताज़ा हवा के झोको ने कमरे की दूषित वायु को साफ किया, तो वह इतनी गैस सूँघ चुके थे कि रात भर आराम से सो सके।

भोर के शीतल और धुँधले प्रकाश मे किसी ने उनको जगाया और जब उन्होने आँखे खोली तो आबेल को सम्मुख पाया।

"क्या समय है ?" उन्होने पूछा।

"छः।"

"हे अन्तराल !" उन्होने अपनी चादर उतार फेकी, "आप बडी जल्दी उठ गये ?"

"मैं सोया ही नही।"

"क्या !"

"विश्वास करिये मैं नीद की कमी, अब भी अनुभव कर रहा हूँ। युवा-अवस्था की भाँति नीद की दवा अब मेरे ऊपर असर नही करती।"

जुंज ने कहा, "मैं अभी कुछ मिनट मे आता हूँ।"

आज जु ज को प्रात-कार्यों से निवृत्त होने मे कुछ मिनट से अधिक देर नही लगी। वह अपनी पेटी बाँधते हुए तथा चुम्बकीय यत्र को ठीक करते हुए कमरे मे घुसे।

"अच्छा !" उन्होने कहा, "आप न तो व्यर्थ ही सारी रात जागेगे और न मुझे ही छ. बजे जगायेगे। कहिये, क्या समाचार है ?"

"आप ठीक कहते है। आप ठीक ही कहते है।" आबेल जुंज के बिस्तर पर बैठ गये और बडे ज़ोर से हँसे। यह हँसी बडे ज़ोर की थी

और उनकी प्लास्टिक-चढी बत्तीसी साफ दिखाई दे रही थी।

"मुझे क्षमा करना जुंज" उन्होने कहा, "आज मै आपे मे नही हूँ। दवाइयो द्वारा जागते रहने के कारण मेरा मस्तिष्क कुछ रिक्त-सा हो रहा है। मैं सोचता हूँ कि मैं ट्रानटर से कह कर अपने स्थान पर किसी कम अवस्था वाले व्यक्ति की नियुक्ति कराऊँगा।"

"जुंज ने व्यग-पूर्ण साथ ही आशा-भरे स्वर मे कहा, "तो अब आपको पता चल गया कि अन्तराल-विशेषज्ञ की सार्क के पजे मे होने की सूचना गलत है। क्यो ?"

'नही, यह बात नही है। मुझे अत्यत खेद है कि वह अभी भी उन्ही के पजे मे है। मुझे जो इतनी हँसी आ रही है वह केवल इसी बात पर है कि हमारा जाल अब भी पूर्ण रूप से सुरक्षित है।"

जुंज की इच्छा हो रही थी कि कहे 'भाड मे जाय आपका जाल', पर उन्होने सयम से काम लिया।

आबेल कहते गये, "इसमे कोई सदेह नही कि उन्हे यह ज्ञात था कि खुरोव हमारा ही आदमी है। फ्लोरीना के और गुप्तचरो के विषय मे भी शायद उनको मालूम हो। परन्तु बाकी तो महत्त्वहीन लोग है। सार्कियो को भी इस बात का पता है, इससे उन पर कडा पहरा रखने के अलावा उन्होने कभी कुछ न किया था।"

"उन्होने एक की तो हत्या की ?" जुंज ने पूछा।

"नही ! उन्होने नही की," आबेल ने उत्तर दिया, "वह अन्तराल-विशेषज्ञ का ही एक साथी है जिसने सतरी के वेश मे उसकी हत्या की है।"

"मैं समझा नही।" जुंज ने कहा।

"यह बडी उलझी हुई कथा है। चलो, कुछ जलपान कर ले। मेरे पेट मे तो चूहे कूद रहे है।"

काफी पीते-पीते आबेल ने पिछले ३६ घटो की पूरी कथा जुंज को कह सुनाई।

जु ज चकित रह गए थे। उन्होने अपना काफी का प्याला आधा ही छोड दिया, और फिर उसको मुँह न लगाया, "यदि यह मान भी लिया जाय कि समस्त यानो को छोड वह उसी यान मे छिपे है, फिर भी यह भी तो हो सकता है कि उनका पता ही न चले। यदि आप इस जहाज पर उतरते समय तलाशी के लिए आदमी भेजे तो ... "

"बेकार ! आप तो स्वय भी जानते है कि कोई भी आधुनिक यान अति शारीरिक ताप मापने मे असफल नही हो सकता।"

"शायद वे लोग देखना ही भूल जायँ। मशीनो से तो भूल नही होती, पर मनुष्य तो भूल कर सकते है।"

"क्यो मन के लड्डू लुढका रहे है ! सुनिये, अन्तराल-विशेषज्ञ को लिये जिस समय यान सार्क के निकट पहुँच रहा था, उस समय, हमे विश्वस्त सूत्र से पता लगा है, फाइफ का महानुभाव अन्य प्रमुख महानुभावो के साथ परामर्श कर रहा था। जानते है, साधारणतः इन अतर-तारकीय महाद्वीपी सभाओ के बीच का समयान्तर उतना ही होता है जितना कि नीहारिका के नक्षत्रो का। क्या यह केवल एक सयोग ही है ?"

"एक अन्तराल-विशेषज्ञ के लिए अन्तर-महाद्वीपी सभा !"

"स्वयं अपने मे यह एक महत्त्वहीन विषय अवश्य है। परन्तु हम लोगो ने उसे महत्त्वपूर्ण बना दिया है। अन्तराल-विश्लेषण ब्यूरो एक वर्ष से निरतर उसकी खोज मे लगा है।"

"अन्तराल-ब्यूरो नही श्रीमान्," जु ज ने कहा, "केवल मैं ही, वह भी अपनी निजी स्थिति मे।"

"उन महानुभावो को यह मालूम थोडे ही है, और अब यदि आप बतलायेंगे भी तो क्या वे आपका विश्वास कर लेगे ? फिर ट्रानटर भी तो इसमे हस्तक्षेप कर रहा है।"

"वह भी मेरी प्रार्थना पर ही ?"

"वे इससे भी अनभिज्ञ हैं और न ही अब उसका विश्वास

करेंगे ।"

जुंज अपनी कुर्सी से उठ खड़े हुए । उठते ही उनकी कुर्सी स्वय ही पीछे खिसक गई । कमर पर हाथ रखे वह कालीन पर चक्कर लगाने लगे । इधर से उधर—उधर से इधर । पर कभी-कभी वह आबेल पर कडी दृष्टि अवश्य डालते जाते थे ।

आबेल ने शातिपूर्वक काफी का दूसरा प्याला बनाया ।

जुंज ने पूछा, "आपको यह सब कैसे मालूम हुआ ?"

"क्या सब ?"

"सभी कुछ । कब और कैसे अन्तराल-विशेषज्ञ यान मे छुपा । कब और कैसे मुखिया बंदी बनने से बचता रहा । क्या आप मुझे धोखा दे रहे हैं ?"

"प्रिय डा० जुंज...... ... ..!"

"यह आप स्वीकार कर ही चुके हैं कि मेरे बिना कहे भी आपने अन्तराल-विशेषज्ञ के पीछे अपने गुप्तचर लगा रखे थे । आपने इस बात को भी निश्चित कर लिया था कि रात मे मैं आपकी राह मे न आऊँ । कोई भी बात आपने सयोग पर नही छोडी थी ।" जुंज को अचानक ही रात की गैस का ध्यान आ गया था ।

"डाक्टर ! कल सारी रात मैंने अपने कुछ गुप्तचरो से वार्तालाप करने मे ही व्यतीत की है । जो कुछ मैंने किया या जो कुछ मुझे ज्ञात हुआ, उसकी गणना राजकीय कार्यों में की जायगी । आपको इन सब झगडो से अलग व सुरक्षित रखना ही मेरा ध्येय था । मैंने आपको जो कुछ भी बताया, वह रात गुप्तचरो द्वारा ही मुझे मालूम हुआ था ।"

"जो कुछ आपको पता लगता है, उसको जानने के लिए भी तो सार्की सरकार में आपके गुप्तचरो का होना अनिवार्य है ।"

"हाँ ! यह तो स्वाभाविक ही है ।"

जुंज ने एक और पासा फेंका, "तो फिर ?"

"क्या आपको यह जान कर अचम्भा हो रहा है ? यह अवश्य है सार्की-

अधिकारियों की देश-भक्ति व सरकार की दृढता नीहारिका भर मे प्रसिद्ध है। इसका कारण भी अत्यन्त साधारण है। यहाँ प्रत्येक सार्की एक फ्लोरीनी की तुलना मे राजा है और स्वय को अधिकारी-वर्ग मे गिनता है।

"फिर भी तनिक सोचिये, सार्क के पास, जैसा नीहारिका मे समझा जाता है, कोई अरबो की सम्पत्ति तो है नही। एक वर्ष यहाँ रहने के पश्चात् आपको भी यह पता लग गया होगा। यहाँ की ८० प्रतिशत आबादी का रहन-सहन दूसरी दुनिया के लोगो की ही भाँति है और किसी किसी का तो फ्लोरीना-वासियो से जरा भी ऊँचा नही है। इस कारण इस ससार मे से भी कुछ मनुष्य तो ऐसे मिल जायेंगे जो इन लोगो के ऐश्वर्यशाली रहन-सहन से चिढ कर हम लोगो की सहायता करने को तैयार हो जायेंगे।

"सार्की-सरकार की सबसे बडी कमजोरी यह है कि वह सदियो से विद्रोह को फ्लोरीना से सम्बधित करती रही है। वह अपने ऊपर दृष्टि-पात करना तो प्राय: भूल ही गई है।"

जुंज ने कहा, "ये छोटे-छोटे सार्की, यदि इनकी उपस्थिति मानी भी जाय, आपका क्या भला कर सकते है?"

"व्यक्तिगत रूप से कुछ नही। परन्तु सामूहिक रूप में वह हमारे महत्त्वपूर्ण मनुष्यो के लिए अच्छे कार्यकर्ता सिद्ध होते हैं। साथ ही अधि-कारी-वर्ग मे भी कुछ लोग ऐसे है जो पिछली दो शताब्दियो से इस पाठ को कठस्थ किये हैं कि अन्त मे नीहारिका पर ट्रानटर का ही राज्य होगा। मेरे विचार से यह ठीक भी है। वे तो यहाँ तक सोचते हैं कि उनके जीवन-काल मे ही ऐसा हो जायगा और वह विजयी लोगो के पक्ष में अभी से हो जाना चाहते हैं।"

जुंज ने चिढे-से स्वर मे कहा, "आपके शब्दो से अन्तर-नीहारिका राजनीति बडी दूषित मालूम होती है।"

"दूषित तो होती ही है। पर नीचता से घृणा करके ही तो नीचता

को दूर नही किया जा सकता । और न ही राजनीति के सारे पहलू दूषित ही होते हैं। आदर्शवादियो को ही लीजिए। सार्की-सरकार मे कुछ ऐसे मनुष्य भी तो है जो ट्रानटर की सहायता न तो पैसे के लिये करते है और न विजयी पक्ष मे होने के लिए, पर वे सचमुच इसमे विश्वास करते हैं कि नीहारिका का कल्याण एकत्व-अधिकार स्थापित करने से ही हो सकता है, और इस कार्य को केवल ट्रानटर ही कर सकता है। मेरे पास एक आदमी ऐसा है, मेरा सबसे उतम गुप्तचर, सार्क के सुरक्षा विभाग का कर्मचारी है, और इस कारण वह मुखिया को यहाँ ला रहा है।'

जुंज ने कहा, "आपने तो कहा था कि वह पकडा गया ?"

"हाँ ! सुरक्षा विभाग द्वारा ही न, सुरक्षा-विभाग और मेरा आदमी एक ही है।" कुछ देर आबेल सोचते रहे और फिर बोले, "इस कार्य के बाद उसकी उपयोगिता शायद कम हो जाय, क्योकि यदि उसने मुखिया को भागने का अवसर दे दिया तो कम से कम वह अपने पद से तो उतार ही दिया जायगा, नही तो बदी बना लिया जायेगा। खैर, जो कुछ भी हो।"

"अब आप क्या सोच रहे है ?" जुंज ने पूछा।

"मुझे स्वय ही पता नही। पहले मुखिया को तो आ जाने दीजिये। मुझे उसके वायु-अड्डे तक तो पहुँच जाने का विश्वास है; उसके बाद क्या होगा यह नही जानता।" यह कह आबेल ने अपने कधे हिलाये।

उन्होने फिर कहा, "महानुभाव भी मुखिया की प्रतिक्षा कर ही रहे होंगे। उन्हे तो यही ज्ञात है कि वह उनके पजे मे है, और अब जब तक वह हमारे या उनके, किसी एक के पजे मे निश्चित रूप से नही आ जाता, कुछ नही किया जा सकता।"

यह कथन मिथ्या ही सिद्ध हुआ।

नीहारिका-नियम के अनुसार किसी ग्रह पर प्रत्येक विदेशी राजदूतावास अपने अपने निजी क्षेत्र मे पूर्ण स्वतत्र होते थे। परन्तु उन ग्रहो

को छोड कर जिनकी अपनी शक्ति इतनी अधिक होती थी कि वैसे ही उनका समुचित आदर होता था, इस नियम का कोई भी अर्थ न था। कमजोर राष्ट्रो के लिए तो यह केवल इच्छा मात्र ही रह जाती थी। इस कारण यदि देखा जाय तो वास्तविकता यही थी कि केवल ट्रानटर ही एक ऐसा साम्राज्य था जो सार्क पर अपने दूतावास मे पूर्ण स्वतत्र था।

ट्रानटर-दूतावास एक वर्गमील मे फैला हुआ था, और उसके भीतर उनके अपने आदमी, उनकी अपनी वर्दी मे, उनकी अपनी पताका के नीचे पहरा देते थे। बिना बुलाये कोई भी सार्की वहाँ कदम भी न रख सकता था, और शस्त्रधारी सार्की तो किसी भी दशा मे नही। वैसे तो इस दूतावास की समस्त शक्ति, एक सशस्त्र सार्की-पल्टन के सम्मुख दो-तीन घटे से अधिक नही ठहर सकती थी, परन्तु इस छोटी-सी सेना के पीछे सहस्रो ससारो की सेनाये सहायता के लिए खडी थी।

इस कारण यह सत्ता अभग बनी हुई थी। यहाँ तक कि वह बिना किसी सार्की वायु अड्डे पर गये सीधे ही ट्रानटोरियन वायुयान सार्क ग्रह से सौ मील ऊपर, ग्रह-अन्तराल और उसके ऊपर स्वतन्त्र अन्तराल की सीमा पर स्थित रहता था। जाइरो यान, जो कि थोडी-सी शक्ति द्वारा ही अन्तराल मे उड सकते थे, उस मातृयान से निकल कर आसानी से दूतावास के छोटे से अड्डे पर उतर आते थे।

दूतावास के ऊपर अब जो जाइरो यान उड रहा था, उसके न तो वहाँ आने की कोई सूचना ही थी और न वह ट्रानटर का यान ही था। दूतावास की छोटी-सी सत्ता पूरी तरह सतर्क हो गई थी। सहसा सूई तोप की नोके हवा मे ऊपर उठ गई थी। शक्ति-पट चढा दिये गए थे। रेडियो द्वारा सूचनाये ऊपर-नीचे जाने लगी थी। नीचे से तीखे शब्द ऊपर जाते और घबराये शब्द नीचे आते।

लेफ्टिनेट कैमरम ने यत्र पर से उठते हुए कहा, "समझ मे नही आता। वह कहता है यदि उसे नीचे न उतरने दिया गया तो दो मिनट मे ही उसको तोप द्वारा गिरा दिया जायगा। वह शरण माँगता है।"

कप्तान एल्युट ने उसी समय कमरे मे प्रवेश किया और कहा, "यह बहुत अच्छा रहा! यदि उतरने दे तो सार्क हमारे ऊपर राजनीति मे हस्तक्षेप करने का दावा करेगा और यदि न उतरने दे तो ट्रानटर एक शरणार्थी को शरण न दे सकने के लिए विश्वासघाती ठहराया जायगा। पर वह है कौन ?"

"यह तो वह बतलाता ही नही है।" लेफ्टिनेट ने निराश भाव से कहा, "कहता है वह राजदूत से मिलना चाहता है। अब कप्तान, आप ही बताइये, क्या किया जाय ?"

शार्ट वेव रिसीवर मे एक सचार हुआ और एक आवाज़ घबराये स्वर मे बोली, "कोई है ? मैं उतर रहा हूँ। सचमुच अब मैं एक क्षण की भी प्रतीक्षा नही कर सकता। मैं कह रहा हूँ।" और एक चीख मे वह स्वर समाप्त हो गया।

कप्तान ने कहा, "हे अन्तराल ! इस स्वर को तो मैं पहचानता हूँ। शीघ्र ही उन्हे नीचे आने दो ! मैं उत्तरदायी हूँ।"

आज्ञा दे दी गई। जाइरो यान सीधा नीचे को गिरा। ऐसा प्रतीत होता था कि एक अनुभवहीन घबराया व्यक्ति उसे चला रहा है। सूई तोप की नोक बराबर उसी ओर उठी रही।

कप्तान ने आबेल से लाइन मिलाई और सारे दूतावास मे सकटावस्था की घोषणा कर दी गई। सार्की यान उस यान के उतरने के दो घटे पश्चात् तक भी दूतावास पर मँडराते रहे।

वे लोग खाना खाने बैठ गये थे; आबेल, जुंज और नवागतुक। स्थिति को देखते हुए उस समय आबेल ने विलक्षण शाति से अतिथि-सेवा का कार्य किया। कई घटे तक उसने यह प्रश्न ही नही किया कि एक प्रमुख महानुभाव को शरण की क्या आवश्यकता पड गई।

हाँ, जुंज अवश्य ही बहुत अधीर हो उठे थे। उन्होने आबेल से धीरे

से कहा, "अन्तराल की सौगध, अब आप इनका क्या करेंगे ?"

आबेल ने मुस्करा कर कहा, "कुछ नहीं ! कम से कम तब तक तो कुछ नही, जब तक कि मुझे यह ज्ञात नही हो जाता कि मुखिया मेरे अधिकार मे आ गया है अथवा नही। मैं चाल चलने से पहले अपनी गुट्टियो की परख अच्छी तरह कर लेता हूँ। और अब जब यह यहाँ आ ही गया है तो प्रतीक्षा हमसे अधिक इसको ही परेशान करेगी।"

वह ठीक ही कह रहे थे। दो बार उन महानुभाव ने शीघ्रता से अपनी बात कहने के लिए मुँह खोला और दोनो बार ही आबेल ने यह कह कर टोक दिया, "खाली पेट गम्भीर वार्तालाप बडा ही अरुचिकर होता है, प्रिय महानुभाव !" और उन्होने मुस्करा कर भोजन लाने की आज्ञा दी। शराब के प्याले पर महानुभाव ने फिर प्रयत्न किया और कहा, "अब आप यह जानने को उत्सुक होगे कि मैं स्टीन महाद्वीप छोड यहाँ क्यो आया हूँ !"

"मै तो इसका कोई भी कारण नही सोच सकता, "आबेल ने स्वीकार किया, "कि स्टीन का महानुभाव सार्की यानो से बचता फिरे।"

स्टीन चिंतित-सा उन दोनो को देखता रहा। उसका छोटा-सा शरीर और पतला-सा चेहरा चिंता मे डूबा हुआ था। उसके लम्बे बाल सावधानी से क्लिपो द्वारा लटो मे बँधे हुए थे। जब भी स्टीन अपना सिर हिलाता तो वे क्लिप एक प्रकार की विशेष ध्वनि करते थे, मानो प्रचलित सार्की कटे बालो के विरुद्ध आवाज़ उठा रहे हो। उनके बदन तथा वस्त्रो से हल्की-हल्की इत्र की सुगध आ रही थी।

जुंज के भिंचे ओठ, तथा उनको हाथो से बालो को ठीक करते देख आबेल को यह खयाल आया कि यदि यह स्टीन को अपने पूरे मेक-अप, गालो की लाली तथा रँगे नाखूनो मे देखते तो पता नही इनका क्या हाल होता।

स्टीन ने कहा, "आज अन्तर-महाद्वीपी सभा हुई थी।"

"सचमुच !"

भाव-रहित चेहरे से आबेल ने सभा का विवरण सुना।

"और हम लोगो को २४ घटे का समय दिया गया है," स्टीन ने रोष से कहा "और सचमुच अब तो १६ घटे ही रह गये है।"

"और आप ही श्री 'क' है?" जुज जो बडी कठिनाई से अब तक अपने आम को सयत किए हुए थे, चीख कर बोले, "आप ही 'क' है, और क्योकि अब आप पकडे गये है तो यहाँ दौडे आये है। अहा! क्या मजे की बात है! यह हमारे अन्तराल-विशेषज्ञ को पहिचानेगे और इनके द्वारा हम उन लोगो को मजबूर कर सकते है।"

जुज की कडकती आवाज़ के सम्मुख स्टीन का स्वर सुनाई ही नही दे रहा था।

"अब सचमुच—सचमुच मैं अब, मैं कहता हूँ यह क्या पागलपन है! बद करो यह बकवास! मुझे बोलने दो! सुनिये श्रीमान्, मुझे इस मनुष्य का नाम नही याद आ रहा है।"

"डा० सलीम जुज, महानुभाव!"

"फिर डा० सलीम जुज, सुनिये। मैंने इस पागल, या अन्तराल-विशेषज्ञ या वह जो भी हो, की सूरत भी अपने जीवन मे कभी नही देखी। सचमुच मे ऐसी वाहियात बाते मेरे सुनने मे भी कभी नही आईं। और मैं 'क' कतई नही हूँ। सचमुच! मैं आपका बडा कृतज्ञ होऊँगा यदि आप उस शब्द का प्रयोग न करे। फाइफ के इस बेसिरपैर के बेवकूफी भरे नाटक पर कौन विश्वास करेगा! सचमुच।"

जुज ने अपने विचार पर दृढ रहते हुए कहा, "तो फिर आप क्यो भागे?"

"हे सार्क! क्या यह शीशे के भाँति पारदर्शक नही है? सचमुच! मुझे हँसी आती है। सुनिये, क्या आपकी समझ मे नही आया कि फाइफ क्या करना चाहता है?"

आबेल ने बीच ही मे टोक कर धीरे से कहा, "यदि आप समझायेंगे तो हम सब ध्यानपूर्वक सुनेंगे।"

"कम से कम आपको तो धन्यवाद!" स्टीन ने आहत मर्यादा से कहा,

"क्योकि मैं कगजी कार्य को अधिक महत्त्व नही देता इसलिए दूसरे महानुभाव मुझे कुछ भी नही समझते। मै पूछता हूँ, यदि एक प्रमुख महानुभाव, प्रमुख महानुभाव की भाँति जीवन-यापन न कर सके तो यह सारी सिविल सरविस किस लिए है ?

"फिर भी इसका यह अर्थ नही मैं बिल्कुल बेवकूफ हूँ। मैं केवल अपने आराम का ध्यान रखता हूँ। सचमुच ! दूसरे चाहे अन्वे हो जाँय, पर मुझे साफ दिखाई पड रहा है कि फाइफ अन्तराल-विशेषज्ञ की बात पर तनिक भी विश्वास नही करता। मेरे विचार मे उसका कोई अस्तित्व ही नही है। एक वर्ष पहिले फाइफ ने इस कथा को गढा था और तब से वह उसी मे लगा है।

"वह हम लोगो का उल्लू पीटता रहा। दूसरे महानुभाव है भी ऐसे ही। मूर्ख कही के ! उसने एक पागल या अन्तराल-विशेषज्ञ के विषय मे एक फिजूल-सी कहानी गढ डाली है। मुझे किंचित् भी आश्चर्य न होगा यदि बाद मे यह व्यक्ति, जो दर्जनो सतरियो की हत्या कर रहा है, छद्म वेश मे फाइफ का ही एक आदमी निकले।"

"फाइफ कुछ भी कर सकता है। सचमुच ! वह अपनी जाति के विरुद्ध आदिवासियो को भी खडा कर सकता है। वह है ही इसी तरह का।"

"खैर, यह तो साफ है कि वह हम लोगो का नाश कर सार्क पर एक-छत्र अधिकार करना चाहता है। क्या आप लोग ऐसा नही सोचते ?"

"'क', 'ख' या 'ग' कोई नही है। परन्तु यदि फाइफ को रोका न गया तो वह कल ही विद्रोह की घोषणा करा देगा, और अपने आप को सार्क का स्वामी घोषित कर देगा। सार्क पर ५०० वर्ष से कोई एक स्वामी नही रहा है; पर फाइफ इसकी भी परवाह न करेगा। वह सारे संविधान को भाड मे झोकने से भी रही चूकेगा। सचमुच !"

"केवल मै उसको रोकूँगा। इसी कारण मुझे स्टीन छोडना पडा। यदि मैं स्टीन मे रहता तो नजर-बद होगया होता।"

"जैसे ही सभा समाप्त हुई, मैने अपने निजी पोर्ट से समाचार मँगवाया। वहाँ उसके आदमी अधिकार कर चुके थे। यह महाद्वीपी विधान के बिल्कुल विपरीत था। एक धोखेबाज ही ऐसा कर सकता है। सचमुच! वह जितना धोखेबाज है उतना होशियार नही। उसने यह तो सोचा कि हममे से कुछ ग्रह के बाहर भागेगे और उसने अड्डो पर पहरा बैठा दिया—" यहाँ स्टीन पूर्ण सतोष से मुस्करा उठा, "उसे जाइरो पोर्ट पर पहरा बैठाने का ध्यान ही न आया।"

"कदाचित् उसने सोचा होगा, जायेगे भी तो ग्रह पर ही रहेगे, फिर छिपेगे कहाँ। पर मुझे एकदम ट्रानटर-दूतावास का ध्यान आया। यह औरो से अधिक बुद्धिमानी का कार्य है। मैं इन लोगो से ऊब उठता हूँ विशेष कर बोर्ट से। क्या आप बोर्ट को जानते है? वह बडा ही गँवार है। बिल्कुल गदा—और मुझसे ऐसे बाते करता है मानो साफ रहना कोई अपराध हो।" उसने अपनी उँगलियो को सूँघा।

आबेल ने जुज का, जो इस समय तक चचल हो उठे थे, हाथ पकड कर दबाया और स्टीन से कहा, "पर आप अपने घर वालों को तो वही छोड आये है। क्या आपने यह नही सोचा कि वे लोग फाइफ के लिए आपके विरुद्ध एक अच्छा हथियार हो जायेगे?"

"मैं अपनी सारी सुन्दरियो को तो जाइरो यान पर नही ला सकता था।" उसने झेपते हुए कहा, "फाइफ उनको छूने का भी साहस नही कर सकता। और फिर मैं कल ही स्टीन वापस चला जाऊँगा।"

"कैसे?" आबेल ने पूछा।

स्टीन आश्चर्य से उनकी ओर देखकर अपने पतले-पतले होठो मे बुदबुदाया, "श्रीमान्, मैं सधि करना चाहता हूँ। क्या ट्रानटर की आँख सार्क पर नही है! बनिये मत! आप फाइफ से यह अवश्य कह सकते हैं कि सविधान मे कोई भी तबदीली बिना ट्रानटर के हस्तक्षेप के नही हो सकती।"

"मेरी समझ मे नही आता, यदि मुझे अपनी सरकार की सहायता

का भी पूरा विश्वास हो, तब भी मैं ऐसा किस प्रकार कर सकता हूँ ?"

"ऐसा क्यो नही कर सकते," स्टीन ने गुस्से मे कहा, "यदि उसके हाथ मे काईट का सारा व्यापार आ गया तो वह उसका मूल्य बढा देगा। शीघ्र निर्यात के अधिक दाम रखेगा और लोगो को लूटता जायगा।"

"क्या आप पाँचो मिलकर दामों का निर्णय नही करते है ?"

स्टीन ने कुर्सी का सहारा लेते हुए कहा, "सचमुच ! मुझे विस्तार मे तो कुछ नही मालूम। अब आप भाव भी पूछने लगेगे। आप भी बोर्ट से कुछ कम नही मालूम होते।" वह एकदम सँभल गया और हँसते हुए बोला, "मैं तो मजाक कर रहा था। मेरा मतलब था कि फाइफ को हटाकर हम चारो कुछ व्यवस्था कर सकते है। और इस सहायता के बदले मे ट्रानटर को अधिमान्य व्यवहार या फिर व्यापार मे थोडा भाग मिलना उचित रहेगा।"

"और हम इस हस्तक्षेप को नीहारिका-युद्ध मे परिणत होने से कैसे रोकेगे ?"

"पर क्या सचमुच आपकी समझ मे नही आया। यह तो दिन की भाँति साफ है। आप कोई आक्रमणकारी थोडे ही होगे। आप तो काईट-व्यापार को बचाने के लिए विद्रोह को रोकने वाले होगे। मैं घोषणा कर दूँगा कि मैंने ही आप से सहायता की याचना की थी। यह तो आक्रमण से कोसों दूर होगा। सारी नीहारिका आपकी ओर होगी और फिर बाद मे यदि केवल ट्रानटर को ही इससे लाभ होता है तो औरो को इससे क्या मतलब !"

आबेल ने अपनी गाँठदार उँगलियो की ओर देखते हुए कहा, "मैं विश्वास ही नही कर सकता कि आप ट्रानटर के साथ हो जायेगे।"

स्टीन के चेहरे पर क्षण भर के लिए एक अत्यंत घृणा का भाव चमका और फिर उसने मुस्कुराते हुए कहा, "फाइफ से तो ट्रानटर ही अच्छा रहेगा।"

"मैं धमकी मे विश्वास नही करता। क्या हम कुछ रुककर समस्या को अपने आप ही नही सुलझने दे सकते•••"

'नही-नही !" स्टीन चीखा, "एक दिन भी नही, सचमुच यदि आप अभी से दृढता से काम नही लेगे तो बडी देर हो जायगी। यदि एक बार समय निकल गया तो फाइफ बहुत आगे बढ जायगा, और फिर यदि वह पीछे भी हटना चाहेगा तो न हट पायेगा। यदि आप इस समय मेरी महायता करेगे तो स्टीन की जनता हमारा साथ देगी और बाक़ी बडे महानुभाव भी हम लोगो के साथ हो जायेगे। यदि आप एक दिन की भी देरी करेगे तो फाइफ के प्रचार की चक्की चलनी आरम्भ हो जायगी। मुझे एक विश्वासघाती घोषित कर दिया जायगा। सचमुच ! मैं एक विश्वासघाती ! वह ट्रानटर के विरुद्ध जो समझेगा प्रचार करेगा और मैं आपको बताता हूँ वह कोई साधारण-सी बात न होगी।"

"मान लीजिये हम उससे अन्तराल-विशेषज्ञ से भेट की आज्ञा माँगे तो ?"

"उससे क्या लाभ होगा ? उसके दोनो हाथो मे लड्डू हो जायेगे। वह हम लोगो को तो बतलायेगा कि फ्लोरीनी पागल नही पर अतराल-विशेषज्ञ है, और आप लोगो को बतायेगा कि अन्तराल-विशेषज्ञ और कोई नही एक फ्लोरीनी पागल है। आप उसको नही जानते। वह बडा दुष्ट है।"

आबेल इस पर विचार करता रहा। उसकी उगलियाँ मेज़ पर ताल देती रही और फिर उसने कहा, "हम लोगो की मुट्ठी में मुखिया है।"

"कौन मुखिया ?"

"वही जिसने सतरियो और सार्की की हत्या की है।"

"यह तो ठीक है। पर क्या सोचते हैं कि सार्क की तुलना मे फ़ाइफ इसकी तनिक भी परवाह करेगा ?"

"मैं तो यही सोचता हूँ। केवल यही बात नही कि मुखिया हम

लोगों की कैद मे है; पर असल बात तो वह स्थिति है जिसमे मुखिया पकडा गया है। और मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ कि फाइफ उसकी अवश्य ही परवाह करेगा और वह भी बडी नम्रतापूर्वक।"

पहिली बार ही जुज ने आबेल के शात व्यवहार का स्थान एक प्रकार सतुष्टि—वह भी विजयपूर्ण सतुष्टि—को लेते देखा।

: ५ :

बंदी

फाइफ की श्रीमती सेमिया के लिए पराजय का अनुभव कोई साधारण बात न थी। न तो ऐसा कभी हुआ था और न ऐसा होने की कल्पना ही की जा सकती थी, कि वह घण्टो नैराश्य मे डूबी रहे।

अन्तराल-अड्डे के अध्यक्ष एक बार फिर से कप्तान रेसिटी ही थे। वह नम्रता के प्रतीक हो रहे थे। वह भी दुखी मालूम होते थे और अपनी असमर्थता प्रकट करते जा रहे थे, तथा सेमिया की बात काटने की अनिच्छा भी प्रकट करते जा रहे थे। पर थे पत्थर की भाँति उसकी इच्छा के विरुद्ध अटल।

अंत मे सेमिया ने आज्ञा देने के स्थान पर एक साधारण सार्की के अधिकार माँगने आरम्भ किये। उसने कहा, "एक नागरिक की भाँति मैं सोचती हूँ कि मुझे अधिकार है कि मैं अपनी इच्छा से किसी भी उतरते यान पर जिससे चाहूँ मिल सकूँ।"

वह इस विषय पर अत्यन्त विषाक्त हो चुकी थी।

अध्यक्ष ने अपना गला साफ किया। उसके चेहरे पर दुख का भाव और अधिक तीव्र होगया। उसने कहा, "सच तो यह है श्रीमतीजी, हमारी आपको बाहर रखने की किंचित् भी इच्छा नही है। परन्तु प्रमुख महानु-

भाव अर्थात् आपके पिता से हमे यही आज्ञा मिली है कि आपको यान पर किसी से भी मिलने से रोका जाय।"

सेमिया ने रोष से कहा, "तो क्या आप मुझे अड्डे से बाहर जाने का आदेश दे रहे हैं ?"

"जी नही श्रीमतीजी !" अध्यक्ष निर्णय पर आ सकने के कारण प्रसन्न था, "हम लोगो को आपको अड्डे से बाहर निकालने की आज्ञा नही मिली है। यदि आप यहाँ रहना चाहे तो बडी प्रसन्नता से रह सकती हैं। पर समस्त आदर के साथ हम आपको यान के निकट नही जाने दे सकते।"

वह चला गया। और सेमिया अड्डे के बाहरी घेरे से १०० फुट अन्दर अपनी निजी कार मे सोचती-विचारती बैठी रह गई। वे लोग अन्दर घुसने से पहले ही उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे और अब उस पर कडी दृष्टि रखे होगे। यदि उसने जरा भी पहिया आगे घुमाया तो उसकी गाडी अशक्त करदी जायगी। उसने अपने दाँत पीसे, यह उसके पिता का बडा भारी अन्याय है। सब एक से ही है। सब उसके साथ ऐसा व्यवहार करते हैं मानो वह निरी बच्ची हो, कुछ समझती ही न हो। परन्तु अपने पिता से उसे ऐसी आशा नही थी।

वह उसके आने पर उसके स्वागत के लिए कुर्सी छोड कर खडे हो गये थे। माँ की मृत्यु के पश्चात् ऐसा वह और किसी के लिए न करते थे। उन्होने उसे अपनी भुजाओ मे कस लिया था और उसकी खातिर अपना सारा कार्य छोड दिया था। यहाँ तक कि अपने सैक्रेटरी को भी कमरे से बाहर भेज दिया था, क्योकि भावहीन सफेद चेहरा सेमिया को तनिक न भाता था, बिल्कुल उसी प्रकार जैसा कि पितामह की मृत्यु तथा उनके प्रमुख महानुभाव बनने के पहले होता था।

उन्होने कहा था "मेरी बच्ची, मैं तुम्हारे आने की घडियाँ गिन रहा था। इससे पहले मैं नही जानता था कि फ्लोरीना इतनी दूर है और जब मैंने सुना कि जो यान मैंने तुम्हे सुरक्षित लाने के लिए भेजा था, उसी

मे वे दो आदिवासी छुपे थे तो मैं क्रोध से पागल हो उठा था।'

"पिताजी ! उसमे चिन्ता की क्या बात थी ?"

"क्या कुछ नही था ? मैं तो सार्क की सारी सेना तुम्हारी रक्षा के लिए अड्डे पर भेजने वाला था।"

इस विचार पर दोनो ही खूब हँसे थे। और जिस विषय पर सेमिया उनसे बाते करने को व्यग्र थी उस तक पहुँचने मे ही काफी समय लग गया।

उसने लापरवाही से कहा था, "पिताजी, आप उन लोगो के साथ क्या व्यवहार करेंगे ?"

"यह जान कर क्या करोगी, मेरी बच्ची ?"

"आपके विचार मे क्या वे लोग आपकी हत्या के विचार से आये है?"

उसके पिता ने मुस्कराते हुए कहा, "बेवकूफी की बातें नही सोचा करते।"

"तो फिर आप ऐसा नही सोचते ? ठीक है न ?" उसने जोर देकर पूछा।

"बिल्कुल नही।"

"ठीक ! क्यो कि मैं उन से बाते कर चुकी हूँ। और पिताजी, मेरे विचार मे तो वे दो निरीह प्राणियो के अतिरिक्त और कुछ नही हैं। मै कप्तान रेसिटी की बात पर जरा भी विश्वास नही करती।"

"निरीह प्राणियो की तरह होते हुए भी उन्होने कई नियमो का उल्लघन किया है, मेरी बच्ची !"

"फिर भी आप उनके साथ साधारण अपराधियो जैसा व्यवहार तो नही करेंगे न ?" उसका स्वर आशंका से काँप उठा था।

"क्यो ?"

"वह पुरुष तो आदिवासी है भी नही। वह पृथ्वी नामक एक ग्रह से आया है। उसका मस्तिष्क-वेधन हो चुका है इस कारण वह किसी भी बात के लिए उत्तरदायी नही ठहराया जा सकता।"

"फिर मेरी प्यारी बेटी, सुरक्षा-विभाग स्वय इस बात को समझ लेगा। हमे उन्ही पर इस बात को पूरी तरह छोड देना चाहिए।"

"नही! यह उन पर नही छोडी जा सकती। यह कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण बात है। वह इसको नही समझ सकेंगे। इसको तो कोई भी नही समझ सकता, सिवाय मेरे।"

"समस्त ससार मे केवल तुम्ही बेटी?" उन्होने दुलार के साथ सेमिया के माथे पर से बाल हटाते हुए कहा।

सेमिया ने अपनी समस्त शक्ति बटोर कर कहा, "जी हाँ! केवल मैं ही। मेरे अतिरिक्त उसको प्रत्येक व्यक्ति पगाल ही समझेगा। पर मुझे पूरा विश्वास है कि वह पागल नही है। वह कहता है कि फ्लोरीना, यहाँ तक कि सारी नीहारिका ही किसी बडे भारी सकट मे है। वह अन्तराल-विशेषज्ञ है और आप जानते ही है कि वे लोग विश्व-सृष्टि के सिद्धान्त मे कितने प्रवीण होते है। उसकी बात अवश्य ही मान्य होगी।"

"मेरी रानी बेटी! तुम्हे यह कैसे पता चला कि वह अन्तराल-विशेषज्ञ ही है?"

"वह कहता है।"

"और विपत्ति का विवरण क्या देता है?"

"वह उसे याद नही। उसका मस्तिष्क-वेधन हो चुका है न! क्या आप नही समझते, यही इसका सबसे बडा प्रमाण है। उसकी जानकारी बहुत अधिक थी, और कोई उस जानकारी को गुप्त ही रखना चाहता है।" उसका स्वर स्वय ही सतर्क हो कर धीमा हो गया था, और वह बडी कठिनाई से अपने आपको इधर उधर देखने से रोक पाई थी। उसने कहा, "यदि उनके सिद्धान्त बेकार व असत्य होते तो मस्तिष्क-वेधन की आवश्यकता ही क्या थी?"

"यदि ऐसा है तो उन्होने उसकी हत्या ही क्यो न कर दी?" फाइफ ने प्रश्न किया, फिर तुरन्त ही प्रश्न करके पछताये। बेचारी लडकी को

तग करने से क्या लाभ था।

सेमिया कुछ देर सोचती रही, फिर बोली, "यदि आप सुरक्षा-विभाग को आज्ञा दे दे कि मैं उससे बाते कर सकती हूँ तो मैं इस बात का भी पूरा पता लगा सकती हूँ। वह मेरे ऊपर भरोसा करता है। मुझे मालूम है कि वह पूरा विश्वास करता है। मैं सुरक्षा-विभाग से कही अधिक बाते जान लूँगी। आप सुरक्षा-विभाग से कह दीजिये न पिताजी। यह बहुत ही आवश्यक है।"

फाइफ ने उसकी मुट्ठी अपनी हथेलियो मे दबाते हुए कहा, "अभी नही, मेरी बच्ची! अभी नही! कुछ ही घटो मे हमारा तीसरा अपराधी भी आने वाला है। उसके बाद शायद।"

"तीसरा अपराधी! अच्छा वह आदिवासी, जिसने इतनी सारी हत्यायें की हैं।"

"बिल्कुल ठीक! जो यान उसको यहाँ ला रहा है, घटे भर मे आ पहुँचेगा!"

"और तब तक आप उस आदिवासी स्त्री तथा अन्तराल-विशेषज्ञ के साथ कुछ न करेंगे न?"

"बिल्कुल कुछ नही।"

"ठीक! तब मैं यान पर जाऊँगी।"

"कहाँ चली मेरी बिटिया?"

"अन्तराल-अड्डे पर पिताजी! मुझे इस तीसरे मनुष्य से बहुत कुछ पूछना जो है," उसने हँसते हुए कहा, "मैं भी आपको दिखा दूँगी कि आपकी बिटिया कितनी बडी जासूस बन सकती है।"

फाइफ ने उसके हँसने मे कोई भी सहयोग न देते हुए कहा, "मेरी इच्छा यही है कि तुम न जाओ।"

"क्यो नही?"

"यह अत्यन्त आवश्यक है कि जिस समय वह अड्डे पर आएँ, कोई भी असाधारण बात न हो, और तुम्हारी उपस्थिति तो काफी चर्चा का

विषय बन जायगी।"

"तो उससे क्या ?"

"मैं तुम्हे राजनीति नही समझा सकता बेटी।"

"राजनीति क्या बकवास है।" उसने झुककर जल्दी से फाइफ के माथे का चुम्बन लिया और अगले क्षण ही वह कमरे से बाहर हो गई।

और अब जब कि यान आकाश मे बिन्दु के समान दिखाई देने लगा है तो वह असहाय-सी गाडी मे बन्द है।

उसने बटन दबाया। गाडी मे एक खाना खुला। उसमे से उसने व्योम-पोलो देखने का चश्मा निकाला। यह विस्तृत बादलो मे होती पोलो देखने के लिए था, पर उसके और भी तो कई गम्भीर प्रयोग हो सकते थे। उसने उसे अपनी आँखो पर चढ़ा लिया और बढता हुआ बिन्दु एक यान मे परिवर्तित हो उठा। उसका लाल चमकीला प्रकाश साफ-साफ दिखाई देने लगा।

वह कम से कम उन लोगो को यान से उतरते तो देख सकेगी। केवल अपनी दृष्टि से ही जितना जान पायेगी उतना तो जान लेगी। और बाद मे उसे किसी प्रकार—किसी प्रकार भी. मुखिया से भेंट की व्यवस्था तो करनी ही होगी।

अब दृष्टि-प्लेट पर सार्क आ गया था। नीचे बादलो मे से झाँकता हुआ एक महाद्वीप तथा एक सागर दृष्टिगोचर हो रहा था।

जैनरो बोला। मुँह से शब्द अटपटे से निकले, जिससे यह पता चलता था कि उसका ध्यान कट्रोल पर भी लगा है, "अन्तराल अड्डे पर अधिक पहरा न होगा। यह भी मेरे कहने से ही हुआ है। मैंने कहा था कि अड्डे पर कोई भी अस्वाभाविक बात ट्रानटर का ध्यान आकर्षित करेगी और सफलता, ट्रानटर की वास्तविक स्थिति की अनभिज्ञता पर ही निर्भर है। खैर, इससे तुम्हे क्या ?"

टेरेन्स ने पूछा, "पर इससे क्या अन्तर पडता है ?"

"तुम्हारे लिए बहुत कुछ। मै पूर्वी फाटक के निकट के गर्त का प्रयोग करूँगा। जैसे ही मै पृथ्वी छुऊँ तुम फौरन ही पीछे के चोर दरवाज़े से निकलोगे। तुम जल्दी, पर बहुत शीघ्र नही, उस फाटक की ओर जाओगे। मेरे पास कुछ प्रमाण-पत्र है जिनके द्वारा तुम आसानी से फाटक के पार हो जाओगे, या न भी हो पाओ, यह मैं तुम पर छोडता हूँ। परन्तु पिछली घटनाओ को देखते हुए मैं तुम्हारी सफलता की आशा कर सकता हूँ। फाटक के बाहर एक गाडी तुम्हे दूतावास तक ले जाने के लिए खडी होगी। बस, इतना ही।"

"और आपका क्या होगा ?"

धीरे-धीरे सार्क का धुँधला, नीला, हरा, भूरा तथा रग-बिरगा गोला कुछ निश्चित आकृति मे परिवर्तित हो रहा था। अब नदी नाले व पर्वत दिखाई पडने लगे थे।

जैनरो की उस समय की मुस्कराहट अत्यत फीकी थी। वह शुष्क स्वर मे बोला, "तुम अपनी चितायें अपने तक ही सीमित रखो। जब वे देखेगे कि तुम भाग गये हो, तो मुझे विद्रोही घोषित करके गोली मार सकते है। और यदि वह मुझे बेबस या बेकाम पायेगे तो शायद मुझे मूर्ख समझकर पदच्युत कर दे। अतिम सम्भावना ही अधिक श्रेयस्कर है। इसलिए मैं तुमसे प्रार्थना करूँगा कि यान छोडने से पहले मेरे ऊपर स्नायु कोडे का प्रयोग करते जाना।"

मुखिया ने कहा, "क्या आपको मालूम है कि स्नायु-कोडा कैसा होता है ?"

"अवश्य," यह कहते कहते उसके माथे पर पसीने की बूँदे उभर आई थी।

"आपको क्या विश्वास कि मैं आपकी हत्या नही कराऊँगा। मैं महानुभाव हत्यारा जो ठहरा।"

"मैं मानता हूँ कि तुम ऐसा कर सकते हो। पर उमसे तुम्हे कोई लाभ न होगा, तुम्हारा समय व्यर्थ ही बरबाद होगा। और मैं तो इससे

भी बडे-बडे सकट मोल ले चुका हूँ ।"

दृष्टि-प्लेट मे सार्क की भूमि-आकृति बदलती जा रही थी। उसके बाह्य किनारे दृष्टि से ओझल हो चुके थे। उसके बीच के नगर बडे होते जा रहे थे जो इस समय इन्द्र-धनुष के समान रग-बिरगे दिखाई दे रहे थे।

"मैं आशा करता हूँ," जैनरो ने कहा, "कि तुम भागने की चेष्टा नही करोगे; क्योकि सार्क पर छिपने के लिए कोई भी उचित स्थान नही है। तुम्हारे लिए या तो ट्रानटर है या फिर सार्की महानुभाव। समझे !"

दृश्य अब निश्चित रूप से एक नगर मे परिणत हो गया था और उसकी सीमा की हरा-भूरा धब्बा अब अन्तराल-अड्डे मे बदल गया था, जो अब ऊपर को बढता आ रहा था।

जैनरो ने कहा, "यदि घंटे भर के भीतर ट्रानटर तुमको अपने अधिकार मे नही कर लेगा तो दिन ढलने के पूर्व तुम अवश्य ही महानुभावो के पजे मे फँस जाओगे। मै यह तो नही जानता कि ट्रानटर तुम्हारे साथ क्या व्यवहार करेगा, पर मै सार्क के विषय मे दावा कर सकता हूँ।"

टेरेन्स सार्क सिविल मे रह चुका था सो वह भली भाँति जानता था कि सार्की एक महानुभाव के हत्यारे के साथ क्या व्यवहार करते है।

दृष्टि-प्लेट मे अड्डा अब पूरी तरह दिखाई दे रहा था, पर जैनरो इस ओर नही देख रहा था। उसने कुछ यत्र हिलाये। यान की पूँछ एक मील दूर से ही नीची हो गई, और फिर यान नीचे उतरने लगा।

गर्त से १०० गज़ ऊपर द्रव-चालित स्प्रिग के ऊपर ऐंजिन ज़ोर-ज़ोर से बोलने लगा। सारा यान एकबारगी काँप उठा। टेरेन्स की तबियत घबरा उठी।

जैनरो ने कहा, "शीघ्रता से कोडा उठाओ। प्रत्येक क्षण महत्त्वपूर्ण है। सुरक्षा-पाश तुम्हारे पीछे स्वय ही बद हो जायगा। उनको यह सोचने मे पाँच मिनट लग जायेगे कि मैं बाहर का ताला क्यो नही खोल रहा। दूसरे पाँच मिनट ताला तोडने मे और फिर पाँच मिनट तुम्हे

ढूँढने मे। इस प्रकार तुम्हारे अड्डे से बाहर तक जाने के लिए १५ मिनिट है।"

काँपना बद हो चुका था। और टेरेन्स को पता चल गया था कि वह सार्क की भूमि पर उतर आये हैं। अब द्विचुम्बकीय क्षेत्र ने अपना कार्य सम्हाल लिया था और यान धीरे-धीरे शान से आगे बढ रहा था।

जैनरो ने कहा, "शीघ्र !" और उसका सारा शरीर पसीने से तर हो गया।

टेरेन्स का दिमाग चक्कर खाने लगा था। उसकी आँखो के आगे अँधेरा छा रहा था। उसने स्नायु-कोडे को उठाया ....।

टेरेन्स सार्क की उम हेमन्ती वायु मे ठिठुरने लगा। पहले जब वह यहाँ रहता था तो यहाँ के ठडे मौसम को भी सह लेता था, यहाँ तक कि वह फ्लोरीना की अपरिवर्तनशील ग्रीष्म ऋतु को भूल ही गया था। उसे फिर से अपनी सिविल सरविस का ज़माना याद आ रहा था मानो वह महानुभावो के इस ससार को छोड कर कही गया ही न हो। बस, अन्तर केवल इतना ही था कि अब वह एक फरार व्यक्ति था, जिसके ऊपर सार्क के अन्यतम अपराध, महानुभाव की हत्या, का दोष लगा हुआ था।

वह हृदय की प्रत्येक धडकन के साथ कदम उठा रहा था। अपने पीछे वह यान को छोड आया था जिसमे जैनरो कोडे की पीडा मे छटपटा रहा होगा। उसके पीछे धीमे से ताला भी बद हो चुका था और अब वह चौडी पक्की राह पर चला जा रहा था। उसके चारो ओर काफी सख्या मे मजदूर और मिस्त्री दिखाई दे रहे थे। प्रत्येक का अपना कार्य व चिताये थी। किसी ने भी उसकी ओर सिर उठा कर न देखा, और कोई देखे भी क्यो !

किसी ने उसको यान से उतरते तो नही देखा ? फिर उसने सोचा, नही, किसी ने न देखा होगा, अन्यथा पीछा आरम्भ हो गया होता।

उसने अपनी टोपी छुई, वह अभी भी नीचे कान तक आई हुई थी,

उस पर जैनरो का दिया तमगा लगा था। यह बिल्कुल चिकना था। वह जैनरो ने उसे पहचान के लिए दिया था और कहा था कि ट्रानटर के आदमी तमगे को सूर्य की रोशनी मे चमकते देख कर उसे पहिचान लेंगे।

वह उसको हटा कर कही और भी तो भाग सकता है—किसी और यान मे—किसी प्रकार यदि वह सार्क से बाहर जा सकता ! काश वह भाग सकता किसी प्रकार !

कितने ही कोई-से प्रकार थे। मन ही मन वह भी जानता था कि वह अन्तिम छोर तक पहुँच गया है और जैसा कि जैनरो ने कहा था कि उसके लिए अब या तो ट्रानटर है या सार्क। यह ट्रानटर से डरता व घृणा करता था; पर अब उसे यह भी ज्ञात था कि किसी प्रकार भी सार्क तो होना ही नही चाहिए।

× × ×

'ऐ ! ऐ ! सुनो !"

टेरेन्स काँप उठा। उसका मन आतक से भर उठा। फाटक अब भी सौ गज़ दूर था। वह दौड लगाये ! पर यह दौडते व्यक्ति को तो कभी भी बाहर न जाने देंगे। वह ऐसा नही कर सकता। उसे दौडना नहीं चाहिए।

एक युवती बडी बढिया कार की खुली खिडकी से झाँक रही थी। ऐसी कार उसने आज तक कभी भी न देखी थी—अपने १५ वर्ष के सार्क-जीवन मे भी नही। वह सारी हीरो की भाँति जगमगा रही थी।

उस युवती ने कहा, "इधर आओ !"

टेरेन्स के पैर उसे धीरे-धीरे कार तक ले गये। जैनरो ने तो कहा था कि ट्रानटर गाडी फाटक के बाहर प्रतीक्षा करेगी—या उसने कहा था ? क्या इस कार्य के लिए वह एक महिला को भेजेंगे—वह भी एक युवती—उस पर भी साँवली-सलोनी, इतनी सुन्दर !

युवती ने कहा, "आप अभी इस यान से उतरे हैं न ?"

वह चुप ही रहा ।

वह अधीर हो उठी थी । उसने अपने पोलो चश्मे को छूते हुए कहा, "मैंने अभी आपको यान से उतरते देखा है ।" टेरेन्स ने पहले भी ऐसे चश्मे देखे थे ।

टेरेन्स ने धीरे से 'हाँ' कहा ।

"तब फिर अन्दर बैठो !"

उसने उसके लिए गाडी का दरवाजा खोल दिया । अन्दर से कार और भी शानदार थी । बैठने का स्थान बडा मुलायम तथा सर्वथा नया था और युवती अत्यधिक सुन्दर ।

"क्या तुम यान के कर्मचारियो मे से कोई हो ?" उसने कहा

टेरेन्स ने सोचा, शायद वह उसकी परीक्षा ले रही है । उसने कहा, "आपको तो मालूम ही है कि मै कौन हूँ" उसने एक क्षरण के लिए तमगे पर उँगली रखी ।

बिना किसी आवाज के कार पीछे को हुई और मुड गई ।

फाटक पर टेरेन्स ने सीट की गद्दियो के काईट मे अपने को छिपाने का प्रयत्न किया, पर उसकी कोई आवश्यकता न पडी । वह युवती अधिकारपूर्ण स्वर मे बोली और उन लोगो ने उसे जाने दिया । उसने कहा, "यह व्यक्ति मेरे साथ है और मै फाइफ की सेमिया हूँ ।"

टेरेन्स को यह सुनने और समझने मे कुछ समय लग गया । और जब वह स्वस्थ होकर अपनी जगह पर आगे को झुका तो उसने देखा कि कार १०० से भी अधिक चाल से जा रही है ।

× × ×

एक श्रमिक ने अड्डे के भीतर से जहाँ वह खडा था, वहाँ से सारा व्यापार देखा और मन ही मन बडबडाया । फिर वह अपने काम पर चला गया । उसके अधीक्षक ने उसे लताडा कि बाहर सिगरेट पीने चले जाते हो तो बाहर ही रह जाते हो ।

अड्डे के बाहर एक कार मे खडे दो व्यक्तियो मे से एक ने परेशान

होते हुए कहा, "हैं ! एक युवती के साथ गाडी मे चढ गया ? कैसी गाडी और कैसी लडकी ?" उसकी सार्की पोशाक होने पर भी उसका स्वर ट्रानटर की आर्कट्यूरिन संसारो का था।

उसका साथी सार्की था। वह दृष्टि-प्लेट के समाचारो से भली भाँति परिचित था। जैसे ही कार फाटक से बाहर निकल कर तीव्र गति से सडक की ओर जाने लगी, वह अपने स्थान से एक दम उछल पडा। "अरे, यह तो श्रीमती सेमिया की गाडी है। ऐसी गाडी कोई दूसरी नही है। हाय नीहारिका ! अब हम लोग क्या करे ?"

"पीछा करो !" दूसरे ने कहा।

"परन्तु श्रीमती सेमिया...... !"

"मेरे लिए वह कोई नही है। और तुम्हारे लिए भी उसका कोई महत्त्व नही होना चाहिए, वर्ना तुम यहाँ क्या कर रहे हो ?"

उनकी अपनी गाडी मुडी और उस चौड़ी और एकाकी सडक पर चल पडी, जिस पर सिवाय तेज से तेज चलने वाली गाडियो के और कोई भी गाडी नही चल सकती थी।

सार्की बोला, "हम उस कार को नही पकड सकते। जैसे ही वह हम लोगो को देखेगी, सरपट भागेगी। वह गाडी २५० तक कर सकती है।"

"अभी तक तो वह १०० पर ही स्थित है," आर्कट्यूरियन ने कहा। कुछ देर बाद उसने फिर कहा, "वह सुरक्षा-विभाग की ओर तो नही जा रही, यह निश्चित है। फिर कुछ देर बाद कहा, "और फाइफ के महल की ओर भी नही।" फिर थोडा रुक कर बोला "मेरी सौगंध यदि यह समझ पाऊँ कि आखिर वह जा कहाँ रही है। अभी कुछ देर मे ही शहर से बाहर हो जायगी।"

सार्की ने कहा, "हमे यह भी क्या मालूम कि वह हत्यारा इसी गाडी मे है। यह हो सकता है कि यह हमे वहाँ से हटाने की ही एक चाल हो। वह हम लोगो से बचना भी तो नही चाह रही; और यदि वह चाहती कि उसका पीछा न किया जाय तो वह ऐसी गाड़ी ही क्यो प्रयुक्त करती जो

दो मील से दूर से ही पहचानी जा सके ।"

"यह तो ठीक है । परन्तु हमे वहाँ से हटाने के लिए फाइफ अपनी कन्या को कदापि न भेजेगा । यह कार्य तो सतरियो की एक टुकडी भी कर सकती थी ।"

"यह हो सकता है कि उसमे श्रीमती सेमिया न भी हो ।"

"हम पता लगा कर ही छोड़ेगे । अब गाडी धीमी हो रही है । तेजी से आगे निकल कर और फिर मुड कर गाडी रोक लो ।"

× × ×

"मैं तुमसे कुछ बाते करना चाहती हूँ ।" उस लडकी ने कहा ।

टेरेन्स को विश्वास हो गया कि वह किसी साधारण जाल मे नही फँसा है । यह श्रीमती सेमिया ही थी, इसमे उसे कोई सदेह न था । उसका आत्मविश्वास ही इस बात की गवाही दे रहा था । उनकी बुद्धि मे अभी तक यह नही घुसा था और न ही घुस सकता था कि उनकी योजना मे कोई विघ्न भी डाल सकता है । उन्होने एक बार भी पीछे मुड कर नही देखा कि कही कोई पीछा तो नही कर रहा । तीन बार जब भी वे लोग मुडे तो टेरेन्स ने एक गाडी, उतनी ही दूरी पर, उसी गति से आते देखी । न तो वह अधिक निकट ही आ रही थी, और न पीछे छूट रही थी ।

वह कोई मामूली गाडी नही लगती थी, यह टेरेन्स को निश्चित हो गया था । या तो वह ट्रानटर की गाडी थी, यह और भी अच्छा था; अन्यथा सार्क की ही हो, ऐसे समय मे यह युवती अच्छी चुनौती रहेगी ।

उसने कहा, "मैं तैयार हूँ ।"

सेमिया ने प्रश्न किया, "जो यान उस आदिवासी को लेकर आया है, तुम उसी पर थे न ?"

"यह तो मैं पहले ही बतला चुका हूँ कि था ।"

"अच्छा सुनो ! मैं तुम्हे यहाँ इस लिए लाई हूँ कि जिससे कोई बीच मे हस्तक्षेप न करे । क्या सार्क की राह मे उस आदिवासी से आपने प्रश्न किये थे ?"

ऐसी अनभिज्ञता बनावटी नही हो सकती, टेरेन्स ने सोचा। सचमुच ही इस लड़की को नही मालूम कि वह कौन है। उसने सतर्कता से कहा, "जी हाँ।"

"क्या तुम प्रश्नोत्तर के समय उपस्थित थे ?"

"जी हाँ।"

"ठीक ! मैंने भी यही अनुमान लगाया था। पर तुम यान से चले क्यो आये ?"

टेरेन्स ने सोचा, यह तो इसका प्रथम प्रश्न होना चाहिए था। उसने कहा, "मुझे एक विशेष सूचना········ " वह कुछ रुका।

सेमिया ने बीच मे टोकते हुए कहा, "मेरे पिता के पास ही ले जानी थी न ? चिंता मत करो ! मैं तुम्हारी रक्षा करूँगी। कह दूँगी कि तुम मेरी आज्ञा मे ही मेरे साथ आये थे।

"बहुत अच्छा श्रीमतीजी !"

श्रीमती शब्द उसके अपने मन मे कुछ अटका। यह सार्क की सबसे प्रमुख महिला महानुभाव थी, और वह केवल एक फ्लोरीनी। एक व्यक्ति जो सतरियो की हत्या कर सकता है, जो आसानी से एक महानुभाव को स्वर्ग पहुँचा सकता है, ऐसा हत्यारा क्या उसी के बल पर एक महिला की ओर आँख उठा कर भी नही देख सकता !

उसने उसकी ओर देखा—खूब अच्छी तरह, उसने उसकी ओर अपना सिर उठा कर खूब गौर से देखा।

वह सुन्दरता की प्रतिमा थी।

क्योकि वह सार्क की सर्वोच्च महिला थी, इसलिए उसकी नजर से अनभिज्ञ थी। उसने कहा, मैं चाहती हूँ कि जो कुछ वार्तालाप यान मे हुआ, वह सब तुम मुझे सुनाओ ! जो कुछ उस आदिवासी ने तुमको बतलाया है उससे मैं परिचित होना चाहती हूँ। यह अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण है।"

"क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आपको उस आदिवासी मे इतनी रुचि क्यो है श्रीमतीजी ?"

"नही, तुम नही पूछ सकते।" उसने तपाक से उत्तर दिया।

"जैसी आपकी इच्छा श्रीमतीजी !"

उसे यह भी न मालूम था कि वह आगे क्या कहेगा। उसका आधा मन तो पीछे आने वाली गाडी मे पडा था। और बाकी आधा मन, निकट बैठी उस युवती के सुकुमार शरीर तथा सुन्दर मुख की निकटता के कारण अधिक से अधिक चचल होता जा रहा था।

सिविल सरविस के फ्लोरीनी कार्यकर्ताओ तथा मुखियाओ को वहाँ के नियमानुसार ब्रह्मचारी रहना पडता था। पर वास्तविकता उससे कही अधिक दूर थी। अवसर पाते ही वे इस नियम का उल्लघन कर देते थे। टेरेन्स ने भी अपने साहस व सुविधानुसार इस नियम का उल्लघन किया था। पर अभी तक उसके अनुभव कभी भी सन्तोषजनक न हुए थे।

इससे इस एकात मे—इस ऐश्वर्यशाली गाडी मे—एक सुन्दरी युवती की इतनी निकटता, उसके लिए और भी भयकर हो गई थी।

वह उसके बोलने की प्रतीक्षा कर रही थी। उसके काले-काले कजरारे नयन कौतुक से चमक रहे थे, भरे लाल होठ उत्सुकता से खुले हुए थे, सुन्दर लचीली कमर वास्तव मे सुन्दर काईट ही के उपयुक्त थी। वह इस ओर से कतई बेफिक्र थी कि कोई भी, कोई भी उसके लिए—श्रीमती सेमिया के लिए—मन मे बुरी भावना ला सकता है। पर टेरेन्स का बाकी आधा मन भी पीछा करने वालों का ध्यान छोडकर अब उस अपूर्व सौदर्य मे ही केन्द्रित हो गया था।

उसे अचानक ध्यान आया कि एक महानुभाव की हत्या ही तो अत्यतम अपराध नही है।

उस समय उसको इतनी भी चेतना न रही कि कब वह अपने स्थान से हिला। उसे केवल इतना ही ज्ञान था कि वह अपूर्व सुन्दरी उसकी भुजाओ मे थी। वह एक बार चिल्लाई थी, फिर टेरेन्स ने अपने होठो से उसका मुँह बन्द कर दिया था…

एकाएक उसके कधे पर किसी ने हाथ रखा। कार के खुले दरवाज़े मे से उसकी कमर मे एक ठडी हवा का झोका लगा। उसकी उँगलियों ने अपना हथियार पकडना चाहा, परन्तु देर हो चुकी थी। उसके हाथ से हथियार छीन लिया गया।

सेमिया चुपचाप हाँफती रही।

सार्की ने अत्यन्त घृणापूर्वक कहा, "देखा आपने ! उसने यह क्या किया ?"

आर्कट्यूरियन ने कहा, "कोई चिन्ता नही।" उसने एक छोटी सी काली वस्तु अपनी जेब मे रखते हुए कहा, "उसे पकड लो !"

सार्की ने टेरेन्स को पकड कर क्रोध से बाहर खीच लिया।

"और देखो न उन्होने उसे ऐसा करने दिया ?" वह बुद्बुदाया "और उन्होने उसे ऐसा करने दिया ?"

"तुम कौन हो ?" सेमिया चिल्लाई "क्या मेरे पिता ने तुम लोगों को भेजा है ?"

आर्कट्यूरियन ने कहा, "कृपा कर आप चुप रहे !"

"तुम एक विदेशी हो ?" सेमिया क्रोधपूर्वक बोली।

सार्की ने कहा, "सार्क की सौगध ! मैं इसका सिर तोड दूँगा।" यह कह उसने अपना मुक्का ताना।

"ठहरो !" आर्कट्यूरियन ने कहा। उसने सार्की की कलाई पकड कर पीछे को धक्का दिया।

सार्की भुनभुनाया, "सहने की भी सीमा होती है। मैं महानुभाव-हत्या को सह सकता हूँ। कुछ की तो शायद मैं स्वय ही हत्या कर दूँ। पर एक आदिवासी को, जो कुछ इसने किया है, करते देखना एकदम असहनीय है।"

सेमिया एकदम चीख पडी, "एक आदिवासी !"

सार्की ने आगे झुककर क्रोध मे टेरेन्स की टोपी खीच ली। मुखिया पीला पड़ गया था, पर वह अपने स्थान पर ही डटा रहा और उस युवती

की ओर बराबर ताकता रहा। उसके सुनहरे बाल हवा में लहरा रहे थे।

सेमिया असहाय-सी अपनी गाडी मे जितनी दूर हटकर बैठ सकती थी, बैठ गई। फिर दोनो हाथो से उसने अपना मुँह छुपा लिया।

सार्की ने कहा, "अब इन महिला का क्या किया जाय ?"

"कुछ नही।"

"उन्होने हम लोगो को देख लिया है। मील भर दूर निकलते-निकलते यह सारे ग्रह को हमारे पीछे लगवा देगी।"

"क्या तुम श्रीमती फाइफ की हत्या करना चाहते हो ?" आर्कट्यूरियन ने व्यग्य किया।

"नही तो। पर हम इनकी गाडी तो बिगाड ही सकते हैं। और जब तक यह चलकर किसी रेडियो-फोन तक पहुँचेगी, हम अपने गतव्य स्थान तक पहुँच जायेंगे।"

"इसकी कोई आवश्यकता नही।" आर्कट्यूरियन ने गाडी मे चढते हुए कहा, "श्रीमतीजी ! मेरे पास समय बहुत थोडा है। क्या आप मेरी बात सुन सकती हैं ?"

वह जडवत् उसी प्रकार बैठी रही।

आर्कट्यूरियन ने कहा, "आपको मेरी बात सुननी ही पडेगी। मुझे दुख है कि मैंने ऐसे नाजुक समय मे बाधा डाली। पर इस अवसर का पूरा लाभ मैंने उठाया है। जो कुछ हुआ है वह त्रैदिशिक कैमरे पर उतार लिया गया है। इसमे तनिक भी झूठ नही है। आप से अलग होते ही मैं इस नेगेटिव को किसी सुरक्षित स्थान मे पहुँचा दूँगा और फिर यदि आप कोई भी बाधा उपस्थित करेगी तो मुझे भी दुष्टता पर बाध्य होना पड़ेगा। मुझे विश्वास है आप मेरी बात पूरी तरह समझ गई होंगी।"

वह मुड़ा और बोला, "अब यह हमारे वश में हैं। कुछ भी न करेंगी। जरा भी नही। मुखिया, तुम मेरे साथ आओ !"

टेरेन्स पीछे-पीछे चल दिया। वह पिछली कार में बैठे सफेद हुए चेहरे को भी न देख पाया।

अब चाहे जो हो। वह एक असाध्य कार्य करने मे सफल हुआ था। उसने सार्क की सबसे उच्च एव गर्वीली महिला का चुम्बन लिया था। उसके कोमल सुगधित ओठो का स्पर्श अब भी उसको रोमाचित कर रहा था।

: १६ :

अभियुक्त

राजनीतिक के अपने ही भाव और अपनी ही भाषा हुआ करती है। यदि बिल्कुल इसके मूल नियमो के अनुसार चला जाय तो पूर्ण सत्ताधारी राज्यो के सम्बन्ध अत्यन्त शिष्टाचारपूर्ण एव निरर्थक हो जाते है। वहाँ तो 'अप्रिय परिणाम' का अर्थ युद्ध तथा 'उचित व्यवस्था' का अर्थ आत्म-समर्पण तक होता है।

व्यक्तिगत रूप से आबेल राजनीति की दुधारू तलवार चलाना पसन्द नही करते थे। त्रैदिशिक निजी किरण द्वारा बधित वह फाइफ से वार्तालाप करते ऐसे प्रतीत हो रहे थे जैसे कोई वयस्क मदिरा के प्याले पर प्रेम-भाव से बाते कर रहा हो।

उन्होने कहा, "फाइफ ! आप तक पहुँच पाना तो अति कठिन है।"

फाइफ मुस्कराये। वह पूर्ण स्वस्थ एव चिंता-रहित प्रतीत हो रहे थे। उन्होने कहा "आबेल, मैं दिन भर बहुत ही व्यस्त रहा।"

"हाँ ! उसकी भनक मेरे कान मे भी पडी थी।"

"स्टीन ?" फाइफ ने लापरवाही से पूछा।

"कुछ-कुछ ! स्टीन हमारे यहाँ सात घटे से है।"

"मुझे मालूम है। दोष मेरा ही है। क्या आप उसे हमे सौंपने का

विचार कर रहे हैं ?"

"नही ! बिल्कुल नही ।"

"वह अपराधी है ।"

आबेल कुछ हँसे, उन्होने अपने हाथ के प्याले को हिलाया और उसमे उठते बुलबुले देखते हुए बोले, "मेरे विचार मे उसको राजनैतिक शरणार्थी भी कहा जा सकता है । अन्तर-तारकीय नियम के अनुसार वह ट्रानटर-दूतावास मे सुरक्षित है ।"

"क्या आपकी सरकार आपका समर्थन करेगी ?"

"मेरे विचार मे अवश्य करेगी फाइफ ! मैंने विदेश-सेवा में सैंतीस वर्ष बिताये है; इतना समझ सकता हूँ कि ट्रानटर मेरा पक्ष कब लेगा और कब नही ।"

"सार्क आपको यहाँ से वापिस बुलवाने की माँग कर सकता है ।"

"उससे आपको क्या लाभ होगा ! मै एक शान्तिप्रिय व्यक्ति हूँ, जिससे आप भली भाँति परिचित है । मेरा उत्तराधिकारी कोई भी हो सकता है ।"

कुछ देर चुप्पी रही । फाइफ की सिंह के समान आकृति कुछ झुकी, "मेरे विचार मे आप कुछ कहना चाहते है ?"

"अवश्य ! हमारा एक व्यक्ति आपके पास है ।"

"आपका कौन-सा व्यक्ति ?"

"एक अन्तराल-विशेषज्ञ; पृथ्वी ग्रह का निवासी जो कि ट्रानटर का भाग है ।"

"यह आपको स्टीन ने बतलाया हैं ?"

"हाँ ! साथ ही और बहुत सी बाते भी बतलाई हैं ।"

"क्या उसने इस पृथ्वी-वासी को देखा है ?"

"उसने यह तो नही कहा कि देखा है ।"

"खैर, उसने नही देखा । और इस स्थिति मे उसके कथन का पूर्ण विश्वास नही किया जा सकता ।"

आबेल ने अपना प्याला नीचे रख दिया। अपने हाथो को अपनी गोद मे रखते हुए बोले, "उससे क्या अंतर पडता है। मुझे पृथ्वीपुत्र के अस्तित्व मे पूर्ण विश्वास है। फाइफ ! मैं आपसे कहता हूँ कि हम लोगो को इस पर विचार करना ही पड़ेगा। आपके पास पृथ्वीपुत्र है और मेरे पास स्टीन। हम लोग एक प्रकार से बराबर ही है। आपकी अपनी योजना पर आचरण होने से पहले, सेना-राज्य होने से पहले, काईट-व्यवस्था पर सभा ही क्यो न कर ली जाय ?"

"मुझे इसकी कोई आवश्यकता नजर नही आती। जो कुछ सार्क पर हो रहा है, वह उसके आन्तरिक मामले है। मैं यह व्यक्तगति रूप से विश्वास दिला सकता हूँ कि इस बात का कोई प्रभाव काईट व्यापार पर नही पड़ेगा। मेरे विचार से इस गारण्टी के साथ-साथ इन विषयो मे ट्रानटर की अभिरुचि का भी अत हो जाना चाहिए।"

आबेल ने मदिरा का एक घूँट लिया और कुछ सोचते हुए कहा, "हमारे पास एक दूसरा राजनैतिक शरणार्थी और है। एक अजीब-सा। एक आपकी फ्लोरीनी प्रजा, एक मुखिया। मारलीन्स टेरेन्स अपना नाम बतलाता है।"

फाइफ के नेत्र अचानक ही आग बरसाने लगे, "हमे इस बात का संदेह पहले से था। सार्क की सौंगध आबेल ! इस ग्रह पर ट्रानटर के हस्तक्षेप की हद हो गई है। जिस व्यक्ति का आपने अपहरण किया है वह एक हत्यारा है। उसे आप राजनैतिक शरणार्थी नही बना सकते।"

"अच्छा ! क्या आपको वह व्यक्ति चाहिए ?"

"आप कोई सौदा करना चाहते हैं ? है न ?"

"वही सभा जिसका उल्लेख मैंने अभी किया था।"

"एक फ्लोरीनी हत्यारे के लिए ? कदापि नही।"

"पर जिस स्थिति में वह मुखिया भाग कर हमारे पास आ सका है, वह बड़ी अजीब-सी है। शायद आप जानना चाहेगे········"

× × × ×

जु ज चहलकदमी करते जा रहे थे तथा अपना सिर भी हिलाते जा रहे थे। रात काफी जा चुकी थी। वह सोना चाहते थे, पर कल की तरह आज भी उनको गैस की आवश्यकता थी।

आबेल ने कहा, "स्टीन के कथानुसार उन्हे बाध्य करने के लिए शायद युद्ध की भी धमकी देनी पडती। पर वह उचित न होता। संकट की सम्भावना अत्यधिक थी और फल अनिश्चित। जब तक मुखिया नही पकडा गया था, मुझे कोई राह नही सूझ रही थी, अतिरिक्त इसके कि हाथ पर हाथ रख कर बैठा जाय।"

जु ज ने जोर से सिर हिलाते हुए कहा, "नही! कुछ तो करना ही पडता। फिर यह भी धमकी से कुछ कम तो नही।"

"पारिभाषिक रूप से तो ऐसा ही है। पर और किया ही क्या जा सकता था?"

"वही, आपने जो कुछ किया। मैं भी आडम्बरवादी नही हूँ आबेल और कम से कम प्रयत्न तो ऐसा न होने का ही करता हूँ। मैं आपके तरीके की निंदा नही करूँगा, क्यो कि मैं भी उससे लाभ उठा रहा हूँ। फिर भी उस बेचारी लडकी का क्या होगा?"

"यदि फाइफ अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ रहता है तो कुछ भी न होगा।"

"मैं उसके लिए अत्यन्त दु खी हूँ। जो कुछ सार्की उच्च वर्ग फ्लोरीना पर कर रहा है उसके लिए मैं उससे घृणा करता हूँ, फिर भी उस बेचारी लडकी के लिए मुझे बडा दुःख हो रहा है।"

"वैसे तो दुःख मुझे भी है; पर इसका सारा उत्तरदायित्व सार्क पर ही तो है। सुनिये! क्या आपने कार मे किसी लडकी का चुम्बन नही लिया?"

जु ज मुस्करा पडे, "अवश्य!"

• "मैंने भी! यद्यपि मेरी स्मृति आपसे अधिक पुरानी है। मेरी सब से बडी पौत्री यदि इस समय इस कार्य मे व्यस्त हो तो मुझे तनिक भी आश्चर्य न होगा। एक कार मे एक चुम्बन का अर्थ ही क्या है? यह

तो एक प्राकृतिक भावना की प्राकृतिक अभिव्यक्ति मात्र है।"

"सुनिये ! एक उच्चवर्ग की एक लडकी भूल से अपने आप को एक कार मे एक अपराधी के सग पाती है। वह उसके चुम्बन का अवसर पा जाता है। यह तो एक अपराधी मन की प्रेरणा थी, वह भी लडकी की सहमति बिना। उसको कैसा लग रहा होगा ? उसके पिता को कैसा लगना चाहिए ? शायद खीझ—क्रोध भी आयेगा ही—अपमान तो होगा ही—परन्तु कलकित ? कदापि नही। और वह भी इतना कि देश के विषय भी सकट मे डाल दिये जाँय ? वाहियात !"

"परन्तु वास्तविक स्थिति यही है और ऐसा केवल सार्क पर ही सम्भव है। श्रीमती सेमिया की जिद्द तथा मूर्खता के अतिरिक्त अन्य कोई भी अपराध नही है। उसका चुम्बन निश्चय ही पहले भी कितनी बार किया गया होगा। एक फ्लोरीनी को छोड कर वह किसी का चाहे हजार बार भी चुम्बन करती तो कुछ न होता। परन्तु यहाँ एक फ्लोरीनी ने उसका चुम्बन जो लिया है।"

"उसके इस बात से अनभिज्ञ होने से कि वह एक फ्लोरीनी है उसके कलक मे कोई अतर नही पडता, या यह चुम्बन जबरदस्ती लिया गया है। यदि हम वह चित्र जिसमे श्रीमती सेमिया एक फ्लोरीनी के साथ आलिगन-बद्ध है, सार्वजनिक कर देते है तो उसे व उसके पिता को मुँह दिखाने को भी जगह न रहेगी। जिस समय फाइफ ने उस चित्र की प्रतिछाया को देखा था उसका चेहरा देखने लायक था। यद्यपि उस फोटो से यह निश्चित रूप से नही कहा जा सकता कि वह एक फ्लोरीनी मुखिया है, उस समय वह सार्की पोशाक मे है और टोपी से उसके बाल ढके हैं। वह गोरा अवश्य है, पर इससे कुछ भी सिद्ध नही होता। फिर भी फाइफ को भली भाँति ज्ञात है कि जिन लोगो को कीचड उछालने में आनन्द आता है उनको किसी विशेष प्रमाण की आवश्यकता नही होती। उन्हे यह भी मालूम है कि उनके राजनैतिक प्रतिद्वन्द्वी इस अवसर का पूर्ण लाभ उठाने मे तनिक भी न चूकेंगे। आप इसे धमकी कह सकते

हैं जुंज ! पर यह धमकी ऐसी है जो नीहारिका के किसी और ग्रह पर सफल नही हो सकती। यह उनका अपना ही घृणित प्रचलन है जिसने हमे यह अभेद्य अस्त्र दिया, और इसे प्रयोग करने मे मुझे ज़रा भी सकोच व हिचक नही हुई।"

जुंज ने एक आह भरी और बोले, "फिर क्या तय हुआ ?"

"हम लोग कल दोपहर को सम्मिलित होगे।"

"तो फिर फाइफ का अन्तिमेथ्यम् स्थगित हो गया है ?"

"अनिश्चित समय के लिए। कल मैं सशरीर वहाँ जाऊँगा।"

"ऐसा सकट मोल लेना क्या उचित है ?"

"इसमे कोई सकट नही है। वहाँ और साक्षी भी तो होगे। मैं इस अन्तराल-विशेषज्ञ के सम्मुख, जिसको आप इतने दिन से खोज रहे हैं प्रत्यक्ष ही उपस्थित होना चाहता हूँ।"

"मैं भी तो उपस्थित रहूँगा न ?" जुंज ने अधीरता से पूछा।

"हाँ अवश्य ! मुखिया भी रहेगा। अन्तराल-विशेषज्ञ की पहचान के लिए उसकी आवश्यकता होगी। स्टीन भी होगा ही। पर हाँ ! आप लोग मूर्तीकरण द्वारा ही वर्तमान रहेगे।"

"धन्यवाद !"

ट्रानटर राजदूत ने उनींदी आँखो से जुंज की ओर देखकर कहा, "यदि आपको असुविधा न हो तो सोया जाय। मैं दो दिन से लगातार जाग रहा हूँ, और मेरी अवस्था इतना सहने मे असमर्थ है।"

त्रैदिशिक मूर्तीकरण के हो जाने से अब प्रत्यक्ष सभाएँ कभी भी न होती थी। इससे इस वृद्ध राजदूत की प्रत्यक्ष उपस्थिति की अशिष्टता पर फाइफ अत्यत क्रोधित था। उसके सांवले रग के लिए यह कहना कि वह क्रोध मे काला पड गया था, उचित न होगा, पर वह मूक क्रोध से तमतमा जरूर रहा था। क्रोध का मूक होना अनिवार्य ही था। वह कह भी क्या सकता था, केवल क्रोधित नेत्रो से अपने सम्मुख बैठे लोगों को देख ही तो सकता था।

आबेल ! बुड्ढा खूसट , अपने पीछे लाखो ससारो की शक्ति लिये। जुंज ! काला, भेड-जैसे बालो वाला अडियल टट्टू, जिसकी हठ ने आज यह दिन दिखाया । स्टीन ! विश्वासघाती, जो उसकी आँखों से आँखे भी नही मिला सकता ।

और मुखिया ! उसकी ओर देखना भी अपना अपमान था । यही तो वह असभ्य गँवार है जिसने उसकी पुत्री को कलकित किया है और अब ट्रानटर-दूतावास मे सुरक्षित बैठा हुआ है । यदि वह अकेला होता तो क्रोध से दाँत पीस कर, मेज पर हाथ पटक कर अपने मन की निकाल लेता; पर यहाँ—इस समय—इतने लोगो के सम्मुख चेहरे पर शिकन भी न पडनी चाहिए, चाहे उसका हृदय फट ही क्यो न जाय।

यदि सेमिया ! उससे क्या लाभ ! उसकी अपनी ही लापरवाही से तो वह इतनी स्वेच्छाचारिणी बन गई है; अब उस बेचारी को दोष देने से क्या लाभ ! फिर उसने इधर-उधर बाते बना कर अपना दोष कम करने का प्रयास भी तो नही किया । उसने सब-कुछ बिना कुछ छिपाये, बिना बाते बनाये, उसके सम्मुख खोल कर रख दिया था । किस प्रकार वह अन्तर-तारकीय गुप्तचर बनने का प्रयत्न कर रही थी और किस प्रकार उसका इतना भयानक अत हुआ । अपनी इतनी बेइज्जती और अपमान मे भी वह किस प्रकार उसकी सहानुभूति व समवेदना की आशा कर रही थी ! कम से कम यह सहानुभूति तो उसे मिलनी ही चाहिए । बेचारी लडकी ! वह अवश्य ही उसकी सहायता करेगा, चाहे उसकी अपनी योजना पर पानी ही क्यो न फिर जाय ।

वह बोला, "यह सभा मेरी इच्छा के विरुद्ध जबरदस्ती मेरे ऊपर लादी गई है, अतएव मेरे कुछ कहने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता । मैं तो यहाँ केवल सुनने के लिए हूँ ।"

आबेल ने कहा, "मेरे विचार मे सबसे पहले स्टीन ही कुछ कहना चाहेगे ।"

फाइफ के नेत्र घृणा से भर उठे । जिससे स्टीन के हृदय को भारी

चोट लगी। स्टीन उत्तर मे चिल्लाया, "आप ही ने मुझे ट्रानटर से मिल जाने को बाध्य किया है। आप ने ही संविधान के नियमो का उलघन किया है, फिर भी आप आशा करते है कि मैं आपका साथ दूँगा !"

फाइफ चुप ही रहे। आबेल ने कहा—उसके स्वर मे भी कुछ कम घृणा नही थी, "स्टीन काम की बात करिये। आप कह रहे थे कि आप को कुछ कहना है। सो कहिये !"

स्टीन के धँसे हुए गाल बिना रूज़ के ही लाल हो उठे, "हाँ ! हाँ ! मैं वही कहूँगा, अभी कहता हूँ। यह अवश्य है कि मैं फाइफ की भाँति जासूसी का दावा तो नही कर सकता, पर मैं सोच अवश्य सकता हूँ। मैं सोच भी रहा हूँ फाइफ के पास कल सुनाने के लिए एक कहानी थी। एक गुप्त विद्रोही 'क' की। मेरे विचार मे तो वह बेकार की बकवास थी जिससे कि वह सकट-काल की घोषणा कर सके। मैं क्षण-भर के लिए भी उनकी बातो मे नही आया।"

"क्या 'क' कोई भी नही है ?" फाइफ ने प्रश्न किया, "तो फिर आप भागे क्यो ? जो व्यक्ति भागता है वह स्वय ही अपने अपराध का प्रमाण दे देता है।"

"क्या सचमुच ?" स्टीन चिल्लाया, "मैं तो एक जलती हुई अट्टा-लिका से भी बाहर भागूँगा, चाहे वह आग मैने स्वय न भी लगाई हो।"

"आगे बोलो स्टीन !" आबेल ने कहा।

स्टीन ने अपने ओठो को गीला किया और अपने नाखूनो के निरीक्षण मे लग गया। फिर वह कुछ देर बाद बोला, "मैंने यह भी सोचा कि कोई इतनी उलझी हुई कहानी गढेगा ही क्यों, और वह भी फाइफ ! सचमुच फाइफ यह कथा नही गढ सकते—हम सब उनको जानते हैं—उनमे इतनी कल्पना ही कहाँ है—वह तो बोर्ट से भी गये-बीते हैं।"

फाइफ गुर्राया, "उसको कुछ कहना भी है या यो ही बकवास किये जायगा ?"

"स्टीन, आगे बोलिये !" आबेल ने कहा ।

"मैं अवश्य ही कहूँगा, यदि मुझे कहने दिया जायगा । हाय रे सार्क ! मैंने सोचा आखिर तुम हो किस पक्ष मे ? यह मैंने भोजन के पश्चात् ही सोचा है । फाइफ के समान मनुष्य इस कथा को गढेगा ही क्यो ? इस प्रश्न का केवल यही उत्तर है कि वह ऐसी कहानी नही गढ सकता । विशेषकर अपने दिमाग से । इसलिए यह सच ही होनी चाहिए, और फिर सतरियो की हत्या भी तो हुई है, चाहे वह फाइफ के अपने व्यक्तियो द्वारा ही क्यो न हो । यह अवश्य ही सच होगा ।"

फाइफ ने कुछ मुँह बनाया ।

स्टीन आगे बढता गया, "प्रश्न यही है कि 'क' कौन है ? मैं तो हूँ नही, सचमुच ! मुझे ज्ञात है कि मैं 'क' नही हूँ । यह मैं भी मानता हूँ कि इतना बडा काण्ड केवल एक प्रमुख महानुभाव ही करा सकता है, पर कौन-सा ऐसा महानुभाव है जिसे सब-कुछ मालूम है ? कौन-सा प्रमुख महानुभाव पूरे एक वर्ष से अन्तराल-विशेषज्ञ की कथा को लिये बैठा था और दूसरो को सयुक्त प्रयास का भाषण दे रहा था । जिसका अर्थ मैं तो आत्म-समर्पण ही लगाता हूँ ।

"मैं बतलाता हूँ यह 'क' कौन है," स्टीन खडा हो गया । उसका सिर छाया ग्राही से इच-भर ऊपर निकल कर कट गया था । उसने उँगली उठाकर कहा, "वह 'क' है, यह फाइफ का महानुभाव ! इसी ने अन्तराल-विशेषज्ञ को खोज निकाला, इसी ने उसको राह से हटा दिया था । जब उसने पहली सभा में देखा कि हम लोग इससे प्रभावित नही हुए हैं, तो उसने सेना-शासन की व्यवस्था करके उसे बाहर निकाला ।"

फाइफ ने थके-से स्वर मे आबेल से कहा, "क्या यह समाप्त कर चुका ? यदि समाप्त कर चुका हो तो सामने से हटा दिया जाय । यह किसी सभ्य पुरुष के लिए अपमान के अतिरिक्त और कुछ नही है ।"

"जो कुछ उसने कहा है, क्या आप उस विषय मे कुछ कहना चाहेगे ?"

"कुछ नही ! स्टीन की ग्रालोचना भी तो नही की जा सकती। वह हताश हो चुका है । कुछ भी कह सकता है।"

"फाइफ, ग्राप ऐसा कहकर छुटकारा नही पा सकते," स्टीन ने कहा। उसने बाकी लोगो की ग्रोर देखा। फिर उसने कहना ग्रारम्भ किया, "सुनिये, इसी ने डाक्टर के ग्रौषधालय मे रेकार्ड पाये। इसी ने तो बतलाया कि इस सूचना के पश्चात् ही कि ग्रन्तराल-विशेषज्ञ का मस्तिष्क-वेधन हुग्रा है, डाक्टर एक दुर्घटना का शिकार हो गया था। उसका ही कहना है कि यह हत्या 'क' की ही कराई हुई है, जिससे कि ग्रन्तराल-विशेषज्ञ का भेद न खुल जाय। यह सब इसी ने कहा था। इसी से पूछ देखिये। पूछ देखिये न कि इसने यह सब बतलाया था ग्रथवा नही।"

"मैंने कहा भी हो तो उससे क्या ?" फाइफ ने पूछा।

"तब फिर इससे पूछ देखिये कि किसी मृत डाक्टर के ग्रौषधालय से जो महीनो पहले मरा है, रेकार्ड कैसे पाये जा सकते हैं, जब तक कि वह रेकार्ड स्वय उसके पास पहले से ही न हो।"

फाइफ ने कहा, "यह क्या व्यर्थ की बकवास है ? इस तरह तो सारा समय बरबाद कर देगे। दूसरे डाक्टर ने उसकी प्रैक्टिस व रेकार्ड दोनो ले लिये थे। क्या तुम सोचते हो कि डाक्टरी रेकार्ड डाक्टर के साथ ही नष्ट कर दिये जाते हैं ?"

ग्राबेल ने कहा, "नही श्रीमान्, नहीं।"

स्टीन भुनभुनाया ग्रौर फिर बैठ गया।

फाइफ ने कहा "ग्रब ग्रागे चलिये। क्या ग्रौर किसी को भी कुछ कहना है ? क्या कुछ ग्रौर ग्रभियोग लगाने हैं ?" उसका स्वर धीमा हो गया था तथा एक प्रकार की कटुता से भर गया था।

ग्राबेल ने कहा, "ग्ररे भाई ! वह तो स्टीन का ग्रपना तरीका था। जाने भी दो। जुंज ग्रौर मैं हम दोनो दूसरे प्रकार के कार्य से ग्राये हैं। हम लोग ग्रन्तराल-विशेषज्ञ से भेंट करना चाहते हैं।"

फाइफ के हाथ ग्रबतक मेज पर रखे थे। वे उठे ग्रौर ग्रब उन्होंने

मेज का किनारा पकड लिया था। उनकी काली भौंहे सिकुड गई थी।

उन्होने कहा, "हमारी कैद मे एक आधा पागल व्यक्ति है जो अपने आपको अन्तराल-विशेषज्ञ बताता है। मैं उसको अन्दर बुलवाता हूँ।"

वलोना मार्च ने अपने जीवन मे ऐसी असम्भव बातो के अस्तित्व के विषय मे कभी स्वप्न मे भी नही सोचा था। कल जब से वह सार्क पर आई थी, हर बात और हर वस्तु ही आश्चर्यजनक दिखाई दे रही थी। यहाँ तक कि काराग्रह की कोठरी भी, जिनमे वह और रिक अलग-अलग रखे गये थे, एक प्रकार की शान से चमक रहे थे। बटन दबाते ही एक छिद्र मे से पानी निकल आता था। दीवारो मे से भी गर्मी निकलती थी, यद्यपि बाहर की वायु उसकी कल्पना से अधिक ठडी थी। और यहाँ का प्रत्येक व्यक्ति इतने सुन्दर-सुन्दर कपडे पहिने था।

जिन-जिन कमरो मे अब तक वह गई थी, वहाँ उसने ऐसी-ऐसी वस्तुएँ देखी थी जो अपने जीवन मे पहिले कभी न देखी थी। यह कमरा, जिसमे उसने अभी प्रवेश किया था, उन सबसे बडा था, परन्तु अधिकाशतः खाली था। यद्यपि उसमे काफी लोग थे। मेज के पीछे एक कठोर-सा पुरुष बैठा था। झुर्रियोदार चेहरा लिये, एक अत्यन्त वृद्ध कुर्सी पर बैठा था और तीन और...... ..

उनमे मुखिया भी था।

वलोना उछल पडी और 'मुखिया! मुखिया!' चिल्लाती उसकी ओर दौडी। परन्तु वहाँ कोई न था।

वह उठ गया था तथा उसकी ओर हाथ हिला कर कह रहा था, "पीछे ही रहो लोना! पीछे ही रहो।"

वह मुखिया के बीच मे से ही निकल गई थी। उसने मुखिया की बाँहे पकड़नी चाही थी पर वह उसने हटा ली थी। वह गिरती-पड़ती

आगे बढी तो फिर से उसके बीच मे से निकल गई थी। एक बार को तो सन्न रह गई थी वह। मुखिया घूम गया। अब वह फिर उसके सम्मुख था और उसकी ओर देख रहा था। पर वलोना सिवाय अपने पैरो की ओर ताकने के और कुछ न कर पा रही थी।

दोनो ही पैर मुखिया की कुर्सी के भारी हत्थो के बीच से निकल गये थे। उसे वह कुर्सी साफ-साफ, अपने समस्त रगो व भारीपन के साथ दिखाई दे रही थी, व उसके पैरो को चारो ओर से घेरे थी, पर उसे कुछ भी अनुभव नही हो रहा था। उसने अपना हाथ आगे किया, उस की उँगलिया कुर्सी के गद्दे मे इंच भर घुस गईं, पर उसे कुछ भी पता नही लगा और फिर उसकी उँगलियाँ दिखाई भी तो दे रही थी।

वह चीख मार कर बेहोश हो गई। उसको अन्तिम बात यही याद थी कि मुखिया ने उसको पकडने के लिए हाथ बढाये थे और वह उन हाथो के बीच मे से ऐसे खिसक गई थी, मानो वह हवा मे केवल रंगो के ही बने हो।

अब वह एक कुर्सी मे बैठी थी। रिक उसका हाथ थामे था और वह वृद्ध पुरुष उसके ऊपर झुका था।

वह कह रहा था, "मेरी बच्ची! डरो नही। यह तो केवल एक चित्र है, चित्र।"

वलोना ने अपने चारो ओर देखा। मुखिया अभी भी वही बैठा था, परन्तु वह उसकी ओर देख नही रहा था।

उसने पूछा, "क्या वह वहाँ नही है?"

रिक ने अचानक ही कहा, "यह त्रिदैशिक मूर्तीकरण है लोना। वह कही दूर है, पर हम उसको यहाँ देख सकते हैं।"

वलोना ने अपना सर हिलाया। यदि रिक ऐसा कहता है तो ठीक ही होगा। उसने अपनी आँखे नीची कर ली थी। वह उन लोगो को, जो वहाँ थे भी और नही भी थे, देखने का साहस एकत्र न कर पा रही थी।

आबेल ने रिक से कहा, "ऐ युवक! तो तुम जानते हो कि त्रिदैशिक

मूर्तीकरण क्या होता है ?"

"जी श्रीमान्" रिक के लिए भी यह एक बडा ही महत्त्वपूर्ण दिन था। जहाँ वलोना निरन्तर भौचक्की होती जा रही थी, यहाँ रिक को सब वस्तुएँ बडी परिचित व सार्थक लग रही थी।

"तुमने यह सब कहाँ सीखा ?"

"यह मुझे याद नही। यह तो मुझे पहले से मालूम था—भूलने से पहले।"

फाइफ वलोना की बेहोशी के समय भी कुर्सी पर से न हिला था। अब उसने बडी कटुता से कहा, "मुझे खेद है कि मुझे एक वातोन्मादी लडकी को यहाँ लाना पडा। पर तथाकथित अन्तस्तल-विशेषज्ञ को उसकी उपस्थिति की आवश्यकता थी।"

"कोई बात नही," आबेल ने कहा "पर मैं देखता हूँ कि आपका फ्लोरीनी-अर्ध विक्षिप्त दिमाग त्रिदैशिक मूर्तीकरण को समझता है।"

"मेरे विचार मे वह अच्छी तरह सिखाया गया है।" फाइफ ने कहा।

आबेल ने कहा, "उसके सार्क पर आने के बाद भी क्या उससे प्रश्न किये गये हैं ?"

"अवश्य ही !"

"क्या फल रहा ?"

"कोई नई सूचना नहीं मिली।"

अब आबेल ने रिक से पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है ?"

"रिक ही नाम ऐसा है जो मुझे याद है," रिक ने शातिपूर्वक उत्तर दिया।

"यहाँ, तुम किसी को जानते हो ?"

रिक ने प्रत्येक चेहरे को भय-रहित दृष्टि से देखा और कहा, "केवल मुखिया और लोना को।"

"यह" आबेल ने फाइफ की ओर इशारा करते हुए कहा, "यह संसार के सबसे प्रमुख महानुभाव हैं। यह सारी दुनिया के स्वामी है।

इनके विषय मे क्या कहते हो ?"

रिक ने धृष्टतापूर्वक कहा,"मैं पृथ्वी-पुत्र हूँ। यह मेरे स्वामी नही है।"

आबेल ने फाइफ के कान मे धीरे से कहा, "मैं नही सोचता कि किसी वयस्क देशी फ्लोरीनी को इस धृष्टता के लिए सिखाना सम्भव है।"

"चाहे उसका मस्तिष्क-वेधन क्यो न हुआ हो!" फाइफ नेव्यग्य किया।

"क्या तुम इन महोदय को जानते हो ?" आबेल ने जुंज की ओर इशारा किया।

"नही श्रीमान्।"

"यह डा० सलीम जुज हैं। यह अन्तर-तारकीय अन्तराल-विश्लेषण ब्यूरो के एक महत्त्वपूर्ण अधिकारी हैं।"

रिक ने उनकी ओर ध्यानपूर्वक देख कर कहा, "तब तो यह फिर मेरे चीफ हैं, परन्तु······" उसने निराश भाव से कहा, "मैं इन्हे नही जानता। या फिर सम्भवत· मैं भूल रहा हूँ।"

जुंज ने भी निराश भाव से अपना सिर हिलाते हुए कहा, 'मैंने भी इसको कभी नही देखा आबेल।"

"यह तो रेकार्ड करने लायक बात है!" फाइफ ने ताना मारा।

"ऐ रिक सुनो", आबेल ने कहा, "मैं तुम्हे एक कहानी सुनाता हूँ। मैं चाहता हूँ तुम उसे पूरें ध्यान से सुनो और विचार करो। सोचो और सोचते जाओ। समझे!" रिक ने अपना सिंर हिलाया।

आबेल धीरे-धीरे कहता गया। काफी समय तक कमरे मे केवल उसका ही स्वर सुनाई देता रहा। जैसे-जैसे वह कहते जा रहे थे, रिक कस कर आँखें बद करता जा रहा था। ऐसा प्रतीत होता था जैसे उसको अत्यन्त कष्ट का अनुभव हो रहा हो।

फाइफ के महानुभाव ने जिस प्रकार घटनाओ के होने की व्याख्या की थी, उसी के अनुसार आबेल बोलते गये और सुनाते गये। उहोने विध्वंस की सूचना से आरम्भ किया। किस प्रकार वह रोकी गई। फिर रिक और 'क' की भेंट हुई और फिर मस्तिष्क-वेधन। किस प्रकार रिक

फ्लोरीना ले जाया गया। किस प्रकार डाक्टर ने उसकी परीक्षा की, फिर डाक्टर की हत्या और किस प्रकार उसकी स्मृति लौटी।

उन्होने कहा, "यही समस्त कथा हैं। मैने तुम्हे सारी सुना दी है। अब बतलाओ, तुम्हे इसमे कुछ परिचित-सा लगा ?"

धीरे-धीरे कष्ट के साथ रिक ने कहा, "केवल अतिम भाग ही। केवल अतिम कुछ दिवस ही। मुझे पहले का भी कुछ स्मरण आ रहा है। शायद वह डाक्टर ही हो, जब मैंने पहले बोलना आरम्भ किया था। पर सब कुछ धुँधला ही है। बस, केवल इतना ही।"

आबेल ने कहा, "पर तुम्हें पहले का, इससे बहुत पहले का भी तो याद आया है। फ्लोरीना के सकट के विषय मे भी तो याद आया है।"

"हाँ ! हाँ ! वह तो पहली बात है जो मुझे याद आई थी।"

"पर क्या तुम्हे उसके बाद का कुछ भी याद नही आ रहा ? तुम सार्क पर उतरे थे ? वहाँ किसी से मिले थे ?"

रिक रुँधे स्वर मे बोला, "मुझे कुछ भी याद नही आ रहा।"

रिक ने मुँह ऊपर उठा कर देखा। उसका गोरा चेहरा पसीने से तर हो गया था, "मुझे एक शब्द याद आया है।"

"क्या शब्द रिक !"

"परन्तु उसका कोई अर्थ नही निकलता।"

"फिर भी बताओ तो !"

"यह एक मेज से सम्बधित है। बहुत-बहुत पहले। बहुत ही धुँधला है। मैं बैठा हुआ था। मेरे विचार में शायद कोई और भी बैठा था। फिर वह खड़ा हो गया था। वह बहुत ऊपर से नीचे को मेरी ओर देख रहा था। और फिर एक शब्द है।"

आबेल शात थे, "क्या शब्द ?"

रिक ने अपनी मुट्ठी भीचते हुए कहा "फाइफ !"

सिवाय फाइफ के सभी अपनी कुर्सी से उछल पडे। स्टीन चीखा, "मैंने तो पहले ही कहा था," और फिर ठहाका मार कर हँस पडा।

: ७ :

अभियोगी

फाइफ के क्रोध की सीमा न रह गई थी, फिर भी अपने आप को संयत रखते हुए उसने कहा, "अब इस स्वाँग का अन्त होना चाहिए।"

कुछ देर रुक कर ही बोला था। उसके नेत्र कठोर थे तथा चेहरा भावहीन। जब तक शान्त होकर सब लोग अपने स्थान पर नही बैठ गये, वह चुप ही रहा। रिक ने अपना सिर झुका रखा था और बड़े कष्ट से आँखे कस कर बद कर रखी थी, मानो वह अपने मस्तिष्क मे कुछ खोज रहा हो। वलोना ने उसे अपनी ओर खीच लिया था और उसका सिर अपने कन्धे से लगा कर थपथपा रही थी, मानो उसका सारा कष्ट हर लेना चाहती हो।

आबेल ने भी क्रुद्ध होकर कहा, "आप इसे स्वाँग कैसे कह सकते हैं?"

फाइफ ने कहा, "क्या यह प्रपंच नही है? प्रथम तो इस सभा के लिए मैं केवल इसी कारण तैयार हुआ था, क्योकि आपने मुझे एक विशेष प्रकार की धमकी दी थी। यदि मुझे यह अनुमान भी होता कि विद्रोहियो और हत्यारो को जज-स्वरूप रख कर मेरा मुकदमा होना है, तो मैं उस धमकी की भी परवाह न करता।"

आबेल ने क्रोधित होने पर भी पूर्ण शिष्टता से कहा, "महानुभाव,

यह कोई मुकदमा नही है। डा० जुंज अपने कर्तव्यानुसार अन्तराल-ब्यूरो के कर्मचारी को वापस ले जाने के लिए ही यहाँ उपस्थित हुए है। मैं इस उथल-पुथल के समय ट्रानटर के अधिकारो की रक्षा के लिए उपस्थित हूँ। मेरे मन मे इस बात का किंचित् भी सदेह नही है कि यह रिक ही खोया हुआ अन्तराल-विशेषज्ञ है। यदि आप इसे पूरे अनुसधान के लिए डा० जुज को दे देगे तो हम सभा के इस अप्रिय तर्क का तुरत ही अन्त कर देगे। हम इसकी शारीरिक परीक्षा भी करायेगे। यह तो अवश्य है कि मस्तिष्क-वेधन करने वाले अपराधी की खोज मे हमे आपकी सहायता की आवश्यकता पडेगी, जिससे आगे फिर ऐसा न हो सके। आखिर अन्तराल ब्यूरो एक अन्तर-तारकीय स्वतत्र सस्था है। वह विभिन्न संसारो की राजनीति से बिल्कुल परे है।"

फाइफ ने कहा, "अहा हा! क्या भाषण है! पर आप लोगो की चाल शीशे की भांति साफ है। यदि मैंने इस व्यक्ति को दे दिया, तो मैं जानता हूँ फिर क्या होगा। अन्तराल-ब्यूरो जो बाते चाहेगी फैलायेगी। यो तो यह राजनीति से परे अन्तर-तारकीय निष्पक्षता का दावा करती है, पर क्या यह सत्य नही है कि इसको दो-तिहाई सहायता ट्रानटर से ही मिलती है। इस स्थिति मे कोई भी विचारवान् मनुष्य इसको निष्पक्ष नही कह सकता। और इस कारण जो कुछ इस मनुष्य से पता चलेगा, वह ट्रानटर के इच्छानुसार ही होगा।

"यह खोज क्या होगी, यह भी साफ है। इस मनुष्य की स्मरण-शक्ति धीरे-धीरे लौटती जायगी। अन्तराल-ब्यूरो प्रतिदिन का विवरण छापेगा; पहले मेरा नाम, फिर मेरी आकृति, फिर मेरे वास्तविक शब्द और मैं विधिपूर्वक अपराधी घोषित कर दिया जाऊँगा। मुझ से हर्जाना मांगा जायगा और अस्थायी रूप से ट्रानटर सार्क पर अधिकार कर लेगा, ऐसा अधिकार जो बाद मे कभी न कभी स्थायी हो कर ही रहेगा।

"धमकियों की भी सीमा होती है श्री राजदूत! उसके बाद उसका प्रभाव समाप्त हो जाता है। अब आपकी धमकियाँ भी प्रभावहीन होती

जा रही हैं। यदि आप इस मनुष्य को ले जाने के लिए ट्रानटर की सारी सेना बुलवा सकते हैं।"

"बल प्रयोग का तो कोई प्रश्न ही नही है।" आबेल ने कहा, "फिर भी मैं देख रहा हूँ कि कितनी बुद्धिमानी से आप अन्तराल-विशेषज्ञ के अन्तिम शब्द के अभियोग को टाल गये हैं।"

"यह भी कोई अभियोग है जिसको कि मैं स्वीकार करके प्रतिष्ठित करूँ? उसको एक शब्द याद आया है या वह कहता है कि याद आया है। पर उससे क्या?"

"जो उसे याद आया है, क्या वह निरर्थक है?"

"अवश्य! स्नार्क पर फाइफ का नाम कौन नही जानता। यदि हम उसकी निष्कपटता का भी विश्वास करे तो भी फ्लोरीना के एक वर्ष के वास मे यह नाम उसने कई बार सुना होगा। वह सार्क पर उसी यान से आया, जिसमे मेरी पुत्री थी। इससे अच्छा अवसर मेरा नाम जानने का और क्या हो सकता था? तब फिर मेरा नाम उसकी याद मे आ जाना कौन-सी बडी बात है? और यह भी तो हो सकता है कि वह निष्कपट न हो। इसका इस प्रकार रह-रह कर स्मरण करना पूर्णतया बनावटी तथा सिखाया हुआ प्रतीत होता है।"

आबेल ने चुप रहना ही उचित समझा। वह दूसरो को देख रहा था। जुंज कुछ क्रोधित थे, वह उँगलियो से अपनी ठोडी सहला रहे थे। स्टीन मूर्खों की भाँति मुँह बना रहा था। मुखिया भावहीन अपने घुटने ताक रहा था। वह रिक ही था, जो वलोना की गोद से सिर उठा कर सीधा खडा हो गया और फिर बोला था।

"सुनिये" उसने कहा। उसका पीला चेहरा कष्ट से ऐंठ रहा था तथा नेत्र पीडित थे।

फाइफ ने कहा, "अब क्या कोई नवीन रहस्योद्घाटन करना है?"

रिक ने कहा, "सुनिये, हम लोग मेज के दोनो ओर बैठे थे। चाय में बेहोशी की दवा मिला दी गई थी। हम लोग झगड़ रहे थे। मुझे यह

तो याद नहीं, क्यों ? पर चाय पीने के बाद मैं हिल-डुल भी न सका था। मैं सोच ही सकता था। हे अन्तराल ! मुझे विष दे दिया गया था। मैं चीखना, चिल्लाना व भागना चाहता था, पर असमर्थ था। फिर वह दूसरा व्यक्ति अर्थात् फाइफ मेरे निकट तक आया। पहले वह मेरे ऊपर चिल्ला रहा था, अब उसका चिल्लाना बन्द हो गया था। उसकी कोई आवश्यकता भी न थी। वह मेज के दूसरी ओर से उठकर आया था। वह मेरे निकट आकर खड़ा हो गया। मेरे से बहुत ही ऊँचा था। मैं न तो बोल ही सकता था और न कुछ कर ही सकता था। मैं केवल सिर ऊँचा कर उसकी ओर अपनी पुतलियाँ ही घुमा सकता था।"

रिक फिर चुपचाप खड़ा रह गया था।

सलीम जुंज ने पूछा, "क्या वह दूसरा व्यक्ति फाइफ है ?"

"मुझे तो उसका नाम फाइफ ही याद आ रहा है।"

"अच्छा तो क्या वह व्यक्ति यह था ?"

रिक देखने के लिए मुडा भी नही और उसने कहा, "मुझे उसका चेहरा तनिक भी याद नही।"

"ज़रा भी नही !"

"मैं तब से प्रयास कर रहा हूँ।" वह उबल पडा, "आप लोग नही जानते, यह प्रयत्न कितना कष्टप्रद है। यह लाल जलते सूओ की भाँति लगता है। यहाँ ! इसके अन्दर।" उसने अपना सिर छूते हुए कहा।

अब जुंज ने बडी कोमलता के साथ उससे कहा, "मैं जानता हूँ यह अत्यन्त कष्टदायक है, परन्तु थोडा-सा और प्रयत्न करो। क्या तुम नही समझते ? थोडा-सा प्रयास और करो। उस व्यक्ति की ओर ध्यान से देखो। उस व्यक्ति की ओर मुडो तो।"

रिक फाइफ के महानुभाव की ओर बडी कठिनाई से मुडा। एक क्षण तक वह उनकी ओर ताकता रहा, फिर उसने मुँह फिरा लिया।

जुंज ने पूछा, "क्या अब कुछ याद आया ?"

"नहीं ! नही !"

फाइफ गम्भीरता से मुस्कराया, "क्या आपका आदमी अपना पाठ भूल गया ? या यदि वह कुछ देर बाद अगली बार मुझे पहचाने, तो अधिक स्वाभाविक लगेगा ?"

जुंज ने क्रुद्ध होते हुए कहा, "मैंने इस मनुष्य को पहले कभी नही देखा, न ही कभी इससे बाते की है, और न ही आप पर अभियोग लगाने की हमारी कोई इच्छा है। मैं आपके इस अभियोग से तंग आ गया हूँ। मैं तो केवल सत्य की खोज मे हूँ।"

"तो फिर क्या मैं भी उससे कुछ प्रश्न पूछ सकता हूँ ?"

"अवश्य !"

"आपकी इस कृपा के लिए धन्यवाद ! ऐ रिक, या जो कुछ भी तुम्हारा नाम है ....."

वह एक सार्की महानुभाव था जो आदिवासी फ्लोरीनी से बाते कर रहा था।

रिक ने सिर उठाकर कहा, "जी श्रीमान्।"

"तुम्हे याद आ रहा है कि जब तुम असहाय अवस्था मे बैठे थे तो कोई मेज़ के दूसरी ओर से उठकर तुम्हारी ओर आया था ?"

"जी श्रीमान् !"

"अन्तिम बात जो तुमको याद आ रही है, वह यह है कि वह बहुत ऊँचे से तुमको देख रहा था ?"

"जी हाँ।"

"तुम ऊपर मुँह करके उसकी ओर देख रहे थे ?"

"जी !"

"अच्छा, बैठ जाओ !"

क्षण-भर के लिए फाइफ निश्चल रहे। उनका चेहरा पीला पड़ गया था तथा और भी गम्भीर हो गया था। और फिर वह अपनी कुर्सी से नीचे खिसक गये।

खिसक गये थे—मानो वह वही मेज़ के पीछे घुटनों के बल बैठ गये

हो। परन्तु जब वह उसके पीछे से निकल आये तो पूरे खड़े हुए दीख रहे थे।

जुंज का सिर चकरा गया। यह मेज़ के पीछे बैठा रौबदार व्यक्ति अब केवल एक कार्टूनी बौना ही रह गया था।

फाइफ के टेढ़े-मेढ़े, छोटे-छोटे पैर उसके बड़े से धड़ और सिर का बोझ उठाये बड़े कष्ट से चल रहे थे। उनका चेहरा लज्जा से लाल हो रहा था। पर नेत्र अब भी उसी प्रकार विजय-गर्व से चमक रहे थे। स्टीन पहले तो ठठाकर हँस पड़े, पर जैसे ही उन नेत्रों ने उसकी ओर देखा, वैसे ही उनकी आवाज वहीं गले में घुटकर रह गई। बाक़ी लोग तो पहले से ही सकते में आ गये थे।

रिक आँखें फाड़े उनको अपनी ओर आते देख रहा था।

फाइफ ने पूछा, "क्या मैं ही वह मनुष्य हूँ जो मेज के दूसरी ओर से तुम्हारे निकट आया था ?"

"जी, मुझे उसका चेहरा याद नहीं आ रहा।"

"मैं तुम्हें उसका चेहरा याद करने को नहीं कहता। क्या तुम उसको भूल सकते हो ?" उन्होंने अपनी लम्बी बाँहों से अपनी देह को छूते हुए कहा, "क्या तुम मेरी देह, मेरी चाल को भूल सकते हो ?"

रिक ने कष्टपूर्वक कहा, "मैं सोचता तो नहीं। पर श्रीमान्, मैं कह भी क्या सकता हूँ ?"

"पर तुम बैठे हुए थे, वह खड़ा हुआ था। और तुम उसकी ओर मुँह उठा कर देख रहे थे। है न ?"

"जी हाँ।"

"वह तुम्हारी ओर नीचे को देख रहा था, वास्तव में तुमसे बहुत ही ऊँचा था!"

"जी हाँ।"

"तुम्हें कम से कम यह तो याद है। क्या तुम पूरे विश्वास से कह सकते हो ?"

"जी श्रीमान् !"

अब दोनो आमने-सामने थे।

"क्या मैं तुम्हारी ओर नीचे देख रहा हूँ ?"

"जी नही।" रिक ने कहा

"क्या तुम मेरी ओर ऊपर देख रहे हो ?"

रिक बैठा हुआ था और फाइफ खडा हुआ। तब भी दोनो की आँखे एक ही समतल पर आमने-सामने थी।

"जी नही।"

"तो क्या फिर मैं वह व्यक्ति हो सकता हूँ ?"

"जी नही।"

"पूर्ण विश्वास से कह रहे हो ?"

"जी हाँ।"

"क्या अब भी तुम यही कहते हो कि जो नाम तुम्हे याद है, वह फाइफ ही है ?"

"जी हाँ ! नाम तो मुझे फाइफ ही याद आ रहा है।" रिक ने दृढता से कहा।

"तो फिर जो भी वह रहा होगा, उसने मेरा नाम कपट-पूर्वक ही धारण किया होगा।"

"तो फिर ऐसा ही होगा।"

फाइफ मुडे और बडी शान से अपनी मेज़ के पीछे जाकर कुर्सी पर बैठ गये। उन्होने कहा, "मैंने आज तक अपने वयस्क जीवन मे किसी को भी अपने-आप को खडी अवस्था मे नही देखने दिया। अब कौन-सा कारण बाकी रह गया है जो हम इस सभा को विसर्जित न कर दें ?"

आबेल एकदम ही व्यग्र हो उठे थे। वह इस समस्त व्यापार से चिढ़ गये थे। अभी तक तो सभा पूर्णतया असफल ही रही थी। हर पग पर फाइफ अपने-आपको सत्य सिद्ध करता आया था और दूसरो

को गलत। फाइफ सफलतापूर्वक शहीद बन चुका था। ट्रानटर ने धमकी देकर उसे सभा करने पर बिवश किया और उन पर वे मिथ्या अभियोग लगाये, जो एकदम ही निराधार सिद्ध हुए।

अब फाइफ इस सभा की बातो का सारी नीहारिका मे प्रचार कर देगा और ट्रानटर के विरुद्ध इस प्रचार में उसे सत्य से अधिक दूर भी न जाना पडेगा।

आबेल अब अपनी हानि को यथा-सम्भव घटाना चाहते थे। यह अन्तराल-विशेषज्ञ अब ट्रानटर के किसी भी काम का न था। अब यदि उसे कुछ याद भी आया, चाहे वह कितना ही सत्य क्यों न हो, कोरी गप्प ही समझा जायगा। लोग उसकी हँसी उडायेंगे और उसे ट्रानटर-साम्राज्य वाद की एक चाल ही समझा जायगा। अत वह कुछ हिचकिचा रहे थे कि इतने मे जुज बोले।

उन्होने कहा, "मेरी समझ मे अभी सभा विसर्जित न करने का एक विशेष कारण है। हमे अभी तक यह पता नही लग सका कि मस्तिष्क-वेधन करने वाला अपराधी कौन है। आपने स्टीन के महानुभाव पर आरोप लगाया और स्टीन ने आप पर। यदि यह मान लिया जाय कि दोनो ही भूल रहे हैं तथा दोनो ही निरपराध है, फिर भी दोनो एक-दूसरे को अपराधी समझ रहे है। तो फिर यह पता लगाना बहुत आवश्यक है कि आखिर अपराधी है कौन ?"

"उससे क्या अन्तर पडता है," फाइफ ने कहा, "जहाँ तक आप लोगो का सम्बन्ध है, मेरे विचार मे कुछ भी नही। यदि ट्रानटर और अन्तराल-ब्यूरो ने हस्तक्षेप न किया होता तो समस्या अब तक सुलझ भी गई होती। अन्त मे अपराधी भी पकडा ही जायगा। याद रखिये, मस्तिष्क का बेधक जो भी हो, उसकी आरम्भिक योजना काईट का समस्त व्यापार हथियाने की ही थी, सो मैं उसे किसी भी प्रकार न छोडूँगा। जब वह व्यक्ति पकडा जा चुकेगा और उसे दण्ड मिल जायगा तो आप का कर्मचारी आपको सही-सलामत आपके पास पहुँचा दिया जायगा।

इस समय मैं केवल यही आश्वासन दे सकता हूँ और मेरे विचार मे यह कुछ कम नही है।"

"आप मस्तिष्क-वेधक के साथ क्या व्यवहार करेगे ?"

"यह हमारी आन्तरिक समस्या है। उससे आपको मतलब ?"

"मतलब अवश्य है" डा० जु ज ने तत्परता से उत्तर दिया। यह केवल अन्तराल-विशेषज्ञ का ही प्रश्न नही है। मेरे विचार मे तो इसमे इससे भी अधिक महत्वपूर्ण समस्या अतर्ग्रस्त है। आश्चर्य है कि उस ओर अभी तक किसी का ध्यान क्यो नही गया। इस व्यक्ति, रिक का, कोई इस कारण तो मस्तिष्क-वेधन हुआ नही था, क्योकि वह एक अंतराल-विशेषज्ञ है।"

आबेल को इसका तो पता नही था कि डा० जु ज का तात्पर्य इस समय किस वस्तु से है, पर फिर भी उन्होने अपना पूरा जोर लगाते हुए कहा, "डा० जु ज का तात्पर्य अन्तराल-विशेषज्ञ की मूल सूचना से है।"

फाइफ ने कहा, "मेरे विचार मे डा० जुंज सहित किसी ने भी पिछले वर्ष-भर मे उस सूचना को कोई महत्त्व नही दिया। खैर, डा० जुंज आपका कर्मचारी यही है, आप उससे उस सूचना के विषय मे पूछ सकते हैं।"

"पर उसे याद भी क्या होगा !" डा० जुंज ने क्रोधित हो प्रत्युत्तर दिया। "मस्तिष्क-वेधन मेधा की तर्क-शक्ति को सबसे अधिक प्रभावित करता है। यह व्यक्ति शायद ही फिर कभी अपना कार्य इस जीवन में कर पाये।"

"फिर तो वह सूचना नष्ट हो ही गई।" फाइफ ने कहा, "अब क्या किया जा सकता है ?"

"कुछ तो अवश्य ही किया जा सकता है। यही तो बात है। एक और व्यक्ति है जिसे अन्तराल-विशेषज्ञ की सारी गणना मालूम है, वह है मस्तिष्क-वेधक ! चाहे वह स्वयं अन्तराल-विशेषज्ञ न रहा हो, चाहे

उसे पूरा विवरण न ज्ञात हो, फिर भी उसने इस मनुष्य से उसकी ठीक दशा मे वार्तालाप तो किया है। उसको हमारे मतलब का काफी ज्ञात होगा। बिना काफी कुछ जाने हुए वह सूचना के आधार को नष्ट नही कर सकता। फिर भी रिक से पूछ तो सकते ही है। रिक ! क्या तुम को कुछ याद है ?"

"बस, इतना ही कि कही कोई संकट था और वह भी अन्तराल-लहरो से सम्बन्धित।" रिक ने धीमे-धीमे कहा।

फाइफ ने कहा, "यदि आपको यह पता भी चल जाय तो आपको क्या मिलेगा ? यह पीडित अन्तराल-विशेषज्ञ प्रतिदिन अपने-अपने व्यर्थ से सिद्धान्त लिये चले आते हैं। बहुत से तो यहाँ तक समझते है मानो वह ब्रह्माण्ड की हर गुप्त बात का ज्ञाता है, और उस समय वह इतने अस्वस्थ होते है कि अपने यत्र को भी ठीक से नही पढ पाते।"

"कदाचित् आपका कथन सत्य ही हो। पर क्या आप इसी लिए भयभीत हो रहे है कि वह सूचना मुझे मालूम हो जायगी ?"

"मैं किसी भी आतंकित करने वाली अफवाह को, जो काईट-व्यापार के लिए हानिकारक हो, नही फैलने दूँगा। क्यो आबेल, इस बात से तो आप भी सहमत होगें।"

आबेल अन्दर-ही-अन्दर ऐंठ उठे। वह फाइफ की चालाकी समझ रहे थे कि अब चाहे काईट के व्यापार को उसकी ही ओर से धक्का क्यो न लगे, पर वह ट्रानटर को दोषी ठहरा सकता था। पर आबेल भी कच्चे खिलाड़ी न थे। उन्होने दूसरा पासा फेका।

उन्होने कहा, "अवश्य ! फिर भी मै डा० जुंज की बात पूरी सुनी जाने की प्रार्थना करूँगा।"

"धन्यवाद !" जुंज ने कहा "फाइफ के महानुभाव ! आपका कथन है कि मस्तिष्क-वेधन ने ही रिक की डाक्टरी परीक्षा के बाद डाक्टर की भी हत्या कराई है। इसका अर्थ हुआ कि रिक के सारे फ्लोरीना-वास में उसने रिक पर निरंतर पहरा रखा था ?"

"फिर ?"

"उसका कुछ तो पता चल ही सकता है।"

"आपका मतलब है कि इन आदिवासियो को पता होगा कि कौन उस पर दृष्टि रखे था ?"

"क्यो नही ?"

फाइफ ने कहा, 'आप सार्की नही है, इस लिए यह भूल कर रहे हैं। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि ये आदिवासी अपने-अपने कार्य से ही सम्बन्ध रखते है। उनकी महानुभावो तक पहुँच नही है। यदि कोई महानुभाव उनके निकट जाता भी है तो वह अपनी दृष्टि अपने पैरो की ओर कर लेते हैं। उनको इस पहरे का क्या पता हो सकता है ?"

जुंज घृणा से कांप उठे। इन महानुभावो मे यह अहकार कितनी जड पकड चुका है कि उन्हे इस व्यवहार मे कोई भी विचित्रता नही प्रतीत होती और ये इस विषय मे इतने गर्व से बाते कर सकते हैं।

उन्होने कहा, "शायद साधारण आदिवासियो को न हो। परन्तु यहाँ हम लोगो के मध्य एक आदिवासी है, जो साधारण नही है। मेरे विचार मे तो उसने यह अच्छी तरह दिखला दिया है कि वह महानुभावों का समुचित आदर भी नही करता है। अभी तक उसने तर्क मे कोई भाग भी नही लिया है, मेरे विचार मे अब उससे प्रश्न करने का समय आ गया है।"

फाइफ ने कहा, "उस मामले मे फ्लोरीनी साक्षी व्यर्थ है। वास्तव मे मैं ट्रानटर से एक बार फिर प्रार्थना करूँगा कि वह इस आदिवासी को उचित न्याय के लिए हम लोगो को दे दे।"

"पहले मुझे इससे बाते कर लेने दीजिये।"

आबेल ने भी धीमे-से कहा, "फाइफ ! यदि इससे एक-दो प्रश्न कर ही लिये जाँय तो क्या हानि है ? यदि उससे कोई सहायता न मिले, या वह अविश्वस्त सिद्ध हो तो हम आपकी प्रार्थना पर ध्यान दे सकते हैं।"

टेरेन्स जो अभी तक अपनी उँगलियो व नाखूनो का ही अध्ययन कर

रहा था, सिर उठा कर देखने लगा।

जुंज ने टेरेन्स की ओर मुड कर कहा, "फ्लोरीना पर पाये जाने के बाद से रिक तुम्हारे ही कस्बे मे रहा है न ?"

"जी !"

"और सारे समय तुम भी उस कस्बे मे ही थे। तुम कही भी अधिक समय के लिए पर्यटन पर नही गये थे। क्यो ?"

"मुखिया लोग पर्यटन नही करते। उनका कार्य उनके कस्बे में ही होता है।"

"अच्छा ! बुरा क्यों मानते हो ! आराम से उत्तर दो। यदि कोई महानुभाव तुम्हारे कस्बे मे आयेगा तो तुम्हे अवश्य ही पता लग जायगा ?"

"अवश्य, जब भी वह आयेगा, तब ही।"

"कभी कोई आया था ?"

"कभी कभी। एक आध-बार। केवल खानापूरी के लिए, महानुभावगण कच्चे काईट से हाथ गन्दे नही करते।" टेरेन्स निश्चितता से बोला।

"आदरपूर्वक बोलो !" फाइफ गरजा।

टेरेन्स ने फाइफ की ओर देखकर कहा, "क्या आपमे ऐसा करवा सकने की शक्ति है ?"

आबेल ने बीच में टोकते हुए कहा, "यह बाते उसके और जुंज के बीच ही रहने दीजिये। हम और आप तो दर्शक हैं।"

जुंज को मुखिया की धृष्टता से एक प्रकार का आनन्द ही मिला। उन्होंने कहा, "मुखिया मेरे प्रश्नो का उत्तर बिना इधर-उधर की बातें किये दो। अच्छा ! तुम्हारे कस्बे मे आने वाले महानुभाव कौन-कौन थे ?"

टेरेन्स ने क्रोध से कहा, "मुझे कैसे मालूम होगा ! मैं इस प्रश्न का उत्तर नही दे सकता। महानुभाव महानुभाव हैं और मैं आदिवासी। मैं मुखिया अवश्य था, पर उन लोगों के लिए तो एक आदिवासी ही था। मैं न तो उनको कस्बे के फाटक पर मिल सकता था और न ही नाम

पूछ सकता था।

"मुझे केवल सूचना ही मिलनी थी, वह भी केवल इतनी ही, 'मुखिया ! अमुक दिन, महानुभाव-निरीक्षण होगा, पूर्ण व्यवस्था रखना।' फिर मुझे देखना होता था कि मिल मजदूरो ने अपने सबसे बढिया कपड़े पहन लिये हैं। मिलों की सफाई हो गई है तथा वह ठीक कार्य कर रही है। काईट का सम्भरण पर्याप्त है। प्रत्येक व्यक्ति सतुष्ट व सुखी दिखाई दे रहा है, उनके घरो की सफाई हो गई है, सडको पर पुलिस बैठ गई है। कुछ नर्तकियो का प्रबन्ध भी करना होता था जिससे कि महानुभाव की आदिवासी नृत्य देखने की इच्छा को भी पूर्ण किया जा सके। फिर कुछ सुन्दर युवतियाँ······"

"कोई बात नही मुखिया ! आगे चलो।" जु ज ने कहा

"आपके लिए कोई बात न होगी। पर मेरे लिए तो है।"

फ्लोरीना सिविल सरविस के कर्मचारियो के अनुभव के बाद टेरेन्स की बातें जु ज के मन मे शीतल जल का संचार कर रही थी। उन्होने मन-ही-मन निश्चय कर लिया था कि जहाँ तक वश चलेगा, वह मुखिया महानुभावो को न सौपने देगा।

टेरेन्स अब शान्त होकर कहता गया, "खैर, मेरा काम इतना ही था। जब वह आते तो मैं भी बाकी लोगो के साथ पक्ति मे खडा हो जाता था। मुझे नही मालूम, वह कौन थे ? मैंने उनसे कभी बातें नही की।"

"क्या शहर के डाक्टर की मृत्यु के एक सप्ताह पहले के लगभग भी ऐसा कोई निरीक्षण हुआ था ? मेरे विचार मे यह तो तुम्हे पता ही होगा कि वह कौन-सा सप्ताह था।"

"जी। मैंने सुना तो था। मेरे विचार मे उस समय कोई निरीक्षण नहीं हुआ। जी, मैं शपथ खाकर भी कह सकता हूँ।"

"तुम्हारे क़स्बे की ज़मीन किसकी है ?"

टेरेन्स ने उत्तर दिया, "फाइफ के महानुभाव की।"

स्टीन अचानक फट पडा, "डा० जुंज, सुनिये इस प्रकार के प्रश्नो से आप फाइफ के हाथो मे ही खेल रहे है। क्या आप नही समझते कि इस प्रकार आप किसी निर्णय पर नही पहुँच सकते। सचमुच यदि फाइफ इस व्यक्ति पर दृष्टि ही रखना चाहता तो क्या वह स्वय वहाँ जायगा। सचमुच फिर सतरी किसलिए है? सचमुच !"

जुंज ने खीझकर कहा, "इस तरह के मामले, जिनमें एक ससार की आर्थिक व्यवस्था और दूसरे की सुरक्षा एक व्यक्ति के मस्तिष्क की सुरक्षा पर निर्भर है, सतरियो की देखभाल पर कदापि नही छोडी जा सकती।"

"चाहे उसने मस्तिष्क का ही सफाया क्यो न कर दिया हो?" फाइफ बोला।

आबेल ने अपना निचला ओठ आगे निकालकर भौहे सिकोडीं। उसे लगा कि उसका अन्तिम पासा भी फाइफ की विजय मे चार चाँद लगा देगा।

जुंज ने हिचकिचाते हुए कहा, "क्या कोई सतरी या सतरी समूह अधिकतर वहाँ घूमता रहता था?"

"मुझे क्या मालूम? मेरे लिए तो वह केवल एक वर्दी ही है।"

वलोना की ओर कुछ खटपट होने के कारण डा० जुंज का ध्यान उसकी ओर आकर्षित हुआ। वलोना का सफेद होता चेहरा तथा फैलते नेत्र डा० जुंज की दृष्टि से छिपे न रह सके।

उन्होंने कहा, "ऐ लडकी! क्या तुम कुछ कहना चाहती हो?"

वलोना ने चुपचाप सिर हिलाया।

आबेल ने भारी हृदय से सोचा, खेल समाप्त हो गया अब और कुछ न हो सकेगा।

किंतु उसी समय वलोना एकदम उठ खडी हुई। वह पूर्णतया काँप रही थी। उसने डरते-डरते कहा, "मैं कुछ......कुछ......कहना चाहती हूँ।"

जुंज ने कहा, "कहो लडकी, क्या कहना चाहती हो ? डरो मत !"

वलोना हाँफते हुए बोली। उसके चेहरे के प्रत्येक हाव-भाव तथा हृदय की प्रत्येक धडकन से पता लग रहा था कि वह कितनी भयभीत है। उसने कहा, "मैं एक गँवार लडकी हूँ, आप लोग दयापूर्वक क्रोधित न होना ! मुझे केवल यही कहना है कि सारी घटनाएँ केवल एक प्रकार से ही हो सकती हैं। क्या मेरा रिक इतना महत्त्वपूर्ण व्यक्ति था ? मेरा मतलब है जैसा कि आप लोग कह रहे हैं।"

जुंज ने नर्मी से कहा, "हाँ मेरे विचार मे तो वह बहुत ही महत्त्व-पूर्ण था, और है भी।"

"फिर तो यह सब उसी प्रकार हुआ होगा जैसा कि आप कहते हैं। जिस किसी ने भी उसको फ्लोरीना मे रखा, वह क्षण भर के लिए आँखो से ओझल न होने देगा। वह ऐसा नही कर सकता था। मान लीजिये, मिल-सुपरिटेंडेंट उसको इतना अधिक पीट देता, या बच्चे पत्थर फेंक कर मार देते, या वह स्वयं अस्वस्थ होकर मर जाता। वह वहाँ खेतो मे, किसी को मिलने के पूर्व ही असहाय-सा पडा-पडा मर सकता था। वह उसकी सुरक्षा भाग्य पर नही छोड सकता था।" अब वलोना बडे धारा-वाही रूप मे बोलती जा रही थी।

"कहती जाओ !" डा० जुंज ने कहा।

"क्योकि एक मनुष्य ऐसा था जो आरम्भ से ही उस पर दृष्टि रखे था। जिसको वह खेतो मे मिला था, जिसने मेरी देख-रेख में उसको रखा—जिसने रिक को सारी चिंताओ से दूर रखा, जो उसके प्रतिदिन के समाचार जानता था, उसे डाक्टर के विषय मे भी मालूम था, क्योकि मैंने ही उसे बताया था। वह यही है। यह रहा वह !"

वह अपनी पूरी शक्ति से चीख रही थी और उसकी उँगली मार-लीन्स टेरेन्स, अर्थात् मुखिया की ओर, उठी हुई थी।

इस बार फाइफ भी अपना संतुलन खो बैठा था। उसकी बाँहे मेज़

पर ही अकड गई थी। उसका भारी बदन कुर्सी से एक इंच ऊपर उठ गया था। और उसने शीघ्रता से अपना मुँह मुखिया की ओर उठा लिया था।

: १८ :

विजयी

ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो सब को लकवा मार गया हो। यहाँ तक कि रिक भी पत्थर की भाँति कभी वलोना के चेहरे को देखता और कभी टेरेन्स के।

फिर उसी समय स्टीन का ऊँचा हास्य सुनाई पडा, "मै इसका पूर्ण विश्वास कर सकता हूँ। सचमुच ! मै तो आरम्भ से यही कह रहा था। मैं कह ही रहा था कि यह आदिवासी फाइफ का ही व्यक्ति है। इससे प्रत्यक्ष हो जाता है कि फाइफ कैसा व्यक्ति है कि उसने इस गँवार को ...."

"यह सरासर झूठ है !"

ये शब्द फाइफ के मुख से नही निकले थे, परन्तु निकले थे मुखिया के मुख से। वह एकदम उठ कर खडा हो गया था, उसके नेत्र उत्तेजना से चमक उठे थे।

आबेल, जो अब तक सबसे कम प्रभावित हुए थे, बोले, "क्या ?"

टेरेन्स क्षण भर उनकी ओर ताकता रहा, मानो कुछ समझ ही न पा रहा हो। फिर अटकते-अटकते बोला, "वही जो स्टीन के महानुभाव ने अभी कहा है। मैं किसी का भी किराये का टट्टू नही हूँ।"

"और जो कुछ उस लडकी ने कहा है, क्या वह भी झूठ है?"

टेरेन्स ने अपने होठ अपनी जीभ से गीले किये और बोला, "नही! वह सच है। मैं ही वह मस्तिष्क-वेधक हूँ।" फिर उसने शीघ्रता से कहा, "दया करो लोना! मेरी ओर इस भाँति न देखो। मैं उसे कोई हानि नही पहुँचाना चाहता था। जो कुछ हुआ है, अनजाने मे ही हुआ है। मेरा ऐसा करने का तनिक भी विचार न था।" और फिर वह बैठ गया।

फाइफ ने कहा, "यह तो एक प्रकार का षड्यन्त्र मालूम होता है। आबेल, मैं नही समझ पा रहा हूँ कि आपकी वास्तविक योजना क्या है, क्योकि यह तो असम्भव-सा ही प्रतीत होता है कि इस हत्यारे के अपराधो मे यह अपराध भी सम्मिलित हो। यह तो मानी हुई बात है कि मस्तिष्क-वेधन का ज्ञान व सुविधा एक प्रमुख महानुभाव को ही हो सकती है। या आप अपने सहयोगी स्टीन को इस अपराध-स्वीकृति द्वारा बचाना चाहते है?"

टेरेन्स ने अपनी मुट्ठी भीच ली और अपने स्थान से आगे झुक कर बोला, "मैने ट्रानटर से भी कोई रिश्वत नही ली है।"

फाइफ उसकी उपेक्षा कर गया।

जुंज को सबसे अंत मे चेतना आई। कुछ क्षणो के पश्चात् ही उन को ध्यान आया कि मुखिया उनके साथ उनके कमरे मे नही है और दूतावास मे ही किसी दूसरे स्थान पर है। वह केवल उसकी छाया देख रहे हैं, तथा वह भी फाइफ से अधिक वास्तविक नही है, जो कि बीस मील दूर है। वह मुखिया के निकट जाकर अकेले मे कुछ बातें करना चाहते थे—पर लाचार थे। उन्होने कहा, "बिना इस व्यक्ति की सारी बाते सुने, तर्क-वितर्क करना बेकार है। हमे पूरे विवरण का पता लगाना चाहिए। यदि यही मस्तिष्क-वेधक है, तो इसका भी पूरा ज्ञान हमे होना चाहिए। यदि वह स्वय मस्तिष्क-वेधक नही है, तो भी इसके विवरण से हम उसको भी पकड़ सकेंगे।"

"यदि आप लोग जानना चाहते हैं कि क्या हुआ था, तो मैं सब आपको सुनाता हूँ," टेरेन्स ने कहा, "अब न बतलाने मे मुझे कोई लाभ न होगा। मेरे लिए या तो सार्क रह गया है, या अन्तराल-ब्यूरो। सो जाय सब अन्तराल मे, इससे कम-से-कम मैं अपने मन का गुबार तो निकाल ही लूँगा।"

उसने घृणापूर्वक फाइफ की ओर हाथ उठाकर कहा, "देखिये, वह एक बडे प्रमुख महानुभाव विराज रहे हैं—केवल एक बडे प्रमुख महानुभाव। इन प्रमुख महानुभाव का कथन है कि मस्तिष्क-वेधन का ज्ञान व सुविधा एक बडे महानुभाव को ही हो सकती है। वह इस बात मे पूर्ण विश्वास भी करते हैं। पर उन्हे क्या मालूम। यदि देखा जाये तो सभी सार्की अज्ञानी है।

"वे राज्य थोडे ही सँभालते है। राज्य तो फ्लोरीनी ही चलाते है। फ्लोरीनी सिविल सरविस सारा कार्य करती है। उन्हे ही पत्र मिलते है, वही पत्र-व्यवहार करते हैं—और वही उनको फाइलो मे सजाते हैं। और यही कागज़-पत्र सार्क पर राज्य करते हैं। यह अवश्य है कि हममे से अधिकतर चूँ करने का भी साहस नही रखते। पर क्या आप जानते हैं कि यदि हम कुछ करना चाहे तो इन मूर्ख महानुभावो की नाक की नोक के नीचे भी कहाँ तक कर सकते हैं! मुझे ही देख लीजिये। मैं भी न जाने क्या-क्या कर सकने मे सफल हुआ हूँ।

"मैं एक वर्ष पूर्व अन्तराल-अड्डे पर अस्थायी प्रबंधक था। यह भी मेरी ट्रेनिंग का ही एक भाग था। यह आपको रेकार्डों मे भी मिल जायेगा। आप लोगो को ठीक प्रकार से जानने के लिए कुछ खोज-बीन अवश्य करनी पडेगी, क्योकि काम करने को वहाँ का प्रबधक एक सार्की ही था। वह तो नाम मात्र के लिए ही था। सारा कार्य मैं ही करता था। मेरा नाम आदिवासी कर्मचारियो की सूची मे सबसे ऊपर होगा, यद्यपि कोई भी सार्की उस सूची को देखना अपना अपमान समझेगा।

"जब स्थानीय अन्तराल-ब्यूरो ने अन्तराल-विशेषज्ञ की सूचना अड्डे

पर भेजी और कहा कि हम लोग एक एम्बुलेस के साथ उसको अड्डे पर मिले; तो वह सूचना मैंने ही ली थी। फिर उसमे से जो भाग मैने उचित समझा, आगे भेज दिया पर फ्लोरीना-विध्वंस की सूचना को मैने रोक रखा।

"मैने इस अन्तराल-विशेषज्ञ को पास के गाँव के छोटे-से अड्डे पर मिलने की व्यवस्था की। यह मैं बडी आसानी से कर सकता था। सार्क के सचालन करने वाले सारे तार व नियंत्रण मेरी उँगलियो मे थे। याद रखिये, मैं उस समय सिविल सरविस मे था। एक प्रमुख महानुभाव भी, जो कुछ मैने किया, स्वयं नही कर सकता था। ऐसा करने के लिए उसे किसी न किसी फ्लोरीनी को आज्ञा देनी पडती। मैं बिना किसी सहायता के ही ऐसा कर सकता था। यही है आप लोगो के ज्ञान तथा सुविधा का हाल!

"मै अन्तराल-विशेषज्ञ से मिला। मैने उसको सार्क तथा अन्तराल-ब्यूरो दोनो से ही परे रखा। जो कुछ सूचनाएँ उससे निकल सकी मैने निकाली और उसको सार्क के विरुद्ध फ्लोरीना के लाभ के लिए प्रयोग करने का प्रयत्न किया।"

फाइफ के मुँह से मानो जबरदस्ती ये शब्द निकाल लिये गए थे, "तो फिर तुम्ही ने वे पत्र भेजे थे ?"

"जी श्रीमान्, वे पहले पत्र मैने ही भेजे थे।" टेरेन्स ने शाति-पूर्वक उत्तर दिया, "मैं सोचता था कि इस प्रकार मै फ्लोरीना की कुछ भूमि हस्तगत कर सकता हूँ, और फिर ट्रानटर की सहायता से सार्क का अधिपत्य वहाँ से हटा सकता हूँ।"

"तुम पागल थे!"

"सम्भवतः! चाहे जो भी हो। मेरी वह योजना सफल न हो सकी। मैने इस अन्तराल-विशेषज्ञ को बतलाया था कि मै फाइफ का महानुभाव हूँ। मुझे ऐसा करना ही पडा; क्योकि यह सर्वविदित था कि फाइफ इस संसार का सबसे बड़ा प्रमुख व्यक्ति है; और जब तक वह मुझे फाइफ

समझता रहा, बाते करने को तैयार रहा। यह देख मुझे हँसी भी आ रही थी कि वह समझे बैठा था कि फाइफ फ्लोरीना-हित के लिए सब कुछ करने को तैयार होगे।

"दुर्भाग्यवश वह मुझ से भी अधिक चचल हो रहा था। वह कहता जा रहा था कि एक-एक दिन की समाप्ति एक-एक संकट की सूचना दे रही है। दूसरी ओर मैं जानता था कि सार्क से कोई भी व्यवस्था करने के लिए समय की बडी आवश्यकता है। धीरे-धीरे उसे वश मे रखना मेरे लिए अत्यधिक कठिन होता गया। इसी कारण मस्तिष्क-वेधन की आवश्यकता भी हुई। वह यत्र मुझे मिल भी गया। मैंने उसका प्रयोग चिकित्सालयो मे होते देखा था। मैं उसके विषय मैं थोडा बहुत जानता था, पर अभाग्यवश पूरी तरह नही।

"मैंने उस यत्र को दिमाग की चिंता हटाने के स्थान पर लगा दिया था। यह अत्यन्त ही सरल था। मुझे अभी नही मालूम कि उसमे क्या भूल हो गई थी। मेरे विचार मे उसकी चिंता गहरी—बहुत ही गहरी रही होगी और यत्र उसके पीछे पडा रहा जबतक कि सारी चिंता दूर न हो गई। उसके साथ उसका मस्तिष्क भी यंत्र ने निकाल फेका, और मेरे हाथों मे मस्तिष्क-रहित लुंज-पुंज रिक रह गया। मुझे इसके लिए अत्यन्त खेद है रिक!"

रिक, जो अब तक ध्यानपूर्वक सारी बाते सुन रहा था, बोला, "मुखिया, आपको मेरे बीच में न पडना चाहिए था; पर मैं जानता हूँ यह सब आपको कैसा लगता होगा।"

"हाँ," टेरेन्स ने कहा, "तुम भी तो उस ग्रह पर रह चुके हो। तुम भी जानते हो कि एक सतरी क्या है—महानुभाव क्या है—निचली और ऊपर की नगरी मे क्या अन्तर है।"

उसने अपनी कथा-धारा को फिर से पकडा, "इस प्रकार मेरे हाथो मे एक असहाय अन्तराल-विशेषज्ञ रह गया। मैं नही चाहता था कि वह किसी ऐसे मनुष्य के सम्मुख पडे, जो उसे पहचानता हो या उसका पता

लगा सके। मैं उसकी हत्या भी नही कर सकता था। मुझे पूरा विश्वास था कि उसकी स्मरण-शक्ति लौट आयेगी और फिर वह मेरी सहायता कर सकेगा। इस बात से मैं इन्कार नही करता कि यदि उसकी हत्या हो जाती तो मुझे अन्तराल-ब्यूरो तक ट्रानटर की सहानुभूति से वचित रहना पडता, जिसकी मुझे अत्यधिक आवश्यकता है, और तब तक मैंने किसी की हत्या भी तो नही की थी।

"मैंने अपनी नियुक्ति फ्लोरीना पर एक मुखिया के रूप मे करा ली। और जाली कागजो द्वारा मैं रिक को अपने साथ ले गया। मैंने वहाँ उसके पडे पाये जाने की व्यवस्था की और वलोना को उसकी देख-भाल के लिए चुना। सिवाय उस डाक्टर वाली घटना को छोड कभी कोई संकट भी पैदा नही हुआ। उस समय मुझे ऊपरी नगरी की शक्ति-कल मे घुसना पडा था। यह भी कोई कठिन कार्य न था। इजीनियर सार्को अवश्य थे, पर जेनीटर तो फ्लोरीनी ही थे। सार्क पर मैं यह भी सीख चुका था कि शक्ति-रेखा को शार्ट कैसे किया जाता है। उस कार्य के लिए उचित समय मिलने मे मुझे तीन दिन अवश्य लग गए थे। अब मेरे लिए हत्या करना एक सरल कार्य हो गया था। मुझे नही मालूम था कि डाक्टर अपने दोनो औषधालयो मे दोहरा रिकार्ड रखता था। काश कि मुझे मालूम होता!"

टेरेन्स जहाँ बैठा था, वहाँ से फाइक की घडी देख सकता था, "फिर सौ घटे पहले—जो सौ वर्ष के समान प्रतीत हो चुके है, रिक की स्मरण शक्ति लौटने लगी। उसके बाद की सारी कहानी तो आप लोगो को मालूम ही है।"

"नही," जुंज ने कहा "अभी कहाँ? अन्तराल-विशेषज्ञ के ग्रह-विध्वंस का विवरण क्या है?"

"क्या आप आशा करते है कि मैं उस विवरण को समझ पाया था। मेरे लिए तो, क्षमा करना रिक, यह एक पागलपन ही था।"

"वह पागलपन नही था," रिक ज़ोर से बोला, "वह पागलपन नहीं

हो सकता ।"

"अन्तराल-विशेषज्ञ के पास एक यान था, वह कहाँ है ?" जुंज ने पूछा ।

"वह तो बहुत पहले ही कूड़े मे फेंक दिया गया था ।" टेरेन्स ने कहा, "उसको रद्दी कर देने की आज्ञा दे दी गई थी । मेरे ऊपर वालो ने उस पर हस्ताक्षर किये थे । एक सार्की कागज़ पढता ही कब है ! वह यान तो बिना किसी विरोध के कूडे मे डाल दिया गया था ।"

"और रिक के कागज़ ? तुम कहते थे कि वे कागज़ उसने तुमको दिखलाये थे ।"

"उस मनुष्य को हम लोगो को सोप दे," फाइफ ने अचानक कहा, "हम सब बातो का पता लगा लेगे ।"

"नही !" जुंज ने कहा, "उसका पहला अपराध अन्तराल-ब्यूरो के विरुद्ध था । उसने अन्तराल-विशेषज्ञ का अपहरण किया तथा उसके मस्तिष्क को नष्ट कर डाला, इससे वह हमारा अपराधी है ।"

आबेल ने कहा, "जुंज ठीक कहते हैं ।"

टेरेन्स ने कहा, "अच्छा, आप लोग सुनिये । मैं बिना किसी लाभ के कोई शब्द नही कहता । मुझे मालूम है कि रिक के कागज़ कहाँ हैं । वह ऐसे स्थान पर है जहाँ कोई सार्की या ट्रानटर वासी नही ढूँढ सकता । यदि आप लोगो को वे कागज़ चाहिए, तो आप लोगो को मुझे एक राजनैतिक शरणार्थी मानना होगा । मैंने जो कुछ किया है, देश-भक्ति के कारण किया है—अपने ग्रह की आवश्यकताओ को देखते हुए किया है । क्या केवल सार्की या ट्रानटर वासी को ही देश-भक्त होने का अधिकार है ? फ्लोरीनी को क्या यह भी अधिकार नही ?"

जुंज ने कहा, "राजदूत ने अभी-अभी आश्वासन दिया है कि तुम अन्तराल-ब्यूरो के सुपुर्द कर दिये जाओगे । मैं तुम्हे विश्वास दिलाता हूँ कि तुम्हे सार्क के सुपुर्द कदापि न किया जायेगा । तुमने जो व्यवहार अन्तराल-विशेषज्ञ के साथ किया है, उसका तुम पर मुकदमा अवश्य

चलेगा। मैं फल की प्रतिज्ञा भी नही कर सकता, पर इतना अवश्य कह सकता हूँ कि यदि तुम हम लोगो की सहायता करोगे तो तुम्हे लाभ अवश्य होगा।"

टेरेन्स ने जु ज के चेहरे पर एक भेद-भरी दृष्टि डालते हुए कहा, "डाक्टर, मै आपका विश्वास कर सकता हूँ········अन्तराल-विशेषज्ञ के अनुसार फ्लोरीना का सूर्य अकस्मात् तेज होकर फट पडने से पूर्व की अवस्था मे है।"

"क्या ?" सिवाय वलोना के सब लोग एक दम चीख् पडे।

"वह एकदम भडक कर फटने ही वाला है," टेरेन्स ने तिरस्कार-पूर्वक कहा, "और फिर जब ऐसा होगा तो फ्लोरीना भी फट जायेगा और सिवाय धुँए के वहाँ कुछ भी न रहेगा।"

आबेल ने कहा, "मैं अन्तराल-विशेषज्ञ तो नही हूँ। पर इतना अवश्य जानता हूँ कि कोई भी यह नही बतला सकता कि ऐसा कब होगा।"

"यह अभी तक तो सत्य ही है। क्या रिक ने यह भी बतलाया था कि वह इस निर्णय पर किस प्रकार पहुँचा था ?" जु ज ने पूछा।

"उसके कागज शायद यह ठीक से बतला सके, पर जितना मुझे याद है, वह कारबन लहरो के विषय मे कुछ कह रहा था।"

"क्या ?"

"वह बार-बार अन्तराल की कारबन-लहरें, और उनका 'उत्प्रेरणा-प्रभाव' कहता जा रहा था।"

स्टीन हँस पडा, फाइफ कुछ सोच मे पड गए थे और जु ज बार-बार उसकी ओर देख रहे थे।

"फिर जु ज ने कहा, "क्षमा कीजियेगा ! मैं आया अभी।" और वह छाया-ट्यूब से ओझल हो गए।

पद्रह मिनट बाद वह वापस आ गए थे।

जुंज जब लौट कर आये तो भौचक देखते रह गए। वहाँ केवल आबेल और फाइफ ही रह गए थे।

उन्होने कहा, "और सब कहाँ········ ···?"

आबेल ने तुरन्त ही बीच मे बोलते हुए कहा, "हम लोग आपकी प्रतीक्षा ही कर रहे थे डा० जुज । अन्तराल-विशेषज्ञ और वह लडकी दूतावास की राह मे होगे और सभा विसर्जित हो गई है ।"

"विसर्जित हो गई ? हाय री नीहारिका ! अभी तो आरम्भ ही हुई है । मुझे उस अकस्मात् तेज होकर फट पडने की सम्भावना को समझाना है ।"

आबेल ने अपना पक्ष बदलते हुए कहा, "उसकी कोई आवश्यकता नही है डाक्टर !"

"यह आवश्यक है । यह अत्यधिक आवश्यक है । मुझे पाँच मिनट का समय दीजिये ।"

"उन्हे बोलने दीजिये," फाइफ ने कहा । वह मुस्करा रहे थे ।

जुंज ने कहा, "आप प्रारम्भ से ही लीजिये । नीहारिका-सभ्यता के आरम्भिक लेखो द्वारा यही पता चलता है कि प्रत्येक तारा अपनी-अपनी शक्ति अपने आतरिक न्यैष्टिक रूपान्तर से प्राप्त करता है । यह भी ज्ञात है कि अन्तर्-तारकीय विभिन्न दशाओ के अनुसार दो प्रकार, केवल दो ही प्रकार के न्यैष्टिक रूपान्तर है । दोनो मे ही उद्‌जन का हीलियम मे रूपान्तर आवश्यक है । प्रथम रूपान्तर तो प्रत्यक्ष होता है । दो उद्‌जन और दो न्यूट्रोन कण मिल कर एक हीलियम कण बनाते हैं । दूसरा अप्रत्यक्ष होता है । कई अवस्थाओ व चरणो मे होता हुआ उद्‌जन अंत मे हीलियम मे परिवर्तित हो जाता है । किंतु मध्य अवस्थाओ मे कारबन भी भाग लेता है । यह कारबन केन्द्र-प्रयुक्त हो कर समाप्त होने के स्थान पर जैसे-जैसे उनकी प्रतिक्रिया उदय होती है, फिर-फिर बनते जाते हैं, और इस प्रकार कारबन की थोडी-सी मात्रा ही बार बार प्रयोग मे लाई जा सकती है तथा बहुत सारी उद्‌जन को हीलियम मे परिणत करने मे सफल हो जाती है । दूसरे शब्दो मे उसका अर्थ हुआ कि कारबन उत्प्रेरक का कार्य करता है । यह सब प्राचीन ऐतिहासिक समय के पहले से ही

ज्ञात है। उस समय से जब कि मनुष्य जाति केवल एक ही ग्रह तक सीमित थी, यदि कभी ऐसा समय था तो ?"

"हम सब यह जानते हैं," फाइफ ने कहा "मैं कहता हूँ आप कोई भी नई बात नही बतला रहे हैं। केवल व्यर्थ समय नष्ट कर रहे है।"

"बस, हमे केवल इतना ही ज्ञात है। ये तारे पहली या दूसरी या दोनो ही तरह के न्यैष्टिक रूपान्तरो से शक्ति प्राते हैं, यह पूर्ण रूप से निश्चित नही है। इस पर लोगो के अलग-अलग मत है। परन्तु अधिकाश लोग प्रत्यक्ष उद्जन हीलियम-रूपान्तर के ही पक्ष मे हैं; क्योकि वह अधिक सरल हैं।

"अब रिक का तर्क इस प्रकार रहा होगा। साधारणतं तो उद्जन-हीलियम-प्रत्यक्ष-रूपान्तर ही तारकीय शक्ति का स्रोत है, परन्तु कुछ दशाओ में कारबन-उत्प्रेरणा उसकी प्रतिक्रिया को तीव्र गति से बढाती जाती है और तारे की गर्मी बढती जाती है।

"अन्तराल मे विभिन्न प्रकार की लहरें हैं, यह तो हम सभी जानते हैं। उनमे से कुछ कारबन लहरे है। तारे इन लहरो के बीच यात्रा करते हुए असख्य अन्तराल-अणुओ को अपने साथ ले लेते हैं। यद्यपि कारबन को छोड कर जितने अणु इस प्रकार एकत्रित होते, तारे के भार तथा आकार के सम्मुख कुछ भी नही होते। कोई भी तारा, जो असाधारण रूप से कारबन-केंद्रित लहर से निकल जाता है, वह अस्थिर हो जाता है। यह मुझे नही मालूम कि कितने वर्षों, सदियो या युगो मे ये कारबन-अणु तारक-केन्द्र तक पहुँच पाते है, पर उन्हे काफी समय लग ही जाता है। इसके लिए कारबन लहर का विस्तृत होना तथा तारे को लघु कोण पर काटना अति आवश्यक है। खैर, किसी भी प्रकार हो, किंतु एक बार तारक-केन्द्र तक जाती कारबन-सख्या जब एक सीमा तक पहुँच जाती है तो तारे की विकिरण शक्ति एक दम अत्यधिक रूप से बढ जाती हैं, उसकी बाह्य सतह उस भयकर शक्ति को न सह सकने के कारण एक दम फट पड़ती है और आप सूर्य को आकस्मिक रूप से फटते हुए देखते

हैं। अब समझे आप लोग ?"

जु ज कुछ समय तक प्रतीक्षा करते रहे।

फाइफ ने कहा, "क्या आपने ये सब सिद्धात एक पल मे ही बना लिये, केवल मुखिया के शब्दो पर, जो कि अन्तराल-विशेषज्ञ ने एक वर्ष पूर्व कहे थे ?"

"हाँ-हाँ! और क्या? उसमे अचम्भे की कोई बात नही। अन्तराल-विश्लेषण इस सिद्धात को ग्रहण करने के लिए पहले ही तैयार था। यदि रिक इस सिद्धात को सामने न भी लाया होता तो कोई दूसरा लाता। वास्तव मे तो इस प्रकार के सिद्धात पहले भी सोचे गये हैं, परन्तु अभी तक कभी भी गम्भीरतापूर्वक उन पर विचार नही किया गया। वह अन्तराल-विश्लेषण के विकास के पूर्व बने थे और कोई भी किसी तारे मे आकस्मिक रूप से गर्मी बढ कर फटने की क्रिया को पूरी तरह नही समझ पाया था।"

"परन्तु अब हम जानते है कि कारबन-लहरे अन्तराल मे विद्यमान हैं। अब तो हम उसकी राह भी अकित कर सकते हैं; यह पता लगा सकते है कि दस सहस्र वर्षो मे कौन-सा नक्षत्र उनके मध्य से गया है, तथा उस रेकार्ड तथा विकिरण-रेकार्ड को मिला कर विस्फोट का समय भी निश्चित कर सकेगे। यही कुछ रिक ने भी किया होगा। यही विवरण व गणना उसने मुखिया के सम्मुख रखी होगी। पर यह सब तो वास्तविक समस्या से काफी दूर है।"

"अब हमे फ्लोरीना से वहाँ के निवासियो को हटाने की व्यवस्था करनी होगी।"

"मैं तो पहले ही जानता था कि इस तक नौबत आ ही जायगी।" फाइफ बोला

"मुझे खेद है जु ज," आबेल ने कहा, "पर यह एकदम असम्भव है।"

"क्यो ? असम्भव क्यो है ?"

"फ्लोरीना का सूर्य कब फटने वाला है ?"

"यह मुझे नही मालूम। परन्तु रिक के एक वर्ष पूर्व के आतक से लगता है, समय बहुत ही कम है।"

"परन्तु क्या आप इसका कोई समय निश्चित नही कर सकते ?"

"नही, बिल्कुल नही।"

"आप समय कब तक निश्चित कर सकेगे ?"

"यह जानने की कोई राह नही है। यद्रि रिक की गणना मिल भी जाय, तो भी उसका फिर से परीक्षण करने की आवश्यकता तो होगी ही।"

"क्या आप इसका विश्वास दिला सकते है कि अन्तराल-विशेषज्ञ का सिद्धात सत्य ही सिद्ध होगा ?"

जुज ने कुछ सोचते हुए कहा, "मुझे इस पर पूर्ण विश्वास है। पर कोई भी वैज्ञानिक पहले से किसी सिद्धात की गारटी नही कर सकता।"

"तब फिर इसका तात्पर्य यही हुआ न कि आप सदेह-मात्र पर पूरा फ्लोरीना खाली करा लेना चाहते है।"

"मेरे विचार मे किसी ससार की सारी जनता को जुए के दाँव पर नही लगाया जा सकता।"

"यदि फ्लोरीना एक साधारण ग्रह होता तो मैं आपसे पूर्ण रूप से सहमत होता। परन्तु फ्लोरीना से सारी नीहारिका को काईट मिलता है। यह कैसे सम्भव है ?"

जुंज ने क्रोधित होकर कहा, "तो फिर मेरे पीछे आप दोनो इसी निष्कर्ष पर पहुँचे हैं।"

फाइफ ने बीच मे ही बोलते हुए कहा, "मेरी बात तो सुनिये डाक्टर जुंज। सार्क की सरकार कभी भी फ्लोरीना खाली करने को तैयार न होगी, चाहे अन्तराल-ब्यूरो इस सिद्धांत को सिद्ध ही क्यों न कर दे। ट्रानटर भी हमे इसके लिए बाध्य नही कर सकता; क्योकि समस्त नीहारिका काईट-व्यापार की रक्षा के लिए तो युद्ध कर सकती है, पर

उसे नष्ट करन के लिए नही ।"

"बिल्कुल सत्य है," आबेल ने कहा, "मेरा भी यही विचार है कि हमारे अपने आदमी ी इस प्रकार के युद्ध मे हमारी सहायता नही करेगे ।"

जुंज का मन विरक्त होता जा रहा था । क्या इस आर्थिक आवश्यकता के सम्मुख एक मनुष्यो से भरे ससार का कोई महत्त्व नही !

उन्होने कहा, "मेरी बात सुनिये । यह केवल एक ग्रह का नही, सारी नीहारिका का प्रश्न है । नीहारिका भर मे बीस ऐसे फट पडने वाले सूर्य प्रति वर्ष बनत जा रहे हैं । इसके अतिरिक्त नीहारिका के अरबों-खरबो सूर्यों मे से लगभग दो सहस्र तो ऐसे है ही, जो अपनी विकिरण-प्रकृति निरतर बदलते रहते है और इस प्रकार किसी भी बसे हुए ग्रह को आवास के अयोग्य बना सकते हैं । दस लाख सौर मंडलो मे मनुष्य बसे हुए है, इसका अर्थ यह हुआ कि प्रत्येक पचास वर्षों मे एक-न-एक ग्रह जीवन के लिए अत्यन्त गर्म हो उठेगा । इस प्रकार की घटनाएँ रेकार्ड के योग्य हैं और प्रति पाँच हजार वर्ष मे ५० प्रतिशत सयोग है कि वह आकस्मिक तेज होते हुए सूर्य की ओर खिच जाय ।

"यदि ट्रानटर इस समय फ्लोरीना के लिए कुछ नही करता है और वह उसको उसकी जनता के सहित विनष्ट हो जाने देता है तो नीहारिका के समस्त मनुष्यो को ज्ञात हो जायगा कि समय आने पर यदि उन्हे किसी ऐसी सहायता की आवश्यकता पडेगी जिससे कि कुछ शक्तिशाली ससारो को आर्थिक सकट का सामना करना पडेगा, तो उन्हे किसी से कुछ आशा न करनी चाहिए । क्या आप इस संकट को मोल लेने को तैयार है आबेल ?"

"दूसरी ओर फ्लोरीना की सहायता कर आप धन से अधिक मनुष्यो की रक्षा करते हैं । इससे ट्रानटर ऐसा सद्भाव प्राप्त करेगा, जैसा कि उसने सदियो मे भी न किया होगा ।"

आबेल ने अपना सिर झुका लिया और अत्यन्त कष्ट से बोले, "नहीं

जुंज। जो कुछ आप कह रहे है उसे मान लेने का मन तो होता है, पर यह व्यावहारिक नही है। मैं काईट-व्यापार की समाप्ति के राजनैतिक प्रभाव की गारण्टी नही कर सकता। मेरे विचार मे तो यदि इस सिद्धात की आगे खोजबीन न की जाय तो अधिक उत्तम होगा। इसके सत्य होने का विचार ही अत्यन्त भयकर है।"

"परन्तु यदि यह सत्य हो तो ?"

"हमें यही मान लेना चाहिए कि वह नही है। आप कुछ क्षण पहले अन्तराल-ब्यूरो से ही बातें करने गये थे न ?"

"जी हाँ।"

"कोई बात नही। मेरे विचार से ट्रानटर का इतना प्रभाव अवश्य है कि वह इस अनुसधान को अभी स्थगित करवा दे।"

परन्तु मेरे विचार से नही ! कम से कम इस अनुसधान को नही। श्रीमान् लुडिगन आबेल, हमे शीघ्र ही सस्ते काईट के सिद्धात का पता लग जायेगा और सार्क का काईट-एकाधिकार समाप्त हो जायेगा, चाहे कोई सूर्य आकस्मिक रूप से तेज़ हो या न हो।"

"क्या मतलब ?"

"अभी तो सभा अपने असली विषय पर आई है। फाइफ, सुनिये। बसे हुए ग्रहो मे से काईट केवल फ्लोरीना पर ही पैदा होता है और जगह इसके बीज केवल सूत ही तैयार करते हैं। सयोग से फ्लोरीना ही एक ऐसा ग्रह है जिसका सूर्य आकस्मिक रूप से तेज़ होकर फट पडने से पूर्व की अवस्था मे है। शायद वह पहले से सहस्रो वर्ष पूर्व, जब से वह किसी कारबन लहर से टकराया हो, ऐसा ही रहा हो, इस बात की अत्यधिक सम्भावना है कि काईट पैदा होने के लिए इस अवस्था की आवश्यकता हो।"

"यह क्या बकवास है ?"

"क्या यह सचमुच बकवास है ! तो फिर इसका भी कोई कारण होना चाहिए कि काईट फ्लोरीना पर तो काईट है, पर अन्य ग्रहों पर

साधारण सूत के अतिरिक्त और कुछ नही। और स्थानो पर वैज्ञानिको ने काईट उगाने का अथक प्रयत्न किया है, पर बिना समझे-बूझे। इसी से वह कभी सफल नही हो सके। अब उन लोगो को भी पता लग जायेगा कि काईट सूर्य की इस अवस्था के कारण ही पैदा होता है।"

फाइफ ने घृणापूर्वक कहा, "उन्होने फ्लोरीना के सूर्य के किरणो की नकल करने का भी तो प्रयत्न किया था ?"

"विशेष प्रकार के वृत्तखड-प्रकाश द्वारा अवश्य किया था, जिसमे प्रत्यक्ष तथा पार-नील लोहित (अल्टरा वायलेट) वर्णक्रम की ही तो नकल की थी। परा-लाल (इन्फारैड) और उस- आगे के विकिरण के सम्बध मे उन्होने क्या किया ? चुम्बकीय क्षेत्र के विषय मे क्या कहते है ? विद्युत-कण-प्रवाह का क्या हुआ ? आकाश-मडल की तीक्ष्ण रश्मियाँ या कास्मिक किरणो के विषय मे भी उन्होने कुछ न किया था। मैं भौतिक जव रासायनिक नही हूँ। इसके अतिरिक्त भी बहुत से तत्त्व हो सकते है जिनके विषय मे मै नही जानता हूँ। परन्तु नीहारिका के समस्त भौतिक जैव रासायनिक अब इस अनुसधान मे जुट जायेगे और मै आप लोगो को विश्वास दिला सकता हूँ कि वर्ष भर मे उसका समाधान भी मिल जायगा।

"अर्थशास्त्र अब जनता का साथ देगा। सारी नीहारिका को सस्ते काईट की आवश्यकता है। और यदि उसको इसके सिद्धात का पता लग गया, या वे सोचते है कि लगा लेगे, तो वे अवश्य ही फ्लोरीना को खाली करा लेने के पक्ष मे होगे। वैसे तो मनुष्यता के ही नाते, परन्तु साथ ही काईट के एकाधिकार को तोडने के लिए तथा सार्क से बदला लेने के लए भी।"

"झूठ ! एकदम झूठ !" फाइफ गरजा।

"क्या आप भी ऐसा ही सोचते है आबेल ?" जुंज ने प्रश्न किया यदि ट्रानटर इन महानुभावो की सहायता करेगा तो यह काईट-व्यापार का सहायक न कहला कर इनके एकाधिकार का सहायक कहलायेगा।

क्या आप यह सकट मोल ले सकते है ?"

"क्या ट्रानटर युद्ध का सकट मोल ले सकता है ?" फाइफ ने पूछा।

"युद्ध ! वाहियात ! श्रीमान्, एक वर्ष मे ही आपकी फ्लोरीना की सम्पत्ति मूल्यहीन हो जायगी, चाहे सूर्य को दशा कैसी भी क्यो न रहे। इसलिए बेचो, सारा फ्लोरीना बेच डालो। ट्रानटर उसके दाम दे सकता है।"

"क्या कहा ? सारा ग्रह खरीद ले ?" आबेल बोला।

"क्यो नही ? ट्रानटर के पास पैसा है और इस प्रकार वह जो सद्-भाव प्राप्त करेगा, वह इससे सहस्रों गुना लाभदायक सिद्ध होगा। यदि उनको यह बतलाना, कि आप करोडो मनुष्यो का जीवन बचा रहे हैं, पर्याप्त न हो, तो उनको यह भी बतलाइये कि आप उनको सस्ता काईट देंगे। बस, आपका काम बन गया।"

"मैं इस पर पूर्ण रूप से विचार करूँगा।" आबेल ने कहा और फाइफ के महानुभाव की ओर देखा। उनकी आँखें नीची हो गई थी। कुछ देर रुकने के पश्चात् उन्होने भी कहा, "मै भी इस पर विचार करूँगा।"

जुंज हँसे, "अधिक देर विचार न करें। काईट का भेद जल्दी ही सारी नीहारिका में फैल जायेगा। कोई भी उसको नही रोक सकता। उसके बाद आप दोनों भी कुछ न कर पायेंगे। आप लोग इस समय ही बढ़िया सौदा कर सकते है।"

मुखिया मानो सब कुछ हार चुका था, "क्या यह सच है !" वह बार-बार कहता जा रहा था, "क्या यह बिल्कुल सत्य है कि फ्लोरीना अब न रहेगा ?"

"हाँ ! यह सत्य है।" जुंज ने उत्तर दिया।

टेरेन्स ने हाथ फैला कर फिर निराशा से नीचे कर लिये, "यदि आपको रिक के कागज चाहिए तो वे मेरे घर पर जरूरी फाइलों के बीच रखे हैं। मैंने सदियों पहले की पुरानी फाइले एकत्रित कर ली थी,

उनके बीच कोई भी उन कागजों को खोजने मे असमर्थ रहता।"

"सुनो," जुंज ने कहा, "मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम लोग अन्त-राल-ब्यूरो से कोई न कोई समझौता अवश्य ही कर लेंगे। हमे फ्लोरीना पर एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता होगी जो वहाँ से भली भाँति परि-चित हो, जो उनको सारी बाते ठीक प्रकार बिना आतक फैलाये बतला सके, जो ग्रह को खाली करने की उपयुक्त व्यवस्था कर सके। क्या तुम हमारी सहायता करोगे ?"

"और इस प्रकार इस नाटक को समाप्त किया जा सके। हत्या के अपराध से छुटकारा पाया जा सके ? क्यो नही ?" मुखिया की आँखो मे आँसू आ गए और वह बोला, "फिर भी मेरी हार ही होगी। मेरा न कोई दीन रहेगा और न दुनिया। घर-बार लुटा बैठूँगा। यो तो हम सभी कुछ न कुछ लुटा बैठे है। फ्लोरीना अपना ससार, सार्की अपना धन और ट्रानटर उस धन को प्राप्त करने का अवसर। हम सभी हार गये है। विजय किसी को भी नही मिली।"

"फिर भी," डा० जुंज ने सहानुभूतिपूर्वक कहा, "हमारी एक नई नीहारिका बनेगी, अस्थिर सूर्यों से सुरक्षित, जिस पर काईट सबको प्राप्त होगा। जिस पर राजनैतिक एकता होगी—जिस पर मनुष्यता का साम्राज्य होगा—और इस प्रकार हम सब—समस्त नीहारिका के अरबों मनुष्य—विजयी होगे।"

उपकथन

एक वर्ष पश्चात्

"रिक ! रिक !" सलीम जुंज शीघ्रता से, हाथ फैलाये अड्डे पर तत्काल उतरे यान की ओर बढे । "और लोना ! मै तो आप लोगों को पहचान भी न पाता । कैसे है आप लोग ? क्या हाल-चाल है ?"

"धन्यवाद ! हम लोग भली प्रकार है । मेरा पत्र तो आपको मिल ही गया होगा ?" रिक ने कहा ।

"बहुत अच्छा ! बहुत अच्छा ! पर इस सब कार्य के विषय में आपके क्या विचार है ?" वह सब जुंज के कार्यालय की ओर अग्रसर हो रहे थे ।

वलोना ने दु.खपूर्वक कहा, "हम लोग आज प्रात:काल अपने गाँव गये थे । सब कुछ बदल गया । खेत कितने खाली लग रहे थे !" अब वह साम्राज्य की एक माननीय नारी की भाँति वस्त्र पहने थी, एक फ्लोरीनी गँवार स्त्री की भाँति नहीं ।

"हाँ, जो वहाँ पहले रह चुका है, उसके लिए तो बड़ा ही कष्टपूर्ण हो जाता है यह सब परिवर्तन । कभी-कभी तो मै भी उदास हो उठता हूँ, परन्तु जब तक रह सकूँगा मै यहाँ ही रहूँगा । फ्लोरीना के सूर्य की विकिरण-शक्ति का अध्ययन अत्यन्त ही रोचक है ।"

"एक वर्ष मे कितना ही कार्य हो चुका है इस ओर ! यह बहुत ही बढ़िया व्यवस्था का द्योतक है।"

"हम लोग अपना भरसक प्रयत्न कर रहे हैं रिक ! ओह ! अब तो मुझे आपको आपके असली नाम से पुकारना चाहिए। है न ?"

"बस, कृपा करिये। मुझे अब कभी भी उसकी आवश्यकता न पड़ेगी। अब तो मै केवल रिक ही हूँ। यही नाम मुझे याद है।"

जु ज ने पूछा, "अन्तराल-विश्लेषण ब्यूरो मे रहने के विषय मे क्या आपने कुछ निश्चय किया ?"

रिक ने सिर हिलाकर उत्तर दिया, "जी हाँ ! और उत्तर नही मे है। इस कार्य के लिए काफी स्मरण शक्ति की आवश्यकता है और वह मेरे पास अब नहीं रही है। वह तो सदा के लिए समाप्त हो गई है। पर मुझे उसकी कोई चिंता नही है। मै पृथ्वी पर वापस लौट जाऊँगा। यहाँ तो मै मुखिया से भेंट करने की आशा में ही आया था।"

"शायद आप उससे भेंट न कर पाये। वह आज ही कहीं जा रहा है। मेरे विचार मे वह आपसे मिलने मे हिचकिचायेगा ही, क्योकि आपके प्रति वह अपने को बहुत ही अपराधी अनुभव करता है। आशा है आपके मन मे उसके प्रति कोई भी दुर्भावना नही है ?"

रिक ने कहा, "नही ! उसने जो कुछ भी किया, भले के लिए ही किया था। कई प्रकार से तो उसने मेरा जीवन भले के लिए ही परिवर्तित कर दिया है। प्रथम तो यही है कि मुझे लोना मिल सकी।" यह कहकर उसने लोना के कधे पर प्यार से हाथ रख दिया।

वलोना ने भी उसकी ओर प्यार-भरी दृष्टि से देखा।

"और दूसरे" रिक ने कहा, "उसने मेरा एक परिचार भी कर दिया हैं। अब मुझे ज्ञात हो गया है कि मै अन्तराल-विशेषज्ञ क्यों बना था। अब मै यह भी जान गया कि क्यों एक-तिहाई से अधिक अन्तराल-विशेषज्ञ केवल पृथ्वी से ही लिये जाते हैं। रेडियो-सक्रिय ससार का प्रत्येक वासी भय और अरक्षा का ही अनुभव करता है। वहाँ एक गलत

कदम का अर्थ है मृत्यु और वह इस प्रकार के स्थानों से भरा पड़ा है। अतः हमारा ग्रह ही हमारा सबसे बड़ा शत्रु है।

"डा० जुज ! इस कारण हम लोग एक प्रकार की चिंता मन में लिये ही पैदा होते हैं। वह भय है भूमि का—ग्रहों का। हम लोग अन्तराल में ही सुखी रहते है। वही एक स्थान है जहाँ हम लोग सुरक्षा का अनुभव करते है।"

"अब आपको उस भय का अनुभव नहीं होता। क्यों ?"

"नहीं ! तनिक भी नहीं ! और अब तो मुझे उस भय की याद भी नहीं। अब समझे आप ? मुखिया ने मस्तिष्क-वेधन यन्त्र को चिंता हटाने के स्थान पर लगा दिया था, पर उसकी मात्रा की ओर ध्यान नही दिया था। उसने सोचा था कि मुझे तात्कालिक थोड़ी-सी ही चिंता होगी, उसे इस नस-नस मे बिंधी गहन चिंता का क्या पता था ! उसने सभी से छुटकारा दिला दिया। यह अच्छा ही हुआ, चाहे इसके साथ और भी बहुत कुछ निकल गया है। अब मुझे सारे समय अन्तराल में रहने की आवश्यकता नहीं है। मै पृथ्वी पर वापस जाकर वहाँ आराम से रह सकता हूँ। पृथ्वी को मनुष्यों की आवश्यकता है और रहेगी।"

"सुनिये," डा० जुज ने कहा, "हम पृथ्वी के लिए भी वही प्रबन्ध कर सकते हैं जो फ्लोरीना के लिए कर रहे हैं। पृथ्वी-पुत्रों को इस भय और अरक्षा में रहने की कोई आवश्यकता भी तो नही है। यह नीहारिका बहुत बड़ी है।"

"नहीं," रिक ने उत्तेजित हो कहा, "यह भिन्न है। पृथ्वी का अपना इतिहास है डा० जुज। बहुत से लोग इस बात का विश्वास नहीं करते, परन्तु हम पृथ्वी-पुत्र इस बात को भली-भाँति जानते हैं कि पृथ्वी ही वह मूल ग्रह है जिस पर मानव-जीवन आरम्भ हुआ था।"

"अच्छा ! सम्भवतः ! मै इस विषय में कुछ भी नहीं जानता।"

"ऐसा ही है। इसी कारण उस ग्रह का परित्याग नहीं किया जा सकता—वह परित्याग करने योग्य है भी नहीं। किसी-न-किसी दिन हम

लोग उसे बदल डालेंगे। उसकी सतह को पहले की ही भाँति करके छोड़ेंगे। उस समय तक—हम लोग वहीं रहेंगे।"

वलोना ने भी धीमे से कहा, "मैं भी अब पृथ्वी-पुत्री हो गई हूँ।"

रिक अन्तरिक्ष की ओर देख रहा था। ऊपरी नगरी अब भी पहले की भाँति चमचमा रही थी पर अब वह निर्जन थी, एक दम एकाकी।

उसने पूछा, "फ्लोरीना पर अब कितने लोग रह गए हैं?"

"बीस लाख के लगभग", डा० जुंज ने कहा, "जैसे-जैसे हम लोग आगे बढ़ते जाते है, धीमे पड़ते जाते है। हमे अपना निकास सतुलित रखना पड़ता है। जो लोग भी वाकी रह गये हैं वे जितने दिन भी रहें, अपने आप में पूर्ण होने चाहिए। यह अवश्य है कि फिर से बसाये जाने की अवस्था अब भी आरम्भिक अवस्था में है। अधिकतर शरणार्थी अभी भी आस-पास के कैम्पो में ही रह रहे है। इतना सब तो सहना ही पड़ता है। क्या करें, लाचारी है!"

"अन्तिम मनुष्य कब तक जायेगा?"

"शायद कभी भी नहीं।"

"क्या मतलब?"

"मुखिया ने गैरसरकारी तौर पर यहाँ ही रहने की आज्ञा माँगी है। और गैर सरकारी तौर पर वह मिल भी गई है। यह बात अभी गुप्त ही है।"

"यहाँ रहने की?" रिक सहम उठा था, "पर नीहारिका की शपथ! ऐसा क्यो?"

"मुझे नहीं मालूम," जुंज ने उत्तर दिया, "पर मेरे विचार में आपने अभी इसका उत्तर पृथ्वी के विषय में बाते करते समय दे दिया है। शायद उसे भी आपकी तरह ही लगता है। वह कहता है कि वह फ्लोरीना को अकेले ही मृत्यु का ग्रास नहीं बनाने देगा। धन्य है उसकी देश-भक्ति!

समाप्त